माखू को परचार

आपणा देश मां घणो हुयो है क राजा
गा कर गरीब को भूपड़ो भी इण बुरी आद
ी बामण सू लगा कर भगी ताई पवित्र
त ताई बालक सूं लगा कर बुढा ताई शहर
ोवड़ा ताई समीने यो रोग लगा रीयो है।
तमाखू जस्या बुरा व्यसन की आदत
र्म, धर्म और शरीर ने घणो नुकसाण पुं
ा मां आवे नहीं।
से अस्या बुरा व्यसन ना रोकवा
मेमी भाया ने करणो चाईजे क आगे हो
वा इण कुव्यसन सु बचे।

कोई कवि को वचन है कि

सो गई अब राख रही को

आपका शुभचिंतक—
साधु नेदरामदास मानदास

तमाकू खोटी

घर की सीख घर की बोलीमां।

राग—थुं तो आजा ये नींद नैणामां घुल जाय।

टेर—मत पीवो मारा छैल तमाखू खोटी।
इण के बदले मुँ घी घाल जीमास्युं रोटो॥

समझ तमाखू सूगली जी कुतो न खावे काग।
जीण ने पीवे मानवी कोई ज्यांका खोटा भाग॥ १॥

कंथ हमारा मती करो जी बुरो तमाखू हेत।
टका एक की टाट में मारे दिन उग्याई देत॥ २॥

हाथ बलै मुंडो बलै जी कपड़ा बलै जरूर।
असी तमाखू सूगली जीसुं रीज्यो राजन दूर॥ ३॥

चिलम्या करतां चिलम झाड़ता होवे मोकलो पाप।
जिण सुं बरजुं साथबा मत पीवो तमाखू आप॥ ४॥

हूका सुं हुरमत सब बिगड़ी लाज शरम गई छूट।
सबको उंठ्यो भूँठ्यो पीवो गई हीया की फूट॥ ५॥

दुःख सुख देख धान बपरायो थेले भागा कीणो।
भूखां मरता टाबर रोवें धिरक तमाकू पीणो॥ ६॥

थांको वाल्यो कालजोर थे फेर विगाड़्या हाथ।
गुल की गाठी राख उडाई रांड तमाकू साथ॥ ७॥

पीवे जिणरो आंगणोजी खावे जीणरी भींत।
सूंघे जीणरा कपड़ा बिगड़े तोनु खोटी रीत॥ ८॥

मोखगस्या की छेर तमाकू पी पी रास उडावे ।
रूपीया मांगे मोख गस्यो जद घर घर में लुक आवे॥ ६ ॥
रूपीया नहीं छोडे मोख गस्यो हेर खोद कर ल्यावे ।
गास्यों काढे धक्का देवे बिगड़ माजनो जावे ॥१०॥
पीवे जीणरा हाथ सडे जी खावे जिण रो मु डो ।
सुंघे जिणरो नाक सडे यो सभी काम है मू डो ॥११॥
पीड़ी बाला खराई फांके हो बीवा की हांण ।
कांकड़,पीव,सभी बल जावे घास तणो नुकसाण १२
पांच सात बरसां पा टापर छमर में भी फोरा ।
बीड़ी को परचार हुवा सु गणा बिगड़िया छोरा ॥१३॥
सांची बात कहूं में थाना झूठी एक न भाखूं ।
तणा तणो होश नहीं स्याना वेभी पीवे तमाखू ॥१४॥
पीड़ी देवो तुको देवो यू कह हाथ पसारे ।
बीड़ावाज की दशा देखकर मंगता ही झकमारे॥१५॥
घर में बीड़ी बारां बीड़ी झाड़े जातां बीड़ी ।
बीड़ी के बश बस्या हुया ये ज्युं चीगट पर कीड़ी॥१६॥
खावो, पीवो, सू घो, कोहाफाई न बाकी राखी ।
तमाकू पर टूट पड़ो ये ज्यूं मिसरी पर माखी ॥१७॥
झाड़ जाता बीड़ी पीवे धुवा ना गिट जावे ।
धाका सरीखा सुलगा र मारे कोर निजर नहीं आवे॥१८
काटो दास सोच को दीक्यो बात सुणोजी मोदी ।
सब की यांची बीड़ी पीवो वणना तो ना सोधी ॥१६॥

ऊंच नीच सब बीड़ी बांधे बेचे सिरे बाजार ।
उण बीड़ीना पीवो कंथ थाना लाख लाख धिरकार॥२०
चरस, धतूरो, गांजो, आफू, इण सोबत सुं सीखे ।
कंचन जैसी काया बिगड़े पछां बैठकर भींके ॥२१॥
धन और धर्म बिगड़सी थांको फेर बिगड़सी काया ।
अकल बिगड़ आधी रह जासी जिणसुं मे समझाया॥२२
कांई फायदो होवे इण सुं साची बात बतावो ।
जाण बूझ मूरख बणोर क्यु धन को धुंवो उठावो २
एक बीड़ी के कारण र थे अपणी जीभ हरावो ।
ढकणी मांयां नाकडुबो कर क्यु ना थे मर जावो॥२४॥
थे सायबजी जरदो खावो मांया मिलावो चूनो ।
मुँडो थांको इसड़ो बासे जाणे जाजरू जूनो ॥२५॥
पोर बिगाड़्यो आंगणोरे थे खाय बिगाड्या खूंणा ।
सूंघ बिगाड़्यो नाक ना र बरज्यासुं होवो दूणा ॥२६॥
पंडित होकर बीड़ी पीवे टाबर बिगड़े सारा ।
बरजां तो उलटी यूं कहव पीवे गुरू भी मारा॥२७॥
इसड़ो खोटो असर पड़े है छोरां ऊपर थांको ॥
अब तो बीड़ी और चिलम न तोड़ फोड़ कर फांको॥२८
भला काम की सीख देवणो यो पंडित को काम ।
कोरो पंडित नाम धरा कर क्युं होवो बदनाम॥२९॥

हुका ज्यु थुं उणमणो र धारी धूदण देनों सेव ।
दोड़ दोड़ सब आवसी र ज्यु दौडो ऊपर देह ॥१०
जो कोई बामण पीव तमाखू बणना देवे दान ।
बामण गांव गडसूरो होसी नरक पड़े जुजमान॥११॥
एक बरस मां बीस रूपीया रोड तमाखू लूटे ।
तो भी पेठ हताई ऊपर कंथ तमाखू कूटे ॥१२॥
साधु, बामण, पंडित, पुजारी वे भी बुरी बतावे ।
आदत पड़गी छोड़सीर यांकी यु कह कर पछतावे॥१३
वेद, डाकदर, हकीम, जर्रा, ये भी नहीं सरावे ।
ना मानो तो पूछ ज्योर तमाखू जहर बतावे ॥१४॥
हिंदु, आरया मुसलमान, और जैन धरम धुधकारे ।
तोभी नकटा पणो धार ज्यु पड़ा तमाखू लारे॥१५॥
खांसी सांसी, रोग होवसी पड़सी घणो म्वसार ।
बस्यो तमाकू पीया माथा काई काढो सार ॥१६॥
तमाखू ऐसी रूखड़ी जींरा लांबा लांबा पात ।
चाल रूप्यां को मानवीया देटा मांडे हाथ ॥१७॥
मोटयार पाछो केवे है—
तमाकू और बीड़ो पीकर नहीं लगातो दागो ।
कबजी तथो दरद है मारे जिण सूं पीया लागो॥१८॥
लुगाई केवे—
कबजी को तो रोग बुरो है बात आपकी सांची ।
छोड़ो बीड़ी और तमाखू दवा बताउं आछी ॥१९॥

हरड़ै, बहड़ां, आवला रयो चूर्ण खावो आप ।
उठत ही परभाते थानां दस्त लागसी साफ ॥४०॥
जो इण सूं नहीं होय फायदो तो मतना घबराओ ।
सोना मखी का पानड़ा फिर कालो लूण मिलावो॥४१
बादी को सब रोग मिटासी कबजो दूर हटासी ।
सोती बगत रात का पाणी संग ज्यो चूर्ण खासी॥४२॥

लुगाई मन में केव—

दीनानाथ दयाल प्रभुजी एक अरज है थांने ॥
अब के बीड़ी बाज खांवंद के मति पटकज्यो पाने ॥
थांकी प्यारी बाजुं ढोला जिण सुं अरज करी है ।
झूंठी बात एक नहीं इण में सबही खरी खरी है॥४३॥
मानो तो या सीख भली है ना मानो तो मरजी ।
मै तो मारी तरफ सुं र थाना साफ सुणादी अरजी॥४४
थांको मांको घर नहीं न्यारो जिण सुं कहणो थांने।
ऊंच नीच कोई बात कही तो माफ करी ज्यो माने॥४५

मोटयार केवे—

हरड़े, बेड़ा, आवला र यो चूरण नितका खास्युं ।
समझ तमाकू सूगली र मे कद्या न नेड़ो जास्युं॥४६॥
सास चढे शक्ति घटैजो कफ पड़े ज्युं राद ।
कह नंदराम तमाखू छोडो इण मां कांई स्वाद ॥४ ॥

नाम मारो नंदराम है सजी मानदास का जाया ।
गुलायदासजी गुरु की किरपा गीत जोड़कर गाया॥४८॥
गांव भामोला कहीजे मारो पोस्ट मसूदो शहर ।
पोकरजी के पास ही र यो जिलो जाण अजमेर॥४६॥
पोथी वाचे इण पता सुं कागद देर मगाज्यो ।
पोथी पढ़ज्यो प्रेम सु र ये सपने याँस सुणा ज्यो ॥५०॥
कातो सुदी अष्टमी आयो चन्द्रवार सुखदाई ।
उगणी सौ पचायव र या पोथी लिखर छपाई ॥५१॥

भजन तमाखु को

राग—मेरे प्रभु अवगुन चित न धरो, समदर्शी है नाम तुम्हारा सोई पार करो ।

टेर ॥ तमाखू व्यसन महा दुःखदाई ॥ खाना पीना और सूंघना सब की करो जी विदाई ॥
पीनमें हा हिंसा भारी, खा कर सारी भीत बिगारी, सूघ के नाक सड़ाई ॥ तमाखू व्यसन ॥१॥ पहला धन का नाश कराती, दूजा तन में रोग लगाती, तीजा धर्मे मथाई ॥तमाकू॥२॥ चोथी अकल की होवे हानी, पंचम पेठ बिगाड़े मानी, छटवीं झूंठम खाई॥तमाकू॥३॥ सप्तम गुरु को साथ भवाती, हाथ होंठ कपड़े म चवाती, दे घर घर भीख मगाई ॥ तमाकू ॥
॥ ४ ॥ यह जिसके पीछे पड़ जाती, और यात

तमाखू के विषय में धर्मशास्त्र, धर्माचार्य, कवि, वैद्य, डाक्टर आदि देशी तथा विदेशी महानुभावों की सम्मति।

धर्मशास्त्र

तमाखू निषेधसे —

पद्म पुराण श्लोक—

धूम्रपान रत विप्रं दानं कुर्वन्तियेनराः
दातारो नरक यान्ति ब्राह्मणो ग्राम शूकरः ॥ १ ॥

अर्थात् जो ब्राह्मण तमाखू का पीने वाला हो और उसे यदि कोई पुरुष दान दे तो वह दाता पुरुष तो नरक में जाता है और वह ब्राह्मण ग्राम शूकर की योनी पाता है।

ब्रह्मपुराण-तमालपत्र भक्षितं येन स सगच्छेन्नर कार्णवे

अर्थात् जो मनुष्य तमाकू खाता है वह घोर नरक में जाता है।

महात्मा कबीरजी

कबीर उपासना नाम की पुस्तक में लिखते हैं।

भांग, तमाखू, छूतरा, आफू और शराब।
कौन करेगा बंदगी ये तो भये खराब ॥ १ ॥
पानी पिरथी के हते, धुंवा सुन्न के जीव।
हुक्का में हिंसा घणी क्यों कर पावे पीव ॥ २ ॥

भजन नम्बर २

तर्ज़—मन भजले नंद किशोर अमर तेरी चोरी रही ॥
इससे बचते रहीयो यार तमाखू विसन बुरा ॥
धन की ख्वार करत इक छिन में,
उड़त धुए को बयकार ॥ तमाखू ॥१॥
धर्म घटासी रोग बढ़ासी,
खांसी और बुखार ॥ तमाखू ॥ २ ॥
भीख मांगना यह सिखलाती,
एक बीड़ी देयो सरकार ॥ तमाखू ॥३॥
सब की झूंठन तुम्हें चखाती,
हुक्का पीवो कर प्यार ॥ तमाखू ॥ ४ ॥
गांजा चरस पीना सिखलाती,
सूंघे पागल पने की बहार ॥ तमाखू ॥५॥
एक बर्ष में एक अर्ब की पीते,
भारतीय नर-नार ॥ तमाखू ॥ ६ ॥
हानि लाभ को नाहीं विचारे,
निश्चय निपट गंवार ॥ तमाखू ॥ ७ ॥
हिन्सा कम करे नर मूरख,
दीन्ही दया को बिसार ॥ तमाखू ॥ ८ ॥
कहे मदराम इसके सेवन से,
होते अनेक विकार ॥ तमाखू ॥ ९ ॥

लीजो मती ॥ कभी ॥ ४ ॥ जाता है पैसा गांठ का फिर होती बीमारियां । चोथमल कह छोड़ दो भारत के नर और नारियाँ । सुनके बात को मेरी तुम खीजो मती ॥ कभी ॥ ५ ॥

जैन मुनी श्री खूबचन्दजी महाराज श्री जैन स्तवन मनोहर माला से ।

राग ख्याल की टेर—बदबू की लपटा मुख से निकले पिया छोड़ तमाखू ।

॥ दोहा ॥

महीना की महीने धरो र थे एक रुपया पर आग ।
एक वरस का खरच मेरथांके होवे सभी पोसाग ॥१॥
हाथ, होठ, कपड़ा, जलेरे थारो जले कलेजो दंत ।
बार बार मैं मना करूं मत पियो तमाखू कंथ ॥२॥
भेला होय हताई ऊपर सुलफा, चरस उडावे।
लाभ खरच जाणो नहीं र थाने मूरख लोग बतावे ॥३॥
भर भर कुरला नाको पीक रा सूग न आवे कोय ।
दिखण और गुजरात देश मा ऐसो जरदो होय ॥४॥
नीप्यो ढोल्यो आगणो रे थे सब कर दीनो कालो ।
सारा घरमें राख बखेरी बल्यो माजनो थारो ॥५॥
फोड़ो चिलम और ढोलो तमाखू सीधी तरां समझाऊं
घरमें होसी फायदोर थाना कहसी लोग कमाऊं ॥६॥

छाजन, भोजन हक है, और अनाहक खेय,
आपन दोजख जात है, और न दोजख देय ॥ २ ॥

किसी कवि ने कहा है—

नशा न नर को चाहिये, द्रव्य बुद्धि हर लेय ॥
एक नशा के कारणे सब जग तारी देय ॥

जैन धर्म के प्रसिद्ध वक्ता मुनी श्री चौथमलजी महाराज जैन सुबोध गुटिका से।

तर्ज—सियाराम अयोध्या बुलाओ मुझे।

कभी भूल तमाखू ये पीज्यो मती, पीने वालों का संग भी कीज्यो मती। है बुरी यह चीज ऐसी स्वर नहीं खाता इसे। इन्सान होकर पीने को तू किस तरह खाता इसे। इसको जाम अशुद्ध चित दीज्यो मती ॥ कभी ॥ १ ॥ देख पीते और को आते हैं वहाँ पर दौड़ कर। चाहे जैसा काम हो पीवेगा उसको छोड़ कर। ऐसी आदत पै हर दम रीझो मती ॥ कभी ॥ २ ॥ ब्राह्मण से लेकर शूद्र तक की एक हो जाती चिलम। शुद्धता रहती नहीं दे छोड़ तू मत कर विलम्ब। अपने कर से चिलम कभी छूओ मती ॥ कभी ॥ ३ ॥ दाता तमाखू दान यह दाता नरक में जायगा। देखो पुराणों में साफ लिखा तुम्हें मिल जायगा। मिले मुफ्त तोभी तुम

और ख़राब। थे सबही क्युं उलसूंधो खावो तुरत छोड़ दयो आप ॥मत०॥ जरदो खावे चूनो खावे जिण मुं बिगड़े दंत॥पद्मण बोली थूकथूंक क्यों जगां बिगाड़ो कंथ ॥ मत० ॥ मगज सडांवण वाली यातो रही नासका दीख ॥ कपड़ा बासे आपका कोई आवे छीक पर छींक ॥ मत० ॥ हुक्को, बीड़ी, चिलम, पींये सो घर घर मांगे भीख । चले बायरों उडे तण गारी नहीं पीवण में ठीक ॥ मत० ॥ ४ ॥ लारे लागे घणी मादगी घर रा पैसा जावे । लोग हंसे और घर में हानी श्रीनाथ समझावे ॥ मत पीवो ॥ ५ ॥

जैन कवि हंसराजजी करणवटा जोधपुर—

तज—गो पालन हिंदु जाति को सिखला दिया बसी वाले ने

मत पीवो तमाकू आप आज रामायण सीख सुनाती है
वृथा धन को क्यों खोते हो सोते में आन जगाती है ॥
बदबू मुंह में फैलाती है, चहरे की चमक हटाती है ।
धर ध्यान खूब तुम देखो यार सीने में आग जलाती है॥१
जब बायड़ तुम को आती है वो सहन करी नहीं जाती है।
बीड़ी के खातिर यार तुम्हें जन २ से भीख मंगाती है ।२।
सोवत बीड़ी जागत बीडी टट्टी में याद दिलाती है।
ऊपर नीचे फक फक फक अंजन सा धुवां उडाती है॥३॥
पैसे का बूरा उड़ाती है और बेशहूर बनाती है ।
यह हंसराज चेताता है तुम्हें नरकों बीच पठाती है॥४॥

छोडो तमाखू जोसुख पावो सुकरीया समझाई ॥
महामुनी मदनलाल तणा शिष्य जैयपुर जोड़ बणाई ॥७॥

कवि–शालिगरामजी (मारवाड)

कवित–जितनो खरच करो सुगली तमाखू पर येते दाम जोड़ जोड़ घर में धरीजिये धन को धुंआं उठाय हाथ होठ पालो मतो, पिस्ता, बिदाम, घोट दूध, घत, पीजिये ॥ साफी को लपेट कर सुलफा झपेट पीओ, खासी रोगफेट में न फोगट मरीजियो धनको बिगाड़ होय फायदो न यामें कछु चुर्ट, सिग रेट थोड़ी मेट कर दीजिये ॥

कवि मारवान् जी जोधपुर (समर काव्य) से

कुंडलिया

समझ तमाखू सुगली कुतो न खावे काग, ऊंट,टाट,खावे नहीं अपणों भाग्य अभाग ॥ अपणों जाण अभाग गजब नहीं खाय गधेडो ॥ सूकर मुडो समझ निपट खावे नहीं नेडो ॥ सुरा पशु पचजाय अहर्निशि खायन आखू ॥ यहा शरम की बात अको नर पीवे तमाखू ॥ १ ॥

जैनकवि मीनायमजी मोदी (जोधपुर) सुमर्गीत पहला भाग ।

राग ख्याल की टेर—मत पीवो तमाखू मुंडारी आवे मूडी वासना । तमाखू में मोटा औगुण खोटा

और खराब। थे सबहो क्युं उलसूंघो खावो तुरत छोड़
द्यो आप ॥मत०॥ जरदो खावे चूनो खावे जिण सुं
बिगड़े दंत॥पदमण बोली थूकथूंक क्यों जगां बिगाड़ो
कंथ ॥ मत० ॥ मगज सडांवण वाली यातो रही
नासका दीख ॥ कपड़ा वासे आपका कोई आवे छींक
पर छींक ॥ मत० ॥ हुक्को, बीड़ी, चिलम, पीये सो
घर घर मांगे भीख । चले बायरों उडै तण गारी
नहीं पीवण में ठीक ॥ मत० ॥ ४ ॥ लारे लागे घणी
मांदगी घर रा पैसा जावे । लोग हंसे और घर में
हानी श्रीनाथ समझावे ॥ मत पीवो ॥ ५ ॥
जैन कवि हंसराजजी करणवटा जोधपुर—

तर्ज—गो पालन हिंदु जाति को सिखला दिया वसी वाले ने

मत पीवो तमाकू आप आज रामायण सीख सुनाती है
वृथा धन को क्यों खोते हो सोते में आन जगाती है ॥
बदबू मुंह में फैलाती है, चहरे की चमक हटाती है ।
धर ध्यान खूब तुम देखो यार सीने में आग जलाती है॥१
जब बायड़ तुमको आती है वो सहन करी नहीं जाती है।
बीड़ी के खातिर यार तुम्हें जन २ से भीख मंगाती है ।२।
सोवत बीड़ी जागत बीड़ी टट्टी में याद दिलाती है।
ऊपर नीचे फक फक फक अंजन सा धुवां उडाती है॥३॥
पैसे का बूरा उडाती है और बेशहूर बनाती है ।
यह हंसराज चेताता है तुम्हें नरकों बीच पठाती है॥४॥

जैन कवि धीरजमलजी (जोधपुर) कृत गीत नवमा भाग।

राग—सिया राम अयोध्या पधारो मुझे। मत पीवो तमाखू लजाया करो, पिछी हुक्के से हेत हटाया करो ॥ पीना खाना सुंघना तीनु बुरा है छोड़ दो ॥ श्वान, खर, खाते नहीं इन्सान हो मुख मोड़ दो। जगली आदत को आप मिटाया करो ॥ सीखना पड़ता है इससे भीख घर घर मांगना ॥ मर खा रहे हैं गालियाँ घर नारियां करती मना ॥ नहीं श्यान के ढंग कराया करो ॥ मत ॥ २ ॥ धिक्कार उन मास्टरों को आप जो बीड़ी पियें ॥ पड़ता असर कितना बुरा उन स्कूल के पत्रों के लिये ॥ ऐसी शिक्षा का आग लगाया करो ॥ मत ॥ ३ ॥ चिलम भरी जहां देखते हैं लोग आते दौड़ कर ॥ होते इकट्ठे इस तरह क्यों देख मुर्दे ढोर पर ॥ ऐसी मजलिस को माचिस यमाया करो ॥ मत ॥ ४ ॥ चाखते झूठा परस्पर भ्रष्ट होकर धर्म से ॥ नष्ट होता स्वास्थ्य भी ऐसे अनिष्टित कर्म से ॥ नहीं आप असभ्य कहाया करो ॥ मत ॥ ५ ॥ सिगरेट में गाढे पसीने की कमाई जा रही ॥ ऐसे कपूतों के खर्च स हिन्द मा दुःख पा रही ॥ धीरज फक फक न धुवा उड़ाया करो॥ मत ॥६॥ तमाकू निषेध से-

श्री स्वामी आलारामजी सागर सन्यासी नशा खंडन चालीसी में लिखते है।

॥ दोहा ॥

भाग महात्म में लिखा सुजनो मन चित लाय,
अभी तमाखू की कथा सुनो विरोध मिटाय॥१॥

छन्द घनाक्षरी—

डाढी जले मूंछ जले शिखा और सूत्र जले, नोट जले हुन्डी जले, धूमर के पान से॥ आंख और कान जले नाक और जबान जले शौक और छान जले धूमर के आन से॥ कंठ जले तालु जले छाती और माथा जले, नाडी बीच धूंआ फसे हुक्के की कृशान से॥ दांतन की पांत और कांत जले होठन की, हुक्के से हटा सो हटा जगत झूंठ खान से॥१॥

हाथ जले पैर जले पेट और पीठ जले,
खाक होवे गुप्त अंग हुक्के की तपान से॥
दिल होवे श्याह और अकल भी स्वाहा होवे,
ईश्वर की चाह जले हुक्का गुड़ कान से॥
धोती जले पाग जले रेशमी दुपट्टा जले,
नीचे का गदेला जले हुक्के बेईमान से॥
जिस्म की आब और कलेजे का कबाब जले,
हुक्के से हटा सो हटा जगत झूंठ खान से॥२॥

(११) महात्मा गांधी अपनी आत्म-कथा में लिखते हैं, कि "मैं सदा इस टेव (तमाखू पीने की आदत) को जंगली, हानि कारक, और गन्दी मानता आया हूं। अब तक मैं यह न समझ पाया, कि सिगरेट, बीड़ी, आदि पीने का इतना जबर्दस्त शौक दुनिया को क्यों है, रेल के जिस डिब्बे में बहुतेरी बीड़ियां फूंकी जाती हों, वहां बैठना मेरे लिये मुश्किल हो जाता है, और उसके धूंए से दम घुटने लगता है"

यही महात्माजी "दक्षिण-आफ्रिका सत्याग्रह" नामक पुस्तक में एक जगह एक पुराने दम के बीमार का जिक्र करते हुए लिखते हैं, कि मैंने एक बूढ़े पुरुष को, जो श्वास, और खांसी की बीमारी से बिलकुल ही जर्जरित हो गया था, और जो तमाखू का पक्का ही भक्त था, उससे मैंने तमाखू के व्यसन से बिलकुल दूर रहने की सलाह दी, तथा कड़ी देख-रेख रखने के पश्चात मैंने उसे इस दुर्व्यसन से बिलकुल अलग भी कर दिया, बस फिर क्या था, वह रोगी एक ही महिने में पूर्ण निरोग हो गया।

रसीले--भजन

नं० १

(तर्ज—छोटे से वलमा मेरे आंगना में गिल्ली खेले)

ऋषभ कन्हैया लाला, आंगना में रुम झुम खेले ।
अखियन का तारा प्यारा, आंगना में रुमझुम खेले ॥ध्रु०॥

इन्द्र इन्द्रानी आई, प्रेम धर गोदी में लेवे ।
हंसे रमावे करे प्यार, दिल की रलियां रेले ॥ १ ॥
रत्न पालनिये माता, लाल ने झुलावे झूले ।
करे लल्ला से अति प्यार, नहीं वो दूरी मेले ॥ २ ॥
स्नान कराई माता, लाल ने पहिनावे झेले ।
गले मोतियन का हार, मुकुट सिर पर मेले ॥ ३ ॥
गुरु प्रसादे मुनि, चौथमल यों सबसे बोले ।
नमन करो हरबार, वो तीर्थंकर पहिले ॥ ४ ॥

नं० २

(तर्ज तुमको लाखों प्रणाम)

देवी हिन्द विख्याता, तुमको लाखों प्रणाम ।
धन धन सीता माता, तुमको लाखों प्रणाम ॥ ध्रु० ॥

धर्म पतितमत पूर्ण मिटाया, अग्नि का भय शीघ्र बुझाया।
जग सारा यश गाता, तुमको लाखों प्रणाम ॥ १ ॥
होते नाम राम के पहले पाला धर्म कष्ट सब झेले।
राम चरित दर्शाता तुमको लाखों प्रणाम ॥ २ ॥
जिन२ ने यह धर्म निभाया उनके हुआ सभी मनभाया
सुर नर शीश नमाता तुमको लाखों प्रणाम ॥ ३ ॥
हिन्दुस्तान किशनगढ़ मांही महिमा सोहन मुनि ने गाई।
हुकम मुनि गुणगाता, तुमको लाखों प्रणाम ॥ ४ ॥

नं० ३

(तर्ज—तेरे पूजन को भगवान् बना मन मन्दिर आलीशान)

करने भारत का कल्याण पधारे वीर प्रभु भगवान ॥ ध्रु० ॥
जन्मे सिद्धार्थ के घर में, त्रिशला देवी के उदर में।
सुरांगना गाया मंगल गान पधारे वीर प्रभु भगवान ॥ १ ॥
छाया पापों का अन्धकार आती जग की भरी पुकार।
पकड़े दिव्य शक्ति कोई आन पधारे वीर प्रभु भगवान ॥ २ ॥
हिंसा झूठ अदत्त मिटारो अहिंसा परम धर्म को धारो।
दीना दुखियों को देत्राण पधारे वीर प्रभु भगवान ॥ ३ ॥
सुरभित गुलशन जैन खिलाया सींचन कर सरसब्ज बनाया।
महकते धर्म पुष्प अति महान पधारे वीर प्रभु भगवान ॥४॥
चौथमल कहे सुनो सब प्यारे अपनाओ वीर शरण के नारे।
होगा आतम का कल्याण, पधारे वीर प्रभु भगवान ॥ ५ ॥

नं० ४

(तर्ज—कोई से बलमा मोरे आंगना में गिल्ली खेले)

चौबीसों तीर्थंकर हैं मान से मेरे पियारे ॥ ध्रु० ॥

ऋषभ, अजित, सम्भव नाथ, हो सिरताज हमारे।
अभिनन्दन, भव टाल, भव जल तारण हारे ॥ १ ॥
सुमति, पद्म, सुपार्श्व, हो अवतार हमारे।
चन्दा, सुविधि, शीतल, श्रेयांस हो नैनोंके तारे ॥२॥
वासु, विमल, अनन्त, धर्म जी, गल हार हमारे।
शांति, कुंथु, अरनाथ, मल्ली, मोहन गारे ॥ ३ ॥
मुनि सुव्रत, नमी, नेम, पार्श्व पार उतारे।
महावीर, पुरो मेरी आस, सोहन शरण तिहारे ॥ ४ ॥

नं० ५

(तर्ज—पाइल की झनकार, कोइलिया काहि करत पुकार)

सतगुरुजी समझाय, उमरियां वीती तेरी जाय ॥ ध्रु० ॥
सन्ध्या राग स्वप्न की सृष्टि, क्षण भर में विरलाय ॥ १ ॥
वायुवत् आयु है चंचल, स्थिर रहने की नाय ॥ २ ॥
अंजलि नीर नीर सरिता को, देखत ही ढल जाय ॥ ३ ॥
जग असार, सार नहीं कुछ भी, सार धर्म सुखदाय ॥ ४ ॥
कर शुभ काम नाम हो जग में, नाथु मुनि जितलाय ॥ ५ ॥

नं० ६

(तर्ज—बालम आन बसो मोरे मन में)

यादवनन्द ! बसो मेरे मन में ॥ ध्रु० ॥
नेम कुँवर की सूरत प्यारी, ब्याहन आये राजुल नारी।
सुरनर मघवा देख रहे हैं, कृष्ण मुरारी संग में ॥ १ ॥
पशुअन की करुणा दिलधारी, आप चढ़े जा गढ़ गिरनारी।
यादव सब ही सोच रहे हैं, छाई उदासी तन में। २ ॥
सखियन से कहे राजदुलारी, प्राणेश्वर नहीं दया विचारी।
तन, मन सब कुम्हलाय रहे हैं, तज गये भर यौवन में ॥३॥

इस भव में भक्ति यही करूंगी, परभव शिवपुर जाय वरूंगी।
'मोहन' मन में समाय रहे हैं, 'मोहन' चित्त चरनन में ॥ ४ ॥

नं० ७

(तर्ज—अंधेरिया हो राज सजन रहियो कि जावो)

कलियुग में हो सरकार, जांके पास हो रुपैयो ॥ ध्रु० ॥
नार यार सब करत हैं आदर, आदर करे संसार ॥ जांके० ॥
निर्धनिया को मिले न तरुनी दुल्हा को मिले नार ॥ जांके० ॥
काछू २ सब जन कहते अब होगयो प्रसिद्ध जग में
कालूराम सेठो ॥ १ ॥
गणिका प्रेम बताकर बोले, आओ इधर सरकार !
जो हो पास में रुपैयो ॥ ३ ॥
मोहन मुनि अरु सोहन मुनि कहे, कीजे धर्म-प्रचार
जो हो पास में रुपयो ॥ ४ ॥

नं० ८

(तर्ज छोटे से बलमा मोरे आंगना में गिल्ली खेले)

पार्श्व प्रभुजी मेरे चित्त को लुभाने आये ॥ ध्रु० ॥
बनारस नगरी माहीं स्वर्ग से प्रभु चल कर आये।
स्वप्न चतुर्दश आय, माता को दर्शाये ॥ १ ॥
चौसठ मघवा आई प्रभु को मेरु पे लाये
मिलके सुरांगना नार, मंगल मधुरे गाये ॥ २ ॥
अज्ञान तिमिर प्रभु ज्ञान से हटाने आये।
दया धर्म उपदेश प्रभु फैलाने आये ॥ ३ ॥
तपस्या मुनि मंडल जयन्ती मनाने आये।
मुनि मोहन सोहन आज गुण प्रभु के गाये ॥ ४ ॥

नं० ९

(तर्ज—सुनादे, सुनादे, सुनादे कृष्णा)

फिर आना, फिर आना, फिर आना मोहन रे।
इन गैयों के प्राण बचाना मोहन रे ॥ ध्रु० ॥
हजारों कट रही हैं, प्रति दिन ये घट रही हैं।
बन्धाना२मोहन रे इन दुखियों को धैर्य बंधाना मोहन रे ॥१॥
बिन अपराध मारते हैं, छुरियों से काटते हैं।
छुड़ाना २ मोहन रे, इन गैयों के प्राण बचाना मोहन रे ॥२॥
हिंसा जो बढ़ रही है, दया जो घट रही है।
पिलाना २ मोहन रे, फिर जाम दया का पिलाना मोहन रे ॥३॥
दुनिया जो सो रही है, पाप बीज बो रही है।
जगाना २ मोहन रे, भारत को फिर से जगाना मोहन रे ॥४॥
कहे मोहन ! मोहन आ जा, सुरतिया बताजा।
बताजा २ मोहन रे, वो प्यारी सुरतियां बताजा मोहन रे ॥५॥

नं० १०

(तर्ज—तेरे पूजन को भगवान बना मन मन्दिर आलीशान)

लीना राम यहा अवतार, हुआ घर २ में मङ्गलाचार ॥ध्रु०॥
धन्य है मात पिता नगरी को जन्मे चेत सुदी नवमी को।
बोलो राम की जै नर नार ॥ हुआ० ॥ १ ॥
दशरथ कुल के हैं उजियारे, माता कौशल्या के प्यारे।
कीना देवों ने जयकार ॥ हुआ० ॥ २ ॥
छाया पाप तिमिर घर घर में, प्रकटे भानु सम भारत में।
करने सत्य धर्म परचार ॥ हुआ० ॥ ३ ॥
लगा है ठाठ मदनगंज भारी, मानो खिल रही केसर क्यारी।
कहता चोथमल [illegible]

नं० ११

(तर्ज—बिछूए की)

जन्म आपने पाया आनन्द आयो हो प्रभुजी ।
प्राण प्यारा प्रभुजी नैना से प्यारा प्रभुजी ॥ ध्रु० ॥
इन्द्र सकल मिल आवे मेरु पे लावे हो प्रभुजी ॥ १ ॥
छपन कुमारी आवे मंगल गावे हो प्रभुजी ॥ २ ॥
अवधि ज्ञान लगावे मेरु धुजावे हो प्रभुजी ॥ ३ ॥
कर्म रिपु को हर के मोक्ष श्री वर के हो प्रभुजी ॥ ४ ॥
मोहन सोहन गावे हर्ष मनावे हो प्रभुजी ॥ ५ ॥

नं० १२

(तर्ज—महावीर से ध्यान लगाया करो)

पिया भांग का रगड़ा लगाने लगे
लच्छी कहने पे गाली सुनाने लगे ॥ टेर ॥
मित्र को बुलवा के बैठे भांग तुम छनाय के ।
तैयार कीनी जाम फिर बादाम पिश्ता डाल के ॥
लेकर शङ्कर का नाम पिलाने लगे ॥ १ ॥
जब नशा गालिब हुआ तब नैन ने बदला है रंग ।
मिठाई मंगवाने लगे बाजार से नौकर के संग ॥
कुल्हड़ों में द्रव्य बहाने लगे ॥ २ ॥
नशा में कुछ भी पदार्थ दिखाई देता है नहीं ।
मैं कौन हूं कहां जा रहा हूं, यह ध्यान भी रहता नहीं ॥
फिर तो पत्थर से ठोकर भी खाने लगे ॥ ३ ॥
समझा रही लक्ष्मी पिया, तुम ख्याल दिल में कीजिये ।
चाहो भला तो आज से तुम, त्याग इसको दीजिये ॥
मस्त बोलो भी क्यूं शरमाने लगे ॥ ४ ॥

फिजूल खर्चा भंग का, हित जान कर तज दीजिये।
अनाथ रक्षा में यह पैसा, शोक से तुम दीजिये॥
शुभ चिन्तक नाथू सुनाने लगे ॥ ५ ॥

नं० १३

(तर्ज—मेरे मोला बुलालो मदीने मुझे)

हुकम माता पिता का बजाया करो।
नीति कहती है ध्यान लगाया करो॥ टेर॥
प्रेम से माता पिता का हुक्म पालन तुम करो,
बिन हुक्म के इक कदम भी आगे उठा कर मत धरो।
कर के भक्ति उन्हें तुम रिझाया करो ॥ १ ॥
श्री राम ने माता पिता का हुक्म पालन जो किया,
राज तक को छोड़ कर, वनवास का रास्ता लिया।
कर के अनुकरण उनका बताया करो॥ २ ॥
श्रवण ने माता पिता की, किस तरह सेवा करी,
तोक कर फिरता रहा, नहिं दूर कावड़ को धरी।
ऐसी बातों पे ध्यान लगाया करो॥ ३ ॥
गुरु चौथमलजी का यही कहना, सकल जो भ्रात से,
कहे राम मुनि उऋण नहीं, होते नहीं पितु मात से।
उन के वचनों पे ध्यान लगाया करो ॥ ४ ॥

नं० १४

(तर्ज—जाओ जाओ ए मेरे साधु रहो गुरु के संग)

जाओ २ ए रानी तारा रहो विप्र के संग ॥ टेक ॥
राज महल में रहने वाली कुटिया में रहोगी।
मखमल पर सोती थी, अब तो भूमि पर लेटोगी ॥ १ ॥

सेवा में रहती थी तेरे कई हजारों दासी ।
आज विपद पर आकर कैसे स्वयम् बनोगी दासी ॥ २ ॥
भोजन नित्य नये खाती थी ताजे सरस आहार ।
अब कैसे खाओगी प्यारी रूखा निरस आहार ॥ ३ ॥
मेरी नजरों में मस्तक ही वहां पर कष्ट दिखाता ।
कैसे दूं आज्ञा जाने की हृदय भर भर आता ॥ ४ ॥
और उपाय नहीं है प्यारी सच्ची मैं कहता हूं ।
मजबूरन होकर आज्ञा जाने की मैं देता हूं ॥ ५ ॥
हे रोहित तेरी माता को धीरज सदा बंधाना ।
सत धर्म को नहीं मिटाना इस पर ध्यान लगाना ॥ ६ ॥
धर्म शील का कायम रखना खूब शब्द सुनाया ।
मोहन सोहन सत धर्म से सब-मन भाया ॥ ७ ॥

नं० १५

(तर्ज—आओ आओ हे मेरे साधु प्यारो गुरु के संग)
सुनिये २ हे स्वामी मेरे दासी की अरदास ॥ टेक ॥
महलों की रानी हो कर भी कुटिया में रह लूंगी ।
भूमि पर सोने के दुःख को खुशी २ सह लूंगी ॥ १ ॥
रहती थी सेवा में मेरे दासी और सहेली ।
सत्य धर्म कायम रखने को रहूंगी आप अकेली ॥ २ ॥
यद्यपि आप बना लूंगी पर धर्म अखंड पालूंगी ।
सुखी दुखी जो कुछ होगी समता पर आ लूंगी ॥ ३ ॥
गुरु प्रसादे मोहन मुनि कहे धन्य २ तारा रानी ।
सोहन सत्य धर्म कारण मिली राज रिद्धि सारी ॥ ४ ॥

नं० १६

(तर्ज—गजल)

खिदमते धर्म पर जो कि मर जायगे ।
नाम दुनिया में रोशन वह कर जायगे ॥ टेर ॥
जैसे कर्म करेंगे वहीं जायगे ।
यह न पूछो कि मर कर किधर जायगे ॥ १ ॥
आप दिखला रहे हो किसे तुर श्राया ।
यह नशे घर नहीं जो कि उतर जायगे ॥ २ ॥
टूट जाय न माला कहीं प्रेम की ।
वरना अनमोल मोती बिखर जायगे ॥ ३ ॥
लो अछूतों को छाती लगा हिन्दुओं ।
वरना यह लाल गैरों के घर जायगे ॥ ४ ॥
गर लगाते रहो मरहम प्रेम की ।
एक दिन ज़ख्म उनके भर जायगें ॥ ५ ॥
चाहे मानो न मानो खुशी आपकी ।
हम मुसाफिर यूं कह कर चले जायगे ॥ ६ ॥

नं० १७

(तर्ज—कव्वाली)

न इज्जत दे न अजमत दे न सूरत दे न सीरत दे ।
वतन के वास्ते भगवन मुझे मरने की हिम्मत दे ॥टेर॥
जो रगवत दे वतन की दे जो उल्फत दे वतन की दे ।
मेरे दिल में वतन के जर्रे, जर्रे की मोहब्बत दे ॥ १ ॥
न दौलत दे न दे पुरजोश, दिल शोके शहादत दे ।
जो रो उठे वतन के वास्ते ऐसी तबियत दे ॥ २ ॥

मुझे मतलब नहीं दैरो हरम से दोनों शमा है।
वतन का प्यार है ध्याने सनातन है सनातन है ॥ ३ ॥
न दे सामान एशो इशरते दुनियाँ में तू मुझको।
ज़रूरत है मुझ इस्लामियत होने को गैरत है ॥ ४ ॥
वतन की ख़ाक पर क़ुर्बान होने की तमन्ना है।
जो देता और कुछ देता खुदा बन्दा शराफ़त है ॥ ५ ॥
पिलादे आज प्यालुम को मय इश्के वतन साकी।
कि पीकर मस्त हो जाऊँ इसी पीने की आदत है ॥ ६ ॥

नं० १८

(तर्ज़—बिछुड़ा)

बड़ी कठिन से बल्लभ तुमने पाया हाथे तनजी।
मुक्ति का होसी चेतन जी।।टेर

दोहा—सब पार्टी में भटकियो जीव अनन्ती बार।
पुण्य उदय मानव हुआ देखो आंख उघाड़।
(चाल)—एजी जनम मरण कर अनन्त काल बिताया
हो चेतन जी ॥ १ ॥

दोहा—करते इच्छा देव भी नर की स्वर्ग मझार।
मिले भोग सुख जोल को बल्लभ नर अवतार ॥
(चाल —एजी चिन्तामणि सम रत्न हाथ में आया
हो चेतनजी ॥ २ ॥

दोहा—फंस करके मोह जाल में क्यों करता बरबाद।
गर्भवास के कष्ट को कर भाखी तू याद ॥
(चाल,—एजी अधोमुख नव मास यहाँ बिताया
हो चेतन जी ॥ ३ ॥

दोहा—तिरने का अवसर मिला आम्ब सोच मन होय।
घाटी साटे तेन धो रे प्राणी मत खोय॥
(चाल)—आनी जन यूं सूत्र बीच फरमायो हो चेतनजी॥ ४॥
दोहा—कुमार्ग को छोड़ कर सुमार्ग पर आय।
रामपुरा के बीच में गायो सेखे काल॥
(चाल)—श्रीगुरु प्रसादे वृद्धिचन्द मुनि गायो हो चेतनजी ॥५॥

नं० १६

(तर्ज—रिकार्ड)

छोड़ चले गिरनार नेम बिन कैसे हो मेरी जान जी।
कन्थ बिन कैसे जीऊँगी पिया बिन कैसे जीऊँगी॥ ध्रुव॥
चन्दा बिन ज्यूं चांदनी हां तारा बिन ज्यूं रात।
पुत्र बिन परिवार ज्यूं हां, नमक बिना ज्यूं भात॥ २॥
सावन में बदली झरे ज्यूं हां नैना बरसे नीर।
पन औगुन तज के गये हां, कौन बधावे धीर॥ १॥
म पीहर तुम सासरो, हां तुम बिन कौन अधार।
तुम बिन जग सूनो सभी हां खाव पान सिनगार॥ ३॥
राजुल की कुछ ना सुनी हां पशुओं सुनी पुकार।
नाथु मुनि कहे जा मिलि हां राजुलजी गिरनार॥ ४॥

नं० २०

(तर्ज—मैं बन की चिड़िया)

क्यों बन की कोयल आज न बन में बोली रे॥ ध्रुव॥
चलती थी चाल निराली डोले तू डालीडाली।
वह फूल फूल पर, झूल झूल॥
करती किलोल थी आज कहां पर सोली रे॥ १॥

है बसन्त ऋतु की रानी है पुष्प भव शोक भुलानी।
कूह कूह पुकार बार बार ॥
रे हर्ष भीख भर देती हृदय खोलो रे ॥ २ ॥
मंजरी विकल रोती है, क्यों बहन आज सोता है।
कंचन तू बोल उठ आँख खोल ॥
क्यों रूठी आज न बोलो माठो बोलो रे ॥ ३ ॥
माला बन्द कराये पर, हैं पड़ी दूर भूमि पर।
फिर भी है ज्ञान देती ज्ञान ॥
मैं क्या हूं आज पक प्रिम सब की होली रे ॥ ४ ॥

नं० २१

(तर्ज—बिछुड़ा की)

नेमजी के कारण बन में चली हो बावलिया।
सहरदार डूंगरियां महलों से प्यारी डूंगरियां ॥
दोहा—जूनागढ़ उग्राहन चले भा श्री नेम कुमार।
रास्ते में शकेन्द्र ने खोलो माया जाल ॥
(चाल—चली पद्युमन के कारण गिरवर चढ़ गया
हो बावलिया ॥ १ ॥
दोहा—लिख मेरा बदल गया रथ का फिराना सुनके।
टपटप आंसु गिरने लगे नेम का जाना सुनके ॥
(चाल)—पड़ो पद्युमन के कारण कंकन तोड़ा
हो बावलिया ॥ २ ॥
दोहा—तोड़े कंकण डोरड़ा तोड़ा नवसर हार।
पान सुपारी काजल टीकी त्यागो सब सिंगार ॥
(चाल)—माताजी कहे जिन तोड़ा मारी हो बावलिया ॥ ३ ॥

नं० २२

(तर्ज—चन्द रोज)

जब तेरी डोली निकाली जायगी ।
बिन मूहुर्त के उठाली जायगी ॥ टेर ॥
उन हकीमों से यों कह दो बोलकर ।
करते थे दावा किताबें खोल कर ॥
यह दवा हरगिज न खाली जायगी ॥ १ ॥
जर सिकन्दर का यहीं पर रह गया ।
मरते दम लुक्मान भी यूं कह गया ॥
यह घडी हरगिज न टाली जायगी ॥ २ ॥
हो गया परलोक में तेरा हिसाब ।
कैसे मुकरोगे जनाब तुम वहां ॥
जब खाता बही तेरी दिखाली जायगी ॥ ३ ॥
ऐ मुसाफिर क्यों पसरता है यहां ।
है किराये पर मिला तुझको मकां ॥
कोठडी खाली करा ली जायगी ॥ ४ ॥
क्यों गुलों पर हो रही बुलबुल निसार ।
है खडा पीछे वह मालिक खबरदार ॥
मार कर गोली गिरा ली जायगी ॥ ५ ॥
चेत भैया लाल अब जिनवर भजो ।
मोह रूपी नींद को जल्दी तजो ॥
तो आत्मा परमात्मा बन जायगी ॥ ६ ॥

नं० २३

(तर्ज—छोटा सा बलमा मोरा आंगना में)

कृष्ण कन्हैया लाला आंगना में गेंद खेले ॥ टेर ॥

प्रेम से यशोदा मैया लाल ने गोदी लेवे।
करे मोहन का मैया प्यार कोमल कर में लेवे ॥ १ ॥
गेंद रमन आवे ग्वाल के बालों का लेवे।
जमना किनारे खेले खेल कर में डंडा लेवे ॥
मुकुट बिहारी बह तो नाग को नाथी को लाये।
कर में उठायो गिरवर आप होगये सब जन भेले ॥ ३ ॥
साधु मुनि की शिक्षा मानो तू जहां में प्रेम।
करें हिन्द में सब याद कीर्ति चहुं दिशि फैला ॥ ४ ॥

नं० २४

(तर्ज—म्हारी छोटी सी उमर लागी पनजीवार लाइयो)

म्हारी छोटी सी उमर गुरुवर थे दिखलाइयो ॥ टेर ॥
तुम अवतरे ५ बरसो ६७ में शिष्य मंडली लाइया।
जयपुर पावन पुनः कराइयो ॥ १ ॥ म्हारी ॥
जिन पाली तुम सुनाया कृपा इतनी तो करइयो।
मैया शिष्य से लिरइयो ॥ २ ॥ गुरुवर ॥
मऊ भूप की सुनायो सैर शिवपुर की करायो।
दया साधु पे रखाइयो गुरुवर दर्श दिखलाइयो ॥ ३ ॥

नं २५

(तर्ज—कव्वाली)

अगर जिन देव के चरणों में तेरा ध्यान हो जाता।
तो इस संसार सागर से बेड़ा पार हो जाता ॥ टेर ॥
न होती जग में ख्वारी न बढ़ती कर्म बीमारी।
जमाना पूजता सारा गले का हार हो जाता ॥ १ ॥

रोशनी ज्ञान की खिलती दिवाली दिल में हो जाती।
हृदय मन्दिर में भगवन का तुझे दीदार हो जाता ॥ २ ॥
परेशानी न हैरानी दशा हो जाती मस्तानी।
धर्म का प्याला पी लेता तो बेड़ा पार हो जाता ॥ ३ ॥
जमीं का बिस्तरा होता व चादर आशमां बनता।
मोक्ष गद्दी पे फिर प्यारे तेरा घर बार हो जाता ॥ ४ ॥
चढाते देवता तेरे चरण की धूल मस्तक पर।
अगर जिनदेव की भक्ति में मन इकतार हो जाता ॥ ५ ॥
राम जपता अगर माला का मणका एक भक्ति से।
तो तेरा घर ही भक्तों के लिये दरबार हो जाता ॥ ६ ॥

नं० २६

(तर्ज—पंजाबी गजल)

सदा बाल तेरे रहेंगे न काले, जो खाखा मलैयों है
माखन से पाले ॥ १ ॥
बना रूप तेरा रहेगा न ऐसा, करोड़ों दवाईयों न
आज तू खाले ॥ २ ॥
खड़ी हो घड़ो शीश ऊपर अजल की जरा मुंह को ऊपर
पे गाफिल उठाले ॥ ३ ॥
बना मल मूत्र का न शुद्ध होना है तूं कितना ही
साबुन से मल २ के न्हाले ॥ ४ ॥
करे क्यों गरूरी फिरे क्यों तू पेंठा, सभी पेंठ तेरी
कजा आ निकाले ॥ ५ ॥
लाखों मुफ्त में यह जन्म अमोलक है वेला बने

चन्दन सुनाता तुम्हे साफ शब्दे, सफल करले जीवन
प्रभु गुण तू गाले ॥ ७ ॥

न० २७

(तर्ज—नाटक)

महावीर मन मोहन प्रभु का, नाम है शान्ति करण सदा ॥ १ ॥
हार्दिक भाव से नमन २ करता हूँ मैं स्मरण सदा ॥ २ ॥
वीतराग त्रिभुवन विभु, भव सिन्धु तारण तिरण सदा ॥ ३ ॥
स्मरण करे तुम नाम हृदय में, मिथ्या कुमत तम हरण सदा ॥ ४ ॥
प्रणमत इन्द्र नरेन्द्र सुरासुर, अर्चित है तुम चरण सदा ॥ ५ ॥
मुनि प्रव सवेश चौथमल दास तुम्हारे शरण सदा ॥ ६ ॥

॥ समाप्त ॥

निवेदन

हमारे परम पुण्योदय से इस वर्ष पूज्य मुनिराज श्री श्री हुक्मीचन्दजी महा. सा. की सम्प्रदाय के जैन आचार्य पं. मुनि श्री कस्तूरचन्दजी महा. सा. के सुशिष्य पं. मुनि श्री पूनमचन्दजी महा. सा. एवं मुनि श्री रामचन्द्रजी महा. सा. आदि ठाणा ३ का चातुर्मास हुआ है। इसकी खुशी में प्रेमी पाठकों की सेवा में यह "रसीले भजन" नामक पुस्तक सादर समर्पित है। आशा है कि पाठक गण इससे अवश्य लाभ की प्राप्ति करेंगे।

प्रकाशक:—
श्री श्वे. स्था. जैन श्री संघ
राम गंज मंडी

त्रिम्मनसिंह लोढा के प्रबन्ध से
श्रीमदजवाहर प्रिंटिंग प्रेस ब्यावर में प्रकाशित।

ॐ

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

पद्य-सरोज

रचयिता.—

जैनदिवाकर प्रसिद्धवक्ता पँ. रत्न मुनि श्री चौथमलजी म० के सुशिष्य मनोहर व्याख्यानी मुनि श्री वृद्धिचन्द्रजी म०

प्रकाशक:—

साईदास घीसूलाल गादिया

मु० ब्यावर.

प्रथमावृत्ति १०००	मूल्य मनन	वीर स २४६६ वि. स १९९६

॥ भूमिका ॥

प्रकृति से ही मनुष्य संगीत प्रेमी है। संसार के दुःखों से पीड़ित व्यक्ति को यदि कोई आराम पहुँचाने वाला है तो वह केवल संगीत ही है। संगीत में वह शक्ति है कि जिससे प्रत्येक व्यक्ति एक अद्वितीय आनन्द की प्राप्ति कर सकता है। विश्व में संगीत कला ने विशेष उन्नति की है संगीत की शक्ति अद्भुत है। अतः प्रत्येक व्यक्ति के लाभार्थ यह छोटी सी पुस्तिका प्रकाशित की जा रही है जिसमें आधुनिक एवं पुराने तर्जों में गायनों की रचना की गई है। उम्मीद है कि प्रत्येक जैनी भाई इससे यथेष्ट लाभ की प्राप्ति करेगा।

भवदीय—

धर्मपाल मेहता,

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

पद्य-सरोज

स्तवन नं० १
(तर्ज-छोटासा वलमा)

शांति प्रभुजी मेरे, शांति के वरताने वाले ॥ टेर ॥
जनम लेते ही प्रभु, मृगी के नशाने वाले ।
सारी दुनियां में, सुयश आप प्रभु ले फैलाने वाले ॥१॥
मुरझित दिलों को स्वामी, आप हो सरसाने वाले ।
घर घर में कीना मंगलाचार, आनन्द करने वाले ॥२॥
सोते हुए को प्रभु, आप हो जगाने वाले ।
भूले हुए को सत्पथ आप, प्रभु दरशाने वाले ॥३॥
वृद्धि मुनि के दिल को, तुम ही हो हरशाने वाले ।
करूँ वन्दन मैं वारम्बार, शिव सुख देने वाले ॥४॥

स्तवन नं० २

(तर्ज—मांड)

प्रभुवीर स्वामी, तुम अन्तरयामी, जगत् में नामीजी आप ॥ टेर ॥ रिद्धिसिद्धि नवनिधि मिले सिद्ध होवे सब काज। मन इच्छित आशा फले कोई, जो ध्यावे जिनराज ॥ हो०॥१॥ जैसे बालक हठ करता है पितु देवे वस्तु लाय। ऐसी आस की मोगवी प्रभु, दीजे म्हार बकसाय ॥हो०॥२॥ वर्द्धमान तुमि करमाये, जिन्दा सूरज धार। रोग शोक दूरा टले, वरते मंगलाचार ॥ हो० ॥ ३ ॥ संवत् तराणु साल में, रामपुरा के मांय। गुरु प्रसादे पूर्णचन्द्र कहे, अरजी सुनो चितलाय ॥ हो० ॥ ४ ॥

स्तवन नं० ३

(तर्ज—सुनावे रे कृष्णा)

सुनावो सुनावो सुनावो गुरुजी जिनवाणी का ज्ञान सुनावो गुरुजी ॥ टेर ॥ श्री जिनवाणी अमिय समानी। पिलावो पिलावो पिलावो गुरुजी ॥ जिन० ॥ १ ॥ जो है शरण तुम्हारी। अरज हमारी बतावो रे गुरुजी सच्ची राह ॥बतावो गुरुजी ॥२॥ मोह नींद में सोय रहे हैं। दुनियां में सब मोह रहे हैं ॥ जगावो जगावो,जगावो गुरुजी, भव्यजियों को शीघ्र जगावो गुरुजी ॥ सुनावो ॥३॥ आगरा शहर के मांही आया। पूर्णचन्द्र मुनि जोड़ सुनाया ॥ सुनावो सुनावो सुनावो गुरुजी ॥ जिन० ॥ ४ ॥

स्तवन न० ४

(तर्ज-गुरुजी माहरो अब के जनम सुधारो)

तपकर सतियों ने धर्म दिपायो, जहां ने जीवन सफल बनायो ॥ टेर ॥ काली, महाकाली, सुकाली को यो, जिक्र सूत्र मांहि आयो। मुक्तावलि तप करके देखो, कैसो जोर लगायो ॥१॥ सती चन्दना ने तप करके, केवल ज्ञान जो पायो। सती रुकमणी तीन खण्ड को, गजब राज्य छिटकायो ॥ २ ॥ सूत्र अन्तगढ़ सुनी ने मुझ ने, अजब अचम्भो आयो। आत्म सबल करने के खातिर, कैसो जोर लगायो ॥३॥ साल बराणु रामपूरे में, आन चोमासो टायो। गुरु प्रसादे वृद्धिचन्द्र मुनि, भजन बनाकर गायो ॥ ४ ॥

स्तवन न० ५

(तर्ज—मोटर वाले रे)

छाय रयोरे २ सुयश हरिश्चन्द्र को ॥टेर॥ सत्य निभावन, रानी को बेची। और बेचारे, काशी में फरजन्द को ॥१॥ धर्म निभावन, हरिश्चन्द्र तो। जाके रयोरे, नौकर मातंग को ॥२॥ सुर प्रगटाया, शीश नमाया। माफी दीजेरे, कीना है अच्छा नन्द को ॥३॥ वृद्धिचन्द्र ने चरित्र सुनाया। आनन्द आयोरे, सुनी ने यह सम्बंध को ॥ ४ ॥

स्तवन न० ६

(तर्ज-अभी दिल तो हमारा)

जिनराज का नाम लिया ही नहीं, प्रभु वाणी का जाम पिया ही नहीं ॥टेर॥ किस लिए पैदा जहां में हुआ तू सनम।

तूने पग पसा तो किया ही नहीं ॥१॥ तूने दीन माहता
दुखियों की सुनी । निज हाथ से दान दिया ही नहीं ॥२
दया से मान दा नाया जनम । बहती गंगा में लाभ लिया
नहीं ॥३॥ कहे वृद्धि मुनि यह अमोल मिली । कुछ प्रभु
से प्यार किया ही नहीं ॥ ४ ॥

स्तवन न० ७
(तर्ज–पनजी मूँढ बोल)

सिद्धारथ नन्दन त्रिशला सुत थी महावीर जिनन्दार ॥टेर
दीन भवन के स्वामी नामी हैं निर्मल ज्यों चन्दारे।
अगम अगोचर रहत करत हैं भव दुख फंदारे ॥ १ ॥
सब मिल आओ गाओ ध्याओ तब सब जग का धंधारे।
परमातम वृद्धि का कर्ता भव दुख हर्ता रे ॥ २ ॥ केवल बुध
हर्ष से चाहूँ नहीं चीर समसार । मिट जावे भव भ्रमण और
दुख आवागमन का रे ॥३॥ आनन्द मंगल सिद्धि दिन वरते
भजिये भविजन वृन्दारे। वृद्धिचन्द मुनि कहे मिले सुख
पग पग आनन्दारे ॥ ४ ॥

स्तवन न० ८
(तर्ज–मेरा दिल अटके में)

यह भूठी दुनियां सारी मेरा दिल ईश्वर में ॥ टेर ॥
स्वारथी कुटुम्बी न साथी बस दिन के । ये पलट जावे सारे
प्यारे पल भर में ॥१॥ होकर दीवाना करे मम माना । भूल
गया जिनजी को फँसकर के घर में ॥ २ ॥ जावे हार सार
एक नाम प्रभु का । नित्य करो याद उसको माला लेकर
कर में ॥३॥ संवत् तराणु में मगन [illegible]या । केवल मुनि
गाया यह तो शहर लश्कर में ॥

स्तवन न० ९

(तर्ज-अरी आह तुझ में)

दशरथ से वाक्य युद्ध, करने को डट गई है।
रंग में यह भंग केकयी कर गई है ॥ टेर ॥
दासी के झांसे में आकर के रानी कैसी वात बेहद राजा से तन गई है ॥ १ ॥ इधर राज तिलक की तैयारी हो रही है। उधर वचन लेने केकयी अड़ गई है ॥ २ ॥ राम, लक्ष्मण, सीता तीनों गए वन में। प्रजा सारी मिलकर आड़ी फिर गई है ॥३॥ कहे वृद्धिचन्द्र सुनो सब श्रोता, आनंद से राज रिद्धि उनको मिल गई है ॥ ४ ॥

स्तवन न० १०

(तर्ज-आशावरी)

करिये पंच पदों का ध्यान, मिलेगी रिद्धि सिद्धि महान ॥टेर॥
सर्व विश्व के बीच में, सार मंत्र यह जान।
एकाग्र शुद्ध चित्त से ध्यावे, तो प्रगटे नव ही निधान ॥ १ ॥
दुःख तिमिर को मेटन ये हैं, जैसे समझो भान।
कल्पवृक्ष चिन्तामणि सदृश, आशा पूरे आन ॥ २ ॥
प्रात काल में पञ्चपदों का करिये नित गुण गान।
आनंद मंगल निशि दिन वरते, कर इसकी पहिचान ॥ ३ ॥
साल तराणु भजन बनाया, शहर आगरा आन।
मुनि वृद्धिचन्द्र कहे स्मरण से, हो जावे कल्याण ॥ ४ ॥

स्तवन नं० ११

(तर्ज-याद तेरी जुदाई का)

मन मोहनी यह सूरत फिर भी तो दिखा देना। तुम तो गए जहां पर मुझको भी बुला लेना ॥ टेर ॥ गोयम गोयम मुझको अब कौन या कहेगा। कोमल मधुर वचन ये फिर भी तो सुना देना ॥ १ ॥ तेरी जुदाई अब तो होती न सहन मुझको। यह दर्द मेरे दिल का अब तो मिटा देना ॥ २ ॥ अंखियां मेरी हैं प्यासी प्रभु तेरे दर्श की। करुणा निधान आकर दीदार दिखा देना ॥ ३ ॥ मांगती यह करता मुनि वृद्धिचन्द्र प्रभु से। देने का वायदा कर विश्वास बंधा देना ॥ ४ ॥

स्तवन नं० १२

(तर्ज-बीछुड़े की)

बिन अवगुण दासी को क्यों छिटकाई हो वालमजी। म्हारा प्यारा वालमजी अवसर रा साथी वालमजी ॥ टेर ॥

दोहा-बनड़ा बन ब्याहन चले यादव कुल शृंगार।
छप्पन क्रोड़ थे संग में आगवा छप्पन मुंरार ॥
पशुवी यादवों का तेज सितारा चमके हो वालमजी ॥ १ ॥
सुर नर भी मोहित हुए, निरख निरख दीदार।
जूनागढ़ में हो रहा घर घर मंगलाचार ॥
पशुवी पशुअन की पुकार सुनी ने फिर गया हो वालमजी ॥२॥
राजुलने संयम लियो नेमि मिलन के काज।
दोनों ही मुक्ति गए सारे आतम काज ॥
पशुवी भव भवों की प्रीति पुरानी पाली हो वालमजी ॥ ३ ॥
संवत् तगस् साल में, शहर आगरा मंझार।
गुरु प्रसादे वृद्धिचन्द्र मुनि गायो पद हितकार ॥
सभी संत गुरुवर के संग में, आया हो वालमजी ॥ ४ ॥

स्तवन न० १३
(तर्ज-वीछुड़े की)

चैत्र सुदी तेरस ने जन्म, लियो शुभ हो, प्रभुजी। मोहनगारा प्रभुजी, सुरनर ने प्यारा प्रभुजी ॥ टेर ॥ दोहा- दशमा स्वर्ग थकी चव्या, त्रशला कुक्ष मझार। माता चतुर्दश स्वप्न ये, देखे हैं श्रेयकार ॥ एजी वर्द्धमान ने वृद्धि सबकी, कीनी हो प्रभुजी। सुर नर ने प्यारा प्रभुजी ॥ १ ॥ चौंसठ सुरपति आयके, लेगए मेरू खास। महोत्सव कीनो प्रेम से, हृदय धरी हुल्लास ॥ एजी सुरंगना ने मंगल मधुरा, गाया हो प्रभुजी ॥ २ ॥ संयम लीनो आपने, तजकर जग जंजाल। सत्पथ तुम दिखलायके, कीना सब को निहाल ॥ एजी तीन लोक में आनन्द आनन्द, छायो हो, प्रभुजी ॥ ३ ॥ संवत् तराणु साल में, आगरा शहर मझार। गुरु प्रसादे वृद्धिचन्द्र मुनि गायो पद हितकार ॥ एजी सावन वदी में प्रभु गुण कथ, दर्शाया हो, प्रभुजी ॥ ४ ॥

स्तवन न० १४
(तर्ज—वारी जाऊरे)

प्यारे मानो मेरी शिक्षा, पुण्य कमावनारे ॥ टेर ॥

दुर्लभ जनम मनुज का पाया, उदय पूर्व पुण्य जो आया। करना सदुपयोग हार मत जावना रे ॥ १ ॥ जिस प्राणी ने पुण्य कमाया, कैसी रिद्धि सिद्धि वह पाया। इतनी सी बात पे करना गौर, विसर मत जावना रे ॥ २ ॥ धन्ना शालिभद्र सुखदाई, पूरव कैसी करी कमाई। ऐसा जग में तुम भी अपना, नाम कमावना रे ॥ ३ ॥ साल बराणु का शुभ आया, आगरा शहर चौमासा ठाया। वृद्धिचन्द्र का दीवाली पर, कथ कर हुआ गावना रे ॥ ४ ॥

स्तवन न० १५

(तर्ज—कोरो काजलियो)

माता सुण लीजो तज दो लालच भर मे मार ॥ टेर ॥
जमनी लालच में भाई, दियो अमर कुँवर को मार ॥ १ ॥
सागर सेठ समुद्र विषे डूब गयो मझधार ॥ २ ॥
लालच से दुर्गति होवे ये सुण लीजो इरबार ॥ ३ ॥
कहे वृद्धिचन्द्र लालच तजो जो चाहो मुक्ति द्वार ॥ ४ ॥

स्तवन न० १६

(तर्ज—पार्श्व वन्दन का)

मिलजाय हमें करतार दुनियाँ दौड़ रही ॥ टेर ॥
रात दिवस तू महनत करतो सहे तो दुःख अपार ॥ १ ॥
मात तात नार ने छोड़ी जावे निरधार मझार ॥ २ ॥
माया जोड़ करी एकठी आवेगा नहीं लार ॥ ३ ॥
वृद्धिचन्द्र कहे माया तजीजो धन्य धन्य है अणगार ॥ ४ ॥

स्तवन न० १७

(तर्ज—पूर्व वत्)

अनमोल मनुष्य तन पाय दुनियाँ खोय रही ॥ टेर ॥
यह चिन्तामणि कर में आयो मूरख दियो गंवाय ॥ १ ॥
करलो जो कुछ करना हो तो फेर मिलेगा नाय ॥ २ ॥
मात तात बांधव सुत दारा यक मिली रे आय ॥ ३ ॥
कहे वृद्धि मुनि धर्म अराधो, तो सब सुख मिलजाय ॥ ४ ॥

स्तवन न० १८

(तर्ज—नाटक)

बूंदे वलमा मेरे हित कहे जानारे, मुझे कुछ तो भोलावन दे जानारे ॥ टेर ॥ बस आपके दर्शन का, अंतिम यह देखा मुखड़ा । उमर भर आप विन कैसे कटेगा यह दुखड़ा ॥ जरा दासी को धैर्य बंध देना रे ॥ १ ॥ मम रक्षा का जहां में, कोई न वसीला है अब तो समझ चुकी मैं भी, मतलब का जमाना है अब तो ॥ तुमको ठीक है संग लेजाना रे ॥ २ ॥ गौर कर देखो तो गफ़लत में ज़माना होयरहा । इसकी हुंकार से भारत यह गारत होय रहा । संभलो वृद्धिचन्द्र का चेताना रे ॥ ३ ॥

स्तवन न० १९

(तर्ज—नाटक)

प्रभु पार्श्व करे, पार्श्व मनाले जिसका जी चाहे । वह है आधीन भक्ति के, वनाए जिसका जी चाहे ॥ टेर ॥ करे मंगल हरे चिन्ता, वह है चिन्तामणी जग में । जिस्म धातु वने कंचन, वनाए जिसका जी चाहे ॥ १ ॥ वह है सब का पिता जग में, खलक यह जानती सारी । आवाजें दुख भरी उनको, सुनाए जिसका जी चाहे ॥ २ ॥ करेंगे वह दया मुझ पर, जो कीनी नाग नागिन पर । नाम से काम सिद्ध अपना, वनाए जिसका जी चाहे ॥ ३ ॥ कहे वृद्धिचन्द्र मुनि सुनलो, हमारे धर्म प्रेमी सब । वह रीझे भाव भक्ति से रिझाए जिसका जी चाहे ॥ ४ ॥

स्तवन नं० २०

(तर्ज—मरी आह मुझमें असर कुछ नहीं है)

पापी से होता धरम कुछ नहीं है, कुमी को आती शरम कुछ नहीं है ॥ टेर ॥ करके चतुरता करे छल कपट तू आगम का जाने मरम कुछ नहीं है ॥ १ ॥ अहर्निशि करते ज़ालिम ज़ुलम को होते ज़रा शुभ करम कुछ नहीं है ॥ २ ॥ कहे वृद्धिचन्द्र सुनो, आगरा के श्रोता । मुक्ति मिलाना स्याम परम कुछ नहीं है ॥ ३ ॥

स्तवन नं० २१

(तर्ज-छोटी मोटी सुइयाँ रे)

[रामचन्द्रजी से हनुमान का कथन]

सुनजो हनुमन्त वीर लंका में शीघ्र जावना ॥ टेर ॥ मेरा प्यारी से जाकर कहियो राम आनन्द के मांय । कुशलता सुनावना ॥ १ ॥ मुद्रिका दीजे करिके हमारी हां करिके हमारी । विलम्ब न कीजे खिणगार खबर तो वेग लावना ॥२॥ रात दिवस सिया बस यही चिन्ता में । वेग मिलूंगा आय ऐसी आप सुनावना ॥ ३ ॥ चले वहां से हनुमन्त योद्धा । कूदे समन्दर खास लंका में हुआ आवना ॥ ४ ॥ बैठे जाकर के तरुवर डाली । रूप कपि को धार, मुद्रिका छिटकावना ॥ ५ ॥ पड़ गई जाकर सिया की गोद में । प्रेम से लीनी उठा य हर्ष हृदय में आवना ॥ ६ ॥ पाछे में पीछे आया चूड़ामण दीना सन्देश सुनाय फली है मन भावना ॥ ७ ॥ वृद्धिचन्द्र कहे गुरु प्रसादे । आगरा शहर में आय आनन्द बरसावना ॥ ८ ॥

स्तवन न० २२

(तर्ज-छोटे से बलमा मोरे)

छोटा सा लल्ला मेरा आज, यह तो संयम लेवे ॥ टेर ॥
वाणी सुणी ने कुँअर आय कहे, तू आज्ञा दे दे।
लेऊँगा मैं तो संयम भार वह तो हंसकर केवे ॥ १ ॥
श्रवण करीने माता आसू भर, कुँअर ने केवे।
मत छोड़ो हमें निराधार, यह तो रोकर केवे ॥ २ ॥
दुनियां है भूठी सारी, सत्य यूं माता से केवे।
आवे धरम इक लार, सरण इसकी लेवे ॥ ३ ॥
वृद्धिचन्द्र धन्यवाद यूं कुंअर ने देवे।
कीना निज आतम का कल्याण, आगम यों ही केवे ॥ ४ ॥

स्तवन न० २३

(भारत में फिर से आजा)

दिल में तो गौर करना, जैनी कहाने वाले। पापों से दिल हटाना, धर्मी कहाने वाले ॥ टेर ॥ जैनी वही कहाते, राग द्वेष को नशाते। कर्तव्य ना भुलाते, साहस पे चलने वाले ॥१॥ दिन रात पाप करते, परलोक से न डरते। कन्या पे जुल्म करते, कलदार लेने वाले ॥ २ ॥ सत् धर्म पर जो रहते, दुनिया में चित न देते। वे ही स्वर्ग सुख को लेते, नेकी पे चलने वाले ॥३॥ वृद्धिचन्द्र मुनि का कहना। सुनकर के ध्यान देना। खर्चे को साथ लेना मंडी के रहने वाले ॥४॥

स्तवन न० २४

(तर्ज—हो जाओगे बदनाम जमाना नहीं अच्छा)

सोये हुये शेरों को जगाना नहीं अच्छा। नाग के बच्चों को खिलाना नहीं अच्छा ॥ टेर ॥ गिर जाओगे नजरों से,

गिने जाओगे मूर्खों में। आगी पे कदम अपना बढ़ाना नहीं अच्छा ॥ १ ॥ जो छेड़ेंगे हाथों से सजा पायेंगे लातों से। जेलों में जाके, बड़े दिखाना नहीं अच्छा ॥२॥ कहे वृद्धिचन्द्र समझो समझा रहे तुम्हें। चरों में नाम अपना लिखाना नहीं अच्छा ॥ ३ ॥

स्तवन न० २५
(तर्ज—बीछूड़े की)

काया पिंड यो काचो थे मत राचो हो चेतनजी।
ज्ञानघाम चे० शुभ ध्यानघाम चेतनजी ॥ टेर ॥ दोहा ॥
सदा काल स्थिर ना रहे, ज्यों कुम्हार को काम
होत पलक में पलटना देखत सन्ध्या भान।
एजी सूत काल से शामी जग यू सांच्यो हो ॥ चेतनजी ॥१॥
इन्द्र धनुष की ओपमा ओस के बिन्दु समान
बार नहीं बिन सत लगे ज्यों पीपल को पान।
एजी पर पुद्गल से लागे यो तन काचो हो ॥ चेतनजी ॥२॥
महा अशुचि मल मूत का, प्रभु ने कहा पिछार
रात दिवस झरता रहे देखो नित नव द्वार।
एजी रोग शोक को भवन कई मैं सांचो हो ॥ चेतनजी ॥३॥
चकरी सत कुँआरजी, किपो रूप को मान
काया उनकी देखलो हुई कीड़ों की खान।
एजी तपस्या के परताप सुधर गयो सांचो हो ॥ चेतनजी ॥४॥
संवत् पचास साल में गढ़ चित्तोड़ मझार,
वृद्धिचन्द्र सम्यक मुनी, कीनो स्तवन तैयार।
एजी गुरु कृपा से समा बीच गायो हो ॥ चेतनजी ॥५॥

स्तवन न० २६

(तर्ज-जाओ जाओ, ऐ मेरे साधु रहो गुरु के संग ।)

स्थायी-आओ गाओ, ऐ वीरो ! मिल गुण पूज्य 'खूब' के आज।
जाओ, जाओ, वलिहारी सारे, पूज्य 'खूब' की आज ॥

अन्तरा-गेंदी बाई नन्द दुलारे, टेकचन्द दृग तारे।
जिन समाज उजियारे प्यारे, पंच महाव्रत धारे ॥
ध्याओ, ध्याओ, सबजन ही मिलकर, पूज्य 'खूब' सिरताज। आ०

निम्बाहेड़ा निर्दूपण शुभ, जन्म लिया जब सुखकारी ।
कष्ट, विघ्न सब नशे तुरत ही, बढ़ा सौख्य अपारी ॥
पाओ, पाओ, शिव मंत्र सुखारी, पूज्य 'खूब' से आज ॥ आ०

'वादी-मान निवारी' गुरुवर, नन्दलाल पांडित्य निधान।
यौवनवय में ली दीक्षा थी, पूर्ण प्राप्त कर निज विज्ञान ॥
गाओ, गाओ अति उत्सुक मन से, पूज्य 'खूब' गुण आज ॥ आ०

शास्त्र-विशारद, ज्ञानी-ध्यानी, शांत, दांत तेजस्वी हो ।
परम अहिंसा के उपदेशक, धर्म प्रभाकर तपसी हो ॥
बोलो, बोलो, जय महा प्रतापी, पूज्य 'खूब' की आज ॥ आ०

पूर्ण-चन्द सम सुयश आपका, दीप्तिमान जगती तल है।
विद्यमान पञ्चम पट प्यारे, मुख शशि से अति शीतल है॥
पाओ, पाओ, अति 'वृद्धिचन्द्र' सम, पूज्य 'खूब' से आज ॥ आ०

स्तवन न० २७

(तर्ज-हरी मजन करो नर नारियाँ रे)

जन्में महावीर प्रभु जिन धारियाँ रे, मंगल गावे हैं छप्पन कुमारियाँ रे ॥ टेर ॥ हाथ जोड़ इन्द्र यों कैवे धन्यवाद माता न देवे। तुम समान नहीं है दूजी नारियाँ रे ॥ १ ॥ इन्द्र इन्द्राणी मिल शुल आवे, मेरू गिरि प्रभु ने ले जावे। मघवा करी महोत्सव की खूब तैयारियाँ रे ॥ २ ॥ जग उद्धारण श्री जिनवरजी, दे वर्षिदान बने मुनिवरजी। दे देके सत बोध केई ने तारिया रे ॥३॥ स्वामीजी के नित गुण गावे, वृद्धिचन्द्र मुनि शीश नमावे। प्रभो कृपा से सिद्ध हाय काज मन धारियारे ॥ जन्मे० ॥ ४ ॥

ॐ शांति ! शांति !! शांति !!!

चिम्मनसिंह लोढ़ा के प्रबन्ध से श्री महावीर
प्रिंटिंग प्रेस ब्यावर में मुद्रित

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

सोहन पुष्पांजलि ।

लेखक,

जगद्वल्लभ जैनदिवाकर प्रसिद्ध वक्ता
पंडित मुनि श्री चौथमलजी महाराज के
सुशिष्य
मुनि श्री सोहनलालजी महाराज

प्रकाशक,

श्री श्वे. स्था. वासी श्री संघ, लश्कर.

प्रथमावृत्ति १०००. | अमूल्य भेट | वीर सं. २४६२ विक्रम सं. १९९२

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

सोहन पुष्पांजलि ।

लेखक,

जगद्वल्लभ जैनदिवाकर प्रसिद्ध वक्ता
पंडित मुनि श्री चौथमलजी महाराज के
सुशिष्य
मुनि श्री सोहनलालजी महाराज

प्रकाशक,
श्री श्वे. स्था. वासी श्री संघ, लश्कर.

प्रथमावृत्ति 1000. } अमूल्य भेंट { वीर सं २४६२ विक्रम सं. १९९३

तेरे मिलने के लिये देश विदेशों में फिरा ।
मेरे घट ही के पट में, दर्श अब दिखा देना ॥ १ ॥

मोह माया में फंस के, पाप हजारों ही किये ।
दिल दुनियां से मेरा, अब प्रभू हटा देना ॥ २ ॥

अहो निश आप से, सोहन विनय करता है ।
प्रभु जैसे आप हैं, वैसा मुझे बना लेना ॥ ३ ॥

२ (तर्ज-या हसीना-बस मदीना करबला में तू न जा)

सच्चिदानन्द सच्चिदानन्द का मजा अब दीजिये ।
शरणागतों को आपकी, शरणागती रख लीजिये ॥ टेक ॥

मोह बन्धन से बन्धे जो, विश्व के भवि-जीव-जन ।
अतुल बलशाली सु रक्षक, रहित बंधन कीजिये ॥ १ ॥

मुग्ध होरहा गुल धतूरे, आक पे सारा जगत् ।
सत सुमन सर सार कर, असत बिदा कर दीजिये ॥ २ ॥

छा रहा अज्ञान तम, इस भूमि पै चारों तरफ ।
दीप्त भानू ज्ञान का, सब के हृदय में कीजिये ॥ ३ ॥

दयासागर दीनबधु, दीन अरजी उर धरी ।
दीनपन जा दूर दिव्य सुख का सहारा दीजिये ॥ ४ ॥

आश पूरण दुख हरन, सुख करन शुभ प्रभु के चरन ।
दास मुनि सोहन को सेवा, पदकमल की दीजिये ॥ ५ ॥

४ (तर्ज-तुमने बसाया हम मन बगाया पपैया)

कहे सद्गुरु यही शिक्षा हमारी।
यह दुनिया है झूँठी लगे क्यों प्यारी ॥ टेक ॥
प्रभु भक्ति में नित चित्तको लगाना।
सुधर जायगी जिन्दगानी तुम्हारी ॥ १ ॥
सजन स्नेही महल अरु नारी।
नहीं आवेंगे पर भव में व लारी ॥ २ ॥
मिले सुख यहां ऐसा कुछ न किया है।
फँसी मोह में खोई जिन्दगी सारी ॥ ३ ॥
अब भी तू जल्दी से चेतजा चेतन।
गई सो गई अब रही सो तुम्हारी ॥ ४ ॥
गुरु की कृपा से सोहन मुनि गावे।
न सोओ नींद गफलत जागो नरनारी ॥ ५ ॥

५ (तर्ज-मतवारे नैन बाके नैना तोरे)

सुन प्यारे सिया बाला कुरा क्यों ॥ टेक ॥
दशरथ पुत्र-वधु राम की प्यारी सीता।
भाभी लछमन की है जनक-दुलारी सीता ॥
भामंडल की बहिन सखियों में प्यारी सीता।
चाहे मरे प्राण आप सत में करारी सीता ॥

दोहा—स्वर्गपती आकर कोई, सत्य डिगाना चाय ।
असमर्थ होकर वही, पडे चरन में आय ॥ १ ॥

केशरी मूँछ के वालो को ले आना है सहल ।
अही में श्रेष्ठ अही की मणि पाना है सहल ॥
निजशक्ति से सुमेरु को हिलाना है सहल ।
हिमालय गिरि को पानी करके वहाना है सहल ॥

दोहा—कठिन मेटना है अति, सिय पतिव्रत के अँक ।
राम लखन आकर समर, लेय छीन तव लँक ॥ २ ॥

देय लोटा के सिया गर तेरा आराम चहे ।
रक्षित कुटुंब हेम लंक का शुभ धाम चहे ॥
नरपतियों को भ्रात इतना नहिं काम चहे ।
तज अन्याय करें काम जो जग नाम चहे ॥

दोहा—पूर्वोदय दिनकर तजी, प्रकटे पश्चिम आय ।
अगनी में गुल खिल उठे, शशि अनल वर्षाय ॥ ३ ॥

बस इतनी ही कहन मेरी मानले भाई ।
सत्त असत्त को दिल वीच छानले भाई ॥
सिय रघुवर के तीर देनी ठानले भाई ।
वरना भाई तेरा भाई न जानले भाई ॥

दोहा—गुरुकृपा से सोहन कथे, आकर कहे सुरेश ।
समझाने पर ना लगे, कामी को उपदेश ॥ ४ ॥

१ (तर्ज—मैनारा कोमी क्यों कर मार्ड रे)

अभिमानी रावण क्यों हठ ठाणो रे ॥ टेक ॥
वश न हूंगी चाहे प्राण को तजूंगी मैं ।
स्वामी राम की तेरी तो नाम लूंगी मैं ॥
तुझ सिर काटने कैंची का काम पूगी मैं ।
छेक ललाम में अपनी समाल हूंगी मैं ॥
हां रे तू तो आयो क्यों वन से चुराई रे ।
हां रे तेरे पांप क्योंती आई रे ॥ १ ॥
शेर के साथ को सियार नहीं जा सकता ।
भूम पै पाव पड़ा चन्द्र नहीं पा सकता ॥
मेरे मन का सुमेर इन्द्र नहीं हिला सकता ।
तेरी हिम्मत नहीं सीता का सत हरा सकता ॥
हां रे तुझ आया क्या मोह चुराई रे ।
हां रे तेरी मति गई है बोराई रे ॥ २ ॥
पति पतिको ही मैं विश्व में ईश्वर समझूं ।
राम है रत्न मेरा मैं तुझे पत्थर समझूं ॥
तख्त का ताज तुझ मिट्टी से बदतर समझूं ।
ऐश आराम हुकूमत तेरी विषहर समझूं ॥
हां रे श्रीराम सज्जन घट वासी रे ।
हां रे तेरे फन्दे से मुझको छुड़ासी रे ॥ ३ ॥

सिंहनी सिंह त्याग कुत्ते के संग में खेले ।
दरिया कार तजे सिंह घास मुंह लेले ॥
पर सिया न तजे सत्त चाहे कुछ कहले ।
मुनि सोहन यों कहे सिया राम पद गहले ॥
हां रे ऐसे रावण ने समझावे रे ।
हा रे उस कामी के आस न आवे रे ॥ ४ ॥

७ (तर्ज–था वारे हजारी गुल दावदी रो फूल म्हारी
नथ रे अदवीच प्यारो लागे होजी सायबा)

वा वा हो गजसुख मुनि ध्यान तो लगाई स्मशान
में सु भाव सें विराजिया हो स्वामीजी ॥ टेक ॥

मातदेवकी सती वसुदेव ना तुम पुत्र छो ।
कृष्ण मुरारी ना लघु भ्रात हो ॥ १ ॥
नेम जिनन्द निकटवाली उमर में दीक्षा धरी ।
स्मशान ध्यान कियो जाय हो ॥ २ ॥
मुनि देख पूर्व वैरयोग विप्र को पियो ।
सोमिलने शीश वाधी पाळ हो ॥ ३ ॥
खीरा अति तेज मुनि शीश पर मेलिया ।
स्वामी क्षमा करी भरपूर हो ॥ ४ ॥
मन में सु-शाति धरी द्वेष तनिक ना कियो ।
समझी सुसरे बन्धाई पाग हो ॥ ५ ॥

क्रोध मोह मान करी मोक्ष में विराजिया।
सोहन मुनि यों गुण गाय हो ॥ ६ ॥

८ (तर्ज—क्याला मोरी रंग के चुनरी रंग आज)

चेतन है इस दुनियां में दो दिन का महमान ॥ टेक ॥
प्रभु भक्ति करने को जग में आया है इन्सान।
देख सुखों पै मोहित होकर भूल गया नादान ॥ १ ॥
मात तात भ्राता धर्म दारा भगिनी अरु सन्तान।
अन्त समय सबको तज दे तू ये छोड़े श्मशान ॥ २ ॥
सुन्दर सुन्दर महल बनावे सुन्दर बाग दूकान।
कोई अमर रहा नहिं जगमें तू फिरता अनजान ॥ ३ ॥
राजा राना सेठ बादशाह हाकिम अरु प्रधान।
काल गाल से कोई बचा नहिं क्या आता सैतान ॥ ४ ॥
मोहन सोहन मुनि यों कहता भाव सभा दरम्यान।
नर तन पा शुभ कर्म करेगा पावेगा शिव स्थान ॥ ५ ॥

९ (तर्ज—म्हारा सांवरिया गिरधारी मारे आवजोजी)

सब मिल सत पथ-गामी वीरों के गुण गावना जी।
करके अनुकरण सत्यवादी का आनन्द पावना जी ॥ टेक ॥
दोहा—भानु सम भूपत भयो भारत भूमि मांय।
हरिश्चन्द्र महाराज के, दुनियां यश रही गाय ॥
सत्यहित सहे कष्ट उनपर तो ध्यान लगावना जी ॥ १ ॥

दोहा—सत्य कारण अयोध्या तजी, तजा तख्त भंडार।
तारा रोहित दास को, वेचे सदर बजार॥
खुद मातङ्ग के घरपर रहकर नीर भरावना जी॥ २॥
दोहा—सत्यवादी कई होचुके, अधिक एक से एक।
प्राण न्योछावर करदिये, रखी धर्म की टेक॥
सत्य पै पद्मावती रानी का जिकर सुनावना जी॥ ३॥
दोहा—मुनि मोहन यों कह रहा, आज सभा दरम्यान।
सोहन निशिदिन कह रहा, वीरों के गुणगान॥
यह तो शहर सादडी माय हुवा है आवना जी॥ ४॥

१० (तर्ज—दीन भारत को मूडोल वेजार कर गया)

कैसा महावीर जहा मे, उपकार कर गया।
सारे हिन्द में दया का, प्रचार कर गया॥ टेक॥
होता भारत मे पशुवध भाई, दे के ज्ञान अहिंसा फैलाई।
भाव करुणा का सब के एक सार भर गया॥ १॥
ठग चोर थे हिंसक अन्याई, डूबत नैया को पार लगाई।
दीन दुखियों का वेडा वो पार कर गया॥ २॥
जगमें अधर्मी थे कहो कैसे, हिंसक अर्जुन माली के जैसे।
ऐसे पापियोंका भी वह उद्धार कर गया॥ ३॥
हिंद गुलशन रहा था मुरझायके, उसे सरसाया ज्ञानजल पायके
कैसा भारत चमन को गुलजार कर गया॥ ४॥

समझौता दया को फैलाई, दिया अंग्रेजी रास्ता बताई।
सोते हुए जनों को होश्यार करगया ॥ ५ ॥
गुरु प्रसादे मोहन गावे, सोहन मुनि तो ऐसे फरमावे।
ज्ञान भानु से वह तो अज्ञान हर गया ॥ ६ ॥

११ (तर्ज—यह दिल प्रभु तुम पर दीवाना होगया)

मनोहर कहती है रावन मानले।
यह सिवा तेरी न होगी जानले ॥ टेक ॥
होके खुश लाये चुराके जानकी।
काम की पे बेमेवाली मानले ॥ १ ॥
स्वागपन मेरा मगर चाहो पिया।
राम कदमों में जा माफी मांगले ॥ २ ॥
सैन दल यह संग के जावेंगे वो।
लंका सोनेकी पै पानी जानले ॥ ३ ॥
उनसे लड़ना ठीक नहीं कहती तुम्हें।
सीता पीछी देनी दिल में ठानले ॥ ४ ॥
कहता मोहन काम यूं माने न वो।
सोहन जितावे बात को नर जानले ॥ ५ ॥

१२ (तर्ज—रसिया)

जो तुम जितनो जगसे चाहो, लेलो क्षमा रतन कर मांय।
क्षमा रतन कर मांय जिससे शिव सुंदर मिल जाय ॥ टेक ॥

जो कोइ धारन करले प्रानी, तिरे वही यह भगवद्वानी ।
तजकर क्रोध प्रेम से मित्रों, इसको लो अपनाय ॥ १ ॥
दीक्षा लीनी वालवय मांई, स्मशान मे ध्यान लगाई ।
गज सुख माल मुनि ने भाई, दीये कर्म खपाय ॥ २ ॥
जगविख्यात भूप प्रदेशी, जिसको समझाया मुनि केशी ।
रानी जहर दियो हुइ कैसी, व्रत से डिग्यो न राय ॥ ३ ॥
राम लखन दोनो गम खाई, पितु आज्ञा को शीश चढाई ।
सियासहित गये वनमाई, दियो राज्य भरत के ताय ॥ ४ ॥
ऐसी क्षमा है भवदधि तारन, कर्म अरि पीशाच विदारन ।
कहता मोहन मुनि और सोहन, महागढ मे आय ॥ ५ ॥

११ (देखे बिना नहिं चेन रे सुरतिया)

निश दिन धरूं मैं ध्यान रे, प्रभुजी तेरो ॥ टेक ॥

तूही वसीला मेरे, शरणों में आया तेरे ।
तूही मेरा भगवान रे ॥ १ ॥
निरखत सुरतियां तेरी, तरसत अँखियां मेरी ।
तू सर्व गुणों की खान रे ॥ २ ॥
अपना सु-सेवक जानी, बुद्धि दो अर्जी मानी ।
आशा पूर्ण तू महान रे ॥ ३ ॥
मुनि मोहन यों गावे, चरनों में शिर नावे ।
सोहन करे गुण गान रे ॥ ४ ॥

१४ (तर्ज–लोचन क्यों न खाता न देखेगी, केसेरी बंद कराय)

चेतन थाने आतम देऊगी, सुमता करे पुकार ॥ टेक ॥
चेतन थारे दो सखी, कुमती सुमती सुजान ।
मान भंग कुमती करे, पजी, सुमती दे सम्मान ॥ १ ॥
सुमती सखी पर मोहके, अब करे दिलदार ।
कुमती कपटन के परे, पजी, मत जावो भरतार ॥ २ ॥
निजस्वरूप भूलीगया, भरमी कुमती संग ।
मैं थारूँ मानों नही, पजी, किस विध सुधर ढंग ॥ ३ ॥
अब भी चेतो दे पजी, सरदार अवसर पाय ।
गुरु शिक्षा धारन करो, पजो, व्यसन सभी छिटकाय ॥ ४ ॥
चेतन से सुमती सखी, अब करे विद आय ।
मोहन सोहन पद कथा, पजो, मान सभा के मांय ॥ ५ ॥

(तर्ज–बिछुरे की)

जन्म आपने पायो, आनन्द आयो हो प्रभुजी ।
प्राण प्यारा प्रभुजी, नैना से प्यारा प्रभुजी ॥ टेक ॥
इन्द्र सकल मिल आवे, मेरु लेजावे हो ॥ १ ॥
छप्पन कुमारी आवे, मंगल गावे हो ॥ २ ॥
अवधी ज्ञान लगावे, मेरु धुजावे हो ॥ ३ ॥
कर्म रिपु को हर के, मोक्ष को वर के हो ॥ ४ ॥
मोहन सोहन गावे, हर्ष समावे हो ॥ ५ ॥

१६ (तर्ज-जिसने दिया है दर्द दिल उसका खुदा भला करे)

खलक से जाना तुझे, किसपे लुभा रहा यहीं।
दिन चार का महमान बन, करता है क्या जाना कहीं॥टेक॥
गुन्हाह करके माल ला, औलाद को पालन करे।
यह न तेरे संग में है, छोडकर जाना यहीं॥ १ ॥
नशे में यौवन के सदा, जुल्म तू करता जबर।
गुल खिला गुलशन में जो है, देखते मुरझा वहीं॥ २ ॥
अए पियारों ऐश में, हारो न प्यारी जिन्दगी।
वख्त नेकी में लगा, हर बार मिलने का नहीं॥ ३ ॥
गुरु के प्रसाद से यों, कहता है मोहन मुनि।
प्रभुनाम शुधमन से रटो, सोहन समय मिला यही॥ ४ ॥

१७ (तर्ज-तुम्हें अपना तन मन लगाना पडेगा)

भारतवासियो को, जगाना पडेगा।
फैशन फूट हिंद से, हटाना पडेगा॥ टेक ॥
समय ईशभक्ती के, वाल जमाना।
बुरा व्यसन चाय का, मिटाना पडेगा॥ १ ॥
हटा टाई नेकटाई, पतलून पहनना।
पहनाव पूर्वजो का, अपनाना पडेगा॥ २ ॥
त्यागो ऐ प्यारों, होटल मे खाना।
धर्म अपना जाता, बचाना पडेगा॥ ३ ॥

इसी फूट कारण से, भारत है गारत।
इसे अब विदाई, दिखाना पड़ेगा ॥ ४ ॥
सभी फूट फैलन को, आतुर हमारे।
इन्हें धन्यवाद, दिखाना पड़ेगा ॥ ५ ॥
मुनि मोहन कहता, सभा में सब से।
सोहन साफ साफ, सिखाना पड़ेगा ॥ ६ ॥

१८ (तर्ज-कचरसिया म्हारो मानो एकेली)

केसरिया म्हांने क्यूं छिटकावो जी।
बालमजी, प्रीतमजी, म्हांने क्यूं ॥ टेक ॥
तुम बिलमाया पिया आपने जी।
घट में छायो छे वैराग ॥ १ ॥
तुम हो पीयर तुम सासरो जी।
थां बिन किस्यो रे आधार ॥ २ ॥
कठियन म्हांसू हँस बोलिया जी।
कठियन काढी मनरी खांत ॥ ३ ॥
रात दिवस मैंतो झुर रही जी।
नैना न आवे म्हारे नीन्द ॥ ४ ॥
कांई कसूर हुयो म्हांयरो जी।
छोड़ चल्या भरतार ॥ ५ ॥

कहे कुंवर प्यारी सामलोजी ।

झूठो यो संसार ॥ ६ ॥

सोहन मुनि इम गावियोजी ।

लश्कर शहर मुझार ॥ ७ ॥

१९ (तर्ज-आशावरी)

भगवन् आशा पूरो मन की ॥ टेक ॥

गौतम गणपति प्रथम मनाऊं ।

बूटी दीजे दु.ख भंजन की ॥ १ ॥

विघ्न विदारन नाम तुम्हारो ।

मैं लीनी शरन चरन की ॥ २ ॥

केवल एक आधार तिहारो ।

दयानिधि दया करो दीनन की ॥ ३ ॥

अर्ज दर्ज दफ्तर में करके ।

इच्छा पूरो शिष्य वर्धन की ॥ ४ ॥

गुरु प्रसादे सोहन मुनि कहे ।

जय बोलो पृथ्वीनन्दन की ॥ ५ ॥

भजन

(तर्ज़—बरला है पैं करे)

पैसा क्या क्या करे, प्रेम प्रीति हर,
प्यारी पुत्री भर, पैसे उसको धरे ॥ टेक ॥
देखो पैसे की बहार, कगा दुःख है प्यार।
गरमा गरम बाजार, नहिं कोई डरे ॥ १ ॥
मैया बाप विचार, ले के साठ हजार।
करदी बुड्ढे के बार, नैना आँसू झरे ॥ २ ॥
कहे सोहन सभी, सभी इससे बचो।
मत इस में रचो, कहो कैसे तरे ॥ ३ ॥

(तर्ज़—मोहन बन्सी वाले तुम को लाखों प्रणाम)

शांति बरसाने वाले, तुमको लाखों प्रणाम।
अचला के राज दुलार तुमको लाखों प्रणाम ॥ टेक ॥
कम्मत ही प्रभु मृगी निवारी, नाम शेष नसे तव तिजारी।
मनकी चिन्ता हरनेवाले, तुम्हो दुःख मसाने वाले ॥ १ ॥
धन्य घड़ी प्रभु जन्म लियो है, महोत्सव नगर आन कियो है।
तुम हो मेरु न्हाने वाले, सब के दिल को हरने वाले ॥ २ ॥
जो जन धुप भावों से ध्यावे, सो नर मन इच्छित् फल पावे।
आशा पूर्ण करने वाले, तुम हो पाप मसाने वाले ॥ ३ ॥
श्राव वदत् अरहर आया, सोहन मुनि ने भजन बनाया।
तुम हो आनंद करने वाले, शिवपुर राह बताने वाले ॥ ४ ॥

फाइन आर्ट प्रिंटिंग प्रेस, — अजमेर.

सर्वज्ञाय नमः

अष्टादश पाप निषेध

रचयिता

कविवर सरलस्वभावी मुनि श्री हीरालालजी महाराज
के सुशिष्य प्रसिद्धवक्ता पण्डित मुनि
श्री चौथमलजी महाराज

प्रकाशक

श्रीमान् अमोलखचंदजी चुन्नीलालजी चोपडा,
मु चऱ्होली, जि. पुणे

मुद्रक

दत्तात्रय गणेश खाडेकर,
'लॉ प्रिंटिंग प्रेस,' ५२० शनवार पेठ, पुणें

द्वितीयावृत्ति १००० | अमूल्य भेट | वीर सं २४५६ विक्रम सं. १९८७

निवेदन

प्रिय पाठक वृन्दो ! संसार में जितनी आत्माएं है वे सब कर्मों के बंधन से घिरी हुई है वे सब शुभाशुभ कर्म के बंधन के कारण ऊंच नीच गति में परिभ्रमण करती है जो आत्मा शुभ कर्म वाली पुण्योपार्जन करती है वह आत्मा देव और मनुष्य गति को प्राप्त करती है और जो आत्मा अशुभ कर्म पापाचरण करती है वह आत्मा नरक तिर्यंच की योनी को प्राप्तकर अनेक तरह के दुःख उठाती है वे पाप अठारह प्रकार के है और उनका उल्लेख अनेक शास्त्रों में गणधर महाराज ने प्रतिपादन किया है उन्हीं अठारह पापों को शास्त्रविशारद श्री जैनाचार्य पूज्य वरश्री श्री मन्नालालजी महाराज की सम्प्रदायानुयायी जगद्वल्लभ प्रसिद्ध वक्ता पंडित मुनि श्री चौथमलजी महाराजने अपनी मनोरंजन भाषामें गायन रसिकों के आनार्थ गजलरूपमें रची है जो गत चातुर्मासमें अनेक हजार छप चुकी है तथापि उनकी अधिक मांग आने और परमोपयोगी समझ उक्त मुनि श्री के सुशिष्य वैरागी मुनि श्रीनंदलालजी महाराज की अनुग्रह से तृतीयावृत्ति छपवाकर प्रकाशित कर आप सज्जनो की सेवा मे सादर भेंटकर आशा रखता हुं की आप इसे पढकर अपनावें गे और अपनी आत्मा को सदाचरण में लगावें गे ॥

आपका
प्रकाशक.

वन्दे वीरम्

अष्टादश पाप निषेध

शैर

पाप से बचने की गजले; इस के अन्दर श्रेष्ठ है।
अमोलखचंदजी चुन्नीलालजी की तरफ से भेट है॥

तर्ज —मेरे स्वामी बुलालो मुगत में मुझें (वीर स्तुति)

महावीर से ध्यान लगाया करो, सुख सम्पत इच्छित पा करो ॥ टेक ॥ क्यों भटकता जगतमें, महावीरसा दूजा नहीं। तृश के नन्दन जगत वन्दन, अनन्त ज्ञानी है वही। उन के चरणों शीष नमाया करो ॥ १ ॥ जगत भूषण विगत दूषण, अध उधारण वीर है। सूर्य्य से भी तेज है। सागर सम गम्भीर है। ऐ प्रभु को नित ऊठ ध्याया करो ॥ २ ॥ महावीर के प्रताप से, होत विजय मेरी सदा। मेरे वसीला है उन्हीका, जाप से टले आपदा जरा तन मन से लोह लगाया करो ॥ ३ ॥ लसानी ग्यारे ठाणा आया चौरासी साल है। कहे चौथमल गुरु कृपासे, मेरे वरते मंगल माल है। सदा आनन्द हर्ष मनाया करो ॥ ४ ॥

तर्जः—उठो प्यारे कस कमर, धुम (हिंसा निषेध)

दिल सताना नहीं रवा, मालिक का फरमान है। खास इबादत के लिये, पैदा हुवा इन्सान है ॥ टेक ॥ दिल यदी है ईश महां में, मोक्ष के देखो धाम। दिल गया तो क्या रहा, मुर्दा तो वह स्मशान है ॥ १ ॥ जुल्म जो करता उसे, हाकिम भी यहांपर दे सजा। मुआफ हरगीज होता नही, * कानून के दरम्यान है ॥ २ ॥ जैसे अपनी जानको, आराम तो प्यारा लगे। ऐसे गैरों को समझ तूं, क्यों बना नादान है ॥ ३ ॥ नेकी का बदला नेक है, यह कुराम में लिखा सका। मत बदी पर कस कमर तूं क्यों हुवा बदनाम है ॥ ४ ॥ वे गुणगु धोमल में, गिरफ्तार तो होगा सही। गिनती वहां होती नहीं, चाहे राजा या दिवान है ॥ ५ ॥ बैठ कर तू तख्त पर, गरीबों की लेने नही सुनी। फरीस्ते वहां पीटते, होता बडा हैरान है ॥ ६ ॥ गले कातिल के वहां, फेरायगा छेके छुरा। इन्साम होके न गिने, यह भी तो कोई ज्ञान है ॥ ७ ॥ रहम को लाके भरा तू, सख्त दिलको छोडदे। चौथमल कहे हो मजा, जो इस तरफ कुछ ध्यान है ॥ ८ ॥

तर्जः—पूर्ववत् (झूठ निषेध)

सोच नर इस झूठ से आराम तूं नहीं पायगा। हर जहग दुनियां में नर परतीत भी उठ जायगा ॥ टेक ॥ सोच भी गर जो

* किसी को गाली देना अपमान करना, दिल दुखाना आदि के लिये दो साल की सख्त कैदकी सजा कानून धा ३५२।

खून करनेवाले को मृत्यु की शिक्षा (फाँसी) कानून धारा ३ २।

जबरदस्ती से बेगार कराने वाले को व शक्तीसे ज्यादा काम लेनेवाले को एक मास की कैद की सजा कानून धारा ३७४।

कहे, ईश्वर की खाकर कसम । लोग गप्पी जान के, ईमान कोई नही लायगा ॥ १ ॥ क्रोध, भय अरु हास्य चोथा, लोभ में हो अंधनर । बोलते है झूठ उनके हाथ में क्या आयगा ॥ २ ॥ झूठ पौशीदा रहे, कहातक जरा तुम सोचलो । सत्यताके सामने, सरामिन्दगी उठायगा ॥ ३ ॥ झूंठे बोले शख्स की, दोजखमें कतरे जबा । बोलकर जावे बदल, उसका भी फल वहाँ पायगा ॥ ४ ॥ बोलता है झूंठ जो तूं, जिसलिये अए बेहया । वह सदा रहता नहीं, देख देखते विरलायगा ॥ ५ ॥ सब धर्म * शास्त्र देखलो, झूंठ बोलना है मना । इस लिये तज झूंठ को, इज्जत तेरी बड जायगा ॥ ६ ॥ गुरु के परसाद से कहे चौथमल सुनलो जरा । धारले तूं सत्य को, आवागमन मिट जायगा ॥ ७ ॥

तर्जः—पूर्ववत् (चोरी निषेध)

इज्जत तेरी बड जायगी, तूं चौरी करना छोडदे । मानले नशीहत मेरी तूं, चौरी करना छोडदे ॥ टेक ॥ माल देखी गैर का, दिल चौर का आशक हुवे । साफ नियत ना रहे, तूं चोरी करना छोडदे ॥ १ ॥ निगाह उसकी चौतरफ, रहती है मानिंद चील के । परतीत कोई नहीं गिने, तू चौरी करना छोडदे ॥ २ ॥

---

* झूट बोलने की सजा पर लोकमें तो है ही अतः धर्म ग्रन्थों में झूठ बोलना निषेध किया है पर यहाँ भी सरकारी कानून ताजीरात हिन्द में झूठ बोलने वालेको सजा बोली जाती है निम्नोक्त प्रकार से—

" खोटी गवाही भरने वाले को सात सालकी सख्त कैद की सजा कानून धारा १९३ ।

झूठा नामा व हिसाब करनेवाले को तथा उसको मदत करनेवाले को सात सालकी सख्त कैदकी सजा कानून धारा ४७७ ।

पुलिस से छिपता रहे; एक दिन तो पकड़ा जायगा। जेल से मारे घूम, तू चोरी करना छोड़ दे ॥ ३ ॥ नापने में तोलने में चोरी महसूल की करे। रिश्वत भी खाना है यही, तू चोरी करना छोड़दे ॥ ४ ॥ हराम पैसे से कभी, आराम तो मिलता नहीं। दीन दुनियाँ में मना, तू चोरी करना छोड़ दे ॥ ५ ॥ नुकसान गर किस का करे तो, आह लगती है मगर। खाक में मिल जायगा; तू चोरी करना छोड़ दे ॥ ६ ॥ सबर कर पर माल से, हक बात पर कायम रहे। चौथ मल कहता तुझे, तू चोरी करना छोड़ दे ॥ ७ ॥

तर्ज़:—पूर्ववत् (परस्त्री निषेध)

लाखों कामी पिट चुके, परनार के परसंग से। मुनिराम कहे सब बचो, परनार के परसंग से ॥ टेर ॥ दीपक की लौ ऊपर,

---

१ खोटे तौल माप रखने वाले को एक साल की सख्त कैद की सजा कानून धारा २६४।

२ महसूल चोरी के दफे न चुकाने वाले का माल जप्त कर लिया जाता है पैसा नहीं मिलता दूसरी दफे महसूल न चुकाने वाले का माल जप्त करके और दण्ड किया जाता है। तिसरी दफे महसूल न चुकाने वाले का माल जप्त करके दण्ड करते हैं और सख्त कैद की सिक्षा देते हैं।

३ रिश्वत लेनेवाले और देनेवाले दोनों गुनहगार हैं जिन को तीन साल की सख्त कैद की सजा कानून धारा १६१।

४ चोरी का माल लेने वाले को—९ मास की सख्त कैद की सजा और १   रुपये दण्ड कानून धारा १८८।

सेठ की चोरी करने वाले नौकर को सात साल की सख्त कैद की सजा कानून धारा १०९।

किसी का माल छिपाने वाले को तीन साल की सख्त कैद की सजा कानून धारा १०९।

पड पतंग मरता है सही । ऐसे कामी कट मरे, परनार के परसंग से ॥ १ ॥ परनार का जो हुस्न है, मानो अग्नि कैसा कुंड है। तन धन सबको होमते, परनार के परसंग से ॥ २ ॥ झूटे निवाले पर लुभाना, इन्सान को लाजिम नही । सुजाक गर्मी से सडे, परनार के परसंग से ॥ ३ ॥ चारसौ सत्ताणुवा, *कानून में लिखा दफा। सजा हाकिम से मिले, परनार के परसंग से ॥ ४ ॥ जैन सूत्रो में मना, मनुस्मृति में भी देख लो । कुरान बाइबल में लिखा, परनार के परसंग से ॥ ५ ॥ रावण कीचक मारे गए, द्रौपदी सिया के वास्ते । मणीरथ मर नर्क गया, परनार के परसंग से ॥ ६ ॥-जहर बुझी तलवार से, अवन मुल्जिम बदकार ने । हजरत अली पर बहारकी, परनार के परसंग से ॥ ७ ॥ कुत्ते को कुत्ता काटता, कत्ल नर नर को करे । पल में मोहब्बत टूटती, परनार के परसंग से ॥ ८ ॥ किसलिये पैदा हुवा, अय बे हया कुछ सोच तूं । कहे चौथमल अब सब्र कर, परनार से परसंग से ॥ ९ ॥

---

* स्त्री की लज्जा लूटने वाले को दो साल की सख्त कैद की सजा कानून धारा ३५४ ।

स्त्री की इच्छा के विरुद्ध भोग भोगानें वाले को दस साल की सख्त कैद की सजा कानून धारा ३७६ ।

छोटी उमर की स्व स्त्री के साथ भी भोग भोगाने वाले को दस साल की सख्त कैद की सजा कानून धारा ३७६ ।

पुरुष, पुरुष के साथ, स्त्री, स्त्री के साथ, या पशु के साथ भोग भोगने वाले को दस साल की सख्त कैद की सजा कानून धारा ३७७ ।

गर्भपात करने व कराने वाले को तीन व सात साल की सख्त कैद की सजा कानून धारा ३१२ ।

तर्ज—पूर्ववत् (धन का दुरुपयोग निषेध)

क्यों पाप का भागी बने, अए सनम धन के लिये । जुल्म करता गैर पर, अए सनम धन के लिये ॥ टेक ॥ तमन्ना तेरी ऐसी बडी, इक हलाल गिनता नहीं । छोड के अजीज को, परदेश आ धन के लिये ॥ १ ॥ स्वप्न अन्दर भी न देखा, नहीं नाम से जाना सुना । कहो तो गुलामी उनकी करे, देखलो धन के लिये ॥ २ ॥ फकीर साधु पास आ, खिदमत करे कर जोडके । बूटी को तू फिरे ढूंढता, अये सनम धन के लिये ३ ॥ इस के लिये भाई बंधुओसे, मुकदमा बाजी करे । कोरटों के बीच में तूं, घूमता धन के लिये ॥४॥ इस लिये कर खूब चोरी, फेर जावे जेल * में । झूंठी गवा देता निगामी, अए सनम धन के लिये ॥ ५ ॥ तकलीफ क्या क्याही उठाई जिनरख ५ जिनपालने । सेठ सागर प्राण खोया, समुद्र में धन के लिये ॥ ६ ॥ फिसाद की यह जड बताई, माल और औलाद को । कुराण के अन्दर लिखा है देखलो धन के लिये ॥ ७ ॥ भगवान श्रीमहावीरमें भी, मूल अनरथ का कहा । पुराण में क्या लिखा है, फेर इस धन के लिये ॥ ८ ॥ गुरुके प्रसादसे कहे, चौथमल ऐसा जिकर । धारलो सन्तोष को तू मत मरे धन के लिये ॥ ९ ॥

---

* चोरी जोगन्द लाने वाले को छः मास की सख्त कैद की सजा और १ रुपे दण्ड कानून धारा १७८ ।

दूसरेका भूला हुवा माल खर्च करने वाले को दो साल की सख्त कैदकी सजा कानून धारा ४ १ ।

मिली हुई वस्तु उस के मूल मालिक को न देने से व मालिक न ढूंढ ने वाले को दो साल की सजा कानून धारा ४ १ ।

रुपैये उधार लेकर वापिस न देने से दो साल की सख्त कैद की सजा कानून धारा ४१५ ।

तर्जः—पूर्ववत् (गजल क्रोध निषेध पर)

आदत तेरी गई बिगड, इस क्रोध के परताप से । अजीजों को बुरा लगे, इस क्रोध के परताप से ॥ टेर ॥ दुश्मन से बढ कर है यही, मोहब्बत तुडावे मिनिट में । सर्प मुआफिक डरे तुझसे, क्रोध के परताप से ॥ १ ॥ सलवट पडे मुंह पर तुरत, कम्पे मानिन्द जिन्द के । चष्म भी कैसे बने, इस क्रोध के परताप से ॥ २ ॥ जहर या फाँसी को खा, पानी में पड कई मरगये । वतन करगये तर्क कई, इस क्रोध के परताप से ॥ ३ ॥ बाल बच्चों को भी माता, क्रोध के वश फैकदे । कछ सूझता उस में नहीं, इस क्रोध के परताप से ॥४॥ चंडरुद्र आचार्य की, मिसाल पर करिये निगाह । सर्प चडकोसा हुवा, इस क्रोध के परताप से ॥ ५ ॥ दिल भी काबू न रहे, नुकसान कर रोता वही । धर्म कर्म भी न गिने, इस क्रोध के परताप से ॥ ६ ॥ खुद जले पर को जलावे, विवेक की हानी करे । सूख जावे खून उसका, क्रोध के परताप से ॥ ७ ॥ जन के लिये हँसना बुरा, चिराग को जैसे हवा । ज्यों इन्सान के हक मे समझ, इस क्रोध के परताप से ॥ ८ ॥ शैतान का फरजन्द यह, और जाहिलों का दोस्त है । बदकार का चाचा लगे, इस क्रोध के परताप से ॥ ९ ॥ इबादत फाका कसी, सब खाक में देवे मिला । दोजख का मुंह देखेगा, इस क्रोध के परताप से ॥ १० ॥ चाण्डाल से बदतर यही, गुस्सा बडा हराम है । कहे चौथमल कब हो भला, इस क्रोध के परताप से ॥ ११ ॥

तर्ज —पूर्ववत् (गजल मान निषेध पर)

'सदा यहां रहना नहीं तू, मान करना छोडदे । शहनशाह भी न रहे, तूं मान करना छोडदे ॥ टेर ॥ जैसे खिले है फूल

गुलिस्तान, में कबीरों देखलो। आखिर तो वह कुम्हलायगा तू, मान करना छोड़दे ॥ १ ॥ नूर से जे पूर थे, लाखों उठाते हुक्म को। सो खाक में वे मिल गये, तू मान करना छोड़दे ॥ २ ॥ परशु ने क्षत्री हने, शम्भूम ने मारा उसे। शम्भूम भी यहां न रहा, तू मान करना छोड़दे ॥ ३ ॥ कंश जरासिंध को, श्रीकृष्ण ने मारा सही। फिर मर्द ने उन को हना, तू मान करना छोड़दे ॥ ४ ॥ रावण से इन्दर दबा, लक्ष्मण ने रावण को हना। न वह रहा न वह रहा, तू मान तू मान करना छोड़दे ॥ ५ ॥ रब्ब का हुक्म माना नहीं, अजाजिल काफिर बन गया। शैतान सब उसको कहे, तूं मान करना छोड़दे ॥ ६ ॥ गुरु के परसादसे कहे, चौथमल प्यारे सुनो। आजिजी सब में भली, तूं मान करना छोड़दे ॥ ७ ॥

तर्ज—पूर्ववत् (कपट निषेध पर)

जीना इसे यहां चार दिन, तू दगा करना छोड़दे। पाक रख दिल को सदा, तूं दगा करना छोड़दे ॥ टेर ॥ दगा कहो या कपट माया, फरेब या छिरघट कहो। चिता चोर बदमाश, तूं दगा करना छोड़दे ॥ १ ॥ चलते उठते देखते, बोलते हसते दगा। तोलने और नापने में, दगा करना छोड़दे ॥ २ ॥ माता कही बहने कही, पर नार को तकता फिरे। क्यों काम कर नाहक बने, तू दगा करना छोड़दे ॥ ३ ॥ मर्द की औरत बने औरत का ना पुरुष हो। वस चौरासी योनि भुगते, तू दगा करना छोड़दे ॥४ ॥ दगा से आ पोतना ने, कृष्ण को लिया गोदमें। नतीजा उसको मिला, तूं दगा करना छोड़दे ॥५॥ कौरवों ने पांडवों से, द ?र जुआं रमी। हार कौरवों की हुई, तू दगा करना छोड़दे ॥ ६

कुरान पुरान में है मना, *कानून में लिखी सजा। महावीर का फरमान है, तूं दगा करना छोडदे ॥ ७ ॥ शिकारी करके दगा; जीवों की हिंसा वह करे मंजार और बुग की तरह, तूं दगा करना छोडदे ॥८ ॥ इज्जत में आता फरक, भरोसा कोई न गिने। मित्रता भी टूट जाती, दगा करना छोडदे ॥ ९ ॥ क्या लाया लेजायगा क्या, गौर कर इस पर जरा। चौथमल कहे सरल हो, तूं दगा करना छोडदे ॥ १० ॥

तर्जः—पूर्ववत् (गजल संतोष की)

सबर नर को आती नहीं, इस लोभ के परताप से। लाखों मनुष्य मारे गये, इस लोभ के परताप से ॥ टेर ॥ पाप का वालिद वडा, और जुल्म का सरताज है। वकील दोजख का बने, इस लोभ के परताप से ॥ १ ॥ अगर शहनशाह बने, सर्व मुल्क तावे में रहे। तो भी ख्वाहिश न मिटे, इस लोभ के परताप से ॥ २ ॥ जाल

---

* भोजन में विष देनेवाले को फासी की सजा कानून धारा ३०२।

बनावटी अगुठा या सही करने वाले को सात साल की सख्त कैद की सजा कानून धारा ५४७।

झूठे खत दस्तावेज, रजिष्टर आदि के लिखने वाले को सात साल की सजा कानून धारा १९५।

विश्वासघात करने वाले को दस साल की सख्त कैद की सजा कानून धारा ४०९।

नमूने के मुआफिक माल न देने से, असली कीमत मे नकली माल देने वालेको और नकली माल का दाम असली माल के बरबर लेने से एक साल की सख्त कैद की सजा कानून धारा ४१५।

अच्छा माल कर बुरा माल देने वाले को सात साल की सजा कैद की सजा कानून धारा ४२०

ताजा आटा, दाल आदि में पुराने माल मिलाने वाले को ६ मास की सख्त कैद की सजा और १० रुपये दण्ड का कानून धारा [illegible]

में पत्ती पड़े, और मच्छी कांटे से मरे। चोर जावे जेल *में, इस लोभ के परताप से ॥ ३ ॥ स्वाम में देखा न उसको, रोगी क्यों न नीच हो। गुलामी उस की करे, इस लोभ के परताप से ॥ ४ ॥ काका भतीजा भाई भाई, चाहिए था बेटा सज्जन। बीच कोर्ट के फसे, इस लोभ के परताप से ॥ ५ ॥ सम्भूम चक्रवर्ती राजा, सेठ सागर की सुनो। दरियाव में दोनों मरे, इस लोभ के परताप से ॥ ६ ॥ यहाँ के कुछ माल का, मालिक बने तो कुछ नहीं। प्यारी तज पर देश भा, इस लोभ के परताप से ॥ ७ ॥ माल बचे भेष दे, दु:ख दुर्गुणों की खान है। सम्यक्त्व भी रहती नहीं, इस लोभ के परताप से ॥ ८ ॥ कहे चौथमल सतगुरु वचन, सन्तोष इसकी है दवा। और नासिहत नहीं रूपे, इस लोभ के परताप से ॥ ९ ॥

तर्ज—पूर्ववत् (राग निषेध)

मान मन मेरा कहा, तू राग करना छोड़ दे। आवागमन का मूल है, तू राग करना छोड़ दे ॥टेक॥ प्रेम प्रीति स्नेह महोब्बत, आशक भी इसका नाम है। कुछ खूबता इसमें नहीं तू, राग करना छोड़ दे ॥ १ ॥ लोह की मंजीर का, बन्धन नहीं कोई चीज है।

---

* बनावटी मोहर बनाने वाले को दस सालकी सख्त कैद की सजा कानून धारा ४८९।

खोटे स्टाम्प बनाने वाले को दस साल की सख्त कैद की सजा कानून धारा २५५।

कुमारी को मकान किराये देनेवालों को दोनों को दण्ड कानून धारा २९ ।

ऐसा बन्धन प्रेम का, तूं राग करना छोड दे ॥ २ ॥ सुर असुर और नर पशु, इस राग के वश में पडे। फिरते फिरते बे मान हो, तूं राग करना छोड दे ॥ ३ ॥ धन कुटुम्ब योवन जिस्म से, स्नेह निश दिन कर रहा। ख्वाब के मानिन्द समझ के, राग करना छोड दे ॥ ४ ॥ जीते जी के नाते सब ये, प्राण प्यारी और अजीज। आखिर किनारा वो करे, तूं राग करना छोड दे ॥ ५ ॥ रज मीन मधुकर मृग पतंग, इन्द्रियो के वश में मुग्ध हो। परवा न रखते प्राण की, तूं राग करना छोड दे ॥ ६ ॥ हिरण बने है जड भरतजी, भागवत का लेख है। सेठ एक कीडा बना, तूं राग करना छोड दे ॥ ७ ॥ पृथ्वीराज मशगूल हुवा, संयोगनी के प्रेम से। गई बादशाही हात से, तू मान करना छोड दे ॥ ८ ॥ वीर भाषे वत्स! गोतम, परमाद दिल से पर हरो। आन प्रकटे ज्ञान केवल, तूं राग करना छोड दे ॥ ९ ॥ गुरु के प्रसाद से, कहे चौथमल तज राजको। कर्म दल हट जायगा, तूं राग करना छोड दे ॥ १० ॥

तर्जः—पूर्ववत् (द्वेष निषेध)

चाहे अगर आराम तो, तूं द्वेष करना छोड दे। कुछ फायदा इस में नहीं, तूं द्वेष करना छोड दे ॥ टेक ॥ द्वेषी मनुष्य की देख सूरत, खून बरसे आँख से। नशीहत असर करती नही, तूं द्वेष करना छोड दे ॥ १ ॥ बहुत अर्से तक उसका, पाक दिल होता नही। बने रहे बद ख्याल हरदम, तू द्वेष करना छोड दे ॥ २ ॥ पूछो हमे हम है बडे, मत बात करना गैर की। दुर्बल बने यश और का सुन, तूं द्वेष करना छोडदे ॥ ३ ॥ देख के जरदार को, या

सती चमपान को । क्यों मरे मए वे हथा, तूं द्वेष करना छोड़ दे ॥ ४ ॥ हाकमी या अफसरी, गर नौकरी किसकी बने सुन के बने नाराम क्यों तूं, द्वेष करना छोड़ दे ॥ ५ ॥ देख मन सुख माल को, जब द्वेष सोमलने किया । दुर्गति उसकी हुई, तू द्वेष करना छोड़ दे ॥ ६ ॥ पाण्डवों से कौरवोंने, कृष्ण से फिर कंसने । विरोध करके क्या लिया, तूं द्वेष करना छोड़ दे ॥ ७ ॥ मात पिता भाई भतीजा, दास अरु पसी पशु । तकलीफ क्यों देता उन्हे, तूं द्वेष करना छोड़ दे ॥ ८ ॥ गुरु के प्रसाद से कहे, चौथमल सुनके भरा । ग्यारवों यह पाप है, तूं द्वेष करना छोड़ दे ॥ ९ ॥

तर्ज:—पूर्ववत् (कलह निषेध)

आफतम से घर भरा, तू क्लेश करना छोड़ दे । महावीर का फरमान है, तू क्लेश करना छोड़ दे ॥ टेक ॥ जहां लड़ाई वहाँ बुराई, हो बुराई ईस से-इत्तफाक गौहर क्यों लगे, तू क्लेश करना छोड़ दे ॥ १ ॥ न घटे कभू लड़ाई, बीच कहावत जक्त में । जैसा कहे वैसा सुने, तूं क्लेश करना छोड़ दे ॥ २ ॥ पूजा करे के मूर्तियों से, भड़के के हथियार को । सभा आपता भी बने तूं क्लेश करना छोड़ दे ॥ ३ ॥ सन्दर गेह के बीच घर को, याद रख रखवाऊँगा । एग तक माहिर करे, तू क्लेश करना छोड़दे ॥४॥ रावण विभीषण से लड़ा, पहुँचा विभीषण राम पैं । देखो नतीजा क्या मिला, तूं क्लेश करना छोड़दे ॥ ५ ॥ हार हाथी के लिये, कोणक चेड़ासे गा

---

* इमला करना हवा करना आदि के लिये एक सामकी शब्द और भी [illegible]

भिडा । हाथ कुछ आया नहीं, तू क्लेश करना छोडदे ॥६॥ केकईने निज हाथ से, बीज बोया फूटका । भरतजी ना खुश हुवे, तूं क्लेश करना छोडदे ॥ ७ ॥ हसन और हुसेन से, वेजा किया यजीदने । हक में उसके क्या हुआ, तूं क्लेश करना छोडदे ॥ ८ ॥ गुरुके प्रसादसे, कहे चौथमल सुनले जरा । पाप द्वादशवा बुरा, तू क्लेश करना छोडदे ॥ ९ ॥

तर्जः—पूर्ववत् (कलक निषेध)

इस तरफ तूं कर निगाह, तोमत लगाना छोड दे । तुफेल है यह तेरवा, तोमत लगाना छोड दे ॥ टेक ॥ अफसोस है इस बात का, ना सुनी देखी कभी । फौरन कहे तेने किया, तोमत लगाना छोड दे ॥ १ ॥ तंग हालत देख किसकी, तू बताता चोर है । बाज आ इस जुल्म से, तोमत लगाना छोड दे ॥ २ ॥ मर्द, औरत युवान देखी, तूं बताता बद चलन । बुढिया को कहे डाकण है, तोमत लगाना छोड दे ॥ ३ ॥ सच्चे को झूंठा कहे, ब्रह्मचारी को कहे लंपटी । *कानून में इसकी सजा, तोमत लगाना छोड दे ॥४॥ अपने पर खुद जुल्म दुनिया, देखलो यह कर रही । मालिक की मरजी कहे, तोमत लगाना छोड दे ॥ ५ ॥ जो देवे कलंक गेर के शिर, आवे उसी पर लौट कर । जैनागम यह कह रहा, तोमत लगाना छोड दे ॥६॥ गीता, पुराण, कुराण, अंजील, देखले सब में

---

* व्यभिचार का आरोप रखने वाले को सात साल की सख्त कैद की सजा कानून धारा ५०६ ।

झूठा कलक देने वाले को ६ मास की सरल कैदकी सजा और १००० रूपे दण्ड कानून धारा १८१ ।

मगा। इस लिये तूं माश का तोमत लगाना छोड़ दे ॥ ७ ॥ गुरुके प्रसाद से, कहे चौथमल सुनले नरा। मानले नसीहत मेरी तोमत लगाना छोड़ दे ॥ ८ ॥

तर्जः—पूर्ववत् (चुगली निषेध)

साफ हम कहते तुझे, चुगली का खाना छोड़दे। बदतरीं यह पाप है, चुगली का खाना छोड़दे ॥ टेक ॥ चुगलखोर सीताब तुझको, मशिवरा होगा सही। ऐसे समझकर भाइआ, चुगली का खाना छोड़दे ॥ १ ॥ इसकी उसके सामने, और उस की इसके सामने। क्यों भिड़ाता है किसे, चुगली का खाना छोड़दे ॥ २ ॥ जिसकी चुगली खाते है, इन्सान गर वह जानले। बन जायगा दुश्मन तेरा, चुगली का खाना छोड़दे ॥ ३ ॥ इस के जरिये हो लड़ाई, कैद में भी जा फसे। जहर खा कई मरगये, चुगली का खाना छोड़दे ॥ ४ ॥ सौकें मिटाई रामने, बनवास सिता को दिया। आखिर सत्य प्रगट हुआ, चुगली का खाना छोड़दे ॥ ५ ॥ गुरु के प्रसाद से कहे, चौथमल सुनको नरा। आकबत का सौच का, चुगली का खाना छोड़दे ॥ ६ ॥

तर्जः—पूर्ववत् (निंदा निषेध)

आखर बद जायगी, निन्दा पराई छोड़दे। मानले कहना मेरा, निन्दा पराई छोड़दे ॥ टेक ॥ तेरे सिर पर क्यों धरे तूं, खास लेकर और की। दानीशमंद होवे अगर, निन्दा पराई छोड़दे ॥ १ ॥ गुलाब के गर शूल हो, माली के मतलब फूल से। बारके गुण इस तरह, निन्दा पराई छोड़दे ॥ २ ॥ सूम सूरती कउवा न देखे, चिंटी न देखे महल को। गरोस जैसा मतवर्मे, निन्दा पराई छोड़दे ॥ ३ ॥

पिटी + मंस इस को कहा, भगवान श्रीमहावीर ने । मिसाल सुकर की समझ निन्दा पराई छोडदे ॥ ४ ॥ गिब्वत करे नर गेर की, वो भाई का खाता है गोस्त । कुरान में लिखा सफा, निन्दा पराई छोडदे ॥ ५ ॥ सुन भी ली चाहे देखली, गर पुछली कोई सख्स से । झूट हो चाहे सच हो, निन्दा पराई छोडदे ॥ ६ ॥ गुरु के प्रसाद से कहे, चौथमल सुनले जरा । है चार दिन की जिन्दगी, निन्दा पराई छोडदे ॥ ७ ॥

तर्ज'—पूर्ववत् [कुभावना निषेध]

वीर ने फरमादिया है, पाप यही सोलमा । अखत्यार × हरगीज मत करो, तुम पाप यही सोलमा ॥ टेर ॥ सत्संगतो खारी लगे, कुसंग मे

---

* निन्दा करना धर्म शास्त्र में निषेध है और ताजीरात हिन्द में भी निम्न प्रकार से निषेध है ।

बीभित्स पुस्तक बेंचनेवाले को तीन मास की सख्त कैद की सजा कानून धारा १९२ ।

किसीको निन्दा करने वाले छपाने वाले, व कल्क देनेवाले को दो सालकी सख्त कैद की सजा कानून धारा ४९२ ।

× ताजीरात हिन्द में भी निम्न प्रकार से है ।

खोटी वात प्रतिज्ञापूर्वक करने वाले को तीन साल की सख्त कैद सजा कानून धारा १८१ ।

धर्म स्थान में विभित्स कार्य–करनेवाले को दो साल की सख्त कानून धारा २९५ ।

आम रास्ते पर जुवा खेलने वाले को दो सौ रुपया दण्ड कानून धारा २९० ।

रहे रात दिन । तुर्मा बामी बीचरामी । है पाप यही सोलमा ॥ १॥ दया दान सत्य शक्ति की, मशीहत करे गर जो तुम्हे । बिल्कुल पसद आती नही, है पाप यही सोल्मा ॥ २ ॥ गांजा चडस भंग तमाखु, बीडी सिगरेट भग को । पीपी मगन रहेवे सदा, है पाप यही सोल्मा ॥३॥ ज्ञान ध्यान ईश्वर भजन में, नाराज तू रहता सदा । गोठ नाटक में मगन है, पाप यही सोल्मा ॥ ४ ॥ एस में मानी रही, अरति वेदी-धर्म में । कुंडरीक ने खोया जनम, है पाप येही सोल्मा ॥ ५ ॥ धर्मुन मात्रा कार ने, महावीर की बाणी सुनी । चारित्र ले त्यागन किया, है पाप यही सोल्मा ॥ ६ ॥ गुरु के प्रसाद से कहे, चौथमल सुन ले नरा । चाहे भला तो मेट जल्दी, है पाप यही सोल्मा ॥ ७ ॥

तर्ज —पूर्ववत् [कपट निषेध पर]

फायदा इसमें नही क्यों, मूठ बोले माल से । इसका नतीजा है बुरा, क्यों मूंठ बोले माल से ॥टेर॥ दगाबाजी मोह मिलकर, पाप सतरवां बना । आईन नहीं है जए सनम, क्यों मूठ बोले मालसे ॥ १ ॥ अच्छी बुरी दोनों मिला, अच्छी बताकर बेचदे । इसी तरह से वस्त्र दे, क्यों मूठ बोले मालसे ॥ २ ॥ भेद लेने गेर का, बातें बनावे प्रेम से । भगवान को कहे मानता, क्यों मूंठ बोले मालसे ॥ ३ ॥ भेष जवा दोनो को बदले, चाल भी देवे बदल । रूप को भी फेर दे, क्यों मूंठ बोले मालसे ॥ ४ ॥ परदेशी नृप को राणी ने, दिया जहर भोजन में मिला । बोलकर मीठी जबान, क्यों मूठ बोले मालसे ॥ ५ ॥ गुरु के प्रसाद से कहे चौथमल सुनले नरा । सरलता से सत्य कहो, क्यों मूठ बोले मालसे ॥ ६ ॥

तर्जः—पूर्ववत् [मिथ्यात्व निषेध]

सर्व पापों बीच में, मिथ्यात्वहीं सरदार है। इस के तजे बिन भवोदधिसे, होते नहीं भवपार है ॥ टेक ॥ सत्य दया मय धर्म को, अधर्म पापी मानते। अधर्म को माने धरम, शठ डूबते मझधार है ॥ १ ॥ जीव को जड मानते, असत्य युक्ति ठान के। निर्जीव में सजीव की, श्रद्धा रखे हरवार है ॥ २ ॥ सम्यग दर्शन ज्ञान क्रिया, को कहै उन्मार्ग है। दुर्व्यसनादिक उन्मार्ग को, बतलावे मुक्ति-द्वार है ॥ ३ ॥ सुसाधु कों ढोंगी समझ, करता कदर उनकी नहीं। धन माल गुरु रक्खे त्रिया, उन के नमे चरणार है ॥ ४ ॥ नाश करके कर्म को, गए मोक्षसो माने नहीं। मानता मुक्ति उन्हों कीं, कर्म जिन के लार है ॥ ५ ॥ अबतो मिथ्यामत को प्राणि, त्यागना ही सार है। समकित रतन को धार फिरतो, छिन में बेडापार है ॥ ६ ॥ साल चौरासी बीच में, नागोर में आना हुवा। गुरु प्रसादे चौथमल कहैता, सदाहित कार है ॥ ७ ॥

तर्ज —पूर्ववत्

कहा लिखा तूं दे बता, जालिम सजा नहीं पायगा। याद रख तूं आकबत में, हाथ मल पछतायगा ॥ टेर ॥ आपतो गुमरा हुवा फिर, और को गुमराह करे। ऐसे अजावों से वहापर, मुह सिया हो जायगा ॥ १ ॥ हो बेखतर तकलीफ पहुंचाता, किसी मशकीन को। बंबूल का तूं बीज बोकर, आम कैसे खायगा ॥ २ ॥ रुह होगा कब्ज तेरी, जा पडेगा घोर में। बोल बन्दा है तूं किसका, क्या कहीं बतलायगा ॥ ३ ॥ न हकुमत वहा चलेगी, न चलेगी हुज्जते। न इजारा वहा किसी का, रियाही कैसे पायगा ॥ ४ ॥ जवानी वातों

सरपसे, काम यहां चलता नहीं । चौथमल-कहे कर भलाई, तो भरी होजायगा ॥ ५ ॥

तर्ज—मेरे स्वामी मुझको मुगत में मुझे

कभी नेकी से दिल को, हटाओ मती । बुरे कामों में भी को, लगाओ मती ॥ टेर ॥ आए हो दुनिया बीच में, मत पुश अन्दर रीझियो । आराम पाओ यहां सदा, उपाय ऐसा कीजियो । ऐसी वस्त अमोल गमाओ मती ॥ १ ॥ दिन चार का महमान यहां, इसकामी तुम को ध्यान है । दर्द दिल के वास्ते, पैदा हुआ इन्सान है । सत्य जानके किसी को सताओ मती ॥ २ ॥ नशाखोरी जिना कारी, गुस्सावाजी छोड़दो । हरएकसे मोहब्बत करो, तुम फूट से मुह मोड़दो । नाहिक जोर्मोंके हासे में आओ मती ॥ ३ ॥ कौन है मादर फादर, कौन तेरे सगम है । धन माल यहां रह जायगा, तेरे लिये तो कफन है । ऐसी जानके पाप कमाओ मती ॥ ४ ॥ साल छियांसी मुसाफर, आया जो सेसे कार में । चौथमल उपदेश श्रोता को, दिया बाजार में । आके होटेल में धर्म गमाओ मती ॥ ५ ॥

तर्ज—बोलेरा चाहे मौको दिखलान पे फिरा हुं ॥

करना जो चाहे करके, जाना जरूर होगा । कहांतक रहो गे बैठे, जाना जरूर होगा ॥ टेर ॥ कहां है राम लछमन, गए भीम और अर्जुन । एक दिन तुम चले यहां से, जाना जरूर होगा ॥ २ ॥ हंस हस के गुस्म करते, नहीं आकबत से डरते । आखिर मतीजा इन का पाना जरूर होगा ॥ १ ॥ गुलजार की बहार देखी, झुक झुक रही है येकी । आते ही बाग कोरन, जाना जरूर होगा ॥३॥ यह कोठी बाग बाड़ी, नारी जो प्राण प्यारी । सब छोड़ के सबरों,

जाना जरूर होगा ॥ ४ ॥ यूं चौथमल सुनावे, एक धर्म साथ आवे। चाहे मानो या न मानो, जाना जरूर होगा ॥ ५ ॥

तर्जः—लाखों पापी तिरगए सत्संग के ॥

मान मन मेरा कहा, तारीफ जहा में लीजीयो। अपनी तरफ से जान कर के, दु.ख न किसको दीजियो ॥ टेर ॥ तकदीर के बलसे अहो, इन्सान पन तुम को मिला। अपना बिगाना छोडके, मलपन्न सब से कीजियो ॥१॥ गर तुम्हें कोई जान करके, बे जवा मुहसे कहे। जमीनके माफिक बनो, हरगिज न उसपे खीजियो ॥ २ ॥ मिला तुम को ड़र सुनानेवाला, अब डरियो जरा। नेक नासिहत का यह शरबत, शोकसें तुम पीजियो ॥ ३ ॥ गुरु के परसादसें कहे, चौथमल अए साहिबों। आराम जो चाहो भला, नेकी पे हरदम रीजियो ॥ ४ ॥

तर्जः—बिना रघुनाथ के देखे नहीं दिल को ॥

उलट चलने लगी दुनियां, न्यायको कोन धरता है। अगर सच्ची कहें, किससें, तो वह उलटी समझता है ॥ टेर ॥ सखी बखील बन बैठे, अजीज दुश्मन भए सारे। अरे धर्मी बने पापी, गीदड से शेर डरता है ॥ १ ॥ ब्रह्मचारी अनाचारी, त्रिया खाविंद को दे गाली। बहुसें सास भी डरती, बाप सें पुत्र लडता है ॥ २ ॥ ऊँचने नीच कृत धारा, नीच जपता है नित माला। सच्चे बोलते हैं झूंठ, नेक बदी में फिरता है ॥ ३ ॥ होके कुलवान की नारी, करे पर पुरुष संग यारी। जोगी भोग चाहता है, ब्रह्म निज कर्म हरता है ॥ ४ ॥ देखते देखते दुनियां, पलटली ही चली जाती। चौथमल वीर जो मतजा, वही संसार तिरता है ॥ ५ ॥

ॐ शान्ति शान्ति शान्ति ॥

* वन्देवीरम् *

जगद्वल्लभ जैन-दिवाकर प्रसिद्ध वक्ता पंडित रत्न मुनि श्री चौथमलजी महाराज साहब के अपने शिष्य समुदाय सहित उदयपुर में चातुर्मास करने की खुशी में भेंट।

चुनिन्दा भजन

संग्राहक—
मनोहर व्याख्यानी मुनि श्री चम्पालालजी महाराज

प्रकाशक—
श्रीमान् इन्दौर निवासी मांगीलालजी श्रीमाल की स्वर्गीय मातेश्वरी सुन्दरबाई के स्मरणार्थ भेंट।

चतुर्थावृत्ति १००० — अमूल्य भेंट — वीराब्द २४६५, विक्रमाब्द १९९६

श्री जैनोदय प्रिंटिंग प्रेस रतलाम

चुनिन्दा-भजन

नम्बर १

[तर्जः—छोटा सा बलमा मोरे आंगना में गिल्ली खेले]

ऋषभ कन्हैया लाला आंगना में रुम झुम खेले।
आखियन का तारा प्यारा, आंगना में रुम झुम खेले ॥ टेक ॥
इन्द्र इन्द्रानी आई, प्रेम धर गोदी में लेवे ।
हंसे रमावे करे प्यार, दिल की रलियां रेले ॥ १ ॥
रत्न पालनिये माता, लाल ने झुलावे झुले ।
करे लल्ला से अति प्यार, नहीं वो दूरी मेले ॥ २ ॥
स्नान कराई माता, लाल ने पहिनावे झेले ।
गले मोतियन का हार, मुकट सिर पर मेले ॥ ३ ॥
गुरु प्रसादे मुनि, चौथमल यों सब से बोले ।
नमन करो हर बार वो तीर्थंकर पाहिले ॥ ४ ॥

नम्बर २

[तर्ज:—दर्दे दिल]

तुम कहो परमात्मा मिलते नहीं ।
सच्चे दिल से आप भी रटते नहीं ॥ टेक ॥
दुनिया की मोहब्बत में फंसे हो बे तरह ।
जुल्म करने से कभी टलते नहीं ॥ १ ॥
नशा पीना तांना कशी में पास हो ।
नेक रास्ते पर कभी चलते नहीं ॥ २ ॥
इबादत तस्बी फिराते प्रेम बिन ।
दगा बाजी से कभी बचते नहीं ॥ ३ ॥
चौथमल कहे किस तरह होगा भला ।
जईफी में भी ...

नम्बर ३

[तर्ज़—कैसे फागन में आशिक हैं जलते हुए]

बन्धुओं यह आता किधर ध्यान है ?

चन्द दिन का यहाँ पे तू मेहमान है ॥ टेक ॥

यार विषय वासना से कर्म बली ।

न हुकूमत कज़ा प किसी की चली ।

धर्मी निधन भी हाल परेशान है ॥ १ ॥

समय मात्र का प्रमाद कीजे नहीं ।

उम्र टूटे प हरगिज जुड़ती नहीं ।

वीर भगवन् का ये सच्चा फरमान है ॥ २ ॥

नींद गफ़लत की तज के धरम कीजिये ।

बुरे कामों से हर दम शरम कीजिए ।

आप दुबारा मिलना इन्सान है ॥ ३ ॥

वायरस चौथमल का है आता हुआ ।

वीर संदेश सब को सुनाता हुआ ।

दाता सत् धम से सब का कल्याण है ॥ ४ ॥

नम्बर ४

[तर्ज़—तेरे पूजन को भगवान् बना मन मंदिर आलीशान]

करन भारत का कल्याण पधारे वीर प्रभु भगवान् ॥ टेक ॥

जन्मे सिद्धार्थ के घर में त्रिशला देवी के उदर में ।

सुरगणा गाया मंगल गान पधारे० ॥ १ ॥

छाया पापों का अन्धकार आती आह की भरी पुकार ।

प्रकट दिव्य शक्ति कोई आन पधारे० ॥ २ ॥

हिंसा झूठ प्रबल निवारे अहिंसा परम धर्म को धारे ।

दीना दुनियां को पैग़ाम पधारे० ॥ ३ ॥

सुरभित गुलशन जैन खिलाया सिंचन कर सर सब्ज़ बनाया ।

महकते धर्म पुष्प अति महान पधारे० ॥ ४ ॥

चौथमल कहे सुनो प्यारे, लगाओ वीर शब्द के नारे।
होजा आतम का उद्धार, पधारे० ॥ ५ ॥

नम्बर ५

[तर्ज—कैसे फेशन में आशिक हैं जलते हुए]

सारी दुनियां में इन्सान सरदार है।
मिलना हरवक्त तुम को यह दुष्वार है ॥ टेक ॥
देवप्रिय वताया प्रभु वीर ने ।
मिलना दुर्लभ जिताया प्रभु वीर ने ।
जौहरी हीरे के होते कद्र दार है ॥ १ ॥
वेशकीमत समय यह मिले न कभी।
यह उजड़ा चमन फिर खिले न कभी।
गर धर्म शास्त्र पर जो एतवार है ॥ २ ॥
फर्ज अपना वजाकर तरक्की करो।
सच्चे दिल से धर्म की उन्नति करो।
स्वर्ग अपवर्ग की गर जो दरकार है ॥ ३ ॥
सख्त दिल कर किसी को सताओगे तुम।
वाज बद्काम से गर न आओगे तुम।
समझो दोजख में गुर्जों की भरमार है ॥ ४ ॥
चौथमल की नसीहत सुनो जन सभी।
तुम तो दरिया में प्यासे न रहना कभी।
मुक्ति जाने का समझो यही द्वार है ॥ ५ ॥

नम्बर ६

(तर्ज—कव्वाली)

अगर जिनदेव के चरणों में, तेरा ध्यान हो जाता।
तो इस संसार सागर से, तेरा उद्धार हो जाता ॥ टेक ॥
न होती जगत् में ख्वारी, न वढ़ती कर्म वीमारी।
जमाना पूजता सारा, गले का हार हो जाता ॥ १ ॥

रोशनी धाम की खिलती दीपमाला दिल में हो जाती।
हृदय मंदिर में भगवन् का तुझे दीदार हो जाता ॥ २ ॥
परेशानी न हैरानी वृथा हो जाती मस्तानी।
धर्म का प्याला पी लेता ता बेड़ा पार हो जाता ॥ ३ ॥
कर्मों का पिसारा होता व धारावर आसमां बनता।
मोक्ष गद्दी पर फिर प्यारे, तेरा घरबार हो जाता ॥ ४ ॥
चढ़ाते देवता तेरे चरण की धूल मस्तक पर।
अगर जिनदेव की भक्ति में मन इकतार हो जाता ॥ ५ ॥
राम जपता अगर माला का मनका एक भक्ति से।
तो तरा भर ही मर्फ्ता के लिये दरबार हो जाता ॥ ६ ॥

नम्बर ७

[तर्ज—गज़ल]

सिदमते धर्म पर जा कि मर जायेंगे।
नाम दुनियां में रोशन वो कर जायेंगे ॥ टेक ॥
जैसे कर्म करेंगे यहां जायगे।
यह न पूछो कि मर कर किधर जायेंगे ॥ १ ॥
आप दिखला रहे हो किस तुर्शियां।
यह नशे यह नहीं जो उतर जायेंगे ॥ २ ॥
टूट जाये न माला कहीं प्रेम की।
वरना अनमोल मोती बिखर जायेंगे ॥ ३ ॥
ना मक्तूलों को छाती लगा हिंदुओं।
वरना यह लाल गैरों के घर जायेंगे ॥ ४ ॥
गर लगाते रहो मरहम प्रेम की।
एक दिन यह जखम उनके भर जायेंगे ॥ ५ ॥
चाहे मानो न मानो खुशी आप की।
हम मुसाफिर यूं कह कर चले जायेंगे ॥ ६ ॥

नम्बर ८

[तर्जः—मैं पिया मिलन के काज आज जोगन बन जाऊँगी]

नर कर उस दिन की याद कि, जिस दिन चल २ होगी ॥टेक॥
तू जोड़ जोड़ कर धरे, वस्तु तेरी कोई नहीं होगी।
जब आवें यम के दूत, नगर में खल बल खल होगी ॥ १ ॥
सब भरे रहे भंडार, नार तेरी संगी नहीं होगी।
काठी के लिये दो बांस, ओढ़ने को मलमल होगी ॥ २ ॥
ले जाते हैं श्मशान, चिता सोने के लिये होगी।
झट देंगे अग्नि लगाय, राख तेरी जल-जल जल होगी ॥ ३ ॥
तू भली बुरी जो करे, पूछ सब पर भव में होगी।
यों कहता है भूदेव, कर्म गति पल पल पल होगी ॥ ४ ॥

नम्बर ९

तर्ज.—पहलू में यार है मुझे इसकी खबर नहीं]

मर्दों को धर्म काम में डरना नहीं अच्छा।
नामर्द से उम्मीद का, करना नहीं अच्छा ॥ टेक ॥
क्या गम प्रचार धर्म में, गर जान भी जाये।
बद रस्म और बद काम में, मरना नहीं अच्छा ॥ १ ॥
बढ़ना उसी का खूब है, जिससे हो फैज आम।
जालिम व मक्खी चूस का, बढ़ना नहीं अच्छा ॥ २ ॥
वादा न निभना है यह, शैतान की हरकत।
ईसां को जबां देके, मुकरना नहीं अच्छा ॥ ३ ॥
करने से पहले सोच लो, हर काम का अञ्जाम।
आगे को कदम धर के, हटाना नहीं अच्छा ॥ ४ ॥
महाराज रामचन्द्र ने, करके दिखा दिया।
भाई को भाइयों से, झगड़ना नहीं अच्छा ॥ ५ ॥

नम्बर १०

[तर्ज.—नाटक]

महर की

दर्श अपना हमको दिखा वीर प्यारे ॥ टेक ॥
सुनाया था जो ज्ञान गौतम मुनि को ।
वही ज्ञान हमको सुना वीर प्यारे ॥ १ ॥
तिराया था अर्जुन सा पापी तुम्हीं ने ।
हमें भी तराओ महावीर प्यारे ॥ २ ॥
आ लड़ती परस्पर है सन्तान तेरी ।
हमें प्रेम करना सीखा वीर प्यारे ॥ ३ ॥
गफ़लत में सोये सभी हिन्दवासी ।
हमें शीघ्र आकर जगा वीर प्यारे ॥ ४ ॥
जैन कौम पीछे हटी जा रही ।
इसे उन्नति पर लगा वीर प्यारे ॥ ५ ॥
करें अर्ज स्वामी से केवल मुनियों ।
हमें पास अपने बुला यार प्यारे ॥ ६ ॥

नम्बर ११

[तर्ज़—पायल की झनकार कोयलियाँ काहे करत पुकार]
सतगुरुवा समझाय उमरिया बीती तेरी जाय ॥ टेक ॥
सन्ध्या राग स्वप्न की सुधि क्षण भर में बिरलाय ॥ १ ॥
वायुवत् आयु है चञ्चल स्थिर रहने की नाय ॥ २ ॥
अञ्जली नीर नीर सरिता को देखत ही बह जाय ॥ ३ ॥
जग असार सार नहीं कुछ भी सार धर्म सुखदाय ॥ ४ ॥
कर शुभ काम नाम हो जग में चातु मुनि शिव जाय ॥ ५ ॥

नम्बर १२

[तर्ज़—झुलावे झुलावे झुलावे कन्या]
फिर आना फिर आना फिर आना मोहनरे
हम गैयों के प्राण बचाना मोहनरे ॥ टेक ॥
हजारों कट रही हैं ॰ दिन घट रही हैं ।
बच्चाना रे मोहनरे १८ को गैर्य पप्पाना मोहनरे ॥१॥

विन अपराध मारते हैं, छुरियों से काटते हैं।
छुड़ाना छुड़ाना छुड़ाना मोहनरे ॥ २ ॥
हिंसा जो चढ़ रही है, दया जो घट रही है।
पिलाना ३ मोहनरे, फिर जाम दया का पिलाना मोहनरे ॥ ३ ॥
दुनियां जो सो रही है, पाप बीज बो रही है।
जगाना ३ मोहनरे, भारत को फिर से जगाना मोहनरे ॥ ४ ॥
कहे मोहन, मोहन ! आज सुरतियां बताजा।
बताजा ३ मोहनरे, प्यारी सुरतियां बताजा मोहनरे ॥ ५ ॥

नम्बर १३

[तर्ज़—पहलू में यार है मुझे उस की]

सत्य बात के कहे विना, रहा नहीं जाता।
बगुले का हंस हम से बताया नहीं जाता ॥ टेक ॥
मिलता है राज्य तख्त छत्र, एक धर्म से।
अधर्म से मिले सुख, सुनाया नहीं जाता ॥ १ ॥
अमृत के पीने से मरे, जीवे जो ज़हर से।
यह आग के बीच बाग, लगाया नहीं जाता ॥ २ ॥
दुनियां भी अगर लौट जा, अफसोस कुछ नहीं।
एरंड को कल्प वृक्ष, बताया नहीं जाता ॥ ३ ॥
कहे चौथमल दिल बीच ज़रा, गौर तो करो।
तारे की ओट चन्द्र, छिपाया नहीं जाता ॥ ४ ॥

नम्बर १४

[तर्ज़—कव्वाली]

न इज्जत दे न अज़मत दे, न सूरत दे न सीरत दे।
वतन के वास्ते भगवन् मुझे मरने की हिम्मत दे ॥ टेक ॥
जो रग़बत दे वतन की दे, जो उल्फत दे वतन की दे।
मेरे दिल में वतन के ज़र्रे-ज़र्रे की मोहब्बत दे ॥ १ ॥
न दौलत दे न दे परजोश, दिल ...

जो रो उठे वतन के वास्ते, ऐसी तबियत दे ॥ २ ॥
मुझे मतलब नहीं हैरो, हरम से दैरो हर्म से।
वतन का प्यार हे शान सदाकत दे सखावत दे ॥ ३ ॥
न दे सामान ऐशो इशरतें दुनियां में तू मुझको।
जरूरत है मुझे इन्सानियत होने की नियत दे ॥ ४ ॥
वतन की खाक पर कुर्बान होने की तमन्ना दे।
जो देश और कुल ऐसा खुदा पन्दा शराफत दे ॥ ५ ॥
पिलादे आज व्याकुल को, मय हबके वतन साकी।
कि पीकर मस्त हो जाऊ इस जाम की आदत दे ॥ ६ ॥

नम्बर १५

[तर्ज—कोई ऐसी चतुर सखी नाय मिली]

क्यों गफलत के पलंग में सोता पड़ा।
तेरा जायगा दम निकल एक पल में।
यह तो दुनिया है खेल मिसाले एवजी।
कभी उसकी बगल कभी उसकी बगल में ॥ टेक ॥
तू तो फिरता है आप दुल्हा बन ठन।
तेरे साथ बराती है कौन सजन।
यहां किस से करे अपना सगपन।
क्यों सोता है यह खाली कल कल में ॥ १ ॥
जो हिन्द क ताज को शीश धरे।
जो लाखों करोड़ों का न्याय करे।
वे राज्य को त्याग के फिरते फिरें।
जो नूर स पूर थे तेज अकल में ॥ २ ॥
कहां पांडव कहां पृथ्वीराज चौहान।
कहां बादशाह अकबर औरंगजेब।
यह राज्य तख्त सदा न सज्जन।
—भी उसके अमल कभी उसके अमल में ॥ ३ ॥

इस माल औलाद जमीं के लिये ।
कई बादशाह मार के मर भी गये ।
यह मुल्क मेरा यूं कहते गये ।
तो तू कौन सी बाग की मूली असर में ॥ ४ ॥
जो प्यारी के महल में रहते अमन में ।
वो खाते हवा सदा बाग चमन में ।
मुनि चौथमल कहे चेतो सज्जन ।
जो ऐसे गये न समझते अजल में ॥ ५ ॥

नम्बर १६

[तर्जः—इधर भी नजर हो जरा वंशी वाले]

महावीर के हम सिपाही बनेंगे ।
जो रक्खा कदम फिर न पीछे हटेंगे ॥ टेक ॥
सिखा देंगे दुनिया को शान्ति से रहना ।
अहिंसा की बिजली नसों में भरेंगे ॥ १ ॥
लगायेंगे मरहम जो होवेंगे जख्मी ।
सुखी करके जग को स्वयं दुःख सहेंगे ॥ २ ॥
कहीं जुल्म दुनिया में रहने न देंगे ।
अगर सर कटेगा खुशी से मरेंगे ॥ ३ ॥
न घुड़ दौड़ में जग के पीछे रहेंगे ।
कसेंगे कमर और आगे बढ़ेंगे ॥ ४ ॥
अहिंसा के सेवक हैं हम सच्चे ।
धर्म युद्ध में हम खुशी से लड़ेंगे ॥ ५ ॥
हमें राम सुख दुख की परवाह नहीं है ।
अहिंसा का झण्डा लहरा कर रहेंगे ॥ ६ ॥

नम्बर १७

[तर्ज—विजयी विश्व तिरंगा प्यारा]

झण्डा ऊंचा रहे हमारा, जैन धर्म का बजे नगारा ॥ टेक ॥

ऋषभदेव ने इसको रोपा। भरत चक्रवर्ती को सौंपा।
उसने इसका किया प्रसारा ॥ १ ॥
महावीर ने उसे उठाया । भारत को सन्देश सुनाया।
धर्म अहिंसा जग हितकारा ॥ २ ॥
गौतम गणधर ने अपनाया। अनेकान्त जग को समझाया ।
स्याद्वाद करके विस्तारा ॥ ३ ॥
हुआ कुमारपाल भोपाला । जैन तत्व को जिसने पाला ।
इस झण्डे का लिया सहारा ॥ ४ ॥
आज इसे मुनियों ने सम्हाला। भारत में कर दिया उजाला।
यही करया देश सुधारा ॥ ५ ॥
स्याद्वाद और दया धर्म की। दुनियां प्यासी इसी मर्म की।
इसमें तत्व भरा है सारा ॥ ६ ॥
हम सब मिलकर के सेवेंगे । नहीं जरा नमने देवेंगे ।
चाहे हो बलिदान हमारा ॥ ७ ॥

नम्बर १८

[तर्ज—इधर भी नजर हो जरा बन्सी वाले]

ए महावीर स्वामी मैं क्या चाहता हूँ।
फकत आपका आसरा चाहता हूँ ॥ टेक ॥
मिली तुमको पदवी जो निर्वाण पद की।
कि तुम जैसा मैं भी हुआ चाहता हूँ ॥ १ ॥
फंसा हूँ मैं चक्कर में आवागमन के।
अब इससे मैं होना रिहा चाहता हूँ ॥ २ ॥
तमन्ना यही है यही आरजू है ।
अय भगवन् तुम्हें देखना चाहता हूँ ॥ ३ ॥
दया कर दयालु दया चाहता हूँ ।
क्षमा कर क्षमा कर क्षमा चाहता हूँ ॥ ४ ॥
बताऊं तुम्हें और क्या चाहता हूँ ।

मैं सारे जहां का भला चाहता हूं ॥ ५ ॥

नम्बर १९

[तर्ज—जाओ जाओ ए मेरे ! साधु रहो गुरु के संग]

आये आये है जगदोद्धारक त्रिशलाजी के नन्द ॥ टेक ॥
स्वर्ग बना नरलोक, हो रहा घर घर हर्षानन्द ।
मंगल मधुर गावे परियां, उत्सव कीना इन्द्र ॥ १ ॥
कंचन वरण केहरि लक्षण, सो है चरणार्विन्द ।
नैना निरखी मुदित हुए सब, प्रभु का मुखारविंद ॥ २ ॥
सथम ले प्रभु केवल पाया, सेवे सुरनर वृन्द ।
वाणी अमृत पीवे सब ही, पावे मन आनन्द ॥ ३ ॥
अभयदान निर्वद्य वाक्य में, ज्योतिष में जो चन्द ।
तप में उत्तम ब्रह्मचर्य है, ऐसे वीर जिनन्द ॥ ४ ॥
कुँवर सुवाहु को निस्तारा, चौथा नृप फरजन्द ।
शालभद्र से भोगी को भी, किया देव अहमन्द ॥ ५ ॥
प्रभु को सुमरे प्रभुता पावे, मिट जावे दुख द्वन्द ।
साल छियाणु चौथमल के, वरते परमानन्द ॥ ६ ॥

नम्बर २०

[तर्जः—तेरे पूजन को भगवान् बना मन मंदिर आलीशान]

लीनाराम यहां अवतार, हुआ घर घर में मंगलाचार ॥ ध्रुव ॥
धन्य है मात-पिता नगरी को, जन्में चेत सुदी नवमी को ।
बोलो राम की जय नरनार ॥ हुआ० ॥ १ ॥
दशरथ कुल के हैं उजियारे, माता कौशल्या के प्यारे ।
कीना देवों ने जयकार ॥ हुआ० ॥ २ ॥
छाया पाप-तिमिर घर घर में, प्रगटे भानु सम भारत में ।
करने सत्य धर्म परचार ॥ हुआ ॥ ३ ॥
लगा है ठाठ मदनगंज भारी, मानों खिल रही केसर क्यारी ।
कहता चौथमल हर बार ॥ हुआ० ॥ ४ ॥

नम्बर २१

[तर्ज—महावीर के हम सिपाही बनेंगे]

महावीर स्वामी तू है जग त्राता।
नहीं तेरी सानी का कोई दिखाता ॥ टेक ॥
तू निर्दोष सर्वज्ञ हितोपदेशी।
नहीं तेरे गुण का कोई पार पाता ॥ १ ॥
है सिद्धान्त तेरा अनेकान्त सुन्दर।
नहीं वादी कोई भी सरको उठाता ॥ २ ॥
पुरुष चाहे नारी जो शुद्ध धर्म धारे।
इसी भव में मुक्ति यही तू बताता ॥ ३ ॥
दिया हक धरम का है चारों वरण को।
कहा नर मुनि हो तो मुक्ति सिधाता ॥ ४ ॥
कहे चौथमल जो शरण तेरी आता।
अमावास भव सिन्धु से पार पाता ॥ ५ ॥

नम्बर २२

[तर्ज—महावीर के हम सिपाही बनेंगे]

बिन किये धर्म के नर जो मर जायेंगे।
नाम दुनिया से वो खुद मिटा जायेंगे ॥ टेक ॥
आप दुनियां में एक दिन अवश्य आयेंगे
है खबर न कहीं कब कि मर जायेंगे ॥ १ ॥
जीव जैसा करेंगे वहीं जायेंगे।
यह न मालूम कि मर कर किधर जायेंगे ॥ २ ॥
अच्छे कर्म करेंगे सुगत पायेंगे।
वरना परभव में जाकर के पछतायेंगे ॥ ३ ॥
बिन दिये कर्ज के नर जो मर जायेंगे।
सेंगे पाल करज के चले जायेंगे ॥ ४ ॥
पुत्र पुत्री या औरत यह धन जायेंगे।

वक्त पर धोखा देकर चले जायेंगे ॥ ५ ॥
स्वप्नसा है जगत् हम न लुभायेंगे ।
चौथमल कहे अमर नाम कर जायेंगे ॥ ६ ॥

नम्बर २३

[तर्ज—बिछुड़े की]

सत गुरुजी समझावे, तुझे चतावे हो चेतन जी ।
ज्ञानवान चतनजी, पाया तुम उत्तम नर तन जी ॥ टेक ॥
इस ही मानुष जन्म से, तिरिया जीव अनेक ।
तुम भी उत्तम काज कर, हृदय करी ने विवेक ॥
मत ना मुफ्त गुमाओ ध्यान में लाओ हो ॥ १ ॥
तू अविनाशी आप है, सत चित्त आनन्द रूप ।
भौतिक धर्म में राच के, क्यों पड़ता अन्ध कूप ॥
अनतीवार दुख पाया जो ललचाया हो ॥ २ ॥
स्वयं लक्ष मोह को तजो, सजो धर्म का साज ।
चपला ज्यों जीवन चपल, करो सफल निज काज ॥
क्यों गफलत में सोया वक्त को खोया हो ॥ ३ ॥
टोंक शहर के बीच में, चौथमल रहा टोंक ।
जाते उपट पथ्थ से, नर भव गाड़ी रोक ॥
शिव पथ में आप चलाओ सदा सुख पाओ हो ॥ ४ ॥

नम्बर २४

[तर्ज—नर कर उस दिन की याद कि]

मन भजले तू भगवान् जिन्दगी तभी सफल होगी ॥ टेक ॥
तू सोता है मोह नींद सुद्ध जो तुझे नहीं होगी ।
पत्थर के बदले रत्न फेंक आखिर बेकल होगी ॥ १ ॥
बालापन बीता खेल युवानी तिरिया मोह लेगी ।
वृद्धापन धंधे में बीता तो बात विफल होगी ॥ २ ॥

गंगा में प्यासा रहे बात ये अचरज की होगी।
नर तन से कीना धर्म नहीं तो अकल विकल होगी ॥ ३ ॥
सब पुण्य पाप तेरे संग यहीं नकी यहां रहयेगी।
कहे चौथमल तप त्याग से तेरी मोक्ष कुशल होगी ॥ ४ ॥

नम्बर २५

[तर्ज—एक तीर फेंकता जा तिरछी कमान वाले]

एक घर में दो विरादर, किस्मत जुदा जुदा है।
तख्ते नशीन है एक एक खाक पर पड़ा है ॥ टेर ॥
एक वीर के घड़े को भर कूप से निकाले।
एक नालियों में जाता एक शिव के सिर चढ़ा है ॥ १ ॥
इस्तीय गुल भी देखो आते हैं एक बहार में।
पांवों तले दबा एक, एक ताज में लगा है ॥ २ ॥
एक खान से दो पत्थर, निकल अभी से बाहर।
एक खा रहा है ठोकर, अवतार एक बना है ॥ ३ ॥
सम्यक के दो हैं टुकड़े किस्मत का फेर देखो।
एक बन गई है माला एक आग में जला है ॥ ४ ॥
तकदीर के यह रंग हैं क्या ही अजब फकीरा।
एक हुक्म दे रहा है एक द्वार पे खड़ा है ॥ ५ ॥

नम्बर २६

[तर्ज—इधर भी नजर हो जरा बंसी वाले]

सदा एक जैसा जमाना नहीं है।
गरीबों को अच्छा सताना नहीं है ॥ टेक ॥
न समझो कि तुम जैसी दुनियां है सारी।
है यह भी जो खाने को दाना नहीं है ॥ १ ॥
गरीबों के नालों में है दर्द पैदा।
यह सुनने को दिल क्या तड़पाना नहीं है ॥ २ ॥

औ हैरत वालों न उनको सताओ ।
जिन्हें रहने को आशियाना नहीं है ॥ ३ ॥
मैं फूलो गरीबों का तुम दिल दुखाकर ।
यह कुछ सागिरे खसरो वाना नहीं है ॥ ४ ॥
तुम्हारी जमीं पर हमारे लिये क्या ।
कहीं एक गज भर ठिकाना नहीं है ॥ ५ ॥
फना होना जिसको वका कौनसी है ।
किसे आके दुनियां से जाना नहीं है ॥ ६ ॥

नम्बर २७

[तर्ज—गायन]

त्रशला दे महतारी, तुमको लाखों प्रणाम ।
शुद्ध समकित धारी, तुमको लाखों प्रणाम ॥ टेक ॥
महावीर सा नन्दन जाया, देवी देव मिल हर्ष मनाया ।
रत्न कूख की धारी, तुमको लाखों प्रणाम ॥ १ ॥
पशु वलि होता अटकाया, जीवों का अज्ञान हटाया ।
ऐसा प्रभु जननारी, तुमको लाखों प्रणाम ॥ २ ॥
इन्द्रभूतिजी को समझाया, गणधर अपना खास बनाया ।
उनकी जन्म दातारी, तुमको लाखों प्रणाम ॥ ३ ॥
ममता तज संथारो धारी, द्वादश में सुरलोक सिधारी ।
विदेह मोक्ष जानारी, तुमको लाखों प्रणाम ॥ ४ ॥
मदनगंज छियानवे मांई, वीर जयति खूब मनाई ।
कहे चौथमल वलिहारी, तुमको लाखों प्रणाम ॥ ५ ॥

नम्बर २८

(तर्ज.—महावीर के हम सिपाही बनेंगे)

उठो जैन बन्धु जगाना पड़ेगा ।
अहिंसा का झण्डा उठाना पड़ेगा ॥ टेक ॥

प्रबोधकः—
आर्य जैन
श्रीसुखमुनीजीमहाराज

“श्रीमद् आदर्श आचार्य गुण-गान”

पेटी नंबर १

संग्राहक—
मन्त्री.—
श्रीमहावीर जैन युवक मित्र मंडल
मु० मन्दसौर, शहर।

प्रकाशक —
श्रीमान् सेठ हीराचंद पन्नालालजी, मोतीचन्दजी जौहरी
स्था० जैन, मु० जयपुर सिटी।

प्रथमवार
कुल प्रति २०००

मूल्य ।।।
ज्ञानखाता में

श्री वीराब्द २४६३
विक्रम सं० १९९३
कार्तिक शुक्ला १५

नोटः-दीपक के उजाले और खुले मुंह नहीं पढ़ना. प्रबोधक :
यह पुस्तक मंडल मंदसौर को समर्पण की है

* श्रीमद्वीरायनमः *

पूज्य गुण, गान, नं० १

तर्ज—घनघोर घटा में सूरज को, छिपवा दिया कमलीवाले ने॥यह

दीनी है शिक्षा हितकारी, पूज्य खूबचन्द्रजी स्वामी ने।
बतलाया है मारग मुक्ती का, पूज्य खूबचन्द्रजी स्वामी ने ॥ टेर ॥
शहर निम्बाहेड़ा गुलजारी है, मेवाड़ देश मझारी है।
जहां जन्म लिया सुखकारी है, पूज्य खूबचन्द्रजी स्वामी ने ॥ १॥
पिता टेकचन्द्रजी सुखदाई, माता गेन्द कुँवर उदर ताई।
लिया जन्म उन्निसो तीस मॉई, पूज्य खूबचन्द्रजी स्वामी ने ॥ २॥
उन्निसो पच्चास वैराग्य पाय, लिया विषय भोग से मन हटाय।
संजम लेने की दिल में चाय, करी खूबचन्द्रजी स्वामी ने ॥ दी० ३
उन्निसो बावन नीमच मॉई, गुरू भेट्या नन्द मुनि सुखदाई।
लीना है संयम हरषाई, पूज्य खूबचन्द्रजी स्वामी ने ॥ दी० ॥ ४॥
कर विनय गुरूजी से ज्ञान लिया, आलस्य अविनय को दूर किया।
शुद्ध क्रिया मॉही चित दीया, पूज्य खूबचन्द्र जी स्वामी ने ॥ ५॥
धैर्यवान वैराग्यवान, और विद्वान है गुणधारी।
सद्बोध दिया कई जीवों को,पूज्य खूबचन्द्रजी स्वामी ने ॥ दी०॥६
व्याख्यान देने की अजब छटा, भवि सुने हो आवे लुम लटा।
दिया कईयों का मिथ्यात्व हटा, पूज्य खूबचन्द्रजी स्वामी ने॥दी ७
अगणित जीवों को छुरी से, कटते हुवे को बचवाये।
शुभ नामक माया जगत बीच, पूज्य खूबचन्द्रजी स्वामी ने ॥ ८ ॥
प्रिय सौम आकृति पूज्य मुख की है, किया दर्श इतिश्री दुःख की है।
की नैया पार मुनिसुख की है, पूज्य खूबचन्द्र जी स्वामी ने ॥ ९ ॥

गुण-गान-नं० २

तर्ज—मिल मन समझाई, कनक मे कामय जग में फंसि है। ॥

सुरतानी पूज्य जी भरत भवधारी मुझसे तारजो ॥ टेर ॥
तारण तरण है पिरध आपको कहूँ सुनो पूज्य राज।
इण भवसागर मांयने सरे आप धर्म की जहाजजी ॥ सु० ॥ १ ॥
प्रदेशी और संयती राजा तथा चिलायती चोर।
भवसागर से तार अर्दे श्री स्वर्ग मोक्ष की ठोर जी ॥ सु० ॥ २ ॥
औगुण भरी मुझ आतमा सरे, क्रिया धनी नहीं आवे।
पुत्र चीड़ पन आवे तदपि, पिता तो पिरध निभावेजी ॥ सु० ॥ ३ ॥
शरण लिया मैं आपकी सर, नैया करण भव पार।
उपकारी पूज्य आप सरीखा नहीं है इण संसारजी ॥ सु० ॥ ४ ॥
धैर्यवान हो सरल स्वभावी ज्ञान दान दातार।
तारीफ आपकी कही न जावे हो सुगुण भण्डार जी ॥ सु० ॥ ५ ॥
श्री मुन्नालाल पूज्यराज पाटपर, पद्म कर्मी हो आप।
तप संयम में लीन आपको बड़े तेज प्रताप जी ॥ सु० ॥ ६ ॥
मुनी गुण सम्पन्न खूबचन्द्र पूज्य भव जल तारण जहाज।
मन्दसौर में सुख मुनि कहे रखियो पूज्यजी लाज जी ॥ सु० ॥ ७ ॥

गुण-गान-नं० ३

तर्ज — पढ़ादे पढ़ादे पढ़ादे, बरची ॥ यह ॥

सुनादो सुनादो, सुनादो पूज्यजी यह जैनागम का ज्ञान-सुनादो पूज्यजी ॥ टेर ॥ इस शैली तुम्हारी प्रबल निराली सिखादो,सिखादो सिखादो पूज्यजी, यह जैनागम की रहस्य सिखादो पूज्यजी ॥ १ ॥ वाणी तुमारी सबको है प्यारी पिलादो ये पूज्यजी जिन

वाणी का जाम पिला दो पूज्यजी ॥२॥ तुम परम वैरागी, छती के त्यागी, दिखादो २ पूज्यजी, अनुचर को दर्श दिखादो पूज्यजी ॥३ सौम मुद्रा तुमारी,लागे है प्यारी दिखादो, २ पूज्यजी मन मोहनी मूर्ति दिखादो पूजयजी ॥ ४ ॥ मुनि वक्ता री अर्जी, सुन लीजो पूज्यवरजी,छुड़ादो२ पूज्यजी,इन कर्मों के फन्दसे छुड़ादो पूज्यजी॥

गुण गान नं० ४ तर्ज:—दो फूल साथ उघड़े ॥ यह

वैराग्य पूर्ण पूरे, पूज्य खूबचन्द हमारे ।
हुक्मेश गच्छ गुणागर, पूज्य खूबचन्द हमारे ॥टेक॥
शांति अजब तुम्हारी, है जगत बीच जहारी ।
संयम में आप सूरे, पूज्य खूबचंद हमारे ॥ १ ॥
रागादि दुर्गुणों को, कीने हैं नष्ट तुमने ।
कर्मों को नित्य चूरे, पूज्य खूबचन्द हमारे ॥ २ ॥
वाणी अजब रसिली, अमृत बरस रहा है ।
किये नष्ट भव्य अंकुरे, पूज्य खूबचन्द हमारे ॥ ३ ॥
तुम ज्ञान के हो सागर, नहीं पार है गुणों का ।
रहे दुर्गुणों से दूरे, पूज्य खूबचन्द हमारे ॥ ४ ॥
महिमा तुम्हारी हम से, गाई नहीं है जाती ।
मुजामी मोम लूरे, पूज्य खूबचन्द हमारे ॥ ५ ॥
कहता चरण का चाकर, 'चम्पक मुनि' उदयपुर ।
आशा हमारी पूरे, पूज्य खूबचन्द हमारे ॥ ६ ॥

गुण गान नं० ५

तर्ज—शुद्ध समकीत मुज़ मिल गई रे ॥ यह ॥
चतुर सह्रने प्यारा रे, हां पूज्य—हमारा ॥ टेर ॥

जन्मभूमि शुभ शहर निम्बाहेड़ा' किया आप जहाँ अवतारारे हाँ ॥१॥
पिता टकचन्दजी श्रावक पूरा माता गेन्दी का दुलारारे हाँ ॥ २ ॥
विक्रम सं० बावन मझारे, गुरुनन्द मुनिश्री धारारे हाँ पूज्य० ॥३॥
विनय सहित करके गुरु सेवा ज्ञान हृदय में धारारे ॥ हाँ ॥ ४ ॥
सत्यवा पूर सरल स्वभावी, शशी सम सोम दीदारार ॥ हाँ ॥ ५ ॥
त्याग वैराग्य जिन्हों का निर्मल,बाखे जगजन सारारे ॥ हाँ ॥ ६ ॥
वाणी अजब अमृत सम मीठी,शब्द सुललीत अति प्यारार॥हाँ॥७॥
कहाँ तक कहूँ मैं शुभ गुण परगम आवत नहीं कछु पारारे ॥हाँ॥८॥
भ्रमर रजित पुष्प तसुनामें कहे मुनि दास तुमारारे ॥ हाँ। ९ ॥

गुण गान न० ६ तर्ज :— नाटक की चाल

लगा ध्यान में यारों, पूज्य चरन में ॥ टेर ॥
मन मोहन है सूरत तुमारी दीदार आपका है गौर बरन में ॥
अजब निराली वाणी तुमारी एक बार और सुनाओ करण में ॥
लगा ध्यान में यारों पूज्य चरन में ॥ २ ॥
आचारज तीसेपद सोहे जैसे मुकट सोहे आभरन में । लगा ध्यान०
॥ ३ ॥ अब मुझने तारो कृपा कर स्वामी, सोहन मुनि आया
आप चरन में ॥ लगा ध्यान मेरा० ॥ ४ ॥

गुण गान न० ७ तर्ज:— कमली वाले की

आनंद का रंग यहाँ बरसाया पूज्य खूबचंद जी स्वामी ने ।
रास्ता शिवपुर का बतलाया पूज्य खूबचंद जी स्वामी ने ॥टेर
शान्ति का साम्राज्य किया अशांति क्लेश को दूर किया ।
सब प्रेम करो यह दरसाया पूज्य खूबचन्द स्वामी ने ॥ १ ॥
व्याख्यान मधुर पूज्य देते हैं श्रोताओंका चित्त हर लेते हैं।
आगम मिल मिल कर समझाया पूज्य खूबचन्द जो ॥ २ ॥

समकीतका पाया जमाय दिया,मिथ्यात्वतिमिर का नाश किया
वैराग्य का भानु चमकाया, पूज्य खूबचन्द जी० ॥ ३ ॥
कहे नाथू मुनि यश आप लिया,सत्य धर्म का खूब प्रचार किया।
दया धर्म का झण्डा लहराया, पूज्य खूबचन्द जी० ॥ ४ ॥

गुण गान नं० ८ तर्ज:— विछुडा की

अजब रसीली वाणी प्यारी लागे हो, पूज्य सीरी
खूब सुनाई जिन वाणी । अमृत से मीठी तुम वाणी ॥ १ ॥ टेर ॥
मिश्र २ कर समझावो, सूत्र सुनावो, हो पूज्य श्री ॥ खुब० ॥२ ॥
सात्वीक ज्ञान सुनायो, आनन्द पायो हो, पूज्य श्री ॥ खुब० ॥३ ॥
भवि वैराग्य में छावे, तुमपे लुभावे हो, पूज्य श्री ॥ खुब० ॥ ४ ॥
खूबचन्द तुम नाम थो, मुझ मन भावे हो,पूज्य श्री ॥ खुब० ॥ ५ ॥
नाथू मोहन मुनि गायो, भजन सुनाये हो, पूज्य श्री ॥ खुब० ॥६ ॥

गुण गान नं० ९

तर्ज:—नेम पिया की मैं तो दासी बनी ॥ यह ॥
पूज्य श्री की मैं तो, वानी सुनी, मैं तो वानी सुनी. ॥ टेर ॥
चोखो ज्ञान सुनाओ स्वामी, मुक्ती पथ बताओ ।
भूले हुये जगत जीवों को,सीधी राह दिखाओ ॥ मैं तो वानी० ॥
सत्य बात दरसाओ सब ने, कूड़ नहीं लवलेश ।
पतित पावन धर्म जगत में कहो वीर सन्देश ॥ मैं तो वानी० ॥२॥
विषय कषाय प्रमाद तजो सब, और तजो जगत का धन्धा ।
वीर वाणी का पान करो सब,मिटे चौरासी फन्दा ॥ मैं तो०॥३॥
संवत् उन्निसो साल तिराणु, लश्कर शहर में आया, ।
गुरु हुकम से नाथू सोहन मुनि, आय चौमासा ठाया ॥ मैं० ॥४॥

गुणगान नं० १० तर्ज—कम्लीवाले की

पूज्य 'रघु' ता सुयही यश लिया आकर के भारत भूमि में।
सत्य धर्म का भण्डा लहराया आकर के भारत भूमि में ॥ टेर ॥

यावन में दीक्षा धारी है, त्यागी पदवी आ धारी है।
जग से मोह ममत्व निवारी है आकर के भारत भूमि में ॥ १ ॥

षट् खण्डों के ज्ञाता हो स्वामी हो क्रियापात्र पूज्य परमामी।
वैराग्य का मानु चमकाया आकर के भारत भूमि में ॥ २ ॥

पूज्य धैर्यवान तुम पूरे हो और तप संयम में सूरे हो।
वाणी का अमीरस पाया है, आकर के भारत भूमि में ॥ ३ ॥

कह माधु मुनि और मोहन मुनि पूज्य राज हमारे बहुत गुणी।
अति पुण्योदय से पूज्य पाये, हमने तो भारत भूमि में ॥ ४ ॥

गुणगान नं० ११ तर्ज—ख्याल की

आपकी लगाई झड़ियाँ ज्ञान की पूज्य रघुनाथजी ॥ टेर ॥
मेवाड़ देश में शहर निम्बाहेड़ा है जग में विख्यात।
टेकचन्दजी पिता आपके, गंगीबाई मात हो ॥ पु १ ॥
सुख साधों से संयम लीना त्यागी परणी नार।
श्रीगुरु मन्नालाल समीपे महाव्रत लीना धार हो ॥ पु० २ ॥
ज्ञान ध्यान में मगन आप हो मन मीन जिम वारी।
धुर-वीर-गम्भीर धीर हो क्रियापात्र गुणधारी हो ॥ पु० ३ ॥
आचारज दीक्षा पद ऊपर, सोहो आप पूज्य लागे।
वाणी सरस रसीली आपकी सबको प्यारी लागे हो ॥ पु० ४ ॥
मत्व बधारी पुरुषों से हो सच्चा वैरागी।
तत्व ज्ञान में मगन आपकी सुरत मुक्ती से लागी हो ॥ पु० ५ ॥
माधु मुनि और मोहन मुनि तो पूज्य हुक्म से आया।
लश्कर शहर विराजी साल में आप चौमासा ठाया हो ॥ पु० ६॥

गुण गान नं० १२

तर्जः—मनमोहन मुरली वाले तुमको लाखों प्रणाम ॥ यह ॥
गेंदी बाई के नंद, तुमको लाखों प्रणाम २ ॥टेर॥

टेकचंदजी कुल उजियारे, युवा, वयमें, महाव्रत, धारे।
होने भवोदधि पारे तुमको लाखों प्रणाम २ ॥ १ ॥

पूज्य खूब चंदजी प्राण पियारे,जैसे तारा बिच चंद्र उजियारे।
जन्म निम्बाहेड़ा धारे ॥ तुमको लाखों प्रणाम २ ॥२॥

वचन कला सुन हरषे सारे, सूत्र समवायाङ्ग का अधिकारे।
सुन्दर भाव उच्चारे ॥ तुमको लाखों प्रणाम २ ॥ ३ ॥

शिष्य मण्डली संग लेय पधारे, विविध गुणों के हो भंडारे।
उपदेश से भवि जीव तारे॥ तुमको लाखों प्रणाम २ ॥४

उन्निसो तिराणुं साल मझारे, जैपुर शहर में पूज्य पधारे ।
सेवक माधव पुकारे, ॥ तुमको लाखों प्रणाम २ ॥५॥

गुण गान नं० १३

तर्ज—मनमोहन कृष्ण मुरारी, प्रभु अद्भुत महिमा थारी ॥ यह ॥
मनमोहन वाणी तुम्हारी, पूज्य खूब चन्द गुण धारी ॥ टेर ॥

जन्म स्थान शुभ शहर निम्बारो, पितु टेकचन्द गेन्दी नो प्यारो,
मेवाड देश सुखकारी, पूज्य खूबचद्र गुण धारी ॥ १ ॥

तरुण वय त्याग्यो जग सारो, अही कंचुक वत् तजि परिवारो,
साल बावन दीक्षा धारी, । पूज्य खूबचन्द्र गुण धारी ॥२॥

तन मन से करके गुरू सेवा, लिया ज्ञान अमृत रस मेवा,
श्री नन्द गुरू से उपकारी, । पूज्य खूबचन्द्र गुणधारी ॥ ३ ॥

शीतल आनन सोहे तुमारा, भानुवत् दीप रह्या दीदारा,
अद्भुत क्षमा भण्डारी, पूज्य खूबचन्द्र गुण धारी ॥ ४ ॥

गुणगान नं० १० तर्ज—कमलीवाले की

पूज्य 'सुख' तो सबही यश लिया आकर के भारत भूमि में।
सत्य धर्म का झण्डा लहराया आकर के भारत भूमि में ॥ टेर ॥

बालपन में दीक्षा धारी है त्यागी पत्नी जो नारी है।
जग से मोह ममत्व निवारी है आकर के भारत भूमि में ॥ १ ॥

बहु शास्त्रों के ज्ञाता हो स्वामी हो क्रियापात्र पूज्य परनामी।
वैराग्य का भानु चमकाया आकर के भारत भूमि में ॥ २ ॥

पूज्य धैर्यवान तुम पूरे हो और तप संयम में सूरे हो।
वाणी का अमीरस पाया है, आकर के भारत भूमि में ॥ ३ ॥

कहे माधु मुनि और सोहन मुनि पूज्य राज हमारे बहुत गुणी।
अति पुण्योदय से पूज्य पाये, हमने तो भारत भूमि में ॥ ४ ॥

गुणगान नं० ११ तर्ज—ख्याल की

आपकी लगाई लगियाँ नाम की पूज्य सुखलालजी ॥ टेर ॥
मेवाड़ देश में शहर मिण्डाहड़ा है जग में विख्यात।
देवलालजी पिता आपके, गेंदीबाई मात हो ॥ पु० १ ॥
शुभ भावों से संयम लीना त्यागी परणी नार।
श्रीगुरु नन्दलाल समीपे महाव्रत लीना धार हो ॥ पु० २ ॥
ज्ञान ध्यान में मगन आप हो मन मीन जिम वारी।
सूर-वीर-गम्भीर धीर हो क्रियापात्र गुणधारी हो ॥ पु० ३ ॥
आचारज टीका पद ऊपर, सोहो आप पूज्य लागे।
वाणी सरस रसीली आपकी सबको प्यारी लागे हो ॥ पु० ४ ॥
मत्य प्रचारी गुरुओं से हो सच्चा वैरागी।
रत्न ज्ञान में मगन आपकी, सूरत मुख से लागी हो ॥ पु० ५ ॥
माधु मुनि मार सोहन मुनि तो पूज्य हुकम से आया।
जसकर शहर विराजे साल में आप चौमासा ठाया हो ॥ पु० ६ ॥

गुण गान नं० १२

तर्ज—मनमोहन मुरली वाले तुमको लाखों प्रणाम ॥ यह ॥
गेंदी बाई के नंद, तुमको लाखों प्रणाम २ ॥टेर॥

टेकचंदजी कुल उजियारे, युवा, वयमे, महाव्रत, धारे।
होने भवोदधि पार तुमको लाखों प्रणाम २ ॥ १ ॥

पूज्य खूब चदजी प्राण पियारे,जैसे तारा बिच चंद्र उजियारे।
जन्म निम्बाहेड़ा धारे ॥ तुमको लाखों प्रणाम २ ॥२॥

वचन कला सुन हरपे सारे, सूत्र समवायाङ्ग का अधिकारे।
सुन्दर भाव उच्चारे ॥ तुमको लाखों प्रणाम २ ॥ ३ ॥

शिष्य मण्डली संग लेय पधारे, विविध गुणों के हो भंडारे।
उपदेश से भवि जीव तारे॥ तुमको लाखो प्रणाम २ ॥४

उन्निसो तिरांणु साल मझारे, जैपुर शहर मे पूज्य पधारे ।
सेवक माधव पुकारे, ॥ तुमको लाखो प्रणाम २ ॥५॥

गुण गान नं० १३

तर्ज—मनमोहन कृष्ण मुरारी, प्रभु अद्भुत महिमा धारी ॥ यह ॥
मनमोहन वाणी तुम्हारी, पूज्य खूब चन्द गुण धारी ॥ टेर ॥

जन्म स्थान शुभ शहर निम्बारो, पितु टेकचन्द गेन्दी नो प्यारो,
मेवाड देश सुखकारी, पूज्य खूबचंद्र गुण धारी ॥ १ ॥
तरुण वय त्याग्यो जग सारो, अही कॅचुक वत् तजि परिवारो,
साल बावन दीक्षा धारी, । पूज्य खूबचन्द्र गुण धारी ॥२॥
तन मन से करके गुरू सेवा, लिया ज्ञान अमृत रस मेवा,
श्री नन्द गुरू से उपकारी, । पूज्य खूबचन्द्र गुणधारी ॥ ३ ॥
शीतल आनन सोहे तुमारा, भानुवत् दीप रहा दीदारा,
अद्भुत क्षमा भण्डारी, पूज्य खूबचन्द्र गुण धारी ॥ ४ ॥

पूज्य मुन्नालालजी पाटवीपायो, तुमने सिंचन कर सरसायो,
पीछा सत्य को धारी पूज्य खुब चन्द गुणधारी ॥ ५ ॥
श्री हुकम गच्छ में उत्तम आचारी आप रही गुरु सुमिर्ण धारी
पक्षा धर्म को हारी । पूज्य खुबचन्द गुरु धारी, ॥ ६ ॥
ईकाणु साल रतन पुरी आया, "चम्पक" मुनि ने भजन बनाया,
सुनाया सभा मझारी । पूज्य खुबचन्द गुरु धारी ॥ ७ ॥

गुण गान नं० १४

तर्ज—सुमिर अरिहंत चित्त आनन्द मुनि यो सौगुणी ॥ यह ॥
दरश तुमरो पायो पूज्य राज म्हारो हीवड़ो हुलस्या आज ॥ टेर
आप सुगुण निधि पूज्य जी सरे शान्त दयाभण्डार, भवियाँ को
तारण मानो जहाज । श्री हुकम चन्द पूज्य राज गच्छ में छट्ठे पाट
बिराज । दरश तुमारो पायो पूज्य राज ॥ १ ॥
मिलता अवसर मोजसे सरे साथ तणो अपार सुधा ने मिले
ज्युँ इच्छित नाज । नीर मिले प्यास्या को शीतल रङ्क पावे ज्युँ
राज ॥ दरश० २ ॥
त्यों शुभ दरशन आपको, सर्पूज्य मिलियो आज भैयकार, आप
हो माणिक्य सिर का ताज । वीर वाणी फरमावो सभा में केसरी
सिंह ज्यों गाज ॥ दरश० ३ ॥
विनय सम्पन्न और धैर्यता का गुण तुम में अधिक सोहाय मिष्ट
और मीठी तुमरी आवाज । कृपा किया पूज्य राज हमारा पालिया
आवे मान ॥ दरश० ४ ॥
खुबचन्द पूज्य राजकी सरे तुमरी महिमा विशाल आप हो
भवियाँ के सुख साज । चरणाँ का सेवक सुखमुनि की दर्शिये
हमेशा आज ॥ दरश तुमरो पायो ॥५॥

गुण गान नं० १५

तर्ज—मेरे प्रभु मुझे न दिल से भूल ॥यह॥

परम पूज्य खूबचन्दजी अणगार। शुद्ध भाव से संयम पाले, है
उनकी बलिहार॥ परम ॥ टेर ॥

पिता आपके टेकचन्दजी, गौत्र जेतावत धार। गेंदीबाई मात
कुख में, जन्म निम्बाहेडा मझार॥ परम० ॥१।

छोड़ असार संसार आपने, त्यागी परणी नार। युवावय में ही
आपने, लीना महाव्रत धार। परम० ॥ २ ॥

संग में शिष्य सुखमुनिजी, मिलनसार गुणधार। वैराग्य मयी
व्याख्यान आपके, सुन हर्षे नर नार॥ परम० ॥ ३ ॥

तपस्वी मुनि श्री छब्बालालजी, तप करे दुक्करकार। बड़े २ थोक
किये तपके, साधन मोक्ष का द्वार॥ परम० ॥ ४ ॥

श्री मुनि हीरालालजी, लघुवय व्रत लिया धार। वाणी आपकी
है पियकारी, हंस मुखी दीदार॥ परम० ॥ ५ ॥

श्री मुनि नानकरामजी, करत भजन श्रेयकार। नव दीक्षित दीप
मुनि जी, गुरू सेवा में रहे लार॥ परम० ॥ ६ ॥

साल तियासी जैपुर मांही, किया चौमासो सुखकार। सेवक
माणुलाल विनवे, लुल २ बारम्बार॥ परम० ॥ ७ ॥

गुणगान नं० १६

तर्ज=श्री जिन मुझने पार उतारो ॥ यह

पूज्यवेगा चित्तौड़ शहर पधारो। नित राह जोवे नर नारो। टेर॥
पूज्य खूबचन्द तुम नाम पियारो, हो सुगुण भंडारो।

दर्शन आपका अति प्रियकारी, देख हर्षे मन म्हारो ॥ पूज्य० १ ॥
भवसागर बिच जहाज हमारो तुम बिन कौन आधारो।
अहसान भारी होगा हमको देवो आप सहारो ॥ पू० २ ॥
रेलिया, तमेटी की अर्जी है स्वामी संग शिष्य लेय पधारो।
बड़ा बड़ा सैन देख पूज्यवर, सूखो मती सैन मारो ॥ पू० ३ ॥
निरखत नैन अपति नहीं होव, छ्मारयो मन मारा।
सुयश आपको जगत में स्वामी कथा न आवे किनारो ॥ पू० ४ ॥
हाथ जोड़ सिरनाय कहुँ पूज्य अर्जी शीघ्र अब धारो।
पावन करन चितौड़ शहर को, हुकम देवो इस वारो ॥ पू० ५ ॥
सम्वत् उन्निसा साल तिरासी, जयपुर शहर मझारो।
अर्ज करे सैंघ आय चरन में पधारो हासी अवधारो ॥ पू० ६ ॥

गुण गान नं० १७ तर्ज—रसिया की

दरशन पाया श्री पूज्यवर का मेरा राम २ हरषाय ॥ टेर० ॥
रात दिवस दरशन की इच्छा रहती दिल के मांय।
पुण्य उदय हुआ आज पूज्य का अवसर मिलिया आय ॥ दर० १॥
दरशन आपका आनन्दकारी भव बन्धन दे छुड़ाय।
जिन शासन शृंगार आप हो उपकारी सुखदाय ॥ दर० २ ॥
ज्ञान निधि उत्तम आचारी, सरल भाव दिल मांय।
निर अभिमानी विनय सम्पन्न हो धन २ तुम पितु माय ॥दर०३॥
प्रवर पंडित गुरु वय आपके नन्दलालजी मुनिराय।
पाद विभूषित पदधारी जैन सम्प्रदा मांय ॥ दरशन० ४ ॥
खूबचन्द्र पूज्य राज आपके, बड़े शिष्य समुदाय।
दरशन कर चित्त प्रसन्न हुआ सुख मुनि गुण गाय ॥ दरशन० ५ ॥

गुण गान नं० १८

तर्जः—क्यों-भूलिया दीवाने, दुनियां में सार नाहीं ॥ यह० ॥

पूज्य खूबचन्दजी का, सुयश यह छा रहा है । सुन २ के उनकी महिमा, आनन्द यह आ रहा है ॥ टेर० ॥

सद्ज्ञान के भण्डारी, सोमाकृति तुमारी ,। मुनियों का वृन्द तुम से शोभा, यह पा रहा है ॥ पूज्य खूबचन्दजी का० १ ।

तुम भानु ज्ञान के हो, और पोत सम हो तारक, । सुशिक्षा धार तुमरी, भविपार पा रहा है ॥ पूज्य खूबचन्दजी का० २ ॥

उपदेश सरस तुमरा, भवि जीव सुन २ के, । सुश्रद्धा धार सुध मन, खुशियां मना रहा है ॥ पूज्य खूबचन्दद्रजी का० ३ ॥

सुश्रद्धा धैर्यता का, तुम मे यह गुण है भारी, प्रिय वाणी नित्य तुमारी, भविजन यह चाह रहा है ॥ पूज्य खूब० का ४ ॥

यह शहर जावरा का, श्री शान्ति नाथ मण्डल । पूज्यवर तुमारी महिमा प्रति दिन यह गा रहा है ॥ पूज्य खूबचन्दजी का० ५ ।

गुण गान नं० १६ तर्ज ख्याल की ।

रे, पूज्य जी पधारे जयपुर शहर में ॥ टेर ॥

आनन्दकारी दिवस आज का, भला हुआ महाराज ।
दरश दिया शुभ आपने सरे, सरीया वांछीत काज हो । शु० ॥१।

तिराणु साल चौमासा कारण, करिपा कीनी दयाल ।
ठाना सु पधारिया सरे, वरते मंगल माल हो ॥ शुभ० ॥ २ ॥

आप सुगुण निधि पूज्यजी सरे, ज्ञानादि गुण के धार ।
नन्द गुरु की सेवा करके, भरिया ज्ञान भण्डार हो ॥ शुभ० ॥३॥

यथा काल से चातुर्मास की लाग रही थी लाग।
आशा सफल अब हुई है स्वामी फलिया हमारा भाग हो ॥ग्रम
सुप चन्द्र पुष्पराज आपकी, महिमा देश विदेश।
गुण आपका कहां तक गावें बुद्धि हमारी लेश हो ॥ ग्रुम० । ३ ॥
त्यागी ध्यानी और वरागी तुम गुण किया किम जावे।
किंचित गुण बुद्धि अनुसारे, सिरह ईवर रूप गावे ही ॥ग्रु० ॥४॥

गुण गान २०

तर्ज—तुम तो कहते हो, घनश्याम आते नहीं,यहा॥
पुष्पराज मिठी है वाणी तुम्हारी। लागे प्यारी हमको यह सूरत तुम्हारी ॥ टेर ॥
है वीरों की भूमि शहर निम्बाड़ा पिता टेकचन्द् जी नेम्ही महतारी ॥ पुष्पराज मीठी है वाणी तुम्हारी ॥ १ ॥
उन्निसौं बावन में लीनी है दीक्षा तजि नार, गुरुपे हुए ब्रह्मचारी
पुष्पराज मीठी है बाणी तुम्हारी ॥ २॥
भरा रूप यान पूरा क्यों दरिया । जैनागम के ज्ञाता अद्वितीय भारी ॥ पुष्पराज मीठी है वाणी तुमारी । ३ ॥
मुनि 'सुख' तुम खूब वैराग्य भई हो । है चन्द्रसी निर्मल ये आतम तुम्हारी ॥ पुष्पराज मीठी है वाणी तुमारी ॥ ४ ॥
करे आप सोहन मुनि यों विवेचन । की महिमा किंचित यह पूज्य तुम्हारी ॥ पुष्पराज मिठी है वाणी तुम्हारी ॥ ५ ॥

गुण गान नं० २१

तर्जः—कमली वाले की ।

मखतर, जिन धर्म का चमका, भारत में, मेरे-पूज्य चरने।
मौर जैनका भराडा लहराया, भारत में मेरे पूज्य वरने। टेर०॥
उन्निसो तीस का सम्वत् में, निम्बाड़ा शहर में जन्म लिया
आनन्द ही आनन्द वरसाया, भारत में, मेरे-पूज्य वरने० ॥ १ ॥
सम्वत उन्निसो बावन में, संसार, असार, लख, तजदीना।
गुरु नन्दलाल धारन कीना, भारत में, मेरे-पूज्य वरने। २ ॥
है शान्त दांत और धैर्य आदि, गुण के धारक श्री खूबचंदजी।
वैराग्य का आदर्श दिखलाया, भारत में, मेरे-पूज्य वरने ॥ ३ ॥
मुनि राम कहे शुद्ध जैन धर्म के, तत्वज्ञान का बोध करी।
सन्देश वीर का बतलाया, भारत में, मेरे, पूज्य वरने ॥ ४ ॥

गुण गान नँ० २२ "कवित"

करत उजाला आला, शरवरीश, निश ही में, पूज्य का उजाला ज्ञान रचत स्वछन्द को। तू तो-शशी-देता सुख,निश में संयोगिन को, पूज्य ज्ञान, देदे करें, मुक्ति आनंद को।
व तो सुख देता है, सागर की लहरों को, करते प्रदान पूज्य सुख यश मकरंद को। पूज्य गुण गाऊँ, हृदय सिद्धों को मनाऊँ, मैं चंद को सराहू, या पूज्य खूबचंद को॥ १ ॥

मालाकार अलङ्कार "कवित"

अग्नि तृण गठपर, मठाधोश मठ पर, ज्ञानवान शठ पर, करत प्रबंध हैं। अर्क तम तर्क पर, घनश्याम वर्क पर, फर्कपर जसे सत तर्क चौचंद हैं॥ बाज लवा वृन्द पर, राहू जिम चंद पर, पाला अरविंद पर, पुष्प मकरंद हैं। मोहन महान वान,वानन के वृन्द पर,खूब खूबचंद पर पूज्य खूबचंद हैं॥ २॥

पञ्चमपट्ट बाल ब्रह्मचारी, थे तेजस्वी प्रचन्ड, ।
मुनाचार्य शांति में शशी सम, प्रताप में मार्तन्ड, ।
संघ हितषी अमर कीर्ति-धर, खंड किया पाखंड हो ॥ आ० ५ ॥
विद्यमान षष्टमे पट्ट सोहै, खूबचन्द्र महाराज, ।
धैर्यवान् विद्या भंडारी, तारण तिरण जहाज, ।
'सुखमुनि' तीजा पद को ध्यावे फूल २ कर आज हो ॥ आ० ६ ॥
युवाचार्य्य श्री छगनलालजी, जैसे दुतियाचन्द, ।
यश वैभव नित बढ़े आपका, वरते नित आनन्द ।
उन्नति होवे जैन धरम की, बढ़े मुनि का वृन्द हो, ॥ आ० ७ ॥

गुण गान नं०

तर्जः— मनाऊँ ली मैं, पारश प्रभू- परमेश ॥यह॥

गाऊँजी मैं तो, पूज्य श्री का गुण गान० ॥ टेर ॥
निर्दूषण निम्बाहैड़ा के, पूज्य श्री गुण खान ।
टेकचन्द पितु धर्म के टेकी, जिनके पुत्र सुजान, ॥ गाऊँजी ॥ १
माता श्री गेन्दी गुणवन्ती, देवी श्री समान, ।
पुत्र रत्न प्रगटाया जिसने, द्वीतिय धार्मिक भान ॥ गाऊँजी ॥ २
विद्यासागर वाद विजयी, गुरूनन्द लाल सुजान ।
जिनपे दीक्षा धारण कीनी,करण आतम कल्यान, ॥ गाऊँजी० ३
सम्वत् उन्निसो साल, बावन, शहर नीमच दरम्यान, ।
पञ्च महाव्रत धारन कीने, धरप्रभू का मन ध्यान, ॥ गाऊँजी० ॥
मोहित किया पूज्य, भविको दिया मोक्ष प्रद ज्ञान, ।
विधर्मीको धर्मी बनाये, फाड़ मिथ्या तूफान, ॥ गाऊँजी० ॥

नर नारी बने प्रेम पुजारी, देख पूज्य गुणवान, ।
आये भवा मुनि वचनोंपे,सत्य की करी पहिचान ॥ मार्ज्जी ॥
आये मान पाखण्डी मत के, बचा-धर्म को ज्ञान ।
कर्म कलंक को मार हटाया धनुष ज्ञान का तान ॥ मार्ज्जी०॥ ४
विमल विवेकी ज्ञान मुनीश्वर, कीये पूज्य महान, ।
शान मानका चोल बढ़ाकर, मिथ्या तमकी हान ॥ मार्ज्जी ॥ ५
पूज्य श्री आचार्य्य सुवचन्द शीतल चन्द्र समान, ।
सविनय विनय मुनिचन्द करके चाहे गुणवत ज्ञान, ॥मार्ज्जी॥

गुण गान नम्बर तर्जः—कमली वाले

खूबी से खूब प्रचार किया जिनमत का पूज्य सुवचंदने ॥टेक ॥
जहां बड़े बड़े मिथ्याती थे मत के महान्ध उत्पाती थे ।
मिथ्यामत के ही साथी थे समझा दिया पूज्य सुवचंद ने ॥ १ ॥
समकिती बनाये बहुतेरे, अधोगति में जाते नर फेरे ।
जब दयाकी दृष्टी से हेरे, अपना किया पूज्य सुवचंदने ॥ २ ॥
मालिक वाली पर हुआ जगत दर्शाकर गुरु के हुये भक्त ।
नर नारी करके सुमति, दर्शा किया पूज्य सुवचंद ने ॥ ३ ॥
छाये हैं दया दृष्टि भारी लख पन्थ देखे सब संसारी ।
करके करुणा पर उपकारी भय दूर किया पूज्य सुवचन्द ने ॥४
बिन स्वार्थ दर्शन करते हैं संकट सब जग के हरते हैं ।
सिर चरण मुनीचंद धरते हैं, मम सासिया पूज्य सुवचंद ने ॥५

⊙ इति शुभम् ⊙

" किञ्चित् वक्तव्य "

श्रीमद् ग्याता धर्म कथाङ्गजी सूत्र में २० बोल तीर्थंकर गोत्र नाम कर्म उपार्जन करने का फरमाया है। उन बोलों में श्री आचार्य जी महाराज के गुण गान करने का भी उल्लेख है। अतः उसी ध्येय को सम्मुख रख यह "श्रीमद् आदर्श आचार्य गुणगान पेटी" नामक पुस्तक प्रि०व्या० श्रीसुखमुनिजी महाराज साहब के प्रयास से अतीव प्रसन्न हो छपवाई है।

आशा है कि गुणानुरागी सज्जनवृन्द श्री आचार्यजी महाराज साहब के गुणगान कर आत्म कल्याण करेंगे।

प्रकाशक—

पुस्तक मिलने का पता—

१ श्रीमान् सेठ गोर्धनलालजी कन्हैयालालजी कामड़,
स्थानक वासी जैन
मु० मालपुरा (राज सवाई जयपुर)
पो बघरा।

२ मन्त्री श्रीमहावीर जैन युवक मित्र मण्डल,
ठि० गेंगानी चौक शहर मन्दसौर,
(मालवा)

३ श्रीमान् सेठ पन्नालालजी मालीचन्दजी जौहरी
ठि० जौहरी बाजार जैपुर (सीटी)

जयपुर प्रिंटिंग वर्क्स चौड़ा रास्ता जयपुर।

वन्दे वीरम् ।

* गुरु गुण नामकी गुणावली *

रचयिता

प्रसिद्ध वक्ता जगत वल्लभ पंडित रत्न मुनिश्री चौथमलजी
महाराज के गुरु भ्राता तपस्वीजी श्रीमयाचन्दजी
महाराज के शिष्य मुनिश्री राजमलजी महाराज

प्रकाशक

श्रीमान् सेठ फुलचंदजी तांतिया की
धर्म पत्नि-आनन्दीबाई की तरफ से भेट
मु० पो० वाडीवरा जि. नासिक

[श्री जैनोदय प्रिंटिंग प्रेस, रतलाम.]

वन्दे वीरम्।

* गुरु गुण नामकी गुणावली *

रचयिता

प्रसिद्ध वक्ता जगत वल्लभ पंडित रत्न मुनिश्री चौथमलजी
महाराज के गुरु भ्राता तपस्वीजी श्रीमयाचन्दजी
महाराज के शिष्य मुनिश्री राजमलजी महाराज

प्रकाशक

श्रीमान् सेठ फुलचदजी तांतिया की
धर्म पत्नि-आनन्दीबाई की तरफ से भेट
मु० पो० वाडीवरा जि. नासिक

प्रथमावृत्ति ५०० } अमूल्य भेट { विराब्द २४५७ वि सं १९८८

निवेदन

प्रिय पाठको! यह बात तो जगत में विख्यात है कि गुरु पद सबसे उच्च कोटि का है। गुरु कृपा से ज्ञान प्राप्त होता है। इसीलिये गुरुपद सर्व श्रेष्ठ माना गया है। किसीने ठीक कहा है

गुरु गोविन्द दोनों खडे, किसके लागू पाय।
बलिहारी गुरु देव की, गोविन्द दिया बताय॥

ऐसे गुरु महाराज का पूर्ण रीति से गुन गान करने की किसीकी सामर्थ्य नहीं है तथापि अल्प बुद्धि के अनुसार गुरुवर्य की कीर्ति के भजन बनाये हुये शास्त्र विशारद पूज्यवर श्री १००८ श्री मन्नालालजी महाराज के सम्प्रदायके जगत वल्लभ प्रसिद्ध वक्ता पंडित मुनि श्री १००५ श्री चौथमलजी महाराज के गुरु भ्राता तपस्वी श्री १००५ श्री मयाचन्द्जी महाराज के शिष्य मुनि श्री राजमलजी महाराज की कृपा से मुझे प्राप्त हुए है उन्हें श्रीमान सेठ भीवराजजी साहिब के द्रव्य की सहायता से पुस्तक रुप में छपवा कर प्रिय बन्धुवों के कर कमलों में सादर भेट की जाती है। आशा है कि आप इसे पढकर आत्मिक लाभ उठावेंगे।

निवेदन

कोठारी—रतनसिंह जैन हाल मुकाम बम्बई

खुस खबर

<<।।।>>

हमारे महोपर पूज्यवर शास्त्र विशारद श्री मजैनाचार्य पूज्य श्री १००८ श्री मन्नालालजी महाराज के आज्ञानुयायी जगत वल्लभ प्रसिद्ध वक्ता पंडित मुनि श्री १००७ श्री चौथमलजी महाराज के सुशिष्य मुनि श्री बड़े नाथु-लालजी महाराज मनोहर व्याख्यानी मुनि श्री वृद्धिचंदजी महाराज मुनि श्री राजमलजी महाराज ठाणा ४ से सुख शांति से हमारे यहां पधारे। महाराज श्री का २ ३ व्याख्यान जाहिर हुवा। महाराज श्री का उपदेश सुनकर हमारी इच्छा हुई के आपके विराजने की खुशी में गुरु गुण नाम की गुणावली नामक पुस्तक छपवाकर सब सज्जनों के कर कमलों में भेट की जाय। आशा है कि आप इसे पढकर आत्मिक लाभ उठावेंगे।

महाराज साहब का उपदेश से यहा के सब भाईयों भाईयोंने मीलकर सालमें लगभग २००-२५० रुपये परोपकार में लगाने का स्वीकार किया है।

आपका शुभ चिन्तक

रामचंद्र हजारीमल महार मु बाखीयरा

॥ ॐ ॥

 # गुरु गुण नामक गुणावली ।

मङ्गला चरण

संसार दावानल दाह नीरं संमोह धूली हरणे समीरम् ।
माया रसादारण क्षीर, नमामि वीर गिरिसार धीरम् ॥

न० १ तर्ज—शालभद्र महाराज ॥

पूज्य मुन्नालालजी महाराज मुल्क में जहारी २ मुल्क में जहारी २ । तपस्वी मोटा बालचन्दजी अपनी आतमा तारी ॥ टेर ॥ मालव देश के माहीने मरे रतनपुरी गुल ज्यारी, पिता आपका रतनचन्दजी माता नान्दी है गुणधारी ॥ १ ॥ संवत उन्नीमे माल अडतिसे दीक्षा की दिल में धारी, गुरु भेट्या श्रीरतनचन्दजी ज्ञान तणा भण्डारी ॥२॥ वाणी आपकी प्यारी लागे सूरत मोहन गारी, दरशन कर कर आपका हुलमाते नरनारी ॥ ३ ॥ पूज्य उदयसागरजी की सेवा कीनी आप बडे उपकारी, ज्ञान ध्यान से प्रेम लगाया आप बडे गुणधारी ॥ ४ ॥ कहांतक गुण वर्णन करूं आपका तुच्छ बुद्धि हमारी, इन्दोर शहर में किया चौमासा वर्त्या मंगलाचारी ॥ ५ ॥ संवत उन्नीमे साल तियासी आया सेके कारी, मुनि राजमल चरणा में आया ज्ञान दिया हितकारी ॥ ६ ॥

नं० २ तर्ज–मोहन गारारे

मारा पूज्य श्रीजी का दरशन करवा जावनारे,दरशन करके चरणों में सिर झुकावनारे ॥ टेर ॥ पूज्य मुन्नालाल जी नाम आपका रतलाम शहर है ग्राम, छवि ऋद्धि सब छोड़ संयम पावनारे ॥ १ ॥ आपका अमरचंदजी तात माता नांदी के अंग जात, फिरतो वाणी अमृत खूब बर्षाव नारे ॥ ॥पूज्य उदयसागरजी के पास दीक्षा लीनी आपने खास, आप रहता हरदम पास पूज्य श्रीकी सवा खूब बजा वनारे ॥ ३ ॥ ज्ञान ध्यान बहुतसा कीना कीर्ति सुयश जग में लीना, तपस्वी बालचन्दजी आप का हुकम उठावनारे ॥ ४ ॥ संवत उन्नीसे निवासी साल आया इनवो सेकेकार, मुनि राजमल चरणों का चाकर गुण नित्य गावनारे ॥ ५ ॥

नं० ३ तर्ज–थियेटर

माता राजाजी के लाल,छट गाया प्रतिपाल, बड़े मुनि जवाहिरलाल स्थविर आचारी २ चमाके सागर गुणों के आगर, महिमाजी महिमा फेली अपार, गुणगावे नरनार, अर्ज मेरी स्वीकार, दीजो भवसिंधु तार, करो महेर २ महेर ३ महेर ३ ॥

नं० ४ तर्ज—पनजी

सब गुण गावारे २ मुनि नन्दलालजी पास ब्रह्मचारी ॥ टेर ॥ मेवाड़ देश के मांहेनीसरे केजड़ा ग्राम है भारीरे त आपका रतनचंदजी माता रामकंवर मेहतारी ॥ १ ॥

तीनों भाई संयम लीनो छति ऋद्ध छिटकाईरे, गुरु आपका जवाहिरलालजी ज्ञ न तणा भंडारीरे ॥२॥ चर्चा कीनी आप गुरुजी गाम निम्बाहेडा माहीर, पाखडियों को भगा दिया है देदे सूत्र का न्याईरे ॥ ३ ॥ संवत उन्नीसे साल मित्यासी पूना शहर मुक्र रीर मुनि राजमल की यह अरजो है दीजो तारीरे ॥ ४ ॥ इति

नं ५ तर्ज--प्यारा लगे सुधर्मा स्वामी ॥

गुरु हीरालालजी पडित ज्ञानी उनकी महिमा मुल्कों में जानी ॥ टेर ॥ पिता रत्तनचंद्जी कहाया माता गजी बाई ने जाया, आपने संयम की दिल में ठानी ॥१॥ दोनों भाई साथमें संयम लीना फिर ज्ञान ध्यान खूब ही कीना आपकी मीठी अमृत वाणी ॥ २ ॥ गुरु जवाहिरलालजी ज्ञान के दाता दोनों भाई को ज्ञान सिखाता, फिर तो गुरु की आज्ञा आपने मानी ॥ ३ ॥ आपके शिष्य चौथमल जी मोटा तपस्वी मयाचंद्जी है छोटा जाने तपस्या करकर काया सुखानी ॥ ४ ॥ मुनि राजमल ने चरणो में सिर झुकाया, मैंने तो आज सब बीच गुण गाया केवल ज्ञानी से बात नहीं कोई छानी ॥ ५ ॥ इति

न० ६ तर्ज--थिएटर ॥

देवीलालजी महाराज तरन तारन की जहाज सान्या आत्मा का काज आप मोटा मुनि ॥ १ ॥ सुद्ध संयम पाली आत्मा उजाली महिमा जो महिमा फेली अपार राजमल की अरदास

फली मन की जो आस मिले मुक्ति का वास रे वास रे
वास रे ॥ ३ ॥

नं० ७ सर्ज—पनजी ॥

मोहन गारारे २ मुनि देवीलालजी लागे प्यारारे ।।टेर।। पिता आपके माणिकचदजी, तपस्वी मोटा अणगारारे। माता आपकी सतवन्ती ने संयम धारारे ॥ १ ॥ मात पिता और दोनों भाई, छोड़ा सब परिवारारे। गुरु भेट्या भीजवाहिर लालजी शान्ति के करने वालारे ॥ २ ॥ संयम लेकर आप गुरुजी, आप गुरुजी आतम काज सधारारे। कीर्ति फैली मुल्का माही गुण गावेछे सारारे ॥ ३ ॥ जगत वल्लभ मुनि चौथमल की कृपा कर मुझ तारेरे। एकबीस दिनकी तपस्या कीनी, गुरु देव हमारारे ॥ ४ ॥ साल इठयासी बम्बई शहरमा आया सत अठारार। मुनि राजमलने सवा कर कर आपकी शिक्षा धारारे ॥ ५ ॥

नं ८ सर्ज—पनजी ॥

तपस्वी भारीरे २ मुनि बालचदजी परउपकारीरे ॥ टेर ॥ पिता मोडीरामजी माता धनी बाई है धारीरे रतनपुरी में जन्म हुवा मगट्या आप अवतारीरे ॥ १ ॥ मात पिता से आज्ञा लेइने दीक्षा दिल में धारीर। गुरु भेटया भीरतनचन्द जी गुण भंडारीर ॥ २ ॥ देश देश में आप विचरकर दिया सब जीवों को तारीरे। पजाब देश में आप पधान्या गौवां को आप उबारीरे ॥ ३ ॥ पूज्य मन्नालालजी गुरु मोई आप

का सेवा करी हरबारीरे। तपस्या कर कर आप मुनिजी आतम काज सुधारीरे ॥४॥ संवत उन्नीसे साल इठ्यासी जोड़ करी तयारीरे। मुनि राजमल ने गुणगाया है दीजो तारीरे ॥५॥

नं० ९ तर्ज पूर्ववत्

सुनो नर नारीरे २ मुनि खुबचंदजी की वाणी प्यारीरे ॥ टेर ॥ गुरु आपका नन्दलालजी चर्चा में वलकारीरे। भव जीवों को उपदेश देयके दीना तारीरे ॥ १ ॥ बड़ा शिष्य कस्तुरचन्दजी तम्या तणा भंडारीरे। केसरीमलजी लघु शिष्य को ज्ञान दिया हितकारीरे ॥ २ ॥ एक ठाणा है सुखलालजी गायन कला में भारीरे। वाणी प्यारी कंठ रसीला सभा खुशी होवे सारीरे ॥ ३ ॥ मुनि हर्षचन्दजी सूत्र सुनावे भिन्न भिन्न कर समझायारे। विनयवंत मुनि हजारीमलजी को ज्ञान सिखायारे ॥ ४ ॥ धैर्यवान हो आप गुरुजी समता दिल में धारीरे, छना सुखाने आप छोडी ने त्यागी परणी नारीरे ॥ ५ ॥ संवत उन्नासे साल इठ्यासी आया सेककारीरे मुनि राजमल ने गुण गाया है बम्बई शहर मुजारीरे ॥

न०१० तर्ज—सुमर नर महावीर भगवान ॥

मेरे तो गुरु माता केसर के लाल। परम गुरु परउप कारी को नाम लेवो हरबार ॥टेर॥ नाम आपका चौथमलजी जग-प्रिय जग-हितकार। मुक्ति जाने के लिये आपने लिया अवतार ॥ १ ॥ सिर का सेवरा हार हियाका तुम हो प्राण आधार। आप सरीखा गुरुजी मिल्या हमको मुझको

तारण हार ॥ २ ॥ संसार सागर के बीच में पाप करताथा अपार। कृपा करी आप गुरुजी दीना संयम भार॥३॥प्रगटया भव जीवों के लिये छकाया रक्षपाल कहां तक गुण वर्णन करूं आपकी महिमा अपरंपार ॥ ४ ॥ भवत उन्नीसे साल सित्यासी हिवड़ा शहर मुझार । गुरु हुक्म से किया चौमासा बरत्या मंगलाचार ॥ ५ ॥ मुनि भेरूलाल जी और वृद्धिचन्द्रजी ज्ञान तणा भंडार । मुनि राजमल चरणों का चाकर सेवा में आया लार ॥ ६ ॥

नं० ११ तर्ज—थिएटर

गुरु चौथमलजी हितकार, पधार ज दिया दर्श इस्वार। कीनो भारो उपकार, मुनि बहुत गुणी २, करुणा करी हमको गुरुजी, २ दीजोजी दीजो भवसिन्धु से तार राजमल की पुकार,दीजो जन्म सुधार। मरी अरजी स्वीकार गुरु देव ३ देव ३ देव ३ ॥

नं० १२ तर्ज—पनिहारी ॥

छति म्हादि सुम छोड़ीने, गुरुवरजीओ, मुनिवर जीओ, फिर त्यागी परणी नार ॥ टेर ॥ देश मेवाड़ के मापने मुनिवरजीओ, कडे नीमच शहर विख्यात मुनिवर जीओ ॥ गंगारामजी तात है मुनिवरजीओ माता केशर के अंग जात मुनिवरजी ॥ १ ॥ उन्नीसे बावन साल में मुनि वरजीआ चढ्यो वैराग्य जो खास मुनिवरजी दीक्षा लीनी है आपने मुनिवरजीओ,गुरु हीरालालजी के पास मुनिवरजीआ

॥ २ ॥ वाणी रसीली आपकी मुनिवरजीओ भव जीवा हितकार मुनिवरजी कीर्ति अहो निशी आपकी मुनिवर जीओ गाय रह्या नर नार मुनिवरजी ॥ ३ ॥ उन्नीसे सत्यासी साल में मुनिवरजीओ, आया, दौंद में सेखे काल मुनिवरजी, राजमल गुण गाविया मुनिवरजीओ, दीजो भवोदधि तार मुनिवरजी ॥ ४ ॥

नं० १३ तर्ज—हे प्रेभो आनन्द दाता ॥

हे गुरु! तुम ज्ञान दाता, ज्ञान हमको दीजिये, दर्शनों की लौ लगी है दर्श हमको दीजिये, कृपा कर के आप गुरुजी हिवडा पावन कीजिये, करुणा सिन्धु करुणा करके दया हम पर कीजिये। अमृत वाणी के प्यासे हम है आके बरसा दीजिये,अज्ञान निद्रा छा रही है आके जगा दीजिये। गुरु चौथमलजी से विनंती है ध्यान इसपर दीजिये, जैनशाला आप यहा पै आके खुला दीजिये ॥ हम सब बालक अर्ज करते स्वीकार जल्दी कीजिये महेर करके श्री गुरुजी हुक्म फरमा दीजिये ॥ इति ॥

नं० १४ तर्ज—ख्यालकी ॥

मुनी शंकरलालजी कियो चोमासो आगर शहरमें ॥ टेर ॥ मेवाड देशके माही ने सरे ग्राव मंगाना भारी, पिता आपके जिवन सिंहजी माता जडाव बाइ हे थारे हो ॥ टेर ॥ संवत उन्नीसो इकसट के सालमें दीचाकी दिलमे धारी, गुरू भेट्या श्री चौथमलजी ज्ञान तणा भन्डारी हो ॥ २ ॥

साथी आपकी प्यारी लागे सुरत माहन गारी दरशन कर कर आपका हुलसामे नरनारी हो ॥ ३ ॥ गुरू भाइ आपका सेवाकमदजी समता के गुण धारी, ध्यान ध्यानमें रहे मगन मो है पूरे आज्ञाकारी हो ॥४॥ संमत् उन्नीसो साल चौरासी, भये ध्यान हुआ भारी। पूज्य हुकम से किया चौमासा, वरत्या जय जय कारी हो ॥ ५ ॥ साधु साधवी श्रावक श्राविका, चार तीर्थ गुनधारी । मुनि राजमल चरणों का चाकर को, माज दिया है भारी ॥ ६ ॥

नं० १५ में मन्दू गणधर ॥

मन्दु मुनि शंकरलालजी जिनकी चाली रमीनी न्यारी। न की छटा देखी मैंने कैसी निराली ॥टेर॥ विद्या क स गर आप पूरे बुद्धि के बली, मोहनी सुरत आपकी मान लागी च है ली ॥ १ ॥ तेरा पच्चासे चखो जो किनी कई ग्रन्थन खोली उपदेश दिया लोगको जब भ्रमना टली ॥ २ ॥ चौमासा किया आपने दया बहुलसी पली, दया धर्म की फतेहने बमाते हो भली ॥ ३ ॥ बहुत काल से दर्श किया म ॥ कामना फली। मुनि राजमल को दीजो अब ज्ञान की सली ॥ ४ ॥

नं० १६ तर्ज—छोटी बड़ी सईयां ॥

तपस्वी मोतीलालजी महाराम को सचा माती जानना ॥ टेर ॥ मात पिता से आज्ञा लेकर, हाँ लीना संयम जब आप किया तो शुद्ध पालना ॥१॥ गुरु भेय्या पूज्य मुन्नालाल

जी हां सूत्र तणा भण्डार, सेवा में चित्त लगावना ॥ २ ॥ गुरु चौथमलजी के साथ पधार्‍या, हां शहर उदेपुर माय, तेहतीस की तपस्या ठावना ॥ ३ ॥ महाराणाजी ने दर्शन कीना हां उस रोज अगता पलाय अमर जीव छुडावना ॥ ४ ॥ बारा ठाणा से किया चौमासा हा त्रियासीकी साल, नर नारी हुलसावना ॥ ५ ॥ मुनि राजमल तो अरज करता हैं, हां मिलनो मुक्ति नो वास सफल होवे भावना ॥ ६ ॥

नं० १७ तर्ज--लावणी ॥

ए छगन मुनिसर आप बड़े आचारी २ गुरु भेट्या श्री चौथमलजी अवतारी ॥ टेर ॥ ॥ तात आपका रतन मुनि अणगारी, बडे अणगारी माता थारी वजु कंवरजी अपनी आतमा तारी ॥ १ ॥ आप बालपणा से वैराग्य लिया है धारी २ फिर संयम लेकर ज्ञान किया है भारी ॥ २ ॥ शिष्य आपका मगनलालजी विनयवंत हितकारी बडे हित कारी ज्ञान ध्यान तो खूब सिखाया आप बडे उपकारी ॥३॥ सेवा में रहकर मेरा गुरुजी तपस्या कीनी है भारी २ कंई जीवों का प्राण बचाकर उनको दिया है उबारी ॥ १ ॥ संवत् उन्नीसे साल सीत्यासी पूना शहर मुझारी आये पूना शहर मुझारी धर्म ध्यान का ठाठ लग्या है नाम हुवा मुल्क में जहारी ॥ ५ ॥ मुनि राजमल तो अरज करे हरवारी करे हरवारी कृपा करके आप [illegible]

नं० १८ तर्ज—याद हम करते हैं

ध्यान नित धरते हैं हारे ध्यान नित धरते हैं मुनि नाथुलालजी महाराज ॥ टेर ॥ उमदपुरा में जन्म हुआ है हातीरामजी तात चांदी बाई है मात आपकी क्षिप्रमरा आपकी साथ ॥ १ ॥ मवस उन्नास, अड़तीस साल में दीक्षा आपने लीनी सब सन्तों की वीयावच सेवा गुरुकी कीनी ॥ २ ॥ देश देश में आप विचर कर धर्मा बोहत्सी कीनी गुरु चौथमलजी की भक्ति कीनी सुयश कीर्ति लीनी चौमासा करने आप पधान्या जालना शहर विख्यात मुनि वृद्धिचंद और राजमल को लाय साथ ॥ ३ ॥

नं० १९ तर्ज—शासनपति बड़मागी ॥

पंडित प्यारचन्दजी मेरे मन भाया उनकी साथी मुनी हुलसाया ॥ टेर ॥ झूठी जानी जगकी माया उनको छोड़ी संयम पद पाया ज्ञान ध्यान में चित लगाया ॥ १ ॥ गुरु चौथमलजी आपने कीना, उनकी शिक्षा पर ध्यान जा दीना, गुरु सेवा में जन्म बिताया ॥२॥ धन्य तात धन्य जननी सुम जाया, जो उनका नाम आप दीपाया। सारा कुटुम्ब मिली हुलसाय ॥३॥ केई सन्तों को ज्ञान सिखाया, आपकी बुद्धि का पार नहीं पाया, मिश्र मिश्र कर मुनि पलटाया ॥ ४ ॥ पांच ठाणा पाटकोपरपे आया, फाल्गुन मास में ओछव मनाया, मुनि राजमल ने गुण गाया ॥ ५ ।

न० २० छोटी मोटी सईयाए ॥

तपस्वी छोटेलालजी महाराज तपस्या से ध्यान लगावना ॥ टेर ॥ मेवाड़ देशमें ग्राम निम्बाहेड़ा हां: तिहां जन्म लिया तपस्वीराज कुटुम्ब सब हुलसावना ॥ १ ॥ धन्य तात धन्य जननी आपकी हां जिसके कूखमें लिया अवतार जैन धर्म दीपावना ॥ २ ॥ सवत् उन्नीसे साल पचावन हां: वैराग्य तुमधार संयम पद पावना ॥ ३ ॥ संयम लेकर तपस्या जो कीनी दीना कर्म खपाय आत्म काज सुधारना ॥ ४ ॥ गुरु चौथमलजी संघमें लाया हां: शहर उदेपुर माय चोपन की तपस्या ठवना ॥ ५ ॥ महाराणा साहेबने उपदेश सुनीने हा: अगता कायम किया चार, आनन्द वरतावना ॥ ६ ॥ तपस्वी जब पारनो लियो हां गया महला के माय, जीवों का प्राणबचावना ॥७॥ मुनि छब्बालालजी है शिष्य आपका हां, तपस्या करे भरपूर, सेवा तो खूब वजावना ॥ ८ ॥ संवत् उनीसे साल तियासी हां मुनि राजमल गुण गाया, परम सुख पावना ॥ ९ ॥

न० २१ तर्ज—थिएटर ॥

तपस्वी मयाचन्दजी महाराज, कर्म खपाने के काज, तपस्या कीनी है महाराज, कीना आत्म कल्याण, २ संयम की गुरु दिल में धारी, छोड़ाजी छोडा है सब परिवार, कीना कीना उद्धार,लेके सयम भार दया,दिल में जो धार, दीजो तार ३ तार ३ तार ३ ॥

न० २२ तर्ज—पूर्ववत्

माता धीली के आया, मियाचन्दजी महाराज, सफल कीनी है काया, सुनो सभी नर नार, २ तपस्या करके आत्मा तारी, कीनाजी कीना है आतम कल्याण, हुवा हुवा अणगार ६.क सयम मार, करते जीवों का उद्धार, यही सार १ सार २ सार ३ ॥

न० २३ तर्ज—पूर्ववत्

तपस्वी मयाचन्दजी गुणवान, खोली तपस्या की खान, दीना जीवों को अभिदान, मुनि महोत गुणी, २ मम्बई शहरमा आप पधार्या, कीनाजी कीना २१ उपवास, राजमल की अरदास, लीजो मुक्ति का वास, यही आस२ आस ३ ॥

न० २४ तर्ज—पूर्ववत्

मयाचन्दजी मुनि, लगी तपस्या से धुनि, गुरु सेवा जो कीनी, जिनी आत्मा सुधार, २ तपस्या कर कर कर्म खपामा सारोजी सारो भव आरम काज, कहे राजमल आज, दीना सयम का साज, मेरे सिर के हो ताज, दीजो मोक्ष का राज २ राज २ राज ॥

नं० २५ तर्ज—पूर्ववत्

गुरु मयाचन्दजी स्वामी, तपस्वी मुल्कों में नामी, आप मुक्ति के कामी, करना मेरा उद्धार, २ सेवा की मेरे दिल में लगी थी, कीनीजी कीनी मेरी आसकी निरास, अर्जी राजमल की खास लीजो शिवपुर का वास, करता

दास ३ दास ३ दास ३ ॥

न० २६ तर्ज—मख यो भारीरे

तपस्वी भारीरे २ मुनि मियाचन्दजी मुल्कों में जारीरे। मेवाड देश के मायने सरे, ताल गांव भारीरे। पिता आपके दौलतरामजी माता घिसी बाई थारीरे ॥ १ ॥ संवत् उन्नी से साल गुणन्तर दीक्षा दिल में धारीरे। गुरु भेटे श्री हीरालालजी पर उपकारीरे ॥ २ ॥ गुरु भाई है चौथमलजी ज्ञान तणा भण्डारीरे, वाणी उनकी प्यारी लागे सुरत मोहनगारीरे ॥ ३॥ पण्डित मुनि श्री कस्तुरचन्दजी, केशरी मलजी गुण धारीरे। दर्शन कर आपका, हुलसावे नर नारीरे ॥ ४ ॥ दिन चौतीस की तपस्या कीनी इस शहर मुझारीरे। कहां तक गुण वर्णन करूं आपका तुच्छ बुद्ध हमारीरे ॥ ५ ॥ सम्वत उन्नीसे साल तीयासी, छमछरी का दिन भारीरे। राजमल ने गुण गाया अब दीजो तारीरे ॥ ६ ॥

नं० २७ तर्ज—ख्यालकी

तपस्वी मियाचन्दजी महिमा फेलीरे मुल्का माहीने ॥ टेर ॥ मेवाड़ देश के माय ने सरे ताल गाव एक भारी पिता आप के दौलतरामजी माता घीसी थारीरे ॥ १ ॥ उन्नीसे साल गुणतर दीक्षा दिल में धारीरे। गुरु भेटे श्री हीरालालजी ज्ञान तणा भण्डारीरे ॥ २ ॥ गुरु भाई आपका चौथमलजी है मुल्कों में जारीरे। वाणी

उनकी प्यारी लागे सुरत मोहन गारीरे ॥ ३ ॥ सरल स्वभावी आप मुनिजी समता क गुणधारी नाम लिया सुख सपत पावे वरते मंगलाचारीरे ॥ ४ ॥ मनोहर व्या ख्यानी चपालालजी स्वाप मुनि गुणधारी। दर्शन कर कर आपका गुण गावे नर नारीरे ॥ ५ ॥ तपस्या कर कर तारी आत्मा आप बड़े उपकारीरे। कहाँ तक गुण वर्णन करू आपका तुच्छ बुद्धि हमारीरे ॥ ६ ॥ संवत् उन्नीसे साल पिचासी आया सेसे का ार। मुनि राजमल चरणाका चाकर, को ज्ञान दिया हितकारीरे ॥ ७ ॥

नं० २८ तर्ज-कमलीवाले ॥

तपस्या का ठाठ लगाय दिया मुनि मयाचन्दजी स्वामी ने, कर्मों को चकचूर किया मुनि मियाचन्दजी स्वामीने ॥ टेर ॥ तात आप के दौलतरामजी माता धीमी जन्म दिया। फिर बाल गान प्रसिद्ध किया मुनि मया चंदजी ॥ १ ॥ संवत् उन्नी से साल गुणतर दीक्षा का दिल में धार लिया। ले संयम गुरु की रक्षी करी, मुनि मयाचंदजी ॥ २ ॥ देश विदेश आप विचर कर तपस्या महत्व जो दिखलाया। केई जीवों को अभय दान दिया मुनि मयाचंदजी ॥ ३ ॥ गुरु भाई चौथमलजी बड़े बड़ उपकार किये। तपस्या कर आतम कल्याण किया मुनि मयाचंदजी ॥ ४ ॥ सरल स्वभावी आप मुनिजी क्षमा जो दिल में धारी। दया धर्म प्रचार किया, मुनि मयाचन्दजी

॥ ५ ॥ संवत् उन्नीसे साल छियासी जलगांव शहर चौमासा किया । दिन चालीस का तपस्या पूर किया मुनि मयाचंदजी स्वामी ने ॥ ६ ॥ देश देश के नर नारी तपस्या पूर पर आय गया । फिर जीव दयाका उपदेश दिया मुनि मयाचदजी ॥ ७ ॥ कर उपकार बडा भारी मुल्कों में नाम जो आप किया । लिखवा कर पट्टा पेश किया मुनि मयाचंदजी ॥८॥ राजमल चरणों का चाकर यही अरज गुजार रहा । कर उपकार मुझे तार दिया मुनि मयाचंदजी ॥ ६ ॥

न० २६ तर्ज—पूर्ववत्

तपस्या की झडी लगा दीनी, गुरु मयाचंदजी तपस्वीने । अरु दया की झडी लगा दीनी, गुरु मयाचंदजी तपस्वी ने ॥ टेर ॥ तात आप के दौलतरामजी माता घीसी जन्म दिया । फिर ताल गांव प्रसिद्ध किया गुरु मयाचंदजी ॥ १ ॥ सम्वत उगणीसे साल गुणन्तर, दीक्षा की दिल में धार लीवी । कर कृपा संयम भार दिया गुरु हीरालाल जी स्वाभी ने ॥ २ ॥ गुरु भाई आपके चौथमलजी, केई राजों को प्रतिबोध दिया । केई जीवों को अभय दान दिया गुरु मयाचंदजी तपस्वी ने ॥ ३ ॥ सम्वत उगणीसे साल पिचासी धूलिया नगर में आय गया । दिन बारा की तपस्या करी गुरु मयाचदजी तपस्वीने ॥ ४ ॥ कर लिया अमोल्य रतन आपका दर्शन आन किया । बीच बजार उपदेश दिया

राजमल, मेरे पर उपकार किया। दे संयम मुझको निहाल किया, गुरु चौथमलजी स्वामी ने ॥ ६ ॥

नं० ३० तर्ज—पणिहारी

तपस्या कर तारी आतमा सुनो तपस्वीजी २ किया आतम कल्याण तपस्वीजी ॥ टेर ॥ देश मेवाड़ के मायन, सुनो तपस्वीजी ताल गांव विख्यात तपस्वीजी॥१॥ पिता जो दौलतरामजी सुनो तपस्वीजी, माता पीसी के अंगजात, तपस्वीजी॥२॥ सम्वत उगणीसे गुणन्तर साल में, सुनो तपस्वीजी कांई लीनो संयम भार सुनो तपस्वीजी ॥ ३ ॥ गुरु मेरा श्री हीरालालजी सुनो तपस्वीजी, कांई ज्ञान तणा भण्डार सुनो तपस्वीजी ॥ ४ ॥ गुरु भाई है श्री चौथमलजी मुल्कों में प्रसिद्ध तपस्वीजी ॥ ५ ॥ सरल स्वभावी आप हो सुनो तपस्वीजी, कांई क्षम्या तणा भण्डार तपस्वीजी ॥ ६ ॥ नाम लिया सम्पत मिले सुनो तपस्वीजी होय मन चाया काज तपस्वीजी ॥ ७ ॥ सम्वत उगणीसे छीयासी साल मा सुनो तपस्वीजी कांई जलगांव शहर मुझार तपस्वीजी ॥ ८ ॥ तपस्या का ठाठ लगाविया सुनो तपस्वीजी, कांई आया बहु नर नार तपस्वीजी ॥ ९ ॥ दर्शन कर हुलसा विया सुनो तपस्वीजी, कांई तपस्या मगशाचार तपस्वीजी ॥ १० ॥ राजमल की अरज है सुनो तपस्वीजी, कांई दीजो मुक्ति को वास तपस्वीजी ॥ ११ ॥

नं० ३१ तर्ज—सीता है सतवन्ती नार ॥

आनन्द वरते हो तपस्वीजी आपका नाम से जी। सुख सम्पत्त मिलसी हो, तपस्वी आप के नाम से जी ॥ टेर ॥ यो तो ताल गांव विख्यात, आपका दौलतरामजी है तात। माता घींसी के अंगजात, कूंख में उपना आय के जी ॥ १ ॥ आपका मियाचंदजी नाम, आप ने जाने मुल्क तमाम। आपने कीना उत्तम काम, संयम पद पाय के जी ॥ २ ॥ गुरु भाई चौथमलजी विख्यात, लेकर आया आप ने साथ। पहुंच्या रतलाम शहर विख्यात, दियो चौमासो ठाय के जी ॥ ३ ॥ पूज्य मन्नालालजी दायल वाणी उनकी वडी रसाल। मैं तो आया दूर से चाल, सेवा कीनी तपस्वीजी मन हुलसाय के जी ॥ ४ ॥ दिन अडतीस का तप कीना, सुयश कीर्ति जग में लीना। मुनि राजमल ने दर्शन कीना, चरणों में शीश झूकाय के जी ॥ ५ ॥ सम्वत उगणी से पिचासी साल, आप ने खूब कमाया माल। खरची लीनी है तत्काल, अबतो जानो मोक्ष पुरी के माय, करम खपाय के जी ॥ ६ ॥

न० ३२ तर्ज—महावीर से ध्यान लगाया करो ।

तपस्वी मयाचन्दजी का गुण नित गाया करो। उन की शिक्षापर ध्यान लगाया करो ॥ टेर ॥ देश मंदसोर मायने, ताल गाम विख्यात है। पिता दोलतरामजी घींसी बाई जो मात है। नित उठके गुण गाया करो ॥ १ ॥ साल

गुर्वंतर मायने, दीक्षा की दिलमें धार ली। गुरु हरिलालजी महाराज की शिक्षा को तुमने मानली। अबतो तपस्या का ठाठ लगाया करो ॥ २ ॥ रतलाम शहर से विहारकर, खान देशमें आगया। धूलिया नगर के मायने, वारा का तप ठाय दिया। जैन धर्म को खूब दिपाया करो ॥ ३ ॥ सम्वत उन्नीस साल पिचासी आया तो सेवे काल में। गुरु भाई श्री चौथमलजी, लाया है आप को साथ में। करके भक्ति उन्हें तुम रिझाया करो ॥४॥ राजमल की अर्जी प ध्यान आप दीजिये। सेवा में आया आप के जल्दी तार दीजिये। सदा ईश्वर से ध्यान लगाया करो ॥ ५ ॥

नं० ११ तर्ज—चालो २ मुगतगढ़ माहीं ॥

तपस्या से ध्यान लगायारे मुनि मयाचन्दजी महाराया ॥ टेर ॥ मे देश मेवाड़ के माहीं सुन लाल गाँव है भाँईरे ॥ १ ॥ पिता दौलतरामजी कहाया माता चौसी मे तुमे जायारे ॥ २ ॥ लाल गुर्वंतर माही दीक्षा की दिल में ठाईरे ॥ ३ ॥ गुरु हीरालालजी ज्ञानी उनकी आज्ञा मानी ॥ ४॥ अब तपस्या की दिल में ठानी फिर गुरु की आज्ञा मानीरे ॥ ५ ॥ शहर मनमाड़ में आया यहां पर होली चौमासा ठायारे ॥ ६ ॥ श्री चौथमलजी गुरु भाई दिन तेरा की तपस्या ठाईरे ॥ ७ ॥ मुनि राजमल गुण गाया चरणों में सिर नमायारे ॥ ८ ।

नं० ३४ तर्ज होली ॥

तपस्या कीनीरे २ मुनि मथाचन्दजी महाराज तपस्या कीनीरे ॥ टेर ॥ मुनि छगनलालजी के साथ में २ कीना पूना शहर चोमासा ॥ १ ॥ दिन ४१ की तपस्या कीनी काई काया पर जोर लगाय ॥ २ ॥ मुनि मगनलालजी सेवामें २ काई तन मनसे सेवा बजाय ॥ ३ ॥ अलग चोमासा करना तुम २ मुझे ऐसा दीना फरमाय ॥ ४ ॥ मुनि वृद्धीचन्दजी के साथ में २ मैंने तो तुरत किया विहार ॥ ५ ॥ यहां उपकार हुवो घणों २ कांई वरत्या मंगलाचार ॥ ६ ॥ गुरु चोथमलजी का हुकमसे २ कांई दिया चोमासा ठाय ॥ ७ ॥ सत्यासी का सालमें मुनि राजमल गुण गाय ॥ ८ ॥ नरनारी गुण गाविया २ कांई हिवड़ा शहर मुझार ॥ ९ ॥

नं ३५ तर्ज—सत्य के लिये मै दासी बनी

मेरे गुरु का मै दर्श किया २ दर्श किया मेरा हर्षाया जिया ॥ टेर ॥ छोडे मैंने मात पिता को गुरु सेवाके काज घणा दिना से इच्छा लगरही दर्श मिलाहै आज ॥ १ ॥ फस रहाथा संसार बीचमें तार दिया गुरु आप कर्म काट कर मोक्ष पधारो यही अर्ज है साफ ॥ २ ॥ मैं हूँ दास आपका गुरुजी तुमहो जगके तारण हार केरदा वेड़ापार हमारा कहू चरण सिर डार ॥ ३ ॥ दिन चोवीस की तपस्या कीनी सतारा शहर मुझार कसाइ खाना बंद कराया हुवा

घणा उपकार ॥ ४ ॥ गुरु चौथमलजी सोले ठाणा आया मेवाड़ कोई राजाको उपदेश दियाहै किया धर्म प्रचार ॥ ५ ॥ सम्वत् उगणीस साल सित्यासी तपस्या का ठाठ लगाया मुनि राजमलन जोड़ बनाके आज समावे गाथा ॥६॥

नं० ६, तर्ज—तोर फकना था ॥

तपस्वीजी तपस्या करके सेनाजी मोक्ष लेना फर्मा को खपा, खपाके लेनाजी मोक्ष लेना ॥टेर॥ वास गांव जन्म लीना याचक को दान दीना, आरम कल्याण कीना ॥१॥ दौलतरामजी आपके तात पीसी बाई, आपकी मात मिया चंदजी नाम दीना ॥ २ ॥ ससार का आप तजके, साधुका मेष सजके प्रमुका, ध्यान धरना लेना जो, मोक्ष, लेना ॥३॥ गुरू हीरालालजी आप कीना, ज्ञान ध्यान, बहोत दीना, कई जीवों को बचाना ॥ ४ ॥ कहे राजमल मजन बनाके आम समाके चीप गाके चरणा में शीश झुकाना ॥ ५ ॥

न० ३७ तर्ज—प्यारा लागे सुधर्मा स्वामी ॥

तपस्वीजी तपस्या का,, ठाठ लगाया कई, नरनारी दर्शन को आया ॥ टेर ॥ देश मेवाड़ के मांही, वहां पर वास गांव है मांई जन्म हुवा जब कुटुम्ब हुलसाया ॥१ ॥ पिता दोलतरामजी दान दिलाया माता पीसी बाई हुलराया मयाचन्दजी नाम दिलाया ॥ २ ॥ आपके हीरालाल गुरु जी उनकी महिमा कहांतक करूजी मुक्ति आने का मार्ग बताया ॥ ३ ॥ पण्डित चौथमलजी गुरु मांई जिनकी

कीर्ति फैली जग मांही, प्रचार ज्ञान का खूब फैलाया ॥४॥ दिन चोवोस का पूरजो आया, कई जीवों को अभय दान दिलाया, तब अनाथों को भोजन खिलाया ॥५॥ उनीसे सीत्यासी सालके माही, शहर सतारा जोड़ बनाई, गुरु चरणों में शीष झूकायो ॥६॥

नं० २८ तर्ज—म्हारा मंदिरये वेहरवाने चालो ॥

मारे पारनो लेवाने चालो तपस्वीजी महाराज स्वामी तपस्वीजी महाराज ॥टेर॥ दोलतरामजी तात हैरे घीसी बाइ मात मयाचन्दजी नाम आपका मुल्कों में विख्यात ॥१॥ उणंतर का सालमेर वैराग्य लिया है धार, गुरु भेट्या श्री हीरालालजी लीना संयम भार ॥२॥ दिन २४ की तपस्या कीनी सत्यासी की साल, अबतो स्वामी जल्दी पधारो हमको करदो निहाल ॥३॥ पोपाख सजीने सुंदर्यारे उभी घरके माय, धन्य भाग आज हमारा तपस्वी हम घर आय ॥४॥ गुरु भाइ है चोथमलजी लीना आपेन लार घर घर माहीं करे गोचरी कीना है उपकार ॥५॥ देश विदेश विचरत आया यहांपर सेके कार, मुनि राजमल की यही अर्ज है करना बेड़ापार ॥६॥

नं० २९ तर्ज—हे प्रभो आनंद दाता ॥

हे गुरुजी तपस्या करके मुक्ति का मार्ग लीजिये॥टेर॥मेराजो पाप हटायके सुरलोक पूगा दीजिये ॥१॥ तपस्या करके आप गुरुजी कर्म खपा दीजिये ॥२॥ उपदेश देदे आप गुरूजी

जीवों को छुड़ा दीजिये ॥ ३ ॥ अज्ञान की निद्रा जो मरी आप उड़ा दीजिये ॥४॥ कृपा करके आप गुरुजी तार हमको दीजिये ॥५॥ राजमल की अर्जी पै गुरु ध्यान अपरो दीजिये ॥६॥

नं० ४० तर्ज—मुबारिक हो ॥

मेरे गुरुराज तपसी की सदा जय हो सदा जय हो तपस्या कर आत्मा तारी सदा जय हो २ ।टेर॥ पिता दौलत रामजी है माता पीसीने जाया है मयाचंदजी नाम जो दीना ॥१॥ जब जन्मे आप गुरुजी क आई बहोतसी नारी कुटुंब सब ही हुलसाया ॥ २ ॥ इक्वीस वर्ष घर में रहकर बने फिर आप तपधारी दर्शन को आये नर नारी॥३॥ गुरु हीरालाल की गुणवन्ता बताया रास्ता शिवपुरका चौथमलजी मार्ग को ॥ ४ ॥ बजाया दयाका डंका सभी मुल्कों में जा जाकर बचाया प्राण जीवोंका ॥ ५ ॥ इक्वीस दिन की तपस्या को कीनी बम्बई शहर में आकर किना उपकार बड़ा भारी ॥ ६ ॥ ऐसे तपस्वी का गुण सभी मिल गावो नर नारी मुनि राजमल का कहना ॥ ७ ॥

नं० ४१ तर्ज—मुक्ति जाने की विधी दीजिये ॥

मुक्ति जाने का रस्ता सेखिया तपसी मियाचंदजी ने ॥ टेर ॥ वैराग्य बसा है दिल के माही लीना संयम भार तपस्या कर कर कर्म खपावो यही जग में है सार हो ॥१॥ बम्बई शहर में ठाठ लगाया चल मास में आय, दर्शन

दिन की तपस्या कीनी तन पे जोर लगाया हो ॥ २ ॥ दाद गुरु है जवाहिरलालजी या मोटा अणगार थारी सम्प्रदाय में मुख्य होता शांति के करनार हो ॥ ३ ॥ गुरु आपका हीरालालजी था मोटा कविराज। करनी करके मुक्ति पधान्या सारया आतम काज हो ॥ ४ ॥ चौथमलजी गुरु भाई आपका जाने मुल्क तमाम। मेवाड देश के माहे गुरु जी ताल आपका ग्राम हो ॥ ५ ॥ महावीर जयंति महोत्सव हुवा कांदावाडी के माय केइ नर नारी दर्शन करके प्रश्न पूछेत आय हो ॥ ६ ॥ मुनि राजमल ने स्तवन बना के आज सभा में गाया। चार तीर्थ का ठाठ देख के सब जन मिल हर्षाया हो ॥ ७ ॥

नं० ४२ तर्ज—रोडजी स्वामी में गुण घणा ॥

ओ गुरु मयाचंदजी स्वामी में गुण घणा हो स्वामी तपस्या कर तारी आतमा ॥ टेर ॥ देश मेवाड़ के माही ने हो स्वामी, ताल गांव विख्यात। पिता तो दौलतरामजी हो स्वामी, माता घीसी के अंगजात हो॥ १ ॥ गुणन्तर साल में ओ स्वामी, वैराग्य लिया तुम धार । संसार को झूठो जान्यो हो स्वामी, लीना है संयम भार हो ॥ २ ॥ गुरु हीरालालजी भेटीया हो स्वामी,तरन तारन की जहाज। उप-देश दिया भव जीवों ने हो स्वामी, सारोनी आतम काज हो ॥ ३ ॥ गुरु भाई चौथमलजी पधान्या हो स्वामी, बम्बई शहर मुझार तपस्या कीनी थे आकरी.हो स्वामी.देवोने कर्म

खपाय हो ॥४॥ सरल स्वभावी आप हो स्वामी, नहीं कपट नहीं मान, क्रोध कषाय का निवारने हो स्वामी, तपसा में रहो लवलीन हो ॥ ५ ॥ लडी मेघ तपसा धार मताव जा हो स्वामी, काया पे जोर लगाय हाड हाड दिखने लग्या काई, शरीर ने दीनो सुकाय हो ॥ ६ ॥ मध्यो नसाल स्वामी को लागियो हो स्वामी, कीना पकीस उपवास । नर नारी दर्शन को आवीया हो स्वामी, वरत्या है मंगलाचार ॥ ७ ॥ मुनि राजमल की बीनति हो स्वामी, मोने तारि गरीब नवाज । तरन तारन की जहाज हो स्वामी, करदो खेव पार ॥ ८ ॥

नं० १२ तर्ज – हिंदू होटल में खानाके खान लगे ॥

तपस्वीजी तपसा का ठाठ लगाने लगे तपसा कर क के कर्म खपाने लगे ॥ टेर ॥ पिता हो चौरूलालजी भीख भाई जो माव है देश मेवाड़ के माय ने पे थाना गांव निरूपा है । मात पिता का नाम दिपाने लगे ॥ १ ॥ सुद्धी चे मामा आन के लीना जो समझ मार्ग है। गुरु मेरा मे हीरालालजी मैं ज्ञान तथा अणगार है दया धर्म का डंका बजाने लगे ॥ २ ॥ गुरु भाई आपका चौथमलजी तरन तारन की जहाज है मोरी समाज के बीच में मेरे था सिर का ताज है केई नामा को आप समझाने लगे ॥ ३ ॥ दिन इक्कीस की तपसा को कीनी बम्बई शहर मा आपने तेलेके की अठीमा लगादी । देश देश में नाम के ढो

जीवों का प्राण बचाने लगे ॥ ४ ॥ आदि ठाना चौमासा कांदात्राडी ठाविया, केई नर नारी दर्शन करवा प्रेम भाव से आविया, मुनि राजमल गुण गाने लगे ॥ ५ ॥

नं० ४४ तर्ज—मुक्ति की राह बताने वाले ॥

मुनि वृद्धिचन्दजी महाराज वृद्धिके करनेवाले, वृद्धि के करनेवाले जैन धर्म दिपाने वाले ॥टेर॥ मेवाड देश मुझारा ए बडी सादडी भारी। वैराग्य लिया तुम धारीजी दीक्षा के लेनेवाले ॥१॥ पिता प्यारचन्दजी गुनवान माता राजी बाई लो जान। जिनके कूखमें उपने आन जी शील सन्तोष बढानेवाले ॥२॥ सम्वत उन्नीसे सितन्तर साल संयम लीना आप दयाल। गुरू भेटया चौथमलजी प्रतिपालजी गुरू भक्ति के करने वाले ॥३॥ लिया पंच महाव्रत धार फिरतो दोष बियालीस टार लेते सूजतो आप अहार, जो सच्चा उपदेश सुनानेवाले ॥४॥ मुनि भेरुलाल का लार कीना तुरत आपने विहार, आय हिवडे गाम मुझार जो मुनि राजमल गुण गाने वाले ॥ ५ ॥ सम्वत उन्नोसे सत्यासी साल आतो छकाया के रत्तपाल आपने खूब कमाया माल ज्ञान ध्यान बढ़ाने वाले ॥ ६ ॥ श्री संघ यहां का गुणवान खूब किया धर्म और ध्यानजी संतोकी सेवा बजाने वाले ॥ ७ ॥

न० ४५ तर्ज—ख्यालकी

मुनि नाथूरामजी मीठी मनोहर वाणी आपकी ॥टेर॥ मारवाड के माहीने सरे जोधाणा विख्यात। पिता आप

रही अब घरमें नहीं में रहूंगी प्रभु तीरने का मार्ग बताया मुझे॥५॥ प्रभू चरणों में मेरी यही अरदास है मुनि राजमल को देना अब मुक्ति जो वास है नित्य प्रभू मे ध्यान लगाना मुझे ॥ ६ ॥

न० ४७ तर्ज —अब तुम जागो जैनीजी

अबतो तुम जागो बहिनोंजी क्यो सोतीहो नीन्दमें।टेर॥ उच्च जातकी अनभिज्ञ लडकी वो घर घरमें फेरे चक्की वो बने अधर्भी पक्कीजी ॥१॥ अन्य समाज की जागृति कैसी तुम रहो आलस में बेसी करो उन्नति धर्म रहसीजी ॥ २ ॥ करिये जिन कोम सुधारो विद्याका करो प्रचारा सुनो बहिनो फर्ज तुम्हाराजी॥॥३॥परहित में द्रव्य लगावो मत मूंजण नाम धरावो विधवाका दुख मिटावोजी । ४ ॥ गुरु चौथमलजी स्वामी प्रसिद्ध जगत में नामी, हमने मिले गुरु ज्ञानीजी ॥५॥

न० ४८ तर्ज—छोटी मोटी सैंइयारे

सुनो श्रावकजी गुणवान बारा तो व्रत पालना ॥ टेर ॥ स्वदेशी कपड़ा पहिनो नर-नारी हां, त्यागो विदेशी माल यही गांधीजी का फरमावना ॥ १ ॥ डोरा कंठी झुला मोतियन के हां,घडिया हाथा में जो बांध कभी तो गर्भावना ॥ २ ॥ परनारी को माता समझो हां, मत देखो चक्षु पसार धर्म मत हारना ॥ ३ ॥ ज्ञान ध्यान और समाइक पौषा हां, करो प्रतिक्रमण नित आय यही तो जितलावना ॥ ४ ॥ साधु सत्याकी निन्दा नहीं करना हा सेवा करो चितलाय

दर्शन कर हर्षावना ॥ ५ ॥ कूड़ कपट कर माल कमाया हां धरिया सिजोरी के माय इनसे तो प्रेम हटावना ॥ ६ ॥ कुटुम्ब कबीला घरकी नारी हां घरकी नारी नहीं आवे संग में लार एक दिन होगा जावना ॥ ७ ॥ अनाथों की तू रक्षा करना हां, करो उनकी प्रतिपाल यही तो सेवावना ॥ ८ ॥ साल सीत्यासी खिचड़ा ग्राम में हां, कहे राजमल बारम्बार शिक्षा पे ध्यान लगावना ॥ ६ ॥

नं० ४६ तर्ज—मारा शासन पति बड़ भागी ॥

उठा गावो गुण वीर प्रभुका आवो गावो गुण वीर प्रभुका ॥ टेर ॥ कहो भाई क्या गुण है उन में वो फर मावो सभा क बीच में ॥ १ ॥ जन्म लीना है क्षत्रियकुण्ड में माता त्रशला देवीके कूंख में आय ॥ २ ॥ तात आपके सिद्धारथ नन्दन घर है सारे दुःखो के भंजन ॥ ३ ॥ तीस बरस गृहस्थाश्रम पाला बारा बरस में केवल म्हाला ॥ ४ ॥ दिन दिन मारग खूब दीपाया ले केवल ज्ञान मोक्ष सिधाया ॥ ५ ॥ उनकी महिमा करू क्या मुख से बह है माय गामी सार जुग से ॥ ६ ॥ यहां पर इस भव में गुरु चौथमलजी किया चौमासा अजगाव मानजी ॥ ७ ॥ मुनि छगनलाल जी पण्डित ज्ञानी का ज्ञान ध्यान नहीं है सानी ॥ ८ ॥ पण्डित प्यारचन्दजी न्याय क दाता सब सन्तों को ज्ञान सिखावा ॥ ६ ॥ आन सब मिलके सिरको झुकाव मुनि राजमल सुख संपत पाव ॥ १० ॥

नं० ५० तर्ज—वीनति सुनजो गुरु महाराज ॥

गुरु देव दर्शन आपका जल्दी दिरावजो यह मोहनी सुरत आपकी जल्दी दिखावजो ॥ टेर ॥ जिन वाणी का अमृत आय के जल्दी पिलावजो हम है दर्श प्यासे आपके जल्दी पधारजो ॥ १ ॥ आपके आया विना ये क्षेत्र बिगड जायगा जरा ध्यान लावजो गुरु देव क्षेत्र आय के जल्दी समालजो ॥ २ ॥ धर्म ध्यान की लगन आय के जल्दी लगावजो हमारा दिल का पाप आयके जल्दी हटावजो ॥ ३ ॥ श्री संघकी यह वीनति गुरु देव आपसे कोई अविनय अपराध किया होय तो माफी दिलावजो ॥ ४ ॥

नं० ५१ तर्ज—थिएटर

गुरु मयाचंदजी दयाल, खटकाया प्रतिपाल, मुझको कीना है निहाल, दीना संयम भार २, करुणा करीने मुझे तार दिया है, दीनाजी दीना मंत्र सिन्धू तार, राजमल की पुकार, अर्जी कीजो स्वीकार, मुनि कहे बारम्बार, बोलो जय ३ जय ३ जय ३ ॥

❀ ॐ शान्ति शान्ति शान्ति ❀

श्री चतुर्थ जैन ग्रंथ-माला का २५ वाँ पुष्प

ज्ञान-पुष्प

तृतीय-भाग

रचयिता

श्री जैन दिवाकर प्रसिद्ध वक्ता प० रत्न मुनि श्री चौथमल्ल जी म० के सुशिष्य मनोहर व्याख्यानी श्री नाथुलाल जी म० सुललित वक्ता श्री रामलाल जी म०

प्रकाशक —

श्री स्थानक वासी जैन संघ

किशनगढ़ (राजपूताना)

प्रथमावृति	अमूल्य	वीराब्द २४६६
१०००	भेंट	वि० स० १९९६

ज्ञान–पुष्प

तृतीय-भाग

नं० १ (तर्ज–उठाओ गोवर्द्धन गोपाल)

तिराओ ! वीर प्रभु भगवान ॥ ध्रु० ॥

पतित अधम पापीष्ट महा हूँ,
दयानिधि कर दीजे उत्थान ॥१॥

डूबत है सिन्धु में नैया,
उबारो वेग ही करुणा निधान ॥२॥

लक्ष चौरासी भोगी योनी,
मिटाओ जन्म-मरण दुख महान ॥३॥

लीनी शरण चरण की अनुचर,
दिखाओ शिवपुर का शुभ स्थान ॥४॥

नम्र निवेदन राम मुनि का,
करो प्रभु अब मेरा कल्याण ॥५॥

नं० २ (तर्ज–आओ आओ भय मेरे साधु)

✱

पालो पालो भय प्यार मित्रों, ब्रह्मचर्य्य सुखदाय ॥ध्रु०॥
होना पास अव्वल दर्जे में, बैरिस्टर बन जाना।
है यह ताकत ब्रह्मचर्य्य की, सभा जीत कर आना ॥१॥
जनता को मोहित कर लेना, आरोग्य तन का रहना।
है प्रताप यह ब्रह्मचर्य्य का, सभी ग्रन्थ का कहना ॥२॥
सूली मिट कर बना सिंहासन, अग्नि का हुआ नीर।
जहर हलाहल अमृत हो गया, लम्बे बढ़ गये चीर ॥३॥
भव-सिन्धु तरन के खातिर, ब्रह्मचर्य्य है नैया।
राम मुनि कहे पालो प्रेम से, अवश्य करो सब भैया ॥४॥

नं० ३ (तर्ज–छोटे से बलमा मेरे आंगना में)

थोड़ी जिन्दगानी तेरी, जागरे जगाने आये ॥ ध्रु० ॥
सोच समझ, प्राणी, जग में क्या लेकर आये।
आवे ना कोई तेरे लार, नाहक क्यों ललचाये ॥१॥
सार यही है जग में, धर्म से जो प्रेम लगाये।
यही करेगा तेरी सार, होंगे सब मन चाये ॥२॥
देना पड़ेगा बदला, नाहक जो जीवों को सताये।
नरतन का चोला अनमोल, क्यों विषयों में खाये ॥३॥

राम मुनि की शिक्षा, मानले मनाने आये।
दया धर्म उपदेश, हम समझाने आये ॥४॥

नं० ४ (तर्ज-रेकार्ड की)

जाने वाले कुछ यहाँ से ले जाना रे॥ ध्रु० ॥

तुम्हें मालूम नहीं, जहां से कितने ही गये।
अकबर जैसे जनाजे में वो नंगे ही गये॥
बादशाह कारु भी बस फक़त अकेले ही गये।
नेकी बदी के सिवा, हसर में क्या ले के गये॥
फानी दुनिया में तू न लुभाना रे ॥१॥

धर्म है सार सनम लेके इसे लार चलो।
सच्चा है मित्र यही, करते इसे प्यार चलो॥
सामां नेकी का सनम,-लेके ज़रा लार चलो।
कहे राम मुनि करते पर उपकार चलो॥
संग आवे न तेरे ख़ज़ाना रे ॥२॥

नं० ५ (तर्ज़-रिकार्ड की)

मतलब का सब संसार है, इसमें न लुभाना रे।
झूठा दुनिया का प्यार है, इसमें० ॥ ध्रु० ॥

मतलब की दुनिया सभी, करो आँख हर बार।
बिन मतलब पूछे नहीं, मात तात घरनार॥
ये बड़े बेदरदी रे, मुहब्बत करना बेकार है ॥१॥
सब तक घू है फूल में, कदर होय अति भारी।
बिन खुशबू छूवे नहीं, जाने आलम सारी॥
ये बड़े बेगरजी र, आवे नहीं कोई लार है ॥२॥
झूँठी दुनिया है सभी, किससे करता प्यार।
राम मुनि कहे धर्म से, होता बेड़ा पार॥
तेरे महल मनोहर रे, स्वपने सा सब संसार है ॥३॥

नं० ६ (तर्ज—लाखों प्रणाम)

देवी हिन्द विख्याता, तुमको लाखों प्रणाम।
धन्य धन्य सीता माता, तुमको लाखों प्रणाम ॥ टेक ॥
धर्म पतिव्रत पूर्ण निभाया, अग्नी का जल शीघ्र बनाया।
जग सारा यश गाता, तुमको लाखों प्रणाम ॥१॥
लेते नाम राम के पहले, पाला धर्म कष्ट सब झेले।
रामचरित दर्शाता, तुमको लाखों प्रणाम ॥२॥
जिन २ ने यह धर्म निभाया, उनके हुआ सभी मन चाया।
सुर नर शीश नमाता, तुमको लाखों प्रणाम ॥३॥

छिन्नुसाल किसनगढ मांई, महिमा नाथु मुनि ने गाई।
सोहन मुनि गुण गाता, तुमको लाखों प्रणाम ॥४॥

नं० ७ (तर्ज मेरे स्वामी बुलालो०)

आये सद्गुरु ज्ञान सुनाने को।
मोह नींद से तुमको जगाने को ॥ध्रु०॥

फॅस रहे अज्ञान में कुछ भी न इनको होश है।
मान, माया, लोभ, मोह का बन रहा तू कोष है॥
दवा ले लो इसी के मिटाने को ॥१॥

लल्ले से लौ लग रही, दद्दे से दिल यह दूर है।
लोभ बस में सेठ सागर, डूबा बात मशहूर है॥
करो यत्न इसी के मिटाने को ॥२॥

चाहो गर कल्याण अपना, बात हृदय में धरो।
दान, तप और भावना, ब्रह्मचर्य्य को पालन करो।
आये नाथु मुनि समझाने को ॥३॥

नं० ८ (तर्ज—रिकार्ड की)

मैं अर्ज करूँ कर जोड़ कर, प्रीतम क्यों तज गये रे।
बिन औगुण मुझको छोड़ कर, प्रीतम क्यों० ॥ध्रु०॥

नेम पिया को, मैं चाहूँ, जैसे चन्द्र चकोर ।
तरसूँ तुम बिन नाथ मैं, जैसे घन बिन मोर ॥
हैं बड़े बेदरदी रे, गये प्रीत पुरानी तोड़ कर ॥१॥

प्रेम निभाने के लिये, लीना संयम भार ।
नेम मिलन राजुल चली, छोड़ सभी परिवार ॥
चढ़ी गढ़ गिरनारी रे, दर्शन कीने दिल खोल कर ॥२॥

साल छियाणु में कहे, चायु मुनि हितकार ।
ब्यावर में गुरुदेव के, कीने दर्श सुखकार ॥
ली शरण चरण की रे, दुनिया से मुँह मोड़ कर ॥३॥

नं० ६ (तर्ज—सरोता कहां भूल आये)

नरतन को सफल बनाओ प्यारे बीती जाय उमरिया ॥ध्रु०॥
आवे काम अन्त में नहीं ये, कंठि हार मुदरिया ।
चेतन जावे फकत अकेला, तजकर महल अटरिया ॥१॥
नर चोला दुर्लभ है मिलना, मत भर पाप गगरिया ।
निज आतम की शुद्धि करले, मिला ज्ञान का दरिया ॥ २॥
अधोगति होती है नर की, पापादिक आचरिया ।
उभय लोक में सुख पाओगे, सत्य धर्म आदरिया ॥ ३॥
परहित काज आम जन सारे, बाँधो बेग कमरिया ।
शिव संपति मुनि राम मिलेगी, जिनजी के सुमरिया ॥ ४॥

शैर—त्यागो खेलना जुआ, जरा देखो जमाने को।
जुआरी सैंकड़ों देखे हैं, रोते दाने दाने को॥

(राधेश्याम)

लंकाचोक, चूए, पतरे, बदनी, सट्टा है जग जहारी।
शतरंज, तास, चौसर, चौपड़, कैरम का खेल चला भारी॥
लाटरी, नीलाम, गटर, बीमा, पिंगपांग भी नाम इसीका है।
टंडीरा, बैडमैंटन, आदि कई, समझो ये नाम इसी का है॥

नं० १० (तर्ज़–आँगना में गिल्ली खेले)

सखी! बलमा तो मेरे रात दिन ये जुआ खेले॥ ध्रु०॥

बसन भूषण मेरे, जाय कर सब गिरवे मेले।
कौड़ी रही न उनके पास, अब वे इत उत डोलें॥१॥

हार हांसली माला, बेंचे हैं कानों के झेले।
साड़ी रक्खी न मेरी एक, बन रहे भोले भाले॥२॥

ख़्वाब में हर्षावें वह तो, स्वप्न भी सट्टे के लेले।
बोले हुआ मैं मालोमाल, बढ़िया मोटर लेले॥३॥

राम मुनि की शिक्षा, ध्यान में सब ही जन लेलें।
निज हित जो चाहो करो त्याग, मैं चेताऊँ पहले॥४॥

नं० ११ (तर्ज–पायल की झनकार कोयलिया काहे करत पुकार)

जप जिनवर का नाम, जियरवा जप जिनवर का नाम ॥ध्रु०॥
मात, तात, बन्धु, सुत, दारा, आवे न तेरे काम ॥ १ ॥
करते यार प्यार तब तक ही, जब तक पास में दाम ॥ २ ॥
पाप ताप नशे सुमरन से, सिद्ध होंय सब काम ॥ ३ ॥
राम मुनि धर ध्यान उसी का, तजदे काम तमाम ॥ ४ ॥

न० १२ (तर्ज राधेश्याम)

श्री ऋषभ अजित संभव स्वामी, अभिनन्दन भव बन्धन हारो।
सुमति पद्म सुपार्श्व नमूँ, चन्दा प्रभु भव भन्जन हारो॥
सुविधि शीतल श्रेयाँस प्रभु, अरु वासुपूज्य मम पीर हरो।
प्रभु विमल करो निर्मल बुद्धि, नैया भव जल से तीर करो॥
श्री अनन्तनाथ प्रभु, धर्मनाथ, श्री शान्तिनाथ शांति दीजे।
श्री कुन्थु अरह मल्ली नाथ प्रभु, मुक्ति जाने का वर दीजे॥
मुनिसुव्रत, नमि, नेम मेरी, अब आवागमन मिटाना तुम।
श्री पारसनाथ महावीर प्रभु, शिव नगरी नाथ बताना तुम॥
कहे नाथु मुनि अरु मोहन मुनि, कर दीजे नाथ उद्धार मेरा।
श्री चतुर्विंस पद पंकज में, वन्दन हो बारम्बार मेरा॥

नं० १३ (तर्ज—तेरे पूजन को भगवान् वना मन मन्दिर)

।कर नरतन चतुर सुजान, करो नित आतम का कल्याण ।।ध्रु०।।

प्रभु ने आगम में जितलाया, दुर्लभ नरतन चोला पाया ।
मिला यह देवप्रिय अति महान् ।। करो निज० ।। १ ।।
धन्ना शालि भद्र बड़ भागी, कैसी रिद्ध अतुल को त्यागी ।
जाना भोग भुजंग समान ।। करो निज० ।। २ ।।
जाता समय बड़ा अनमोल, मत सिर डाल विषय की धूल ।
है यह विष मिश्रित पक्वान ।। करो निज० ।। ३ ।।
सम्वत् उन्नीसे छीयानु साल, आया देहली सेखे काल ।
राम मुनि कहे सुनो धर ध्यान ।। करो निज० ।। ४ ।।

नं० १४ (तर्ज—छोड़ चले परदेश पिया बिन कैसे जीऊँगी)

छोड़ चले गिरनार नेम विन कैसे हो मेरी जान ।
कंथ बिन कैसे जीऊँगी, पिया बिन कैसे जीऊँगी ।।ध्रु०।।

चन्दा विन ज्ूँ चान्दनी हाँ, तारा विन ज्ूँ रात ।
पुत्र विना परिवार ज्ूँ हाँ, विना नमक का भात ।।१।।
सावन में बदली भरे ज्ूँ हाँ, नैना बरसे नीर ।
विन औगुन तज के गये हाँ, कौन बन्धावे धीर ।।२।।
तम पिहर तम सासरो हाँ- तुम बिन कौन आधार ।

तुम बिन जग सूनो सभी हाँ, खान पान सिनगार ॥३॥
राजुल की कुछ ना सुनी हाँ, पशुओं सुनी पुकार।
नाथु मुनि कहे जा मीली हाँ, राजुल जी गिरनार ॥४॥

नं० १५ (तर्ज—हलवाई के लड़के ने कमाल किया)

प्रभु तारो मुझे ली शरण मैं तेरी ।
दीनानाथ विनय अब सुनो ये मेरी ॥प्र०॥

चौगति में फिरा नहीं शान्ति मिली ।
मेटो लख चौरासी की नाथ फेरी ॥ १ ॥
डूबी जाती है जीवन नैया मेरी ।
इसे वेग उबारो करो न देरी ॥ २ ॥
पकड़ा दामन विषय कषा ने मेरा ।
दयानिधि छुड़ाओ दया कर मेरी ॥ ३ ॥
नाथु मुनि की अर्ज प्रभु दर पै तेरे ।
इच्छा पूर्ण करो जिनराज मेरी ॥ ४ ॥

नं० १६ (तर्ज—तेरे पूजन को भगवान बना मन)

तज दो फैशन को नर नार,
अगर जो चाहो देश सुधार ॥ प्र० ॥

फैशन पाई अब आजादी, हो रही पैसे की बरबादी ।

बन्धुओं देखो नैन पसार ॥ अगर जो० ॥ १ ॥

नेता पहन रहे हैं खादी, करली वृति अपनी सादी ।
जिनको जान रहा संसार ॥ अगर जो० ॥ २ ॥

इसने शाशन अजब जमाया, कीना धन का पूर्ण सफाया ।
हो रहे पूँजी पति लाचार ॥ अगर जो० ॥ ३ ॥

जब से इसने होस संभाला, तब से कीना धर्म किनारा ।
डूबा सत्य धर्म आचार ॥ अगर जो० ॥ ४ ॥

राम मुनि दे शिक्षा हितकारी, त्यागो फैशन को नर नारी ।
दया दीनों की उर लो धार ॥ अगर जो० ॥ ५ ॥

नं० १७ (तर्ज–साड़ी पल्लुदार लड़यो)

मोरी छोटी सी अर्ज गुरु दर्श दिलइयो ॥ ध्रु. ॥

तुम जल्दी २ अईयो, संग में शिष्य मण्डली लईयो, हाँ हाँ लईओ २ । नगरी पावन पुनः करईयो, गुरूवर दर्श दिलईयो ॥ १ ॥ प्रभु वाणी तुम सुनईयो, कृपा ईतनी तुम करईयो, नैया सिन्धु से तिरईयो, गुरूवर. ॥ २ ॥ अर्जी भूप की सुनईयो, सेर शिवपुर की करईयो, दया नाथु पे रखीयो, गुरूवर० ॥ ३ ॥

नं १८ (तर्ज हलवाई के लड़के ने कमाल किया)

रहना कायम धर्म पै है काम तेरा।
होगा रौशन हिन्द में नाम तेरा ॥ ध्रु ॥

करले तन से तपस्या है सार यही।
होगा अलकर, खाक यह धाम तेरा ॥१॥

राम सीता को करते हैं याद सभी।
होना निशदिन उन्हें प्रणाम मेरा ॥२॥

साधु मुनि सदा धर्म कायम रखो।
होगा शिवपुर खास मुकाम तेरा ॥३॥

नं० १६ (तर्ज अन्धेरीया है रात साजन रहियो के जईयो)

गुरुदेव मेरी नईयां, भव सिन्धु से तिरयो (ध्रुव)

जीवन नईयां डूबी साहब, करके दया दयालु,
इसे पार लो लगइयो (१)

मोह निद्रा में सोये हुये को; ज्ञान का जल छाँट,
हमें शीघ्र ही जगइयो (२)

श्री जीन बानी है सुखदानी श्री मुख से आप,
हमें वेग ही सुनइयो (३)

नाथु मुनि की अर्ज यही है शिव नगरी की सहल
नाथ शीघ्र ही करड़्यो (४)

नं० २० (तर्ज केसरीया मारो माथो दुःखे जी)

चेतन जी थांने, नित्य समझावाँ जी ॥ ध्रु० ॥

यो अवसर चूको मती जी, समय मिल्यो अनमोल ॥१॥
तन, धन, योवन स्थिर नहीं जी, नदी पुरवत् जाय ॥२॥
मात, तात, दारा सभी जी, मतलब को संसार ॥३॥
करो अराधन प्रेम से जी, सत्य-धर्म सुखदाय ॥४॥
नाथु मुनि स्तवन गवीयो जी, सोचो दिल के माँय ॥५॥

नं० २१ (तर्ज़—हाँ टिकट ले लो शिवपुर को)

हाँ उत्तम नर देही पाई, सद्गुरू थांने रया समझाई ।
सोच समझ नादान, फेर मिलने की नांई रे ॥ ध्रुव ॥

रतन चिन्तामणी कर में आया, सफल करो करणी कर काया
मिला समय अनमोल तोल हृदय के मांही रे ॥ १ ॥
लख चौरासी भटकत आया, निठ निठ मानव तन पाया
देव प्रिय यह जान प्रभु, मुख से फरमाई रे ॥ २ ॥
जम्बु सफल करली निज काया. विजय कंवर जी संजम पाया

फर इस पर तू ध्यान ज्ञान शिक्षा हित दाई रे ॥ ३ ॥
उत्तम नर तन मिलीयो नीको, सत धर्म को काढो टीको
मत खो चतुर सुजान, फक्त विषयों के मांही रे ॥ ४ ॥
शहर किशनगढ़ भजन बनाया, नाथु मुनि उपदेश सुनाया
करो धर्म से प्रेम नेम पालो सुखदाई रे ॥ ५ ॥

नं० २२ (तर्ज रेकॉर्ड)

प्रभू तेरी वाणी जगत में सार है ॥ प्रभु ॥

जिन वाणी पर श्रद्धा लावे, भव भव सिन्धु तिर जावे।
जगत में सार है ॥ १ ॥
अर्जुन माली शरणे आया, छ. मास में मुक्ति सिधाया ॥२॥
वाणी में मुग्ध हो जावें, सुर नर सुनवा आवे ॥ ३ ॥
नाथु मुनि पद गाया, ब्यावर शहर में आया।
जगत में सार है ॥ ४ ॥

नं० २३ (तर्ज मैं बन की चिड़िया)

मैं जैन धर्म को परम पवित्र मानु रे।

मै श्रद्धा अपनी अटल इसी पर आनु रे ॥प्रभु॥
है सार यही एक जग में, रम रहा मेरे रग रग में,

यही धर्म श्रेष्ठ और परम श्रेष्ठ, शेष व्यर्थ विष मिश्रित मैं जानु रे ॥ १ ॥

स्याद्वाद धर्म है आला, यह मुक्ति देने वाला, लेना तू धार, भव जल हो पार, यह तम हरण जैसे है जग में भानू रे—मैं जैन धर्म को परम पवित्र मानु रे ॥२॥

ध्वनि

श्रमण भगवन्त श्री महावीर ।
त्रसला नन्दन हरियो पीर ॥

मुद्रकः—पं० रूपचन्द शर्मा
देहली कमर्शियल प्रेस,
चांदनी चौक देहली।

* ॐ *

वन्दे जिनवरम्

गुरु-गुण पद्यावलि

संग्रह कर्त्ता-

कविवर सरल स्वभावी पंडित रत्न मुनि श्री हीरालालजी महाराज के पौत्र-शिष्य धैर्यवान् व्याख्यानी बड़े नाथूलालजी महाराज
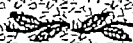
प्रकाशक:-

श्रीमान् लालचन्दजी पुनमचन्दजी बोहरा चिचोंडी (अहमद नगर)

श्री जैनोदय प्रिंटिंग प्रेस, रतलाम.

* ॐ *

वन्दे जिनवरम्

गुरु-गुण पद्यावलि

संग्रह कर्त्ता-

कविवर सरल स्वभावी पंडित रत्न मुनि श्री
हीरालालजी महाराज के पौत्र-शिष्य
धैर्यवान् व्यावच्ची बडे **नाथूलालजी**
महाराज
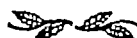
प्रकाशकः-

श्रीमान् लालचन्दजी पुनमचन्दजी बोहरा
चिचोंडी (अहमद नगर)

प्रथमावृत्ति ५०० | अमूल्य भेट | वीराब्द २४५७ वि सं १९८७

श्री जैनोदय प्रिंटिंग प्रेस, रतलाम.

❀ ॐ ❀

निवेदन।

प्रिय पाठकों! यह बात तो जगत-विख्यात है कि गुरु पद सब से उच्च-कोटि का है। गुरु की कृपा से ज्ञान प्राप्त होता है इसी लिये गुरुपद सर्व श्रेष्ठ माना गया है। किसी ने ठीक कहा है:-

गुरु गोविन्द दोनों खड़े किसके लागू पाय।
बलिहारी गुरु देव की गोविन्द दिया बताय॥

ऐसे गुरु महाराज का पूर्ण रीति से गुण-गान करने की किसी में सामर्थ्य नहीं है तथापि अल्पबुद्धि के अनुसार गुरुवर्य की कीर्ति के कितनेक मुनि महाराजों के एवं अन्य सज्जनों के बनाये हुए कितनेक पद माता स्मरणीय शास्त्रविशारद पूज्यवर श्री १००८ श्री मन्नालालजी महाराज के सम्प्रदाय के प्रसिद्ध वक्ता पण्डित मुनि श्री चौथमलजी महाराज के सुशिष्य आज्ञा धारक विद्या प्रेमी मुनि श्री मोहनलालजी महाराज की कृपा से प्राप्त हुए हैं जिसको पुस्तक रूप में छपाकर सज्जनों के कर कमलों में भेट करते हैं। आशा है कि पढ़ कर अवश्य लाभ उठावेंगे।

निवेदक

चौथमल मोहनलाल खींवसरा
बड़ी सादड़ी (मेवाड़)

॥ ॐ ॥

❀ वंदे वीरम् ❀

❀ गुरु-गुण पद्यावलि ❀

॥ मङ्गलाचरण ॥

संसारदावानलदाहनीरं; संमोह धूलि हरणे समीरम् ।
मायारसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरिसारधीरम् ॥१॥

नं० १ सवैया

चौसठ-अर्ध जिनेश्वर-भाषित सूतरजा गलबीच सुहावे,
थम्भ इसे जिनशासन के "कविबाल" कहे बिरले दृगआवे,
मन्मथजीत महामुनि ये निशिवासर ज्ञान-घटा गहरावे,
लच्छणवन्त विचक्षण के गुणगावत को गुणवंत अघावे,

न० २ तर्ज—महावीर मन मोहन प्रभुका ।

बिचर-विचर कर भूमडल में, जबर आप उपकार किया ।
रजवाड़ों में अहिंसा-धर्म का, जा जाके प्रचार किया ॥ १ ॥
प्रतिज्ञा की कई राजाओं ने, मद-मास-परिहार किया ।
भूप बड़े बड़े ज्ञान सुनी, अगता जो कायम चार किया ॥ २ ॥

कीर्ति सकल जन गाय रहे, गुरु चौथमलजी उपकार किया।
जैन–अजैन में राम मुनि कहे, यश आप अपार लिया ॥ ३ ॥

न० ३ तर्ज—थियेटर ।

माता केसर के लाल चौथमलजी दयाल, कहूं उनका अहवाल, सुनो धरकर ध्यान सयम की गुरु दिल मांये धारी, त्यागीजी त्यागी है परणी जो नार, छोड़ा छोड़ा संसार बिना सयम मार, करते पर उपकार, तुम धन, धन, धन,।

न० ४ तर्ज—महावीर मन मोहन प्रभु का ।

श्री श्रमण भगवन्त कर्म–दल, दूर करि शिवपद पाया।
चौबीसवां तीर्थंकर स्वामी, महावीर जिनवर–राया ॥ १ ॥
थरराया जिनके सनमुख जो, पाखंडी चल कर आया।
मर्दन कर दिया मान जिन्होंका, स्वामी सतपथ बतलाया ॥ २ ॥
लहराया अहिंसा का झंडा, प्रभुजी ने दिखलाया।
जीव बहुत यज्ञों में होमते सो स्वामी ने बचवाया ॥ ३ ॥
महि–मंडल में घूम २ कर, क्षमा मार्ग का फैलाया।
हार्दिक भावसे धर्म–देशना, दे भव्यों को समझाया ॥ ४ ॥
राह बताई सरल प्रभु ने दे संयम शिव पहुंचाया।
जन्म सफल कर कई भव्य-प्राणी, श्रावक हो दिव्य गति पाया ॥ ५ ॥
कीर्ति स्वामी त्रिहुं लोक में मोक्ष गया कर्मदल क्षाया।
जग–प्रभास का दुःखदूर कर, अजर अमर करली काया ॥ ६ ॥
यह सांसारिक क्षणिक सुख है, मरावो मेरे माया।

हो श्रद्धालु धर्म आराधो, मिट दुःख रहे सुख छाया ॥ ७ ॥
धैर्यवान गुरु खूबचदजी नें, तत्त्व ज्ञान यह बतलाया ।
साल त्रियासी मल्हारगढ़ में, "सुख मुनि" कथके गाया ॥ ८ ॥

नं० ५ तर्ज—मनोहर छंद ।

जगत में विख्यात आप,
गमन देश-देश करो,
तमन्ना नहीं जो किसी, बात की लगारी है ।
बतावत सत पथ,
लक्ष को लगावो भव्य,
भजो जिनदेव, यही शिक्षा हमारी है ।
चौतर्फी सभा-बिच,
थरणित शब्द गूंज रहे,
मुनिवर तारण सभी, बोले बलिहारी है ।
निडर पने देके ज्ञान,
जीव दान दिला दिला,
किया रजवाड़ा कई, धर्म रहस्य धारी है ।
जैन में हो स्तम्भ आप,
हो जो दीर्घ-आयु खूब,
मुनि नाथुराम अर्ज जिन जी से गुजारी है ॥१॥

न० ६ तर्ज—भाषा शिखरिणी ।

महामाया मोह—स्मरतिमिरराशौ भव-निशा, मिटा

के फैलाई सुमति किरणों भी चहुं दिशा । तभी है वे साक्षात् रवि श्रीमद्मी चौथमलजी, जिन्हों के आगे दुर्मति-कुमुदिनी ने छवि तजी ॥ १ ॥

न० ७ तर्ज—मत्तगयन्द छन्द ।

दुर्लभ था नर-देहधरी पुनि ता बीच ही गुरु ज्ञान लियो है, झूठ गिन्यो जगको मुनि भूषण काम-क्रोध को दूर किया है । आतम-रूप को जानि लियो उर में गुरु ज्ञान को आनि लियो है । संत शिरोमणि चौथमुनीश्वर चौथयुगीन को एक दियो है ॥ २ ॥

न० ८ स्वागत—कविता ।

वर्षाई सुधाधारा २ मुनिवर पुण्यों से मिला । पंच-महाव्रत के मुनि धारी, राग-द्वेष को दूर टारी । चारों कषाय निवारा, निवारा ॥ मुनिवर ॥ १ ॥ विविध प्रांत में विचरे मुनिवर सब जनता को नसीहत देकर । भ्रम को दूर निकारा, निकारा ॥ मुनिवर ॥ २ ॥ दिल दर्शन को चाह रहा है । दस २ मन मोह रहा है । किया दर्शन सुख कारा, सुखकारा ॥ मुनिवर ॥ ३ ॥ श्री चरणों में शीष नमावे, हाथ जोड़ मुनि के गुण गावे । जय २ शब्द उचारा ॥ मुनिवर ॥ ४ ॥

न० ९ तर्ज—दया पालो सुमन माखी

चौथमलजी मुनि उपकारी, जगतवल्लभ जग में जारी ॥टेर॥

जन्म मुनि नीमच में पाया, देश मालव मम मन भाया ।
तात तस गंगाराम कहाया, मात केशर के कुँख में जाया ।

दोहा–उन्नीसे बावन विषे, निज जननी के लार । फाल्गुण सुद दिन पंचमी, लीनो संयम-भार । त्यागी नववधु परणी नारी, चौथमलजी मुनि उपकारी ॥ १ ॥ जबर गुरु हीरालाल कीना जिन्होंने शिर पै हाथ दीना । भक्ति उनकी कर यश लीना, पूर्ण वैराग्य में चित्त दीना ।

दोहा–गुरु आज्ञा आगे करी, पीछे चलते आप । शुद्ध चारित्र पालते, जिम पूरण शशि साथ । विनय कर लिया ज्ञानधारी, चौथमलजी मुनि उपकारी ॥ २ ॥ वाणी मुखसे अमृत वर्षे, सुनके भव्य जीव अति हर्षे । मूढ़से मूढ़ चाहें खरसे, सो भी सुन ज्ञान हृदे धरसे ।

दोहा–देश २ में विचरके, करते पर–उपकार । कई जीवों के आपने, दीने प्राण उधार । दिये कई पापी को तारी, चौथमलजी मुनि उपकारी ॥ ३॥ गुरु की महिमा है भारी, पार नहीं पाते नरनारी । लिखते लेखनी भी हारी, कहां तक करूं महिमा थारी ।

दोहा–गहरे उदधि सम आप हो, नहीं गुणो का पार । निज अनुचर पै महरकर, दीजो पार उतार । अर्ज यही चरणों में डारी, चौथमलजी मुनि उपकारी ॥ ४ शहर सादड़ी विचरत आये, मुनिवर अष्ट संग में लाये । सज्जन

सन के मन अति भावे, महिमा सुन पामर घबरावे।

दोहा—साल इक्यासी आषाढ़ सुद, सातम न बुधवार। अनोपचंद ने ओरके, गाई सभा मझार। सुनके हर्षे सब नर नारी, चौथमलजी मुनि उपकारी ॥ १ ॥

न० १० तर्ज—मेरे स्वामी बुलालो मुगतीमें मुझे

गुरु चौथमलजी उपकार किया, देके संयम मुझ अति निहालकिया ॥ टेर ॥ अजब छटा व्याख्यान की है, जानती दुनियां सभी। मालूम है उस व्यक्ति को, जिनने सुनी वाणी कभी। और जिनने उनीका तो दर्श किया ॥१॥ उपदेश द लाखों ही मनको लगा दिया सत–पथ में। अधर्मी को धर्मी किये दया उचारी घटमें जिन वाणी का प्याला पिलाय दिया ॥ २ ॥ अनहद हिंद आपकी तारीफ सो अति छाय रही। कीर्ति अहो निशि दुनिया सकल जो गा रही वाणी सुनके तृस नहीं होत जिया ॥ ३ ॥ मोहन मुनि सोहन–मुनि गुरु–चरण काही दास है। पार बेड़ा कीजिये अरजी मेरी यही खास है। मैंतो शरणा गुरुजी का आय लिया ॥ ४ ॥

नं० ११ तर्ज—चेतनजी ये वारने मत आवोजी

गुरु चौथमलजी ज्ञान दीनारे संयम देके निहाल जो कीना ॥ टेर ॥ गुरु आतापे प्रेम सवायारे हाथारी मुनिका शिष्य बनायारे भाडसट सालमें संयम मनसाया ॥ १ ॥

मेहेर मुझपर किनी भारीरे दीन्हां भवसिन्धु से तारीरे जाऊं गुरुवरकी वलीहारी॥ २ ॥ जहाज सदृश तुम जग माहीरे भव जीवों को सुख दाईरे कीर्ति आपकी दशो दिशी छाई॥ ३ ॥ गुरु देव गुणोंका दरियारे, पूरण गुण कीम जावे करीयारे, अनेक गुण तुमारे में भरीया ॥ ४ ॥ मेहेर नीमच के साधु पे करणारे, नाथु मुनि भेटे तुम चरणारे, मैं तो लिना तुमारा ही शरणा ॥ ५ ॥

न० १२ तर्ज—मुक्ति जाणे की डिग्री दीजिये।

गुरु चौथमलजी अमृत सम लागे वाणी आपकी ॥ टेर ॥ व्याख्यान छटा है अजब गुरुजी सुन सुन भवी हर्षावे। स्वमति अन्यमति आपकी कीर्ति अहोनिशि गावे ॥ १ ॥ न्याय हेतु दृष्टांत करि मुनि भिन्न भिन्न कर समझावे। प्रसिद्ध वक्ता हो गुरु आपतो सुयश जग प्रगटावे ॥ २ ॥ जहाज सदृश हो आप जगत में भवि जीवों तारो। आण पड़ा मैं निकट आपके सरणो लियो चरणारो ॥३॥ संवत् अस्सी ओर शहर जावद में तेरे ठाणा गुरु आवे। चांद मुनि नित्य हर्ष २ कर गुरुजी का गुण गावे ॥ ४ ॥

न० १३ तर्ज—शिवपुर नगर सुहावणो।

गुरु चौथमलजी में गुण घणा तुम मोटा छो अणगारजी स्वामी अथिर समझ संसार ने गुरु लिनो है संयम भारजी स्वामी ॥ टेर ॥ देश मनोहर मालवो नीमच शहर

मम्भारजी स्वामी गगारामजी का सुत तुम लिनो केशर कुंख अवतारजी स्वामी ॥ १ ॥ चढ़ता वैराग से आपन लिनो है सजम भारजी स्वामी । छवी रिद्ध छिटकायने तजी नव परणी नारजी स्वामी ॥ २ ॥ विनय करी ज्ञान सिखिया गुरु हीरालालजी के पासजी स्वामी । इन हीज भरत खेत्र में कर रथा ज्ञान-प्रकाशजी स्वामी ॥ ३ ॥ देश-विदेश-विचरके करता पर उपकारजी स्वामी । मुक्ति मारग भव जीवानें दर्शावो हितकारजी स्वामी ॥ ४ ॥ आप मुनि में गुण घणा केता न आवे पारजी स्वामी । अल्प बुद्धि छे मायरी कहां तक करूं विस्तारजी स्वामी ॥ ५ ॥ साल त्रियासी विचरता आया खमखोर गांव मम्भारजी स्वामी । चांद मुनि नमे चरण में गुरु वेगी दीजो तारजी स्वामी ॥ ६ ॥

न० १४ तर्ज—ममर रीजो रायामी आको राज ।

दिन २ बढ़ गया गुरुजी, आप को यश, मुझे तो सुखी कर दीनाजी ॥ टेर ॥ गुरुजी मवाड़ देश के मांमि नेजी, पवो नीमच शहर विख्यात ॥ १ ॥ गुरुजी गगाराम जी पिता आपके, पेतो कस्तूर माइ आग जाव ॥ २ ॥ गुरुजी पावन केरा साल में जी, मिला गुरु भेटीया हीरालाल ॥ ३ ॥ गुरुजी दाप पयालीस टालताजी, पवो करता पर उपकार ॥ ४ ॥ गुरुजी चौथमलजी स या विनतीजी, इदि चरने दीजो मुक्ति नो वास ॥ ५ ॥

नं० १५ तर्ज—घन घोर घटामें सूरज को छिपवा अनहद
जगमें उपकार किया, गुरु चौथमलजी स्वामीने ।

हर जगह धर्म प्रचार किया, गुरु चौथमलजी स्वामी ने ॥ टेर ॥ कर अटन देश विदेशों में, समकित का सूर्य प्रकटाया । मिथ्यातम दिल से दूर किया, गुरु चौथमलजी स्वामीने ॥ १ ॥ कई राजा और महाराज को, गुरु महत्व दया का दिखलाया । लिखवा कर पट्टा प्रकाश किया, गुरु चौथमलजी स्वामीने ॥ २ ॥ मरते हुवे कई पशुओं को, मुनि अभयदान तुम दिलवाया । छुरियों से बचा आजाद किया, गुरु चौथमलजी स्वामीने ॥ ३ ॥ करते थे कृत्य कई पशु वध का, दे ज्ञान उन्हों से छुडवाया । भर दिया हृदय में सार दयाका, गुरु चौथमलजी स्वामीने ॥ ४ ॥ कहे दास चरण का वृद्धिचन्द, कर पूर्ण महर मम गुरु वरने । दे संयम मुझको निहाल किया, गुरु चौथमलजी स्वामीने ॥ ५ ॥

नं० १६ तर्ज—पनघट पर हो रही भीर शीश पर घड़ा ।

गुरु चौथमलजी महाराज दुनियां में, जगत् वल्लभ हो जहारी ॥ टेर ॥ रहनो नीमच शहर के माई, गंगारामजी पिता सुखदाई, माता आपकी केशर बाई, कुंखमें जन्म लियो हितकारी ॥ १ ॥ गुरु हीरालालजी ने ज्ञान सुनायो, दिल बीच वैराग्य जो चायो । तुम प्रेम कुटुंब से हटायो, फिर त्यागी है परणी नारी ॥ २ ॥ बावन के साल संयम

लीना, फिर ज्ञान कंठ बहु कीना, भवी जीवों पे उपकार कीना प्रकटे भारत में पर उपकारी ॥ ३ ॥ कई मुल्कों में आप जो जावे, दया धर्म का खूब फैलावे, जिन वाणी का अमृत पावे पीके खुशी हुवे नरनारी ॥ ४ ॥ शुद्धिचंद नाथू गुण गावे, नित्य सेवा आपकी चावे। तुम चरणों में शीश नमावे। देवो मन्न पट भय मुक्त सारी ॥ ५ ॥

नं० १७ तर्ज—सीता है सतवती नार सदा गुण।

हमारा सतगुरुजी गुणवंत, सत ज्ञानी गुणीजी। जिन को जाने लोग तमाम, नाम चौथमल मुनिजी ॥ टेर॥ समत् बावन साल मुझार, आपने त्यागी परणी नार, लिना पंचमहाव्रत धार, भेटे हीरालाल गुरु देव, सेवा किनी गुनीजी ॥ १ ॥ छटा व्याख्यान तणा अति भारी, सुणवे आय बहुत नर नारी, हर्षित होय सभा जो सारी, वाणी वर्षे इंद्र घटा ज्यु गाजत मेघ—ध्वनीजी ॥ २ ॥ देवे ज्ञान अति हितकारी, जिसमें समझे दुनियां सारी, मैं तो जाऊं नित बलिहारी, देवे सब जीवों को उवारी, जो रह जगमें मुनीजी ॥ ३ ॥ सुयश आप जगत में लीना, समझा कई भूप को दीना, पट्टा जीव दया का कीना, हो मशहूर नृप केई कर्ते र वाणी सुनीजी ॥ ४ ॥ संमत् पिच्यासी मझार, चौमासे किया शहर सनवार, ठाणा चार सब परिवार, नाथुमुनि ने प्रकाशित महिमा, सतगुरु की धुनीजी ॥ ५ ॥

न० १८ तर्ज---कमली वाले की ।

सुयश का डंका आलिस में बजवादिया, गुरु चौथमलजी ने, और जैन का झंडा हर जगह में फर्रा दिया गुरु चौथमलजी ने ॥ टेर ॥ घोर अज्ञान-अविद्या की निद्रा में जो जन सोते थे, फिर ज्ञान जलको छांट उन्हें जगवा दिया गुरु चौथमलजी ने ॥ १ ॥ ये सात व्यसन है बहुत बुरे, चतुर नर इन से बचनारे, यह कहना मेरा है सब से जित लाय दिया गुरु चौथमलजी ने ॥ २ ॥ दे दे के सत्य उपदेश आप मिथ्यात अंधेरा दूर किया, फिर ज्ञान विजली विश्व बीच फैलादी गुरु चौथमलजी ने ॥ ३ ॥ कर ग्राम-ग्राम भ्रमण स्वामी कई राजा को प्रति बोध दिया, फिर उदियापुर में अगते चार करवा दिया गुरु चौथमलजी ने ॥ ४ ॥ साल त्रियासी चोमासा बनेड़ा हवेली बीच किया, फिर उदयपुर में ज्ञान झड़ी, लगादी गुरु चौथमलजीने ॥५॥ मुनि नाथुलाल और रामलाल कहे सत् गुरु का उपकार जबर । हमें रास्ता शिवपुर-जाने का बतला दिया गुरु चौथमलजी नें ॥ ६ ॥

न० १९ तर्ज---मेरे स्वामी मुगत में बुला लो मुझे ।

ज्ञानी गुरु का हुकम उठाया करो, उनकी आज्ञा में मन को लगाया करो ॥ टेर ॥ गुरु देवका सबसे अधिक, अए बंधवो उपकार है । गुरु बिना इस आत्मा को कौन तारन हार है, सतगुरु का नित्य गुण गाया करो ॥ १ ॥

गुरु दवका लगते ही पजा, ऊँच मनगाई आत्मा, कह रहे नरनारी सब धन धन जगत में महात्मा, अपने गुरु के नित्य गुण गाया करो ॥ २ ॥ गुरु जो शिक्षा करे, मत उलटी उसको लीजियो, हित के लिये कहा, रहे तुम गौर दिलमें कीजिया, सत् शिक्षा दिलसे न हटाया करो ॥ ३॥ निश-दिन विनय गुरु का करो, मत भूलियो कोई कभी, हिंगायो में रामपुनि कहे, श्रोता सुनलीजो, सभी अपना भक्ति का परिचय दिखाया करो ॥ ४ ॥

नं० २० तर्ज—मया बसे है क्या मार

श्री गुरु चौथमलजी महाराज सत्य उपदेश सुनाने वाले। सत्य उपदेश सुनाने वाले मोक्ष का मार्ग दिखाने वाले ॥ टेर ॥ नीमच शहर आपका विख्यात, है गंगारामजी तात, माता केशरके अग जात, संयम ले आतम तारने वाले ॥ श्री ॥ १ ॥ पावन साल में संयम लीना, गुरु हीरालालजी कीना फिर हृदय ज्ञान बहु कीना, जैन का झंडा दिखाने वाले ॥ २ ॥ दत आला के उपदेश, समझ में आता बहु विशेष, जिसमे निंदा नहीं लवलेश, फर्ज लोगों को समझाने वाले ॥ ३ ॥ संमत् उन्नीसौ उन्यासी साल, आया रतलाम सेखे काल, पत्थरों का चाकर है रामलाल, बेडा पार लगाने वाले ॥ ४ ॥

नं० २१ तर्ज—कव्वाली—नहीं कर्मों की माया का किसीने मर्म पाया है।

गुरु चौथमलजी के गुण का नहीं कोई पार पाया है,

करें कहां लग हम तारीफ, नहीं कुछ पार पाया है ॥ टेर ॥ विचर कर देश देशांतर, किया उद्धार भारत का, दे दे ज्ञान लोगों को सत रस्ते लगाया है ॥१॥ पूज्ज मन्नालाल महाराज दी पदवी जगत वल्लभ की । पुन वानी आप परभवसे तो पूर्ण बांध लाया है ॥ २ ॥ उपदेश आपका बहुत, असर जो करता लोगो पर । कई को दुष्कृत्यों का आपने त्यागन कराया है ॥ ३ ॥ शशी जिम सूरत तो शीतल, दिखाती है जो चहरे पर । नहीं क्रोध मान और माया कभी तनपे दिखाया है ॥ ४ ॥ तारीफ क्या करें मुखसे, मशहूर है विश्वके अन्दर । नहीं हरगिज आपके गुणका, किसीनें छेः बताया है ॥ ५ ॥ इक्यासी साल चौमासा किया है सादड़ी आकर । पुण्य योगसे नाथू सेवा गुरु देवकी पाया है ॥ ६ ॥

न० २२   तर्ज—आखिर नार पराई है ॥

आगत गुरुका सुन पाया है, श्री संघ यहां का हर्षाया है ॥ टेर ॥ विचरत जन पद करत विहार, आये सादड़ी शहर मुझार, अति आनन्द रंग वर्षाया है ॥ १ ॥ कर पूर्ण हम पै उपकार, महर करी अर्जी अवधार, मुनिवर चौमासा ठाया है ॥ २ ॥ देकर सबको सच्चा ज्ञान, प्रकट किया सम्यक्त्वका भान, मिथ्यातम दूर हटाया है ॥ ३ ॥ ढील देख धर्मकी लाग, मुरझा रहा था यहां का बाग, सिंचन-कर हरा बनाया है ॥ ४ ॥ गुरु-गुणका नहीं पाते पार,

कवि कहां तक करते विस्तार, किंचित् में यहां दिखलाया है॥ ५ ॥ एक पुन' अर्जी सुनलीजे, फेर कृपाकर दर्शन दीज, थी सघ मिलके यूं गाया है ॥ ६ ॥

न० २३ तर्ज—थियेटर।

चौथमल गुरु ज्ञानी, जिनकी रसीली है वानी। सुन मर्वी जन प्राणी, बहु आकर के २। चड़े २ नृप ज्ञान सुनी ने किनाजी किना पट्टा उसवार, पलाई जीव दया सार। मोहन मुनि कहे पुकार, करते धर्म प्रचार गुरु देव, देव, देव है।

न० २४ तर्ज—पूर्ववत्।

कर जोडी कहे आय निज माता के ताय आज्ञा दीजे चकलाय लेवू संयम भार २। गुरु हीरालालजी का ज्ञान सुनीने जाणाजी जाणा अथिर संसार राम मुनि कहे पुकार बोले गुरु इस प्रकार जन्म मरण को निवार लेवूं मोक्ष मोक्ष मोक्ष ॥ ३ ॥

नं० २५ तर्ज—पूर्ववत्।

माता बोले इस प्रकार सुन लीजिये कुंवार संयम खांडा की धार कहुं बात २' साधु पना तो कठिन घनो है, करनो जी करनो फिर उग्र विहार, चलना वैसा सुप्यार। नाथु मुनि कहे पुकार मैया बोली इस प्रकार। लीने सोच, सोच, साच ॥ २ ॥

नं० २६ तर्ज—पूर्ववत् ।

चौथमल मुनि है वो अधिक गुणि जिन की अजब ध्वनी कहूं हित धरके २। शंकरलाल पे मेहर करिने दिनो जी दिना संजम भार लिना लिना उवार दिना भवसिंधु तार तुमे धन, धन, धन ॥ ३ ॥

नं० २७ तर्ज—मेरे स्वामी बुलाले मुगत में ।

गुरु देव का हुक्म उठाया करो, उन की शिक्षा को दिल में जमाया करो ॥ टेर ॥ आवे गुरु जब उठकर, करना विनय उन्हों का सदा, बोलना मुखसे पधारो, नहीं भूलना हरगिज सदा । उचे आसन पर उनको बैठाया करो ॥ १ ॥ माँगना आज्ञा गुरूकी, शिष्य को हर काम में । आज्ञा बिना लेना नहीं, कोई चीज आठो याममें । वापिस लाके गुरू को बताया करो ॥ २ ॥ करके विनय तन मन से, नित्य ही सीखना फिर ज्ञान को । करना न उनके सामने, हरगिज कभी अभिमान को । नित्य नम्रता दिलमें बढ़ाया करो ॥ ३ ॥ इस तरह करते विनय, वह सद्गति में जायगा । नाश कर कर्मों का फिर, आवा गमन मिटायगा । हरदम गुरु का गुण तुम गाया करो ॥ ४ ॥ साल छियासी कहे, चम्पक मुनि उतराण में चाहो अगर अपना भला, चलते रहो गुरु आण में । उनकी आज्ञा बाहिर न जाया करो ॥ ५ ॥

नं० २८ तर्ज—गुरुजी की भजन

गुरुजी मारा सेवा करूँ हुलसाय, सेवा से सब सुख पाय ॥ टेर ॥ जन्म, जरा और मरण मिटादो, अर्ज करूँ चित्त लाय । मुझ गरीब की यही विनती, सुनजो ध्यान लगाय ॥१॥ फिरता फिरता पुण्य योग से आप मिले मुझ आय । ऐसे गुरु के चरण भवन से, जावे दुःख पलाय ॥२॥ नाम आपका सुन के गुरुजी, दिल में हर्ष न माय । धन्य घड़ी आज यह मेरी, सुगुरु दर्शन पाय ॥ ३ ॥ तरण जहाज के आप गुरुजी, सुन कर आयो आय । कृपा करके भव्य जीवों का, दयो माक्ष पहुंचाय ॥ ४ ॥ उगणीसे अठ साल इक्यासी, शहर आवरा माय । गुरु प्रसादे चान्द मल यह, आज सभा में गाय ॥ ५ ॥

नं० २९ तर्ज—भामल

गुरु श्रीयमलजी भासुधे । काय सांगु गुण त्यांचे ॥टेर ॥ नीमच शहरी जन्म जहाले । अणु वर्षे उत्तरूनी आले । जनता सुखी कराया । सोळावली ममता माया ॥१॥ गंगारामजी पीते तात । सती केशर बाई मात । सोळावे वर्षी आहाले लग्न । बनले वैराग्यांत मग्न ॥ गुरु ॥ २ ॥ अठरावे वर्षी घेतली दीक्षा । गुरु हीरालालजी घेई शिष्य । गुरु ज्ञान त्यांनीं दिले । त्वरित भेदानासी आले ॥ गुरु ॥ ३ ॥ जेव्हा घरों गाजवीला । दया मत मढ सचवीला ।

होती जेथे चातुर्मास । धर्मा करीती राज रहिस ।। गुरु ।। ४ ।। उपदेश जणु राम बाण । करीती जगाचा कल्याण। हिन्दु आणि मुसलमान । दयालु होती ऐकुनी ज्ञान ।। गुरु ।। ५ ।। सप्त दुर्व्यसनासी त्याग । पट्टा लिहुन दिले जाग । केले बहूत ही उपकार । सांगू किती गुणा चान पार ।। गुरु ।। ६ ।। ऐसे गुरुजी आहे गुण धारी । आता आज्ञासी लवकर तारी । छगनलाल करिता अरजी । सदा असावी कृपा मरजी ।। गुरु ।। ७ ।।

नं०३०   ।। दिंडी ।।

मुनिजी पावन केले कलम सरास । आले येथे आमुचे तीव्र नशीवास
निराभिमानी खरें हेची साधुसंत । अमुल्य बोध मलादिला गुणवंत

आर्या

श्री स्वामी प्रभु सदये । चौथमलजी ला नमस्कार ।।
स्वार्थ त्याग करूनी । करिती लोकांस बोध हे फार ।।

साकी

मीपण न मुलीं असाचि त्याच्या अंत न विद्वत्तेला ।
चोहिकडे ही याची ख्याती पहा रचिले त्या ग्रन्थाला ।।

कामदा

थक ऐकुनी बोध हावरा ।
मग्न जाहलो त्यात मी खरा ।।
लक्ष जैन भ्मा मार्गि सारिसे ।

जीव कथ्यस है मसी नीके ॥

दोहो

मनाने म्हा अरिहत वर्णनात्ता ।
हाव गिरी मरली भ्या तमात कलम ॥
राग की तम वो होय अंधकार ।
जगी धारी हा मसु एक ईश्वर ॥

शा० वि०

यां चीही प्राकृत होय माथा ।
चे ग्यार्थी भ्या हा पुरवा मनाथा ॥
सेबेसी हा मोजुनि पुप्प गुच्छ ।
राणु समर्पि सुमनें चि स्वच्छ ॥

नं० ११ तर्ज—वरीवालेने ॥

गुरु चौथमलजी महाराजको तुम वंदो सबही नरनारी,
है गुण रत्नों की खान बड़े गुरु चौथमलजी उपकारी ।टेर॥
सम्वत् गुनीसो पावन साल, हीरालालजी मेटा सिया म
सब संतों के बीच आपकी मुद्रा है अति सुखकारी ॥ १ ॥
धर्मशास्त्र के हैं ज्ञाता, और सरस्वती कंठ विराजे है । जिन
शासन में स्तंभ आपहा फिर पाखण्ड-मत आवे हारी ॥२॥
पंच महाव्रत शुद्धपालें और प्रभुकी आज्ञा मारे, फिर देश
देशांतर विचर हैं व्याख्यान छटा सो अतिभारी ॥ ३ ॥
मोहनी-मूरत सोहनी-सूरत देखत ही प्यारी लागे, जम

देखो जब शास्त्र हाथमें ज्ञानतणा उद्यम भारी ॥४॥ साल छीयासी खानदेशमें हींगोना मे चौमास किया, यह गैंद मुनीकी अर्जी है मुझे भवोदधिसे देवो तारी ॥ ५ ॥

न० ३२ तर्ज कमली वाले की ।

धन्य भाग पधारे दक्षिण में, सुत मात भवानी केशर के । दर्शन दिने हैं हम सब को, सुत मात भवानी केशर के ॥टेर॥ सर सब्ज भई नीमच भूमि, संवत् उन्नीसे पेंतीस में । सुभ जन्म जगत् विख्यात भया, सुत मात भवानी केशर के १ ॥ ॥ द्वि–पंचासत् में संयम लिना, गुरु हीरा-लाल धारन किना । निज माता संग दीक्षा लिनी, सुत मात भवानी केशर के ॥ २ ॥ फिर छती रिद्ध को तज स्वामी, हुवे जैनागम के बहु ज्ञाता । परणी महिला का त्यागी है, सुत मात भवानी केशर के ॥ ३ ॥ गुरुवर्य उप-देश सुनाते हैं, सबका ही सार बताते हैं । जिससे श्रोता बहु आते है, सुत मात भवानी केशर के ॥ ४ ॥ तारागण में ज्यूं चंद्र शोभता, ऐसे सभा बीच मुनियोंमें । चहरे पे शांतता दिखती है सुत मात भवानी केशर के ॥ ५ ॥ ये सप्ताशिती:में तीन ठाणा, वांबोरी शहर किया चौमासा । निज मुख से आज्ञा दीनी है, सुत मात भवानी केशर के ॥६॥ ये वाँबोरी संघ, और वर्धमान मंडल की यही अरजी है । फिर वावोरी पावन करना, सुत मात भवानी केशरके ॥७॥

नं० ३३ तर्ज—तेरी सांवरी सुरत दिल बस गई रे।

गुरु देव की वाणी दिल ठस गईरे, ठस गईरे, मन बस गईरे, ॥ टेर ॥ मधुर वचन से ज्ञान सुनाया, जिन वाणी का पान कराया, मिथ्या बातें सब नस गईरे ॥ १॥ करले धरम ये कहना है काषी, मोहन सोहन मुनि के रह साथी, पापों से तबीयत खस गईरे ॥ २ ॥

नं० ३४ मनोहर छंद।

मुल्क मुल्क ज्याकी।
निरत कीरत फैली।
चौविसमा शाशमें।
थम्भ ज्यों आधारी है॥
महिमा अनेक जस।
लहू नहीं पार हू मै।
जीभ एक गुण बहू।
माणक व्यापारी है॥
हाट वीर प्रभुजी की।
राखे खुली अहो निश।
जचाई जचाई माल देवे शाता
कारी है।
मुनि चौथमलजी महाराज
साल अस्सी हुमें। इन्दौर
दुकान खोली ज्ञान गुल-
क्यारी है॥ १॥

नं० ३५ तर्ज—थियेटर।

गुरु चौथमलजी हितकार,
पधारे दक्षिण देश मंझार,
कीनो घणो उपकार, मुनि
बहुत गुणी २ करुणा करी
हमको गुरुजी, २ दीजो जी
दीजो भव-सिन्धु से तार।
राजमल की पुकार दीजो
जन्म सुधार—मेरी अरजी स्वी-
कार गुरु देव ३ देव ३ देव ३
युगत्रये पूर्वमतीत पूर्वे,जा-
तास्तुजाताः खलु धर्ममल्लाः
अयं चतुर्थो भवताच्चतुर्थे,
धात्रेति सृष्टोऽस्ति चतुर्थ
मल्लः॥ १॥

नं० २६ तर्ज— भंवर रीजो रायाजी।

भंवर रीजो गुरुजी आपको नाम मुझे तो सुखी कर दीनाजी ॥ टेर ॥ ओ जी माता आपकी केशर बाई जी, है गंगारामजी तात ॥ १ ॥ मुझे तो ॥ ओजी संवत् उगणि- पासत् साल में जी, गुरु भेट्या है श्री हीरालाल मुझे तो सुखी कर दीनाजी ॥ २ ॥ ओ जी छवि लछमी छोड़ ने जी, फिर त्यागी है परणी नार मुझे तो सुखी कर दीनाजी ॥ ३ ॥ ओ जी जगत् वल्लभ की पदवी आपने जी, खास पूज्य श्री फुरमाय, मुझे तो सुखी कर दीनाजी ॥ ४ ॥ ओ जी तारा बीच शोभ रह्या चंद्रमाजी, ऐसे शोभो सभा बीच आप, मुझे तो सुखी कर दीनाजी ॥ ५ ॥ ओ जी सम्वत् उगणीसो अठ्यांसि साल में जी, कियो इन्दौर चौमा- सा आप आय ॥ मुझे तो सुखी कर दीनाजी ॥ ६ ॥ गुरुजी राम मुनि कर य वीनंती जी, शिवपुरी जल्दी बताय मुझे तो सुखी कर दीनाजी ॥ ७ ॥

नं० २७ तर्ज—नखरीके कन्हैयालाल।

विनती सुनजो गुरु महाराज म्हारा शहर आवजो २ ॥ टेर ॥ कर जोड़ करूं मैं अरजी, थे सुनलीजो मुनिवरजी जल्दी करके हमपर मरजी अमृत रस पावजो २ ॥ १ ॥ हमारा करने को उद्धार जल्दी कीजो आप विहार सब चेलों के परवार [illegible] २ ॥ २ ॥ सुनलीजो मेरी

अरदास दर्शन की मुझको आस यही विनती हमारी खाश भूल मत जावजो २ ॥ ३ ॥ अरजी सुन लीजो एक म्हारी शंकर मुनि कहे सुनो नरनारी गुरु नाम सदा जयकारी नित उठ ध्यावजो २ ॥ ४ ॥

न० ३८ तर्ज—जल जमना तट जावेरे कनईयो ।

आवो मेरे मित्रों गुरु गुण गावें ॥ गुरु गुण गावें, हर्ष मनावें ॥ टेर ॥ प्रात उठ गुरु दर्शन करके ॥ चरणों में उनके शीष नमावे ॥ १ ॥ वाणी सुनकर गुण मुख सेती ॥ कर्ण इंद्री को पवित्र बनावे ॥ २ ॥ प्रेम पूर्वक कर सेवा उनकी ॥ जन्म कृतार्थ अपना बनावें ॥ ३ ॥ दुर्लभ दरशन पाया कठिन से ॥ धन्य भागजो सेवा वजावे ॥ ४ ॥ साल सित्यासी हिवडा गांवमे वृद्धिचंद्र चंपक सुखपावे ॥ ५ ॥

नं० ३९ तर्ज—सुमर नर महावीर भगवान् ।

मेरे तो गुरु माता केसर के लाल । परम गुरु पर उपकारी को नाम लेवो हरवार ॥ टेर ॥ नाम आपका चौथमलजी जग-प्रिय जग-हितकार । मुक्ति जाने के लिये आप लिया अवतार ॥ १ ॥ सिर का सेवरा हार हिया का तुम हो प्राण आधार । आप सरीखा गुरुजी मिल्या हमको मुझको तारण हार ॥ २ ॥ संसार सागर के वीचमें पाप करता था अपार । कृपाकरी आप गुरुजी दीना संजम भार ॥ ३ ॥ प्रगटीया भवजीवों के लिये छकाया रक्षपाल ।

कहाँतक गुण बखान करूं आपकी महिमा अपरपार ॥ ४ ॥ समत् उगणीसें साल सीत्यासी हिवड़ा शहर मुझार । गुरु हुक्म से किया चौमासा बरत्या मंगलाचार ॥ ५ ॥ मुनि भेरूलालजी और वृद्धिचंदजी ज्ञान तना भंडार । मुनि राजमल चरणों का चाकर सेवा में आया सार ॥ ६ ॥

न० ४० तर्ज —धूमो बाजेरे महाराज उमदसिंग।

गुरु साचारे हीरालाल शिष्य चौथमलजी ॥ टेर ॥ अमृत सम वाणी निज मुख से बरष । भोता सकल सुन २ हर्षे ॥ १ ॥ स्वमति अन्यमति कीरती सब गावे । अवतारी सदृश बतलावे ॥ २ ॥ बरसा दिया गुरु ज्ञान जो घन का तो माहित मन कियो सब जन को ॥ ३ ॥ अजब रसीली छटा व्याख्यानकी वाणी । सुनकर तृप्त नहीं होता प्राणी ॥ ४ ॥ ज्ञान भिक्षा करे आपसे अरजी । शहर ओघाने जल्दी करजो मरजी ॥ ५ ॥

नं० ४१ तर्ज—चोटी बड़ी सुदर्शण।

गुरु चौथमलजी महाराज, अर्जी पे ध्यान लगावना ॥ टेर ॥ आवागमन में भ्रमन हमारा हां २ आवे न दूजी वार। क्रिया ऐसी बतावना ॥१॥ नाव पड़ी भव—सिन्धु में मेरी, हां २ करके कृपा महाराज । जल्दी से पार लगावना ॥ २ ॥ पुण्य-योग से सेवा आपकी हां २ मिली मुझे इस बार फली है मन—भावना ॥ ३ ॥ मेहर करी ने मुझ ने

स्वामी, हां २ दीना है संयम-भार । परम सुख पावना ॥ ४ ॥ मुनि विजय तो अर्ज गुजारी, हां २, दीजो शिवपुर राज । यही है मेरी भावना ॥ ५ ॥ संवत् उन्नीसे साल सित्यासी चालीसगाव मुझार । आनन्द वरतावना ॥६॥

नं० ४२   तर्ज--एक तीर फैंकता जा ।

धन्य-धन्य भाग हमारे, यहां सद्गुरु पधारे ॥ टेर ॥ देखो मुनि की करणी, मुख से न जाय वरणी । जिन नाम सदा उच्चारे, यहां ॥ १ ॥ आवो तुम सांझ-सवेरी, मत ना लगावो देरी । अवसर को मत चूकरे ॥ यहां २ ॥ दुर्गुण को दूर हटावो, प्रभु--शरण चित्त लावो, सब होय काज तेरे ॥ यहां ॥ ३ ॥

न० ४३   तर्ज ---मोहन गारो रे ।

परोपकारी रे, गुरु चौथमलजी हैं जग-जाहरी रे ॥टेर॥ मालव--देश विख्यात शहर नीमच बडा गुलजारी रे । है गंगारामजी तात, मात केशर सुख कारी रे ॥ १ ॥ उमर वर्ष अठारे की में, छोड़ी परणी नारी रे । धन-माल में चित्त न देकर रहे वैरागी रे ॥ २॥ उन्नीस सौ बावन साल में दीक्षा ली हितकारी रे । गुरु-भैया हीरालाल मुनि कवीश्वर में भारी रे ॥ ३ ॥ देश-विदेश विचर मुनि ने । उपदेश दिया सुखकारी रे । मरते हुए कई पशुओं को गुरु दिया उबारी रे ॥ ४ ॥ कई राजा

को समझाया मुनि आप बड़ उपकारीरे । बहु मुल्क में फैली है मुनि, कीरति थारी रे ॥ ५ ॥ साल छियासी भुसावल में आया सखेकारी रे । केवल मुनि पद्मावर मुनि दीक्ष धारीरे ॥ ६ ॥

न० ४४ मराठी भजन । चाल चालवयाची ।

का गुरुजी मम कठिण का केला ॥ कठी० ॥ आम्ही तुमच परमार्थ चल ॥ घृ० ॥ कामुन येत नाही आपण आमच्या गावा २, चुका असेलतो पदरी घालवा ॥ मूढ मतिला ज्ञान कायी घावा, हा लाभ आपणचा घ्यावा ॥ का गु० ॥ १ ॥ दयानिधि दया पण करावी विनती माम्ही परिमावी ॥ हट मालाचा कोणी पुरवावा, हान्याय आपण करावा ॥ का गु० ॥ २ ॥ तत्वज्ञानी पंडित पूर्ण माया, आधाचा वचन गुरुराया । आज मजनी सेवाला कोणी ठारावा, काय आपण शहरा मध्य राहवा ॥ का गु० ॥ ३ ॥ गुरुजी आपण बुद्धिचे सारी, का वचन आम्हा दव नाही ॥ सम्हा कायाचे रक्षण आपण असता, का आपण आम्हां दुखविता ॥ का गु० ॥ ४ ॥ नाव एकुनी आलो आम्ही सरनी, कर जोडनी पडतो चरनी ॥ गुरु अमृताचा धारा सोडा, हा वचन कांहीसरी मो थोडा ॥ का गु० ॥ ५ ॥

न० ४५ तत्र—परविस मराठी पद ।

कसे दामला धिक्कारुनी तुम्ही देता हो। गुरुराया देता, मुनिराया देता ॥ आम्हां कोण तुम्हा विण त्राता॥धृ०॥कोण सांगेल हो व्याख्यान शास्त्राची वाणी ॥ गुरु० ॥ कसे तार तिल अभागी प्राणी ॥ कसे० ॥ १ । आम्ही अज्ञानी प्रपंचा मध्ये फसलो हो ॥ मुनि० ॥ म्हणुनी ह्या चरणासी अंतरलो ॥ कसे० ॥ २ ॥ सर्व अपराधाची क्षमा दासाला द्यावी हो ॥ गुरु० ॥लोभाची वृद्धि असावी ॥ कसे० ॥ पाहुनी चरणाला आनंद मज बहु झाले हो ॥ गुरुराया झाले हो ॥ मुनिराया झाले हो ॥ जनुवेल वृक्षासी जडले ॥ कसे० ॥ ४ ॥ इति ॥

न० ४६ मराठी पद ।

त्यागिता कसे गुरुनाथा, वाया राया पडतो पाया अब कृपा कसी हो करता ॥ टेर ॥ त्यागिता० ॥ १ ॥ भाग्य सूर्य मज गमे मावलता, आशावृक्ष तो वाळो निगेला, आम्ही झालो दीन आता ॥ त्यागिता०॥२॥ विनंति आमुची चातुर्मासा ची, मान्य करावी हो गुरुजी साची, आम्हा वचन द्यावे आता ॥ त्यागिता० ३॥ वचन देऊनी जरी पुढे जाती, साधु वचननच भंग करिती । हीच गवाही पूरे आता ॥ त्यागिता ४ ॥ जैन-सुख सर्वांशी सांगे, आता आमंत्रण मुनिच्या मागे, द्या गुरु चरणी ठेउनी माथा ॥ त्यागिता० ५ ॥

नं० ४७ तर्ज—मेरे नेम पिया को मैं दासी बनी

गुरु चरण की मैं शरण गही ॥ टेर ॥ तप-संयम में लीन गुरुजी, सारो आतम काज । मिले पुण्य से कल्पतरुवत् तिरण-तारन की जहाज ॥ १ ॥ मैं तो० ॥ पारस सदृश आप विश्व में, लोहा कँचन करते । ज्ञान-जल का स्रोत आप, अज्ञान-तिमिर को हरते ॥ २ ॥ मैं तो० ॥ चिन्तामणि सम मिले आप, भव—सिन्धु से तारो । मम अवगुण को मतना देखो अपना बिरद विचारो ॥ ३ मैं तो० ॥ साल सित्यासी, कायल पीपला, चार सन्त मिल आया। मुनि विजय ने गुरु—गुण का भजन बनाकर गाया ॥ ४ मैं तो० ॥

नं० ४८ तर्ज—पनिहारी

भछलि आछे तुम छोडी ने, गुरुवरजी भो, मुनिवरजी भो, फिर त्यागी परणी नार ॥ टेर ॥ देश मेवाड़ के माय न मुनिवरजी भो, कई नीमच शहर मिस्मात मुनिवरजी भो ॥ गंगारामजी तात हैं मुनिवरजी भो, माता केशर क अंगजात मुनिवरजी ॥१ ॥ उण्णीसो बावन साल में मुनिवरजी भा, चढ्यो वैराग जा खास मुनिवरजी, दीक्षा लीनी है आपने मुनिवरजी भो, गुरु हीरालालजी क पास मुनिवरजी ॥ २ ॥ वाणी रसीली आपकी मुनिवरजी भो, भवजीवां हितकार मुनिवरजी, फिरती महानिशि आपकी

मुनिवरजी ओ, गाय रही नर--नार मुनिवरजी ॥ ३ ॥ उन्नीसो सत्यासी साल में मुनिवरजी ओ, आया, दोंड में सेखे-काल मुनिवरजी, राजमल गुण गावीया मुनिवरजी ओ, दीजो भवोदधि तार मुनिवरजी ॥ ४ ॥

नं० ४९ तर्ज—हे प्रभु आनन्द दाता

हे गुरु ! तुम ज्ञान दाता, ज्ञान हमको दीजिये । ज्ञान हमको दीजिये, गुरु, ज्ञान हमको दीजिये ॥ टेर ॥ दर्शनों की लो लगी है, दर्श हमको दीजिये । कृपा करके आप गुरुजी हिवड़ा पावन कीजिये । करुणा—सिन्धु ! करुणा करके दया हम पर कीजिये ॥ १ ॥ अमृत—वाणी के प्यासे हम हैं, आके वरसा दीजिये अज्ञान--निद्रा छा रही है आप जगा दीजिये ॥ २ ॥ गुरु चोथमलजी से विनती है ध्यान इस पर दीजिये । जैनशाला आप यहां पै, आके खुला दीजिये ॥ ३ ॥ हम सब बालक अर्ज करते स्वीकार जल्दी कीजिये मेहेर करके आप गुरुजी हुक्म फरमा दीजिये ॥४॥

नं० ५० तर्ज—बिजलियें चमका रही है ।

बद सोहबत मिट जायगी, ज्ञानी गुरु मिलने के बाद, झूठा जगत दरशायगा, वैराग्य हो जाने के बाद ॥ टेर ॥ छा रहा अज्ञान का, अन्धेर तेरे घट में, उजेला हो जायगा, सत्संगत होने के बाद ॥ १ ॥ सख्त दिल करके जो तू, अहोनिशि करता पाप है, नतीजा मिल जायगा परलोक

आने के बाद ॥ २ ॥ नाथु मुनि और राम मुनि, सेवा रहा तुमको सफा, मुगत भी मिल जायगा, मात्र शुद्ध भाने से बाद ॥ ३ ॥

न० ५१ तर्ज—मेरे पियाकी मैं दासी बनी ।

सद्‌गुरु का मैं तो, दास बना २ मैं तो ॥ टर ॥ करू प्रार्थना मैं तो स्वामी सुनिये विनय हमारी, लीनी शरण चरण की मैं ता, कृपा करके तारो ॥ मैं तो ॥१॥ सद्‌गुरु जी ने मेरे ऊपर किया बड़ा उपकार, हरगिज मैं तुम गुण का स्वामी भूलूँ नहीं लगार ॥ २ म तो० ॥ कीर्ति अहो निश ज्ञानी गुरु की, गाय रहे नर–नारी, सबका चित आकर्षण करत, विद्या ज्ञान का धारी, ॥ मैं तो० ३॥ हजारी मुनि का शिष्य नाथू मुनि, करे आप से अर्जी, नैया पार लगादो मेरी, करके अपनी मर्जी ॥ मैं तो० ४ ॥

ॐ शान्ति ! शान्ति ! शान्ति !

जान के बाद ॥ २ ॥ नाथु मुनि और राम मुनि, चेवा रहा तुमको सफा, मुगत भी मिल जायगा, भाव शुद्ध आने के बाद ॥ ३ ॥

न० ५१ तर्ज—मेरे पियाकी मैं दासी बनी।

सद्गुरु का मैं तो, दास बना २ मैं तो ॥ टेर ॥ करूं प्रार्थना मैं तो स्वामी सुनिये विनय हमारी, लीनी शरण चरण की मैं ता, कृपा करके तारो ॥ मैं तो ॥१॥ सद्गुरु जी न मेरे ऊपर किया बड़ा उपकार, हरगिज मैं तुम गुण को स्वामी भूलूँ नहीं लगार ॥ २ म तो० ॥ कीर्ति भारी निरा ज्ञानी गुरु की, गाय रहे नर—नारी, सबका चित आकर्षण करत, पिला ज्ञान का वारी, ॥ मैं तो० ३॥ हजारी मुनि का शिष्य नाथु मुनि, करे आप से अर्जी, नैया पार लगादो मेरी, करके जल्दी मर्जी ॥ मैं तो० ४ ॥

ॐ शान्ति ! शान्ति ! शान्ति !

खुश खबर।

सर्व सज्जनों को विदित हो कि वैशाख सुदि ५ संवत् १९८६ को श्रीजैनोदय पुस्तक प्रकाशक समिति ने "श्रीजैनोदय प्रिंटिंग प्रेस" के नाम से एक प्रेस कायम किया है। इस प्रेस में हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत, मराठी का काम बहुत अच्छा और स्वच्छ तथा सुन्दर छापकर ठीक समय पर दिया जाता है। छपाई के चार्जेज वगैरा भी किफायत से लिये जाते हैं।

अत एव धर्म प्रेमी सज्जन, छपाई का काम भेजकर धर्म परिचय देने की कृपा करेंगे, ऐसी आशा है।

निवेदक.—
मैनेजर

श्रीजैनोदय प्रिंटिंग प्रेस,
रतलाम

मुनि गुण कीर्तन

श्रीमज्जैन कविवर सरल स्वभावी श्री हिरालालजीमहाराज
के सुशिष्य तपस्वी श्री मयाचन्दजी
महाराज के **तपोत्सव** पर

प्रबोधक
साहितज्ञ मुनि श्री मगनलालजी महाराज

प्रकाशक
श्रीयुत शेट चुन्नीलालजी कुशालचन्दजी चोरडिया
मु पो चऱ्होली, जि. पुणें

मुद्रक
दत्तात्रय गणेश खाडेकर
'लॉ प्रिंटिंग प्रेस,' ५२० शनवार पेठ, पुणें.

द्वितीयावृत्ति १,०००
अमूल्य भेट
वीर स. २४५६
विक्रम सं. १९८७

मुनि गुण कीर्तन

श्रीमज्जैन कविवर सरल स्वभावी श्री हिरालालजीमहाराज
के सुशिष्य तपस्वी श्री मयाचन्दजी
महाराज के **तपोत्सव** पर

प्रबोधक

साहितज्ञ मुनि श्री मगनलालजी महाराज

प्रकाशक

श्रीयुत शेट चुन्नीलालजी कुशालचन्दजी चोरडिया

मु. पो चऱ्होली, जि पुणें

मुद्रक

दत्तात्रय गणेश खाडेकर

'लॉ प्रिंटिंग प्रेस,' ५२० शनवार पेठ, पुणे.

द्वितीयावृत्ति १,०००

अमूल्य भेट

वीर स. २४५६

विक्रम सं १९८७

निवेदन

शास्त्रविशारद श्रीमज्जैनाचार्य पूज्य मन्नालालजी महाराज की सम्प्रदायानुयायी जैन धर्म के सुप्रसिद्ध वक्ता श्री चौथमलजी महाराज के

सुशिष्य मनोहर व्याख्यानी पण्डित मुनि श्री छगनलालजी महाराज ठाणे चार | व कोटा सम्प्रदायानुयायी मनोहर मुनि श्री प्रेमराजजी महाराज ठाणे चार

एवं ठाणे आठ साधुमार्गी श्री संघ, पूर्ने की भारी आग्रहपूर्वक विनंती होनेसे विक्रम सं १९८७ का चातुर्मास कर जो जो धर्मोन्नति की है उसका उल्लेख श्री संघ की तरफ से पत्रिकाद्वारा दिया जावेगा उसमेंसे पंडित मुनि श्री छगनलालजी महाराज के समीप उग्र तपस्वीजी श्री मयाचन्दजी महाराज के दिन ४१ के तपोत्सवपर कतिपय मुनियों के स्तवना का संग्रह शास्त्रज्ञ मुनि श्री मगनमलजी महाराज से प्राप्तकर मुनि गुण कीर्तन नामक पुस्तक एक हजार श्रीयुत् हीराचन्दजी सोहनमलजी चोरडिया सादडी मारवाड निवासी व एक हजार पुस्तक श्रीयुत सुगनचन्दजी कुशालचन्दजी चोरडिया चन्दोली निवासी की ओर से प्रकाशित कराकर प्रभावना रूप अमूल्य भेंट दी जाती है इसे पढ़कर अवश्य लाभ उठावेंगे ऐसी आशा है।

प्रकाशक

ॐ

मुनि गुण कीर्तन

॥ मंगला चरण ॥

मङ्गलं भगवान् वीरो, मङ्गलं गौतम प्रभु ।
मङ्गलं स्थूल भद्राद्यो, जैनधर्मस्तु मङ्गलम् ॥ १ ॥

नंबर १—थिएटर

माता राजाजी के लाल, षट् काया प्रतिपाल, बड़े मुनि ....रलाल, थेवर आचारी २, क्षम्या के सागर, गुणों के आगर, महिमाजी महिमा है जिनकी अपार, गावे सब नरनार, अर्जी मेरी हरवार, देवो मयाचन्द को तार, करी मेहर २ मेहर २ मेहर २ ॥ १ ॥

नंबर २—थिएटर

पञ्चम आरे दरम्यान, थेवो रत्नों की खान, धरूं जिन का मैं ध्यान, चरणे नमन करी, चरणे नमन करी। हीरालालजी नाम आप को, जाने जी जाने हे सारी समाज। कवियों में सिरताज, हुवे आप महाराज, देके संयमका साज, पूरी चौथमल की आश आश २ आश २ आश २ ॥ १ ॥

नंबर ३—थियेटर

पट् काया प्रतिपाल, गुरु मेरे हीरालाल, थेवो दीनदयाल, बाल ब्रह्मचारी २, मात पिता और तीनों भाई, सीनामी लीना है संयम भार, जग में महिमा अपार, करते सब नरनार। मयाचन्द को दिया तार, देकर ज्ञान १ ज्ञान १ ज्ञान १ ॥ १ ॥

नंबर ४—थियेटर

माता चौसीं के जाया, मयाचन्दजी महाराया; कीनी सफल है काय, सुनो सभी नरनार २, तपस्या करके आतमा तारी, कीना भी कीना है आतम कल्यान; हुवा हुवा अणगार, लेके संयम भार, करते जीवों का उद्धार, यही सार १ सार १ सार ॥ १ ॥

नंबर ५—थियेटर

तपस्वी मयाचन्दजी महाराज, कर्म खपाने के काम तपस्या कीनी है महाराज, कीना आतम कल्यान २, संयम की गुरु दिल में धारी, छोड़ा भी छोड़ा है सभी परिवार; कीना कीना उद्धार लेके संयम भार, दया दिल में जो धार,। दीने तार १ तार १ तार १ ॥ २ ॥

नंबर ६—दर्शः—चौक २, भावेमरसाका कोई बारी ॥

दर्शन करलोरे पूज्य मलालालजी है गुणवंतारे ॥ टेर ॥ बालब्रह्मचारी पर उपकारी, सूरत मोहन गारीरे। बहुसूत्री की ओपमा पंचम आरा मुझारीरे ॥ १ ॥ बालचन्दजी है गुरु भाई त्यागी ने बड़ भागीरे। तपस्या माही रहे मगन सुरत, मुगती से लागीरे ॥ २ ॥ मुखज्योति सुंदर दीपे, जाणे चन्द्रमा सागेरे। सरल स्वभावी

तुर सबने, वल्लभ लागेरे ॥ ३ ॥ रत्नपुरी का वासी संयम उदय-
गरजी पा लीनोरे । पूज्य राजकी सेवा कर. ज्ञानामृत पीनोरे
४ ॥ हुक्म मुनिकी संप्रदाय में, तीजे पद विराजेरे, वाणी अमृत
मान आपकी, सिंह जिम गाजेरे ॥ ५ ॥ जहा जहा पूज्य आप
धारो, नर नारी हुलसावेरे । पूज्य राज का दर्शन कर नित्य,
गल गावेरे ॥ ६ ॥ देहली शहर में कियो चौमासो, जम्बू शहर से
ायारे । चौथमल उन्नीसे छीयंतर छता गुण गायारे ॥ ७ ॥

नंबर ७——तर्ज.——सीता ई सतवती नार सदा गुण गावनारे।

मोहनगारा गुरुजी प्यारा हिरदा में वसे जी । प्यारी
रतही या थारी मुझ मन में वसे जी ॥ टेर ॥ मुनिवर बालपना में
यम आदर्‌‌यो जी । यो तो दिन दिन चढतो वेराग । जाने मोह
मता दी त्याग । लागी शिव रमणी से लाग । जप तप करणी कर
डभागी निज काया कसेजी ॥ १ ॥ एकने टाले एकन पाले
ति हित आणने जी । दोने लिना मुनिवर जीत । दो में दीनों
ो चित्त । छोड्या तीन जान आहित । तीनों हितकारी लिया धार
र दूरा कसेजी ॥ २ ॥ चारों जग में जहाज समान ता में
ठियाजी । पाचों दिनी दूर निवार । पाचों अहो निश लिनी धार ।
का दिल में किया विचार । सात ने टाले आठों गाले नवपाले अति
सेजी ॥ ३ ॥ जाणी भोग भुजंगसा जाने पर हरियाजी । नागन
सी जाने नार । पूरा क्षम्या तणा भण्डार । भाणिया ग्यारा अङ्ग
ूत कार । नासे सघला तेना, पाप चरण में सिर घसेजी ॥ ४ ॥
जा जब ध्यावे तब पावे, सुख स्वर्ग तणाजी । व वा वाछित फल दातार ।
हा हिरदे लीजो धार, ररा रटन करो त्रिकार । मुनि चौथमल कर
ाड यो गायो तुझ जसेजी ॥ ५ ॥

नंबर ८—तर्ज—पूर्ववत्

महारा मन्द मुनि यश लियो धर्म दिपाय केरे । पण्डित रत्न शिरोमण देख छो आप केरे ॥ टेर ॥ आपका रतन चंदनी तात । सती राजामी आपकी मात । तीमो उत्तम सुन्दर भ्रात । पांचो ही लीधो सयम भार पाप छिटकाय केरे ॥ १ ॥ गुरु श्री जवाहिर मुनि के पास । कीधो ज्ञान तणो अभ्यास । हृदय होगयो खूब प्रकाश । कई ने श्रावक दिया बनाय मिथ्यात हटाय केरे ॥ २ ॥ वरचा वादी में परधान । स्वमत अन्यमत के छो मान । वांचो सरस घणो बखान । बतावो समकित तणो स्वरूप न्याय लगाय केरे ॥ ३ ॥ मुनि तुम गुण तणा हो दरिया । पालो जिन मारग की किरिया । आपने पाखंड सब पर हरिया । चौथमल दरशन आप का करे हृदय हुलसाय केरे ॥ ४ ॥

नं ९—तर्ज—सीता है सतवंती नार सदा गुण गावणारे

गुरुवर हीरालाल महाराज का सदा गुण गावणारे । जाके चरण कमल में नित्य उठ शीष नमावणारे ॥ टेर ॥ संवत उगणीसे बीश के साल, पाया गुरुवर जवाहीरलाल । वे भी थे महागुणी दयाल । विनय युत सीखे उन से ज्ञान रास शुद्ध भावनारे ॥ १ ॥ कविवर सरल स्वभावी आप । मनोहर मिष्ट घणो आलाप । वाणी सुणे मिटे सब पाप । हृदय के साफ भव्य प्राणि को घणो सुहावणारे ॥ २ ॥ गुरुवर फिर फर देश विदेश । देकर दया धर्म उपदेश । मेट्यो मिथ्या रूप क्लेश । बताई शुद्ध समकित की रेंस सहाय नहीं छावणारे ॥ ३ ॥ गुरुवर तुम पूरण उपकारी । आवो याद हमें हरबारी । महिमा वरणी न जाय थमारी । चौथमल की अर्जी स्वीकार मोक्ष पठावणारे ॥ ४ ॥

नं. १०——तर्ज——आखिर नार पराई है

मुनि देवीलाल उपकारी है। कीर्ति जिनकी भारी है ॥ टेर ॥ बाल वयमें तज जग फद, गुरु भेटे मुनि माणकचन्द। जो आचारी तप धारी है ॥ १ ॥ निशदिन तप सयम में लीन। ज्ञान ध्यान में हुआ परवीन। जाकी सूरत मोहन गारी है ॥ २ ॥ देश विदेश में कर कर विहार, कीना मुनि धर्मप्रचार। फेर व्याख्यान छटा बहु प्यारी है ॥ ३ ॥ सागर सम हो आप गंभीर, षट् काया प्रतिपालक वीर। शशि सम शीतल कारी है ॥ ४ ॥ पूज्य मन्नालालजी की संप्रदा माई, स्तंभ समान आप मुनिराई। जो उपाध्याय पद के धारी है ॥ ५ ॥ चौथमल तुम गुण नित्य गावे, वो दिन धन जब दरसण पावे। यही विनय हरवारी है ॥ ६ ॥

नं ११——तर्ज—पणघट पर हो रही भीर। शीश पर घडा धरे मैं वन्दु चरण धर शीश, सुगुरु श्री खूबचन्द्र गुणधारी, ॥ टेर ॥ एक निम्बाहेडा ग्राम, बसे जहा ठेकचन्द सुन भाई, तसपत्नी गेन्दी नाम, लियो तस कुक्ष जन्म गुरु आई,। लघुवय में शिक्षा पाई, वय तारुणयकी जब आई,। पितु मा ने सुकन्या देख कियो तस संग व्याह सुविचारी ॥ मैं वन्दु चरण धर शीश० ॥ १ ॥ पण्डित गण नामे नाम पुनि सत्तप शम गुण राजे है ॥ मनमोहन मुनि नन्दलाल नाम सुण पाषंडी भाजे है ॥ गुरु हित उपदेश सुनायो, ससार अथिर बतलायो, तस पासे पाकर बौध लख्यो जगद्वद महा दु खकारी ॥ है वन्दु चरण धरशीश० ॥ २ ॥ जल बूद २ के मानिन्द जान आयुष्य की चचल ताई ॥ लूं संयम सुखदातार, तजूं सब काम कर्दम दु ख दाई ॥ जद एसी इच्छा जागी सयम की आज्ञा मागी, जनक जननी से आज्ञा पाय साल बावन मे दीक्षा धारी ॥

मैं वन्दु चरण घर शीश ॥ ३ ॥ दीक्षित हो कर पुनि आप, सुगुरु श्रीनन्द शरण लिनो है ॥ प्रमुदित, चित्त से कर सेवा, विनय पुनि आप अमित कीनो है। मद ज्ञान गुरु दीनो है, जासे निज आतम चिनो है, गुरु भक्ति से पावे ज्ञान करो, अतएव सदा नर नारी ॥ मैं वन्दुं चरण धरशीश० ॥ ४ ॥ सुशिक्षित हुवे पुनि आप, सदा निज आतम गुण परसे है ॥ प्रति बोधक सत्य उपदेश; करे जिन अमृत रस बरसे है ॥ वैराग्य मई दरसे है, सुण भव्य लोक हर्षे है ॥ है चरित्र कर गुण युक्त वदन परसे ने शांतता भारी ॥ मैं वन्दु चरण धर शीश० ॥ ५ ॥ सत विंशति गुण में लीन, सदा शुद्ध संयम व्रत पाले है ॥ मुनि व्रत बाधक प्रपंच, सभी जिन भाषित पथ चाले है। तपकर के भपटाले है, प्रभु कर्म बीज बाले है ॥ भव ताप-निवारण काज प्रहो मुनि चरण शरण भय कारी ॥ मैं वन्दु चरण धर शीश० ॥ ६ ॥ टगिसो बयांसी जान, मास मधु रत्न पुरी के माई ॥ सुमस्य बुद्धि अनुसार कीर्ति गुण वत गुरु की गाई ॥ गुरु नाम जपो नित्य भाई, है दिव्य सौख्य मदाई निज शिष्य को दिने तार धर्म गुरु चरणम में यह बारी ॥ मैं वन्दु चरण धर शीष० ॥

नं १२—तर्ज—कमली वालेने

सुयश का डंका भारत में बजवादिया गुरु चौथमलजी ने। और जैन का झंडा हर जहां पे फरादिया गुरु चौथमलजीने ॥ टेर ॥ घोर अज्ञान अविद्या की, निन्द्रा में जो जन सोते थे। फिर ज्ञान जल को छांट उन्हे, जगादिया गुरु चौथमलजीने ॥ १ ॥ ये सात व्यसन है बहुत बुरे बहुनर इन से बचमारे। ये बहमा मेरा है सब से, जि तमा दिया गुरु चौथमलजीने ॥ २ ॥ दे दे के सत्य उपदेश आप, मि थ्यात अंधेरा दूर किया। फिर ज्ञान जिनकी दिव्य बीज फैलादी

गुरु चौथमलजीने ॥ ३ ॥ साल त्रियासीका चौमासा, बनेडा हवेली बीच किया। फिर उदयपुर में ज्ञान झडी लगादी गुरु चौथमलजी ने ॥ ४ ॥ मुनि नाथुलाल और रामलाल कहे. सुगुरु का उपकार जबर। हमे रस्ता शिवपुर जाने का, जितला दिया गुरु चौथमल-जीने ॥ ५ ॥

न. १३—तर्ज—अनोखा कवरजी हो साहिवा भालो देऊ घर आय

धन धन तपसीजी हो मुनिवर धन्य थारो अवतार ॥ टेर ॥ देश मेवाड के मायने हो मुनिवर, ताल गाम अभिराम । माता घीसाजी के उपना, हो मुनिवर पिताजी दौलतराम ॥ १ ॥ आरंम परिग्रह छोडने हो, मुनिवर लीनो संयम भार। अथिर जाण संसारने, हो मुनिवर त्याग्यो सहु परिवार ॥२॥ गुरु भेटे हीरालालजी हो मुनिवर तरण तारण की जहाज। दर्शन करता आपका, हो मुनिवर सुधरे सवही काज ॥३॥ शुद्ध संयय व्रत पालता, हो मुनिवर रहो ज्ञान में आप। सदा मगन तप मायने, हो मुनिवर जपते आतम जाप ॥४॥ मव जीवाने तारता, हो मुनिवर घणो कियो उपकार । महिमा फैली रही आप की, हो मुनिवर कहातक करू विसतार ॥ ५ ॥ संवत् उन्नीसे छियोत्तर, हो मुनिवर अलवर शहर चौमास। मास खमण तप आदरियो, हो मुनिवर आणी मन हुल्लास ॥६॥

नंबर १४—तर्ज —कहु मैं पाप पुण्य की बात।

खुशी का पाया नहीं कछु पार। दया की हो रही जयजय-कार ॥ टेर ॥ कृपा कर पूज्य मन्नालालजी, दिया हुक्म प्रकाश। चार संत मिल आये प्रेम से, जैपुर किया चौमास ॥ १ ॥ मियाचन्दजी तपसी किना, गुणतीस उपवास। दया धर्म की महिमा

जैसी मुझ मन हर्ष हुल्लास ॥ २ ॥ दर्शन काम कई नर नारी प्रेम भाव से आया। हुए त्याग पच्चखाण बहुत, मरा झूम हुल्साया ॥ ३ ॥ श्रावण शुद्ध पंचमी के दिन। मंगल महोत्सव ध्यान। दया का डंका बजा दिया खुद जयपुर के महाराज ॥ ४ ॥ पहले भी होगए दयालु। श्रेणिक जैसा राय। जीवदया का डंका बजाया। सारे शहर के माय ॥ ५ ॥ दशमे अंग दया का बाख्या। साठ नाम विस्तार। ऋद्धि बुद्धि नाम विभूति दुःख की मेटण हार ॥ ६ ॥ स्कन्ध सात में दस बोल सारे। है भगवत में भिरणा। भाण प्रभव सब जीवों की, दया हमेशा करणा ॥ ७ ॥ फिर भी एसा संत पधारे, चतुर्मास मझार। जैन विष्णु भाई सब मिलकर खूब करा उपकार ॥ ८ ॥ गणी से सत्तर श्रावण, शुद्ध पांचम बुधवार। जयपुरमें गुरु देवप्रसादे, वरते मंगल चार ॥ ९ ॥

नंबर १५—तर्ज—भगवत् भव देवी के काम मुक्ति की राह।

तपसी मियाचन्दजी महाराज, अहो तपस्या के करनेवाले ॥ टेर ॥ पिता दुलीचंदरामजी गुणवान, माता चिमनीबाई जो नाम उनकी कुख में जन्म लिया आन कुल के दीपानेवाले ॥ १ ॥ उमींसे गुणतर के साल गुरु भेटे श्री हीरालाल, आपने संयम लिया दयाल भवसिंधु से तिरनेवाले ॥ २ ॥ सेठ उदेचन्दजी का मकान, रतलाम शहर शुभ स्थान। बत्तीस की तपस्या किधी ठान, जैन का झंडा दिपानेवाले ॥ ३ ॥ अब काटो कर्मों का फंद, यूं अरज करता वृद्धिचन्द, दीजो शिव सुख का आनन्द, नैया पार लगानेवाले ॥४॥

नंबर १६—तर्ज—भारतीर भार भारी है

तपसी मियाचन्दजी भारी है, तपस्या कर आतमा तारी है ॥टेर॥ ताल गाम मेवाड़ विख्यात, दुलीचंदरामजी है शुभ तात, माता चिमनी

महतारी है ॥ १ ॥ उन्नीसे गुणंतर साल, गुरु भेटे श्री हिरालाल, सयम ले बने ब्रह्मचारी है ॥ २ ॥ पंच महाव्रत के हो धार, दोष बयालीस नितप्रति टार, सुमत गुपत के धारी है ॥ ३ ॥ तेंतीस की तपस्या किनी, गुरुभाइ ने पच्चखा दिनी, खुश रहे तपस्या के माई है ॥ ४ ॥ सुवक्ता मुनि चौथमलजी गुणवान, नाथुलाल मुनि धीरजवान प्यारचन्दजी पण्डित भारी है ॥ ५ ॥ वृद्धिचन्द मुनि सन्तो का दास । चान्दमल मुनि व्यावची खास । लघु मुनि रामलाल सुखकारी है ॥ ६ ॥ उजैन शहर का सघ उत्साई । जलसो किनो अति हुलसाई । मगल गावे नर नारी है ॥ ७ ॥ गुरुप्रसादे वृद्धिचन्द गावे । भादवा सुद अष्टमी आवे । या ऐसी अर्ज गुजारी है॥८॥

नंबर १७—तर्ज —मोहन गारोरे ऋशला को लाल लागे प्यारोरे

तपसी भारीरे, मुनि मियाचन्दजी परउपकारीरे ॥ टेर ॥ मेवाड़ देश के मायने सयो । ताल गाव है जहारीरे । दौलतरामजी तात, मात भिसी महतारीरे ॥ १ ॥ उन्नीसे गुणतर साल में । दिक्षा आपने धारीगे । गुरु भेटे श्रीहिरालालजी । परउपकारीरे ॥ २ ॥ संसार ने तुम झूठो जाणी । छोडचा सब परवारीरे । पंच हमाव्रतधार बने ब्रह्मचारीरे ॥ ३ ॥ शुद्ध आहार तुम लेवो भावसे, दोष बयालीस टारीरे । कहा लग गुण करा आप का, तुच्छ बुद्धि हमारीरे ॥ ४ ॥ अस्सी सा' उपवास पेंतीस, किना इन्दौर मुझारीरे । केई जीवों को दान दियो, हुवो उपकार भारीरे ॥ ५ ॥ गुरु हमारे चौथमलजी, है मुलकों में जहारीरे । नाथुलाल चरणा में आयो । दीजो तारीर ॥ ६ ॥

नंबर १८—तर्ज़ः—ख्याल की

तपस्या कर तारी आपनी आतमा मुनि मियाचन्दमी॥टेर
ताल गांव है मेवाड़ देश में, मिल्हा मदारिया मांह। दौलतरामम
तात, मात पिसीबाई सुखदाइ है ॥ १ ॥ अथिर मान संसार
स्वरूप, वेराग में मन छायो। धन कुटुम्ब परिवार आपने अहि
कचुक वत छिट कायो हो ॥ २ ॥ गुरु भेटे श्री हीरालालजी गुरु
धीर आचारी। उनीसे गुणंतर साल, फागुण में दीक्षा धारी हो
॥ ३ ॥ ज्ञान ध्यान और तप संयम में मगन मनि मू धारी। क्रोध
मानको त्याग, सम्या हिरदा में क्षिमी धारी हो ॥ ४ ॥ सरल
स्वभावी भद्रिक, मावी, नहीं कपट मन माय। पंच महाव्रत निर्मल
क्रिया, पाले नित हरसाय हो ॥५॥ शहर सादड़ी कियो चौमासो।
गुरु ठाणा मिल आठ। साल इक्यासी देरावास में छम्यो तपस्या को
ठाठ ॥ ६ ॥

नंबर १९—तर्ज़ः—धुंधो बाजेरे

गुण सब गावोरे २, मुनि मयाचन्दमी तपसी मोटारे ॥ टेर ॥
मेवाड़ देश में रहमो मिनको, ताल शहर के माई। दौलतरामजी
तात, मात है पिसी बाईरे ॥ १ ॥ वेराग बस्यो जब दिल में
पाके जग सब झूठो दरसायोरे। गुरु हिरालाल महाराज, पास
संयम पद पायोरे ॥ २ ॥ साल इक्यासी छत्तीस किना। सादड़ी
शहर मुमारीरे। सरल स्वभावी शांत प्रकृति। है मिन धारीरे
॥ ३ ॥ गुरु माई गुरु चौथमलजी, जगत वल्लभ है महारीरे। कीर्ति
जोकी विश्व मायने फैल रही अपारीरे ॥ ४ ॥ पण्डित मुनि
श्रीप्यारचन्दजी केई सूत्र के ज्ञातारे। मेरुलाल मुनि स्वाध्याय
मायने चित्त रमातारे ॥ ५ ॥ मधुर सुर मुनि रामलालजी। है सब

को सुखदाईरे । चंपालालजी मुनि गुरु तणो, रया हुक्म उठाईरे ॥ ६ ॥ राजमलजी है न्यावची, करे काम सवायोरे । गुरु शहर सादडी साल इक्यासी, चौमासो ठायोरे ॥ ७ ॥ भादवासुद चवदश के दिन यो, लागो ठाठजो भारीरे । गुरु प्रसादे नाथु कहे, खुल रही गुलक्यारीरे ॥ ८ ॥

नंबर २०—तर्जः—ख्याल की

तपसी मियाचन्दजी, सुरत प्यारी या लागे आपकी ॥ टेर ॥ प्रसिद्ध देश मेवाड मायने, ताल गांव विख्यात । मातेश्वरी है धिसी बाई, दौलतरामजी तात हो ॥ १ ॥ अथिर जान संसार त्याग रिद्ध, बने आप अणगार । शूर वीर गंभीर धीर, गुरु हिरालाल लिया धार हो ॥ २ ॥ तप संयम में मगन सदा । रहो पाप से दूर । कर के तपस्या आप मुनिवर, कर्म करो चकचूर हो ॥ ३ ॥ किनी तपस्या सेंतीस की मुनि, नया शहर मुझारी । दान पुण्य और जीव दयाका, उपकार हुआ है भारी हो ॥ ४ ॥ देश देश के दर्शन काज, कई श्रावक श्राविका आया । कर दर्शन अति हर्ष २, नारयों ने मगल गाया ॥ ५ ॥ परोपकारी जग यश धारी, जगत वल्लभ गुरु भारी । जहाज सदृश आप विश्वमें, भवजीवा हितकारी हो ॥ ६ ॥ संवत् गुन्नीसे साल बियासी, ब्यावर चौमासा ठाया । नाथुलालनें पुण्य उदेसे, सेवा आपकी पाया हो ॥ ७ ॥ चार ठाणा कोटा का है, मम गुरु ठाणा आठ । रायली के नोरा मायने, तपस्या का लग रया ठाठ हो ॥ ८ ॥

नंबर २१—तर्ज—सगीजी ने पेडा भावे

हा तपसा का जलसा भारी, गुण गावो सबही नर नारीरे ॥ टेर ॥ तपसीराज मुनि वडभागी । शिवरमणी से सुरत लागी,

मोक्षकी करी तैयारीरे ॥ १॥ दौलतरामजी पिता सुखदाई । माता माप की विसी बाई । जन्म लियो उनके कुलके माहिरे ॥ २ ॥ गुणतर साल में संयम लिना । हिरालाल गुरु धारण किना । मुनि पां हुए अणगारीरे ॥ ३ ॥ क्रोध मान मन पै नहीं पावे । तेतीस की तपस्या मुनि ठावे । फक्त गर्म पानी के आधारीरे ॥ ४ ॥ समता के सागर पूरे । पाप अठारासे रहने दूरे । संयम छे बन ब्रह्मचारीरे ॥ ५ ॥ चौथमलजी बड़े मुनिराया । जगत वल्लभ की पदवी पाया । छाया यश दुनियाँ में भारीरे ॥ ६ ॥ सम्वत् उन्नीस बयासी आया । नया शहर में ठाठ लगाया । राम मुनिने धर्म गुणारीरे ॥ ७ ॥

नंबर २२—तर्ज—धन्य मो मारीरे

तपसी भारीरे २ मुनि मियाचन्दजी मुलक में भारीरे ॥ टेर ॥ मेवाड़ देश के मायने सरे । ताल गांव भारीरे । पिता आपका दौलतरामजी । माता विसी बाई धारीरे ॥ १ ॥ सम्वत् उन्नीस साल गुणतर दीक्षा की दिल में धारीरे । गुरु भेटे श्रीहिरालालजी, पर उपकारीरे ॥ २ ॥ गुरु भाई है चौथमलजी, ज्ञान तना भंडारीरे । वाणी उन्हकी प्यारी लागे सुरत मोहन गारीरे ॥ ३ ॥ पण्डित मुनि श्रीकस्तूरचन्दजी, केशरीमलजी गुण धारीरे । दर्शन कर आपका, दुःख जावे नरनारीरे ॥ ४ ॥ दिन चौतीस की तपस्या किनी इस इन्दौर शहर मुझारीरे । कहांतक गुण वर्णन करु आपका, तुच्छ बुद्ध हमारीरे ॥ ५ ॥ सम्वत् उन्नीसे साल त्रियासी, कमपरी का दिन भारीरे । रामलाल ने गुरु गुण गाया, भव दीजो तारीरे ॥ ६ ॥

नं २३—तर्ज पूज्य मयाराजजी निस ध्यावोरे

मुनि मियाचन्दजी सुखकारीरे । इसी तपसी जगमाही भारीरे ॥ टेर ॥ सब मोह मायाने मेटीरे । हिरालाल गुरु लिया भेटीरे । धार्के हिरदे

सुमति पेटी ॥ १ ॥ थे तो तप कर दुकर कारीरे, लिनी निज आतमा को तारीरे । धन २ थाकी महतारी ॥ २ ॥ नहीं क्रोध मान अग दर्शेरे, मुख उपर शातता वरसेरे । भविलोक चरण तुम फरसे ॥ ३ ॥ गुण चालीस का तप ठायारे, केई गाव का श्रावक आयारे । करी दर्शन हर्ष दिल छाया ॥ ४ ॥ बारे ठाणा गुरु मम आयारे, जोधाने चौमासा ठायारे । सिंहपोल में ठाठ लगाया ॥ ५ ॥

नं. २४—तर्ज—करुणादीलधारी पुरण उपकारी चपक सेठजी

मुनि मियाचन्दजी, तपस्या कर तारी आपने आतमा ॥ टेर ॥ मेवाड देश में ताल गाव है, देश मदारिया माय । दौलतरामजी तात आपका, मात घिसी के वाय ॥ १ ॥ भेटे सुगुरु हिरालालजी, गुण रतना की खान । उन पुरुषों की सेवा किनी, खुब सिखाया ज्ञान ॥ २ ॥ वेला, तेला, मास खमणादिक, करो तपस्या भारी । संयम लेकर आप मुनिजी, निज आतमाको तारी ॥ ३ ॥ संवत् उन्नीसे साल त्रियासी, विचरत वाली आया । गुरुप्रसादे चान्दमुनिने तपसी का गुण गाया ॥ ४ ॥

नं. २५—तर्ज—आखीर नार पराई है

मुनि मियाचन्दजी उपगारी है, तपस्या कर आत्मा तारी है ॥ टेर ॥ दौलतरामजी है तुम तात, जननी तुम घिसी मात । जिनके पुत्र आप गुणधारी है ॥ १ ॥ ससार त्याग के जोग लिना, गुरु हिरालालजीको कीना, गुरु से ज्ञान सीखे हितकारी है ॥ २ ॥ तप सयम को पालन करते, पाप कर्म से दूरे टरते । शिव की आस लगी हरवारी है ॥ ३ ॥ सेखे काल में विचरत आया, बीकानेर में यह गुण गाया । चान्दमुनि अर्ज गुजारी है ॥ ४ ॥

नं २६—तर्ज—पमारको

तपसी मिश्रीचन्दजी, महिमा फैलीरे मुल्का माहीने ॥ टेर ॥
मेवाड़ देश के मायने सरे, ताल गांव एक भारी । पिता आपका दौलतरामजी, माता मिसी धारीरे ॥ १ ॥ सम्वत् गुणीसे साठ गुणतर, दीक्षा की दिल में धारी । गुरु भेटे श्री हिराचन्दजी, ज्ञान तथा मन्धारीरे ॥ २ ॥ गुरु भाई आपका चौथमलजी, है मुल्का में भारी। वाणी उनकी प्यारी लागे । सूरत मोहन गारीरे ॥ ३ ॥ सरल स्वभावी आप मुनिजी समता के गुणधारी । नाम लिया सुखसंपत पावे वरते मंगलाचारीरे ॥ ४ ॥ मनोहर व्याख्यानी चंपालालजी, सन्तोष मुनि गुण धारी । दर्शन कर कर आपका, गुण गावे नर नारीरे ॥ ५ ॥ तपस्या कर कर तारी आत्मा, आप बड़े उपकारीरे, कहां तक गुणवर्णन करू आपका । तुच्छ बुद्ध हमारीरे ॥ ६ ॥ सम्वत् गुणी से साठ पिचासी, भाया सेले कारीरे । मुनि रामलाल चरणों को याकर को । ज्ञान दिया हितकारीरे ॥ ७ ॥

नं २७—वेणी स्थाल की

मुनि मिश्रीचन्दजी, तपस्या कर तारी अपनी आतमा ॥ टेर ॥
ताल गांव मेवाड़ देश में, जन्म जहां मुनि पाया । दौलतरामजी तात मात, मिसी का नन्द कहाया ॥ १ ॥ गुरु भेटे श्रीहिराचन्दजी, दियो ज्ञान बड़भागी । संयम ले हुआ शूरवीर, रिध आदिक सुख त्यागी ॥ २ ॥ गुरु सेवा कीनी तन मन से, शील संयम विध सारी । रहे मगन तपसा के माही, जैसे मीन जल वारी ॥ ३ ॥ कियो चौमासो पेलो मुनिवर, गुरु सेवा के मांई । शहर सिकार्डे श्रीसंघ मांई दियो आनन्द बरताई ॥ ४ ॥ साल एकोतर मन्दसोर में झालरापुरो विख्यात को । बहुत्तर को भी कियो यहीं । गढ मन्दसालजी

के साथ ॥ ५ ॥ पाली शहर मरुधर के माई, साल त्रियासी आया। चौमासा के माय थोक, मतरे का मुनिवर ठाया ॥ ६ ॥ पाचमो कियो चौमासो किसनगढ, आच्छो ठाठ लगायो। कियो थोख एक-तीस आपने, खुबही आनन्द आयो ॥ ७ ॥ नया शहर पचीस की तपस्या, अरु छट्टा चौमास। अलवर साल छीयंतर कीना, थोक तीस उपवासजी ॥ ८ ॥ श्रावक अरु श्रावका मिलकर, खुब कियो उपकार। खुबचन्दजी महाराज दियो, उपदेश जोरसे तान ॥ ९ ॥ हुई मेर शहर जयपुर पै, उक्त मुनि के लार। साल सत्तंतर कियो चौमासो, लिनी तपसा धारजी ॥ १० ॥ कर गुणंतीस वास आश तज अन्नकी जोर लगाया। हुवो खुव उपकार शहर में, सुयश मुनि का छायाजी ॥ ११ ॥ सुन महिमा नरपत जैपुर नें, तुरतही हुक्म लगाया। रहे अगता सव आज शहर में, जनता को जितलाया ॥ १२ ॥ नही हुवा उपकार कभी भी, शहर वस्या के बाद। खुब हुई महिमा तपसी की संतों के परताव॥ १३॥ बत्तीस अठंत्तर रतनपुरी गुरू, चौथमल जी के लार। किया चोमासा उगण्यासी को, उज्जैन शहर मंझार ॥ १४ ॥ वहा भी हुवा उद्योत धर्म का, थोक तेतीस को ठायो। साल अस्सी इन्दौर सेर, पेंतीस कर जोर लगायो ॥ १५ ॥ इक्यासी को शहर सादडी, गोरवाड के माई। कीधो थोक छतीस को, तपस्या की झडी लगाई ॥ १६ ॥ श्री संघने पारणे पर, खुब कियो पुण्य दान। जीव दया का खुब, हुवा वहाँ उपकार ॥ १७ ॥ नया नगर में कीयो चैमासो, बइयाँसी के साल। खुब हुवो उपकार कहे, कहा तक माड हाल॥ १८॥ सेंतीस उपवास किया मुनी उष्ण उदक आधार। महिमा सुनकरी कई जन आया। दर्शन करन मन धार ॥ १९ ॥ त्रियासी इन्दोर सेर, मुनि कस्तुरचन्दजी के लार। चोतीस की तपस्या कीना। खब हुवो उपकार ॥ २० ॥ मारवाड में शहर जोधपुर।

साल चोरासी मझार । आनन्द से चौमासा किया, खूब हुआ उपकार ॥ २१ ॥ तपसा की चालीस एक कम, छोडी पुद्गल ममता । कोध मान को तज कर धारी मुनिवर मनमें समता ॥ २२ ॥ और हुआ उपकार कई सो, कहां तक मावे गाया । समय अभाव स्थल सार सारही, गायन कर दरशाया ॥ २३ ॥ साल पीचासी में विचरत विचरत । ताल गाव में आया । हरलाल इं कर जोड विनवे, तपसी का गुण गाया ॥ २४ ॥

नंबर २८—तर्ज—ख्याल की

तपस्वी मयाचन्दजी, ठाठ लगास्यो ज्यसमोव शाहर में ॥ टेर ॥ मेवाड देशका वासी, मुनिवर ओसवश है जात । दाख्तरामजी पिता आपका, पीसी बाई मात ॥ २ ॥ साल गुनसित्तर फागण मास, और, सुदी बीज परमात । कृपाकर गुरु हिरालालजी दीनों माथे हात जी ॥ ९ ॥ मगन बहुम प्रसिद्ध वक्ता, श्री चौत्यमलजी गुरुभाई । मुगरालजी का नोहरामें व्याख्यान की झडी लगाईजी॥ सम्प्रायस हे सरस जिन्हो की, ले बोध दिया को अन्य । जिस्यो लोग आकर के बैसे, सोना और सुगन्ध जी ॥ ४ ॥ तपस्या कर चालीस दिवस की अबो जोर लगायो । खूब हुवो उपकार शूर पर एवं शाहर में जयो जी ॥ ५ ॥ साल छियासी शाकर मुनिने, स्तवन कियो तैयार । सुले सुले चोमासो करने, किनो मुनिने प्यार जी ॥ ६ ॥

नबर २९—तर्ज—कजली बाले की

तपस्वी मयाचन्दजी महाराज के, गुण गावो, तुम हित चित धरके । तस्या के सागर है उपकारी, गुण गावो तुम हित चित धरके ॥ टेर ॥ पिता दोलतराममी आप के, माता पिसी बाई थी । फिर ताल ग्राम में जन्म लिया, गुण गावो तुम ॥ १ ॥

गुरु हीरालालजी भेट लिया, कविवर तेज प्रतापी थे। फिर विनय करी बहुज्ञान लिया, गुण गावो तुम ॥२॥ गुरु भाई श्री चौथमलजी, महाराजकी सेवा में रहकर। लडीबन्ध तपस्या करने लगे, गुण गावो तुम ॥ ३ ॥ जलगांव शहर में चतुर्मासकर, नवमी का पूर फिर कायम किया। आए नर नारी केई देशोंसे, गुण गावो तुम ॥ ४ ॥ केई गाव और दूर शहरों में, केई जीवों का उपकार किया। दुनिया धन्य धन्य कहरही, गुण गावो तुम ॥ ५ ॥ वाणी आपकी अति सरस है, अमृत वृष्टि करते है। स्वामी बडे दयाल हैं, गुण गावो तुम ॥ ॥ केई दिनोंसे अभिलाषा थी, तपस्वी जी के सेवा की। सेवा कर अति सुख पाया, गुण गावो तुम ॥ ७ ॥ गेंदालाल मुनि मडगाव में, गुरु कृपासे गाता है। ये खानदेश में स्तवन किया, गुणगावो तुम ॥ ८ ॥

नंबर ३०—तर्जः—छोटी बडी सईयाए

तपस्वी मयाचन्दजी महाराज, का नित गुण गावना ॥ टेर ॥ मेवाड देश में ताल गाम है, लिया है वहाँ पर जन्म, पिता को खुशी आवना ॥ १ ॥ माता आप की घींसी बाई, घींसी बाई। पिता है दौलतराम। कीं कुक्षी का कुल उजवालना ॥ २ ॥ संयम की जद दिल में जो धारी, यो ससार असार। मोह माया को त्यागना ॥ ३ ॥ गुरु भेटचा श्री हीरालालजी, हीरालालजी, गुणन्तर के साल। दीक्षा का हर्ष मनावना ॥४॥ तपस्या जो कीनी, आप जो भारी, आपजो भारी, तन मन से हुलसाय। चालीस का तप ठावना ॥ ५ ॥ खानदेश में जलगाव है, जलगाव है, संगसेवा करे हुलसाय। नरनारी भावे भावना ॥ ६ ॥ मोहनलाल और सोहनलाल, २ जोडसभा में गाय। आनन्द अति आवना ॥ ७ ॥

नंबर ३१—तर्ज—माड—हो महाराज थांको नगरश छैम्यो मति

हो महाराज आपकी तपस्या की छवीन्यारी म्हांकाराम ॥टेर॥ मेवाड देश के मायनेरे, ताल गांव विख्यात । श्रीसिंगाई नाम मात को दोलतरामजी तात । होम्हाराज, जिनकी कुल में आप पधारे म्हांकाराम ॥ १ ॥ शुभ मुहुर्त में जन्म हुवा है, गुणवालिस के माय । मयाचन्दजी नाम दियो है, सज्जन सुन हुलसाय । हो म्हाराज, आये जोवन वय के मांही म्हांकाराम ॥२॥ सुन उपदेश मुनि का आप, ऐसा किया विचार । मनुष्य जन्म को पाय केरे, करना नहीं अब रुवार । हो महाराज, सयम लेने की दिलठामी म्हांकाराम ॥३॥ हीरालाल गुरुवर किया रे, गुणन्तर केलाल । सयम ले मुनिवर बन्यार, काटी कर्म की जाल । हो महाराज, कीनी तपस्या भारी मारी म्हांकाराम ॥ ४ ॥ साल छियासी मल्गांव में किया चोमासा ठाय । चालिस की मुनि करी तपस्या तमपर जोर लगाय । हो म्हाराज, नरनारी मिल यश गावे म्हांकाराम ॥ ५ ॥ गुरु मेरे श्री चौथमलजी, कर रहे पर उपकार । तास कृपा से केवल मुनि ने कीना स्तवन तैयार । हो म्हाराज, आपकी महिमा जगमें भारी म्हांकाराम ॥ ६

नंबर ३२—तर्ज—कायो कागोरे देवरिया

महिमा भारी गुण के धारी; तपस्वी मयाचन्दजी महाराज । २ प्रगटे जिनशासन में महाज ॥ महिमा ॥ टेर ॥ गुरुवर हिरालाल मुनिश्वर तास पास लिया सयम श्रेयकर । श्रीमदजवाहरलाल पूज्यवर, सम्प्रदाय शिरताज ॥ १ ॥ सरल स्वभावी करुणाधारी, सूर वीर मुनिवर उपकारी । बहुं दिशी गाराई कीर्ति थांरी, सारी जैन समाज ॥ २ ॥ कपट क्रोध मद मोह न दरसे, मदमूर मुख ऊपर बरसे ।

धन्य २ तपस्वी ये घर घर से, आरही दिव्य अवाज ॥ ३ ॥ विनयवन्त वैराग्यवान हो, तप तेजस्वी करुणा भान हो। चोथे आरे के समान हो, परिचय पूरण आज ॥ ४ ॥ श्री गुरु चौथममलजी गुण सागर, जग प्रसिद्ध है धर्म दिवाकर। लाखों का मिथ्यात्व हटाकर, कीना है योग्य इलाज ॥ ५ ॥ धन धन भाग जलगाव नगर का, चतुर्मास हुआ श्री मुनिवर का। केई साधर्मी दूर दूर का, आवे दर्शन काज ॥ ६ ॥ चौथमल कसरावद माई, गुण कथ दिया सभा में गाई। तपस्वी का तप बडे सवाई, सहाय करे जिनराज ॥ ७ ॥

नंबर ३३—तर्ज—कमली वाले ने

तपस्या का ठाठ लगाय दिया, मुनि मयाचन्दजी स्वामी ने। कर्मों का चकचूर किया, मुनि मयाचन्दजी स्वामीने ॥ टेर ॥ तात आपका दोलत रामजी, माता घीसी जन्म दिया। फिर तालगाव प्रसिद्ध किया, मुनिमयाचन्दजी ॥ १ ॥ सम्मत उगणीसे साल गुलन्तर, दीक्षा का दिल में धार लिया। ले सयम गुरु की भक्ति करी, मुनि मयाचन्दजी ॥ २ ॥ देश विदेश आप विचर कर, तपस्या का महत्व जो दिखलाया। केई जीवों को अभय दान दिया, मुनि मयाचन्दजी ॥ ३ ॥ गुरु भाई आपके चौथमलजी, वडे वडे उपकार किये। तपस्या कर आतम कल्यान किया, मुनि मयाचन्दजी ॥ ४ ॥ सरल स्वभावी आप मुनिजी, क्षम्या जो दिलमें धार लिवी। दयाधर्म प्रचार किया, मुनि मयाचन्दजी ॥ ५ ॥ सम्मत उगनी से साल छियासी, जलगाव शहर चोमासा किया। दिन चालीस की तपस्या का पूर किया, मुनि मयाचन्दजी ॥ ६ ॥ देश देश का नरनारी, तपस्या का पूर पर आय गया।

फिर जीव दयाका उपदेश दिया, मुनि मयाचन्दजी ॥ ७ ॥ कर उपकार बड़ा भारी, मुल्कों में नाम जो आप किया । मिलवाकर पट्टापेश किया, मुनि मयाचन्दजी ॥ ८ ॥ रामचन्द्र चरणा को पाकर, यही आस गुमार रहा । कर उपकार मुझे तार दिया, मुनि मयाचन्दजी ॥ ९ ॥

नंबर १४—तर्ज—दुर्बल

तपस्या की झड़ी लगा दीनी, गुरु मयाचन्दजी तपसीने । अरु दया की झड़ी लगा दीनी, गुरु मयाचन्दजी तपसीने ॥ टेर ॥ तात आपका दोस्त रामजी, माता धीसी जन्म दिया । फिर ताल-गांव परसिद्ध किया गुरु मयाचन्दजी ॥ १ ॥ सम्मत उगणीसे साल गुनन्तर, दीक्षा की दिल में धारलीनी । कर कृपा संयम धार दिया गुरु हीरालालजी स्वामी ने ॥ २ ॥ गुरु भाई आपका चौथमलजी, केई रामों को प्रतिबोध दिया । केई जीवों को अभय दान दिया, गुरु मयाचन्दजी तपस्वी ने ॥ ३ ॥ सम्मत उगणीसे साल पिचासी, धूल्या नगर में आप गया । दिन बारा की तपस्या करी, गुरु मयाचन्दजी तपस्वी ने ॥ ४ ॥ कर किया अमेस्य रतन, श्रावक दर्शन आन किया । आप अपार उपदेश दिया, गुरु चौथमलजी स्वामी ने ॥ ५ ॥ कहे दास चरणों का रामचन्द्र मेरे पर उपकार किया । दे संयम मुझको निहाल किया, गुरु चौथमलजी स्वामी ने ॥ ६ ॥

नम्बर १५—तर्ज—पनिहारी

तपस्या कर तारी आतमा सुणो तपसीजी २ किया आतम कल्याण तपसीजी ॥ टेर ॥ देश मेवाड़ के मांयने सुणो तपसीजी, ताल्गाम विख्यात तपसीजी ॥ १ ॥ पिता जो दोस्त रामजी, सुणो

तपसी जी, माता घीसीके अंग जात, तपसी जी ॥ २ ॥ सम्मत उगणीसे गुल्नतर सालमें, सुनो तपसीजी; काई लीनो संयम भार सुनो तपस्वी जी ॥ ३ ॥ गुरु भेट्या श्रीहिरालालजी, सुनो तपसी जी, काई ज्ञान तणा भंडार सुनो तपसी जी ॥ ४ ॥ गुरु भाई है श्री चौथमलजी, सुनो तपसीजी; मुल्कों में है परसिद्ध। तपसीजी ॥ ५ ॥ सरल स्वभावी आप हो, सुनो तपसी जी, काई क्षम्या तणा, भंडार तपसी जी ॥ ६ ॥ नाम लिया सम्पत मिले, सुनो तपसी जी, होय मन चाया काज, तपसी जी ॥ ७ ॥ सम्मत उगणीसे छियासी साल में, सुनो तपसी जी, काई जलगांव शहेर मुझार, तपसी जी ॥ ८ ॥ तपस्या का ठाठ लगाविया, सुनो तपसी जी, काई आया बहु नरनार, तपसी जी ॥ ९ ॥ दरशन कर हुलसाविया, सुनो तपसी जी, काई वरत्या मंगलाचार तपसी जी ॥ १० ॥ राजमल की अरज है, सुनो तपसी जी, काई दीजो मुक्ति को वास तपसी जी ॥ ११ ॥

नंबर ३६—तर्ज—सीता है सतवन्ती नार

आनन्दवरते हो, तपसी जी आपका नामसेजी। सुखसम्पत मिलसी हो, तपसी जी आपका नामसेजी ॥ टेर ॥ यो तो तालगाव विख्यात, आपका दोलतरामजी तात, माता घीसी के अंगजात, कुंख में उपना आयके जी ॥ १ ॥ आपका मियाचन्दजी नाम, आपने जाने मुलक तमाम। आपने, कीना उत्तम काम, संयम पद पाय के जी ॥ २ ॥ गुरुभाई चौथमलजी विख्यात, लेकर आया आपने साथ। पहुंच्या रतलाम शहर विख्यात, दिया चोमासो ठाय केजी ॥ ३ ॥ पूज्य मन्नालालजी दयाल, वाणी उनकी बढी रसाल, मैंतो आया दूरसे चाल, सेवा कीनी तपसी जी मन हुलसाय केजी ॥ ४ ॥ दिन अडतीस की तप कीना, सुजश कीर्ती जगमें लीना, मुनि

फिर जीव दयाका उपदेश दिया, मुनि मयाचन्दजी ॥ ७ ॥ कर उपकार बड़ा भारी, मुल्कों में नाम जो आप किया । विलयाकर पद्दापेश किया, मुनि मयाचन्दजी ॥ ८ ॥ रामलाल चरणा को पाकर, यही भरम गुमार रहा । कर उपकार मुझे तार दिया, मुनि मयाचन्दजी ॥ ९ ॥

नंबर २४—तर्ज—पूर्ववत्

तपस्या की झड़ी क्या दीनी, गुरु मयाचन्दजी तपसीने । मह दया की झड़ी क्या दीनी, गुरु मयाचन्दजी तपसीने ॥ टेर ॥ तात आपका दोलत रामजी, माता पीसी जन्म लिया । फिर ताम-गोत्र परसिद्ध किया गुरु मयाचन्दजी ॥ १ ॥ सम्मत उगणीसे साल गुनन्तर दीक्षा की दिल में परसीजी । कर कृपा संयम भार दिया गुरु हीरालालजी स्वामी ने ॥ २ ॥ गुरु भाई आपका चौथमलजी, केई रामों को प्रतिबोध दिया । केई जीवों को अभय दान दिया, गुरु मयाचन्दजी तपस्वी ने ॥ ३ ॥ सम्मत उगणीसे साल पिचासी, भूल्या नगर में आय गया । दिन बारा की तपस्या करी, गुरु मयाचन्दजी तपस्वी ने ॥ ४ ॥ कर लिया अमोल्य रतन, आपका दर्शन आन किया । दीना बजार उपदेश दिया, गुरु चौथमलजी स्वामी ने ॥ ५ ॥ कहे दास चरणों का रामलाल, मेरे पर उपकार किया । दे संयम मुझको निहाल किया, गुरु चौथमलजी स्वामी ने ॥ ६ ॥

नम्बर २५—तर्ज—वनिहारी

तपस्या कर तारी आतमा मुनो तपसीजी २ किया आतम कल्याण तपस्वीजी ॥ टेर ॥ देश मेवाड़ के मांयने, मुनो तपसीजी, ताखगाम विख्यात तपसीजी ॥ १ ॥ पिता जो दोलत रामजी, मुनो

जिनमार्ग तो खूब दिपायो, घणो कियो उपकार । ज्ञान ध्यान तो घणोज कीनों, कहेता न आवे पार ॥ ४ ॥ केई साधु साध्वियानें, ज्ञान दियो तंतसार । सेवा करेछे आपकी रे, सफल हुवो अवतार ॥ ५ ॥ क्रोडजिह्वा से गुण करुं तो, कहेता न आवे पार एक जिह्वासे गुण करुं तो, कितनी लागे वार ॥ ६ ॥ बावन वरषकी दीक्षा पाली, खूब रया हुंशियार । देव लोकमें आप पधार्‍या वरत्या मंगलाचार ॥ ७ ॥ उगणीसे वहोत्तर साल में । कार्तिक सुद छट शुक्रवार, सात दिन को आयो संथारो, मंदसोरकें मुझार ॥ ८ ॥ गुरु हिरालालजी सुं, अरजी वारम्वार । मयाचन्द की वीनती जी, मेलो मोक्ष मुझार ॥ ९ ॥

नंबर २९—तर्ज.—ख्याल की

मारी दया माता, थाने मनाऊं देवी सासता ॥ टेर ॥ यासम देवी नहीं कोई जग में, हाथा हाथ हजूर । तुठा तात्क्षिण फले कामना, दुख जावे सब दूर ॥ १ ॥ ज्ञानरूप सिंह की असवारी, तप तरसूल ले हाथ । हाक धाक करती दुश्मनपर, करे रिपु की घात ॥ २ ॥ अष्ट कर्म का अग्रतोडने, धरी रूंड की माल । अष्ट प्रकारे धार वीभूती, गले मोतियन की माल ॥ ३ ॥ दानादिकचउभेद बिराजे, भुजाडंड विस्तार । विनय मुगट थारा शीश उपरे, ऐसो कियो सिणगार ॥ ४ ॥ मोक्ष मान्दिर की है तूं वासी, खासा सुख दातार । च्यार तीरथ थारे आवे जातरी, भर्‍यो रहे दरबार ॥ ५ ॥ सतरा विध संयम को थारे, बाजा को झणकार । ध्यान ध्वजा थार उडे सिखर पर, लाग रही धुनकार ॥ ६ ॥ रिद्ध सिद्ध नव निध की दाता, भरे अखुट भंडार । अष्ट पहोर थारा मंगळ गावे, हो रया जय २ कार ॥ ७ ॥ भुखाने भोजन अम्बु प्यासाने

राममलमे दर्शन कीना, चरणामें शीश झुकाय केमी ॥ ९ ॥ सम्मत उगणीसे पिचासी साल, आपने सुब कमाया माल । सरची जीनी है तत्काल, अबतो मानो मोक्ष पुरी के मांय, करम खपाय केमी ॥१०॥

नंबर ३७—तर्ज:—महाबीरसे ध्यान लगाना करो

तपस्वी मयाचन्दजी का गुण नित गायां करो । उनकी शिक्षापर ध्यान लगायां करो ॥ टेर ॥ देश मदाव्या मायने, ताल गांम विख्यात है । पिता दोलतरामजी, जिंसी बाई जो मात है । नित उठ के गुण तुम गायां करो ॥ १ ॥ साल गुणन्तर मांयने दीक्षाली दिल में धारली । गुरु हीरालालजी महाराज की, शिक्षा जो तुमने मानली । अबतो तपस्या का ठाठ लगायां करो ॥ २ ॥ रतलाम शहर से विहार कर, खानदेश में आगया । धुल्या नगर के मायने, बारा की तपस्या ठाय दिया । जैनधर्म को खुब दीपायां करो ॥ ३ ॥ सम्मत उगणीसे साल पिचासी आया तो सेसे कालमें; गुरुभाई श्री चौथमलजी, आया है आप को साथमें; । कर के भक्ति उसे तुम रिझाया करो ॥ ४ ॥ रामलालकी अर्जी ये, ध्यान आपदीजिये ॥ सेवामें आया आप के, मस्ती तार दीजिये । सदा ईश्वर से ध्यान लगायां करो ॥ ५ ॥

नंबर ३८—तर्ज:—दोहा की

गुरु तो मे जवाहिरलालजी ध्याऊं, जिन्हो का दर्शन नित चाऊं ॥ टेर ॥ कलहेला से निकल्या, ताम माई की कार । आज्ञा दीनी मातामीने हुलस्यो हियो अपार ॥ १ ॥ पिता आपका रतन-चन्दजी माता रामाजी हुशीयार । मामा आपका देवीलालजी कीनो सवम मार ॥ २ ॥ पंचमहाव्रत निर्मल पाले, दोष नहीं लिस त्यार । शक्ति समता घणी आपके गुण मत्तावीस धार ॥ ३ ॥

प्रतक्ष नमूना नजर सामाने, दीपे दिदारा रे ॥ ८ ॥ सुगुरु प्रसादे छगन मुनि कहेता, गुणी जन के गुण गावो रे। महा ओघ संसार समुंदर, सहेज तिरजावो रे ॥९॥ सम्मत उगणीसे साल गुण्यासी, पूज्य सात ठाणा संग लाया रे। जावरा संघ पर करी महेर, चोमासा ठाया रे ॥ १० ॥

नंवर ४१—तर्जः—घनश्यामकी महिमा अपार है ॥

पूज्य मन्नालालजी पूज खास, सब मिल महिमा करे ॥टेर॥ सूरत शीतल चंद समान, न्यायवंत है मिष्ट जवान। वाचे अद्भुत सरस व्याख्यान ॥ १ ॥ सूत्र सरस्वती का भंडार, पाले हैं नित कठिन आचार। जारी किरती फेली अपरम्पार ॥ २ ॥ जिनने घडे केई घाट कुघाट, उनकी चली नही कुछभी आट। जद पूज्यजी विराज्या पाट ॥ ३ ॥ सज्जन गुण कर के हुलसाय, मूढ माति के दायन आय। जूं ऊट ने इखु नहीं भाय ॥ ४ ॥ जो तुम चाहो परम कल्यान, पड़ो पूज्य के चरणेआन, है पूज्य गुण रतनों की खान ॥ ५ ॥ शहर निम्बाहेड़े इक्यासी के साल, छगन मुनि गुण गाया दयाल। गुरु चौथमल जी है प्रतिपाल ॥ ६ ॥

नंवर ४२·—तर्जः—ख्याल की ॥

वाजा नगारा जीत्या दाव का, जिनराज वधावो ॥ टेर ॥ मनुष्य जन्म को जीत लिया है, अच्छी करणी कीनी। मेट दिया सब फंद जगत का, उत्तम पदवी लीनी ॥ १ ॥ देवलोक का वासी खासी, पाया लील विलासी। कोईयक जीव भवा के अन्तर, पंचमी गत जो पासी ॥ २ ॥ कर्म कोट को ढायदिया है, जीत लिया सब वेरी। धोका मेट दिया दुर्गति का, आण अखण्डित फेरी ॥३॥

सकुन को गगन विषार । महाम समुंदर मांयने सरे, दयाळको आधार ॥ ८ ॥ रोगीने औषध साय मूळाने, औषद मे निजस्थान । मय पामता मीवने सरे, शरणागत निमभाम ॥ ९ ॥ साठ नाव सिद्धांतमें धारा, तुं मग जीवन माता । सदाकाळ धारी मोहे मागती, पट् दर्शन मिली गाता ॥ १ ॥ ससार समुंदर माहि डूबता तुम शरणो आधार । कष्ट पड्याँ कोई याद करे तो, कर दे बेड़ा पार ॥ ११ ॥ थारी सेवा कर्‍या से माता, घणा जीव सुख पाता । हरिलाल थारे शरणे आयो दीमे भव भव साता ॥ १२ ॥ उगणासे चुमालिस वरसे, चेत विदी विसवार । पूज्य परसादे परम सुख पाया गुरुदेवा उपगार ॥ १३ ॥

नंबर ४०——तर्ज़——पंछी मुँडे बोल ॥

छती रिद्ध त्यागीरे २ तपसी बालचन्द मुनि मडे वैरागी रे ॥ टेर ॥ तप संयम में शूरा मुनिजी, ज्ञान गुणा कर भारी रे । शिव पग को साधन कारण, करी तैयारी रे ॥ १ ॥ गुगाल्या गोत्र मोतीरामजी, श्रीमती मणीबाईरे । उनकी कूख मे जन्म लियो, जन्म मात कहाई रे ॥२॥ दया के सागर गुणरत्नागर, पूज्य उदयसागर महाराया रे । सब वैराग्य से उनपे आकर, संयम पाया रे ॥ ३ ॥ गाम नगर पुर विचरत २, देश पंजाब में आया रे । अभयदान और जीव दया का, निशान फरोया रे ॥ ४ ॥ एकान्तर और बेले ? बीविध, तपस्या ठाई रे । कई हजार गऊवों की छुरी से, जान बचाई रे ॥५॥ पांच द्रव्य रस मसाल्यादिक का, और ममत्व मिटाई रे । गेहूँ रदीण पानी गरम, सुखा शाक बताई रे ॥ ६ ॥ पूज्य मन्नालालजी और तपसी बालचन्द्रजी गुरु भाईरे । अविचल जोड़ी रहे बड़े यश कीर्ति सवाई रे ॥७॥ वीर वराण्या सुतर माँई, तवे सूरा आणगारा रे

जिनवाणी का ढोल पुराया, सब जग माहि सुनाया। सिद्दना
आश्रम को पूरी, वेरी वेग हटाया ॥ ४ ॥ जय जय कार हु
जगत में, सुख २ जस उचारे। कच्छा बधावे कामण्या मग
गावे घर घर द्वारे ॥ ५ ॥ गौतमस्वामी गणपति ध्यावो, पंच
मास को पूगो। साधु सत्यां को शरणो लेके, ऐसो पंथ न
दूजो ॥ ६ ॥ जिन शासन का देवी देवता, सब ही सहाय करी मे
दुस्सम का कोई दावन लागे, भक्त की पीर हरी मे ॥ ७ ॥
देव गुरु परसाद करीने, सबही सम्पत पाया। हीरालाल घर ध्या
धरम में, गीत मगारा गाया ॥ ८ ॥

ॐ शान्ति शान्ति शान्ति ॥

जमकी मार, हो महावीर० ॥ ३ ॥ तन धन योवन विद्यु सो भलका, जाता न लगे धीर, हो महावीर० ॥ ४ ॥ इम जानी तुम शरण गृह छुं प्रभुजी है तारण हार, हो महावीर० ॥५॥ आश लगी को पूरण करिये, या जनम मरण नीवार, हो महावीर० ॥ ६ ॥ मुनि चौथमलकी अर्ज सुनीजो, त्रशला रानी के कुवार, हो महावीर० ॥ ७ ॥ इति ॥

न० ७ तर्ज पूर्ववत्

आर्जकी नेया डूब रही मझधार ॥ टेर ॥ सोते मोहकी नींद खेवैया, दिल में नहीं करते विचार ॥ १ ॥ अविद्या छाइ भारत में—नाइत्फाकी वे शुमार ॥ २ ॥ कहे किससे और कौन सुने है, वन बैठे दिल के सरदार ॥ ३ ॥ हिंसा झूट निंदा घट घट मे, सत संग का कम प्रचार ॥ ४ ॥ चौथमल कहे सत गुरु की शिक्षा—माने मे होवेगा उद्धार ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ न० ८ तर्ज पूर्ववत ॥

आर्ज की नैय्या वेग लगाओ पैल पार ॥ टेर ॥ जागो २ धर्म वीर सन-गफलत की नींद निवार ॥ १ ॥ महावीर जिन का शरण गृहीने—कमर बाधी ने हो होशियार ॥ २ ॥ ज्ञान की शिक्षा दो झट पट तुम-कर सम्प लो देश सुधार ॥ ४ ॥ चौथमल कहे सतगुरु वाणि दो नैय्या लगावे पैले पार ॥ ५ ॥

॥ न० ९ तर्ज पूर्ववत ॥

उमर तेरी सगगगगगगग जाय ॥ टेर ॥ तूतो कुटुम्ब न्यातिके अन्दर-मूर्ख रह्योरे लोभाय ॥ १ ॥ धन राज्य में गर्भ

जमकी मार, हो महावीर० ॥ ३ ॥ तन धन यौवन विद्यु सो झलका, जाता न लागे धीर, हो महावीर० ॥ ४ ॥ इम जानी तुम शरण गृहूं छु प्रभुजी हैं तारण हार, हो महावीर० ॥५॥ आश लगी को पूरण करिये, था जनन मरण नीवार, हो महावीर० ॥ ६ ॥ मुनि चौथमलकी अर्ज सुनीजो, त्रशला रानी के कुंवार, हो महावीर० ॥ ७ ॥ इति ॥

न० ७ तर्ज पूर्ववत

आर्जकी नैया डूब रही मझधारं ॥ टेर ॥ सोते मोहकी नींद खवैया, दिल में नहीं करते विचार ॥ १ ॥ अविद्या छाइ भारत में—गफ्लतकी वे शुमार ॥ २ ॥ कहें किससे और कौन सुने है, बन बैठे दिल के सरदार ॥ ३ ॥ हिंसा झूंट निंदा घट घट मे, मत संग का कम प्रचार ॥ ४ ॥ चौथमल कहे सत गुरु की शिक्षा—माने से होवेगा उद्धार ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ न० ८ तर्ज पूर्ववत ॥

आर्ज की नैय्या वेग लगाओ पैले पार ॥ टेर ॥ जागो २ धर्म वीर सब- गफलत की नींद निवार ॥ १ ॥ महावीर जिन का शरण गृहीने—कमर वाधी ने हो होशियार ॥ २ ॥ ज्ञान की शिक्षा दो झट पट तुम-कर सम्प लो देश सुधार ॥ ४ ॥ चौथ-मल कहै सतगुरु वाणि दो नैय्या लगावे पैले पार ॥ ५ ॥

॥ न० ९ तर्ज पूर्ववत ॥

उमर तेरी सगगगगगगग जाय ॥ टेर ॥ तूतो कुटुम्ब न्यातिके अन्दर-मूर्ख रह्योरे लोभाय ॥ १ ॥ धन राज्य में गर्भ

रहा है, अवर पडे कछु नांय, ॥ २ ॥ कर स्नान पौशाक सभे हैं, इतर फुलेल लगाय ॥ ३ ॥ सुन्दर गोरी तेरा जिस छिबी थारो जिण संग रह्यो लिपटाय ॥ ४ ॥ डाब अणियै जैसे जल बिन्दु, ज्यू जोवन म्होलो तेरो जाय ॥ ५ ॥ करले तू कछु सुकृत करणी, वस्तु अमोलक पाय ॥ ६ ॥ चौथमल कहे सतगुरु तुमको, वर वर समझाय ॥ ७ ॥ इति ॥

न० १० तर्ज पूर्ववत्

मुसाफिर यहां से लरची ले ले लार ॥टेर॥ यह संसार है शहर पुरानो, जिसका महाराजा मुख्त्यार ॥ १ ॥ पाप अठार यह हैं लुटेरे, तूं इनसे रहियो होशियार ॥ २ ॥ राणा और राजा छत्रपति कहे, गया है हाथ पसार ॥ ३ ॥ पौष कासका बान्धे आवतो, पर भवकी सूझ न धार ॥ ४ ॥ नये शहर में जाना तुमको, वहां नहीं नानी दादी का द्वार ॥ ५ ॥ मनुष्य जन्मकी अजब दुकान है, जिसमें नाना विध व्यौहार ॥ ६ ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र तपस्या, यह छौं रतन संग धार ॥ ७ ॥ सुकृत घोड़ो मीण मला को, जिस पर होजा असवार ॥ ८ ॥ दया विध मति धम मुर्सडी, दानादिक कलदार ॥ ९ ॥ शिव पुर पाटण वीच पधारा, जहां पावोगा सुख अपार ॥ १० ॥ गुरु हीरालाल प्रसादे, चौथमल कहे छे तुमे समझार ॥ ११ ॥

नं० ११ तर्ज-या हसीना बस मदीना करबला में तुं न जा

अरे दिला दुनिया फना, इसमें लुभाना छोड दे ॥ टेर ॥
चार दिनकी चांदनी, क्यों जुल्म पर बांधी कमर। हुक्म रब का मान ले, दिल का दुखाना छोड दे ॥ १ ॥ अदा कर अपना फर्ज तू, जिस लिये पैदा हुवा। कर इबादत जिम्र से, रुह का सताना छोड दे ॥ २ ॥ अच्छे बुरे अहमाल का, बदला हशर मे है सही। है नशा हराम, तू पीना पिलाना छोड दे ॥ ३ ॥ जो गुन्हा हो माफ तो, दोजख कहो किसके लिये। माफ का हर बार तूं, लेना बहाना छोड दे ॥ ४ ॥ अए प्यारों अए अजीजों, दोस्तों मेरी सुनो। सफर का सामान कर, जी यहां फसाना छोड दे ॥ ५ ॥ कहा सिकन्दर कहा अकब्बर, कहा अली अजगर गया। तूं भी अब मिजमान है, गफलत मे सोना छोड दे ॥ ६ ॥ गुरु के प्रसाद से यूं चोथमल कहता तुझे। मान ले नसीहत मेरी, रंडी के जाना छोड दे ॥ ७ ॥

नं० १२ तर्ज पूर्ववत्

लाखो पापी तिरगए सत संग के परताप से ॥ टेर ॥
सतसंग का दरिया भरा, कोई न्हाले इसमें आन के। कटजाय तन के पाप सब, सत संग के परताप से ॥ १ ॥ लोह का सुवर्ण बने, पारस के परसंग से। लटकी भंवरि होति है, सत संग के परताप से ॥ २ ॥ राजा परदेशी हुवा, कर खून से

रहत भर । उपदेश सुन ज्ञानी हुआ, सत संग के परताप से ॥ ३ ॥ अरजुन मास्ता कारथे, मनुष्यकी हत्या करी । छ मास में मुक्ति गया, सत सग क पर ाप से ॥ ४ ॥ सयादि राजा शिकारी,हीरन क मारा था तीर । राम तज साधु हुआ, सत्सग के परताप स ॥ ५ ॥ इलायची एक चार था, और श्रणिक नामा भूपती, कार्य सिद्ध उनका हुआ, सत्संग के परताप से ॥ ६ ॥ सतसग की महिमा बडी । तीन भुनिका बीच में । चौबमक क हो मजा, सत्‌सग क परताप म ॥ ७ ॥ इति

न० १३ तर्ज पूर्ववत

लाखो कामी पिट चुके परनार क परसग स ॥ टेर ॥ मुनिराज कह सब बचो पर नार के परसग से ॥ टेर ॥ दीप ककी लोह उपरे, पड पतंग मरता सही । एसे कामी कटमरे, परनार क परसंग से ॥ १ ॥ परनार का जो हुस्न मानु अग्नि का कुन्ड सा । तन धन सब को होमदे, परनार के परसग से ॥ २ ॥ मुंहे f बाले पे लेमाना, इन्सान को लाजिम नहीं । सुजाक गर्मी में सडे, परनार के परसग स ॥ ३ ॥ चार से सवायुणा, कानून में लिखा दण्ड । सजा हाकिम से मिले, प रनार के परसग से ॥ ४ ॥ जैन सूत्र में मना मनुस्मृति है लाजे । कुरान बाइबल में लिख्खा, परनार के परसग से ॥ ५ ॥ रावन किच्चक मारेगए, द्रोपदी सीता क वास्ते—मणीरथ भर नरके गया, परनार क परसंग से ॥ ६ ॥ शहर बुनी

तलवार से, अबन मुलजिम बदकार ने । हजरत अलि पे बहा-रकी, पर नार के परसंग से ॥ ७ ॥ कुत्तेको कुता काटता, कत्ल नर नरको करे । पल में मोहब्बत टूटती, पर नार के परसंग से ॥ ८ ॥ किस लिये पैदा हुआ, अए बेहया कुछ सोच तूं । केहे चौथमल अब सबर कर, पर नार के परसंग से ॥ ९ ॥ इति ॥

न० १४ तर्ज पूर्ववत्

लाखो व्यसनी मर गए, कुव्यसन के परसंग से, अए अजिजों बाज आओ, कुव्यसन के परसग से ॥ टेर ॥ थम जूआ है बूरा, ईज्जत धर्न रहता कहा । महाराज नल नवास गए, कुव्यसन के परसग से ॥ १ ॥ मास भक्षण जो करे उस के दया रहती नहीं । मनुस्मृति में लिखा कुव्यमन के परसग से ॥ २ ॥ शराब यह खराब है, इन्सान को पागल करे । जादवोका क्या हुआ, कुव्यसन के परसंग से ॥ ३ ॥ रंडी बाजी है मना, तुम से सुता उसके हुये । दामाद की गेनती करे, कुव्यसन के परसंग से ॥ ४ ॥ जीव सताना नहीं रवा, क्यों कत्ल कर कातील बने । दोजख का मिजमान हो, कुव्यसन के परसंग से ॥ ५ ॥ माल जो परका चुरावे यहां भी हाकिम दे सजा । आराम वो पाता नहीं, कुव्यसन के परसग से ॥ ६ ॥ इशक बुरा परनार का, दिल में जरा तो गौर कर । कुच्छ नफा मिलता नहीं, कुव्यसन के परसंग

से ॥ ७ ॥ गाञ्जा चडस चण्डु अफीम, भग तमाक्खू छोडरे । चौथमल कहे नहीं भला, कुव्यसन के परसग से ॥ ८ ॥ इति

न० १५ तर्ज माड

अहो मारी मानो मानो मानो मानो मानो मानो माओरे अहो हर मानो आनो आनो आना आनो आनोरे ॥ टेर ॥ कुवाके वाळो मतिरे, कुल में लागे कलक, रावन सरीखा रावजी औदि, गई हाथ स लंक ॥ १ ॥ जैसे गऊवो होठी हजाडी, डीची पाँव लगाय । नहीं माने गले डोग लगावे, एवतणे फल पाय ॥ २ ॥ पद्म नाम को मान भग भयो, मणि-रथ मर्क सीधात । किच्चक का कीचड का नीकस्या, वा जगमें विख्यात ॥ ३ ॥ परनारी वैश्यास यारी, सीओ पीव शराब । मांस आहारी और सीकारी, जाका परभव हाल खराब ॥ ४ ॥ योवन रग पतंग सारे, जाता न लागे वार । थोडा जीतब के वास्ते थी मती बांधो पाप को भार ॥ ५ ॥ जीवों की यत्ना करो, देवो सुपातर दान । भजन करो भगवान का, थारा सुर सभर्मे मबान ॥ ६ ॥ गुरु हीरालाल जी सी ठाणा पधार, साहाजापुर के मझार । चौथमल कहे उगणिसे चौसठ, महा महिना मेवकार ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ नं० १६ तर्ज पूर्वंवत ॥

अहो आदसर मापं, पुजो पुजो पुजो लो शिवराज ॥ टेर ॥ संयम लीनो ऋषभ प्रभु जी, पुत्र ने राज दिराय । मर्व सत्ण

माधव ने निकल्या, भ्रात कहै इमवाय ॥ १ ॥ माने आपने और सभीने, दीनो पिताजी राज । आप करो राज आप को, मैं करां मांको काज ॥ २ ॥ शक्ति देखी भरत कीरे, करे अठ्याणु विचार । ऋषभ देव प्रभु पासे आई, ऐसी करे पुकार ॥ ३ ॥ भर्त लोभी धन्न राज को, करी चढाई आय । आण मनावे हम भणि कई, आप देवो समझाय, ॥ ४ ॥ आदिनाथ कहे साभलोरे क्यों थें रह्या लोभाय । आयु राज्य ने सम्पदा कोई, स्थिर नहीं रहे जगमांय, ॥ ५ ॥ लेवो राज्य थे मोक्ष कोरे, छोडो सकल जञ्जाल । सुणि अठाणुं सञ्जम लीदो, पहुंचे भव जल पार ॥६॥ गुरु हीरालाल प्रसाद सुं, चोथमल कहे एम । उगणीसे छासट उदयापुर मे, चौमासा वरते खेम ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ नं० १७ तर्ज पूर्ववत ॥

अहो मुझ बंधव प्यारा, करुणा, आणी अर्जी लो मानी जी राज ॥ टेर ॥ भर्त सुणी संयम तणी, छुटी आसू की धार । बांधव से यूं विनवे, मत लो सयम भार ॥ १ ॥ अठाणु संयम लियो, पूर्व पिता के पास । ऐसो विचार मति करो, मुझे आपतणो विश्वास ॥ २ ॥ यो सघलोई राज्यलो, छत्र चंवर दुराय । आप रहो संसार में, अर्ज कबूल कराय ॥ ३ ॥ शहर वनिता जावता, पग नहीं पडे लगार । माजी साहबने जायने मैं, कांई कहू समाचार ॥ ४ ॥ चक्र रत्न निज स्थान पै, आयो नहीं इण काज । करी चडाई आवियो काई, यह अनादि राज ॥ ५ ॥

काहु चल कहे सुणो भरतजी, जो निकस्या मुम बैन । गज दन्त बत नहीं फिरे कोई, यह सुराका बैन ॥ ६ ॥ समझाया मानी नहीं लियो संयम हित आन । मर्तगया निज शहर बनिया, फेरी अणिहत धान ॥ ७ ॥ बगणीस छसट मर, उदियापुर चौमास । चौथमल कहे गुरु परसादे, करते ढीक विलास ॥८॥

॥ नं० १८ तर्ज पूर्ववत ॥

सती सीताजी धीज करे, सत्य धर्म से सब्ब टर ॥ टेर ॥ अगिन कुण्ड रचियो केसुसम, झारो झार उरे । राम और लछमण भरत शत्रुघन, जाहां राणो राम सरे ॥ १ ॥ सिया ठाडी अगिन कुण्डपै, परमेष्ठी ध्यान धरे । पूब जन्म के केहा जो छिलिका, सो टारे केमग्रे ॥ २ ॥ लोक—अयोध्या का और मचायौ, राम अन्याय करे । सीता सती चगत्रसीर निर्मल, पावक मीच परे ॥३॥ नल सिला तक जो हु निर्मल, ताको कान हर । ममस साको के बीच, पावक मांय पुरे ॥ ४ ॥ पुष्प वृष्टि हुई नभ स, सिया सत्य मैथ हर । चौथमल कहे सत्य सहाई, सुर नर जम उचरे ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ नं० १९ तर्ज पूर्ववत ॥

मन्दोदर कह यू कर जोड पिया अनीति कायको करे ॥ ॥ टर ॥ सीता नारि या रामचन्द्रकी, सतियां माय सेर । हरन करी चुपके बन सती, सा के बाण पर ॥ १ ॥ हमरब कुल बधु के निमित्त से, रावण माण हर । सा बीरक या

दीसे मांने, क्योनी ध्यान धरे ॥ २ ॥ राम और लक्ष्मण शत्रुघ्न, आ लका बाहार खरे। सीता दे मम लज्जा राखो, तो सब काज सरे ॥ ३ ॥ सीता दिया पीछे तुम सेती, जो श्रीराम लरे। तो होवे जीत आपकी, निश्चे ना मम वाक्य फिरे ॥४॥ रावन वोले मूर्ख नारी, ओगुण आठ भरे। चौथमल कहे माने कब शिक्षा, भावी नाय टरे ॥ ५ ॥ इति ॥

नं० २० तर्ज–समकितकी देखो बहार

मालिक्का सुनलो कलाम–कलाम मेरे प्यारे ॥ टेर ॥ कत्ल का करना रवा नहीं है, है यह काम निकाम निकाम ॥ १ ॥ नशा का करना शराब का पीना, लिखा हदीस में हराम ॥ २ ॥ जिनाकारी का करना बुरा है, नाहक क्यों होते बद-नाम ॥ ३ ॥ दिल में तो दगाबाजी भरी है, खाली करते हो झुक झुक सलाम ॥ ४ ॥ ऐश और दौलत कुन्वे के अन्दर, करते हो उम्र तमाम ॥५॥ गफलतको छोडो दिल में तो सोचो, कितना है यहा पै मुकाम ॥ ६ ॥ आलिमुलगेब हे नाम बस रब का, देखे सब तेरे वोह काम ॥ ७ ॥ चौथमल कहे रहम रखो जो, तुम चाहते हो जन्नत मुकाम ॥ मुकाम मेरे प्यारे मालिकका सुनलो कलाम ॥ ८ ॥ इति ॥

नं० २१ तर्ज– पूर्ववत

मत भूल मेरे प्यारे दुनिया की देखी बहार ॥ टेर ॥ ऊंधा तू लटका महिना नौ उर मे, रज वीर्य का लीना ते आ-

हार ॥ १ ॥ भागी कष्ट दुखो तु पैदा, सुखी हुवो परिवार ॥
२ ॥ छाड मकान मैया महलारी, माडे तु पाँच मसार ॥ ३॥
पीता बाठपन आइ जुवानी, सजवा है तन पे सिंगार ॥ ४॥
बग्गी में बैठ मोटर में बैठ, जावे तु बाग मझार ॥ ५॥ काम
मे अन्ध नशे मे धुन्ध हा, ताके तु गैरोंकी नार ॥ ६ ॥ नदी
का पूर ज्यू गइ जुवानी, आया बुढापा नरकार ॥ ७ ॥ शीश
हिले पग धूजण लगे, दांत मुखका दीनी बिसार ॥ ८ ॥ बाल
मुवा ढ़क धीनों बच्चोंको, रस्तों मा दीना निकार ॥ ९ ॥ आखिर
करम गयो नरक अवस्था, खाय यम दूतोंकी मार ॥ १० ॥
चौथमल कहे जो सुख चाहे सत गुरु के नमा चरनार, कर
नार मेरे प्यार ॥ दुनियां की झूठी बहार ॥ ११ ॥

नं ७२ तर्ज पूर्ववत्

मत सता तुम जीवों के प्रान प्रान मेरे प्यारे—मत सता
तुम ॥ टेर ॥ किस का सताना रवा नहीं है आप के वास्ते
क्यान ॥ १ ॥ गरीबों के ऊपर जुल्म करोगे तो पहुंचाय
दोजख दरम्यान ॥२॥ आराम प्यारा लगता है तुमको, ऐसी
ही औरों की जान ॥ ३ ॥ लेके शिकारी घोड़े प चढ चढ,
दवे हा गोली की मान ॥ ४ ॥ जो कोइ कहे दया दान
की-उस न रखत हो कान ॥ ५॥ जूतियों की नाकों स मरत
हैं प्राणि पीव हा पानी बिन छान ॥ ६ ॥ पशु क बाछ हैं
जितन जनम में, होना पड़ेगा हैरान ॥७॥ मनुष्यनि अवमय

पाश्व मे-आठो घातिक को लिख्या समान ॥ ८ ॥ हरे दरखत को कभी न काटो, वो भी तो रखता है जान ॥ ९ ॥ चौथमल की नसीहत पै जरा तो रक्खो तुम ध्यान- ध्यान मेरे प्यारे मत लूटो तुम जीवो के प्रान ॥ १० ॥

नं० २३ तर्ज पूर्ववत्

सतगुरु का सुनलो व्याख्यान--व्याख्यान मेरे प्यारे, सत ॥ टेर ॥ प्रथम हिंसा झूठ को छोडो, चोरी को छोडो सुजान ॥ १ ॥ घरकी मर्यादा पर नारीको त्यागो, परिग्रह है अनर्थ की खान ॥ २ ॥ क्रोध मान माया लोभ हटावो, राग द्वेपकी करदो तुम हान ॥ ३ ॥ कलह कलंक चुगली को मेटो, ना बोलो तुम बेजा जवान ॥ ४ ॥ रति अरति कपट से झूठ, यह सत्तरमा पाप पहचान ॥ ५ ॥ देव अदेव गुरु कुगुरु को, धर्म अधर्मकी करलो ज्ञान ॥ ६ ॥ इन पापो सेती करम बंधे है, तुम्बी के लेप समान ॥ ७ ॥ पाप हटे से हलका हो आतम, ध्यावो धर्म शुक्ल ध्यान-ध्यान ॥ ८ ॥ चौथमल कहे गुरु प्रसादे, पावेगा मुक्ति का स्थान ॥ स्थान मेरे प्यारे सत गुरु का सुनलो व्याख्यान ॥ ९ ॥

॥ नं० २४ तर्ज रेखता ॥

लगावो ध्यान प्रभु जिनका, जीना दुनियां में दो दिनका ॥ टेर ॥ उमर जाती है चली, चश्म खोल देखलो अली। भरोसा क्या जिंदगानी का, जीनां दुनिया में दो दिनका ॥१॥

गफलत में हाके मत सोया, इस कुनबे में क्यों मोवो । नहीं कोई साथ उस दिनका, जीना दुनिया में दा दिनका ॥ २ ॥ अर जेवर सजाना देख, गुड मान दूस के मत बैस । बुद बुदा जैस पानी का, जीनों दुनिया में० ॥ ३ ॥ जाना है जरूरी, क्यों मचावे है फर गम्दरी । इशारा लगा किन किनका जीनों दुनियां में० ॥ ४ ॥ चौथमल कहे सुणों प्यार, मन निरंजन निराकारे । मजा जो चाई अगर दिलका, जीनों दु नियां ॥ ५ ॥

॥ न० २५ तर्ज मटका गुयनदरे ॥

पलक २ आयु जायर चतनियां, पलक २ आयु जाय अर मेर कहन से करस्यारे सुकृत, पलक २ आयु जाय ॥ टेर । बाल पणों इस खेल गमाया, योवन तिरिया साथ । इद्ध पण के मांयनेरे, फेर बने कछु नाय ॥ १ ॥ मात पिता और स जन स्नेही, स्वाथ मेला थाय । जो स्वार्थ पूरो नहीं तो, तु ही मरखी जाय ॥ २ ॥ चार दिनाकी चांदनीरे, जिमपै रहे लोभाय । जया पुण्य वा सुट गयारे, फेर करेगो काय ॥३॥ गफलत में मत रहे दिवाना, सांची केउं चताय । ऐसा बरूत फर न मिलेरे, आग हुं प्रमाद कराय ॥ ४ ॥ सूतरको सुपन मिस्योरे, सत गुरु सेवा पाय । जनम सुधारो आपणोरे, घर करो चित लाय ॥ ५ ॥ वगणीसे चौसठ आपसारे, मन्दसो के मांय । गुरु प्रसादे चौथमल म आइ सभा में गाय ॥६॥

न० २६ तर्ज- कव्वाली

अरे देखी तुमारी अक्ल क्यों मुझ से कहलाते हो। बस बस वाह्जी वाह् खाली बाते बनाते हो॥ टेर ॥ अरे कोइ जानके आलिम दिया था ज्ञान हमने यह। अब मालुम हुआ हमको धोके बाजी चलाते हो॥ १ ॥ नहीं दया दानके हो तुम, नहीं कोइ लाज मर्यादा। नहीं कोइ खोफ परभव का मानु गुल्लर दिखाते हो॥ २ ॥ नहीं तप जप है करणी, नहीं कोइ त्याग पर परर्णा। नहीं जुल्मों से आते बाज, पेंच खाली झुकातेहो॥ ३ ॥ नहीं भलपन बने खुद से, बुराइ नेक की करते। बड अफसोसकी है बात, थान को क्यों लजातेहो॥ ४ ॥ खान पान ख्याल एशों में सजे पोशाक बुगवर्ती। तुमारी तुम जानो बाबा इतने किसपे ऐंठाते हो॥ ५ ॥ कहे यू चौथमल तुम से, बुरा मत मानियो प्यारे। सच्ची सच्ची कही हमने, अमल में क्योंनी लाते हो॥ ६ ॥

नं० २७ तर्ज– तीलंगी–दादरा

दया करने में जिया लगाया करो-दया करने में॥ टेर॥ चलो तो पहिले भूमि को देखो, छोटे मोटे जीव को बचाया करो॥ १ ॥ बोलो तो पहले दिलमें सोचलो, ना किसके दिल को दुखाया करो॥ २ ॥ वे हक का माल न खाओ कभी तुम ना पर धन्न पे ललचाया करो॥ ३ ॥ चाहे हो गोरी चाहे हो कारी, परनारी से निगाह न लगाया करो॥ ४ ॥ पास हे

माल खमाना तुमारे, पर जीवों का दुःख मिटाया करो ॥ ' थारों ही आहार न रात में मासा, ऐसी बातों का रि समाया करो ॥ ६ ॥ चौथमल कहे आठों ही पहर में, घड़ी प्रभु को ध्याया करो ॥ ७ ॥

न० ७८ तर्ज-पूर्ववत

प्यारे हिन्दू से कहना हमारारे । दया करना ही ' तुम्हारोरे ॥टेर॥ उत्तम कर्तव्य य जो तुम्हारे, क्यों तुमने उन बिसारारे ॥ १ ॥ दारु न पिना मांस न खाओ, लोका म ' शिकाररे ॥ २ ॥ हिंसा स दूर रहे सो हिन्दू, दिल में लो ' विचाररे ॥ ३ ॥ तीन घट ईसाई घड़े हैं, इनके पद पर गुर् रारे ॥ ४ ॥ विद्या पढ़ायो शास्त्र सिखायो, ऐसा एक हूं महाररे ॥ ५ ॥ चौथमल कहे अब भी चेतो, नहीं पर ' सुधाररे ॥ ६ ॥ इति

नं० ७९ तर्ज पूर्ववत

माम भमक्ष नर का न खानारे मांस ॥ टेर ॥ ज है बुरा दूर इस मांस आहार स । होता है जो पातकी दे विचार से । खास नरक में उसका ठिकानारे ॥ १ ॥ गोश जो उत्पत्ति कहो कम माव स, इस बुरा होगये मान सा स, खासी रिश्वत सक्त बनानारे ॥ २ ॥ डाक्टरों के केस दिल में क्या सो गौर । कितनी बढ़ी है बिमारियां समझो जग मोर । खानर आजर समानारे ॥ ३ ॥ एक मांस ह

पशु तक घास करे आहार । दोनोंकी सिफ्ते देखलो नर किस मे शुमार, कहे चौथमल त्यागे सयानारे ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ नं० ३० तर्ज नागजी की ॥

हंसजी थे मति जावो छोडनेरे या सुन्दर काया आपकी हो हंसजी ॥ १ ॥ हसजी तूं भवरो मे फूलेर कोई संयोगे आछा लगा हो हसजी ॥ २ ॥ हंसजी जग मग थारी जोतरे कोई काया महल मे खुल रही, हो हसजी ॥ ३ ॥ सुन्दरी थारा महोमें लागरे काइ, सुकृत करणी नाकरीहो सुन्दरी ॥४॥ हंसजी रणमे मारो कइ वाकरे कोई, मैं हाजर थांरे खडी हो हंसजी ॥ ५ ॥ हंसजी सज तनपे शृंगाररे कोई, इतर फुलेल लगाविया हो हंसजी ॥६॥ वैठी बग्गी मांय कोई वागांमें खाई हवा हो, हंसजी ॥ ७ ॥ हसजी माना मौजा खूबरे कोई, षट-रस भोजन भोगव्या हो हंसजी ॥ ८ ॥ हंसजी मानी न सत-गुरु शीखरे कोई, योवन छक व्याप्यो घणो हो हसजी ॥ ९ ॥ हसजी वाज्या नकारा कूचकारे कोई, अब पिछतावो है खरो, हो हंसजी ॥ १० ॥ हंसजी धर्म करो त्रिकालेर कोई, मैं करता आडी नहीं फिरी, हो, हसजी ॥ ११ ॥ हंसजी जो तुम तज सों मोयरे कोई, साथे मैं थासुं सती, हो हंसजी ॥ १२ ॥ चौथमल कहे एमरे कोई, धर्म सखाई परलोकमें, हो हं० ॥१३॥

॥ न० ३१ तर्ज ठुमरी ॥

अबे तो नहीं छोडागां प्रभु थानें ॥ टेर ॥ चौरासी लख भटकत आयो, आप मिल्यो नीठ माने ॥ १ ॥ जिम निम करने

शिव सुख दीजो, चोड़े क्रतु के छानें ॥ २ ॥ मन बिनां मारो मन हर लीनों शासनपति हुकमाने ॥ ३ ॥ तरण तारण विरद विहारो तीन लोक में जाने ॥ ४ ॥ चायमल थारे शरण आया तारो २ प्रभुमान ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ नं० ३२ तर्ज दिलजान से फिदाहु ॥

इस फूट ने बिगाड़ा, मिटे फूट हा सुधारा । टेर ॥ देखो भाइ भाई झगड़े, कोरट के बीच रगड़े । अभीमान बीच अकड़े, निर्लज्जपन यह धारा ॥ १ ॥ नहीं न्यात न्याव भावे, नहीं जात जात चावे । सब आप की जमावे, यह कायदा वि चारा ॥ २ ॥ नहीं लज्जा जात कुलकी, धुड़ को देत छलकी । जरा पंच लाज धरके, सुनते नहीं पुकारा ॥ ३ ॥ यह चाल कोई मिटावे, गुस्ताकी पेश आवे । बुजर्ग की नसीहत प करत नहीं विचारा ॥ ४ ॥ गए भूप बड़ा बड़ाई, जातिमें कर लड़ाई स्वधर्मी, धर्मी लड़के, नां इत्फाक कर बारा ॥ ५ ॥ कर्कई क वचनमें आके दिया राज यह भरत को । श्रीराम सम्प रखके वनवास का सिधारा ॥ ६ ॥ कहलाते जैनधर्मी, कषाय अंगि करते । अज्ञान अम्पता है, त्रिपरत्न को बिसारा ॥ ७ ॥ अप प्यार मित्र सब तुम, जरा चरम लाक देखा । बर्बाद हुवा यह आता, धन धर्म देश सारा ॥ ८ ॥ इस फूट से भारत में, नुकसान हारहाई । कहे चौथमल जल्दी, बजा सम्प का नकारा ॥ ९ ॥ इति ॥

नं० ३३ तर्ज पूर्ववत्

पिया की इन्तजारी में, जोगन वन फिरूंगी। जो कहे जहां पै ढूंढू, जाने से नां डरूगी॥ टेर॥ किसी ने कहा पिया तो, परवत की नोखपर है। वहां पर भी जाके देखा, ना मिला क्या करूगी॥ १॥ किसी ने कहा जा, मथुरा, किसी ने कहा के गोकुल। नां मिला वृन्दावन में। अव ध्यान कहा धरूंगी॥ २॥ कुमति के झासे में आके, पिया विसर गए हैं। वह मिल जाय एक विरीया, तो प्यार से लरूंगी॥ ३॥ पिया को संग लेकर, रहू ज्ञान के भवन में। कहे चोथमल पिया की, बैयां पकर तिरूगा॥ ४॥ इति

॥ नं० ३४ तर्ज मारोश्याम करेला अवधार॥

॥ घन श्यामरी म्हेमा अपार है॥ यह तर्ज

दया को लेवे दिल में धार, वो भव सिन्धुतिरे॥ टेर॥ दया धर्म सब में परधान। सब मजहब करते परमान। देखो सूत्र दरम्यान, वो भव सिन्धु तिरे॥ १॥ देखो नेमनाथ भगवान, त्यागी राजुल महा गुणवान, पशुओं पे करुणा आन, वो भव सिन्धु तिरे॥ २॥ धर्म रुची तपसी अणगार, कोडया की दया दिल विचार, कढवा तूवा को कीनो आहार वो भव सिंधुतिरे॥ ३॥ एक मेघरथ राजा हुआ भूपाल, शर्ण परेवो रख्योदयाल, कीना है काम कमाल, वो भव सिन्धुतिरे॥ ४॥ एक और हुवा शिवी राजान, कवूतर की बचाई जान है विष्णु मे

किस्सा बैसान, वो भव सिन्धु ॥ ५ ॥ नर्वा महम्मद हुवा दर्द तनको देना किया मजूर, फाकता पे कीनी दया पूर, वो भव सिन्धुविरे ॥ ६ ॥ दया हीय मत तजो तमाम, सब मजहब में योही निकाम, मानो यह सच्चा कलाम, वो भव सिन्धुविर ॥७ बैठो दया की जहाज हुसार भव सिन्धु दे पार उतार, येही है तप जप का सार, वो भव सिन्धुविरे ॥ ८ ॥ चौथमल कहे सुनो सुजान, दया धर्म महा सुख की खान, यह है वीर फरमान वो भव सिन्धुविरे ॥ ९ ॥ इति

॥ नं० ३२ तर्ज—मेरे रावन तू घमण्ड दिखाता ॥

अरे जुल्मी क्यों जुल्म पै बांधे कमर, सतियों का सताना अच्छा नहीं। जरा मनमें तो सोच क्या इसमें मजा दिल गैरों का जलाना अच्छा नहीं ॥ टेर ॥ मेरे रूप को देख आशक हुवा, आकरवत क जरा भी न ख्याल किया। पर हाथों से मुह क्यों तू काला करे, यह पाप दिखाना अच्छा नहीं ॥ १ ॥ पूर्व पाप किया जिससे छूटे पिया, बस गम से भी इलाह न हुवा जिया, कर जोड़ कहूं प्रभु ऐसी मुसीबत, दुश्मन में कभी आना अच्छा नहीं ॥२॥ मा मस्म हुवा न होगा कभी, परनारी पै जिसने ध्यान दिया, रहे दूर न हावर्ड इधर को तू, धर्म किसका गमाना अच्छा नहीं ॥ ३ ॥ देख रावन की कैसी खराबी हुइ, उसकी सोनेकी लंका पलकमें गई, और कीचक के हाथ से हाल हुवा माल परये लुभाना अच्छा नहीं ॥ ४ ॥

चाहे चान्द गर्म हो सूर्य भी शीतल, अरे समुद्र मर्य्यादा भी भंग करे, तोभी मन तो गिरीवत हिलता नहीं, नाहक दिल का ललचाना अच्छा नहीं ॥ ५ ॥ क्या मजाल कोई मेरा शील हने, मुझे मरने का खोफ जरा भी नहीं, मैं अच्छे के लिये चेताती तुझे, कुलमें दाग लगाना अच्छा नहीं ॥६॥ यह काम हराम वदनाम करे अरे मानकहा अरे मानकहा। कहे चौथमल समभावे मती, नहीं ध्यान में लाना अच्छा नहीं ॥ ७ ॥ इति

न ३६ तर्ज धूसो वाजेरे

सूत्र साचारे, वहा वा सूत्र सांचारे श्री वीर जिनेन्द ने फरमाया सूत्र साचारे ॥ टेर ॥ सरल अर्थ पञ्च वरण फूल ज्यूं, स्यादवादमें दर्शाया ॥ १ ॥ गणधर मिलने गुन्थन कीनो उत्सर्ग अपवाद दिखलाया ॥ २ ॥ सात नय और चार प्रमाण है, यथार्थ सन्धि मिलाया ॥ ३ ॥ पर्षापरस शब्द दोष रहित है, सत्य पत्थ प्रिय अति सुखदाया ॥ ४ ॥ तप क्षम्या अहिंसा वताई, सुण २ भवि जीव हुलसाया ॥ ५ ॥ भान्त भान्त का भाव दिखाया, सुरनर जाका पार नहीं पाया ॥ ६ ॥ तिरिया तिरे अनन्त तिरेगा, ईपरवचन जाने चित्त लाया ॥ सू० ॥ ७ ॥ चौथमल वाची वाचीने हर्षे सुणजो सारा वाया भाया ॥ ८ ॥ समत उगणी से ने साल तियोतर, चौमासो करवा जोधाणे आया। सूत्र सांचारे, वाह वाह सूत्र साचारे, श्री वीर जि० ॥ ९ ॥ इति

॥ न० २७ सर्जे गवरल ईशरजी कहे तो हसकर योलनारे ॥

चतन नर तन पाय धर्म शुद्ध धारजेरे, मिलिया नीठ ज मोक्ख जोग विचारजेरे ॥ टेर ॥ कक्का करजोड़ी निव वीर जिनन्द नें वन्दीयेरे। खख्खा खरची ल भरपूर, गग्गा गर्व थकी रहा दूर, घघ्घा घटमें प्रभु जरूर, नन्ना निरमल भावों थी निहारजेरे ॥ १ ॥ चच्चा चतुर छाड़ने मुक्ति लीजियेरे, छछ्छा छल छेदर ने काम्य, जज्जा जप जिनवर को जाप, झझ्झा झटपट होजा साफ, टट्टा टेक बुरी है दूर निवारजेरे ॥ २ ॥ ठठ्ठा ठीक करीने धर्म पिछानियेरे, डड्डा डगमग करिये नाँय ढढ्ढा ढाल धम्या की सहाय, तत्ता तप तलवारां ले ध्याय, थथ्था धीर भावां से पाप अरिने मारजेरे ॥ ३ ॥ दद्दा दान सुपात्र निरमल दीजियेरे धध्धा धर्म ध्यान नित्य ध्याय नन्ना नरक निगोद न जाय, पप्पा परमातम पद पाय, फफ्फा फेर सब मिट जाय मनमें विचारजेरे ॥ ४ ॥ बब्बा बालक बुध नें छाड़ तु विद्या सीखजेरे, भभ्भा भर्म मिटे सब मनका, मम्मा मत कर संग दुर्जन का, यय्या यतन करो नर तन फ रर्‍रा रत्न त्रिये विक धार जुग में सारजेरे ॥ ५ ॥ लल्ला लिखले निज स्वरूप स्वप्न जग जाणजेरे, वव्वा वीतराग देव, सस्सा समकित शुद्ध मम सब, शश्शा शास्त्र सुणों नित्य मेव, षष्षा षट्द्रव्यों का ज्ञान सदा विचारजेरे ॥ ६ ॥ हह हद से मात पिता को सेवनारे, क्षानी क्ष शिक्षा हित जान

मासो योधपुर सुभ स्थानरे कियो मुनि चौथमल ने आन,
त् उगणीसे तियोतर तू स्वीकारजे॑ ॥ ७ ॥ इति

॥ नं० ३८ तर्ज बनजारा ॥

ऐसे चेतन को समझाना, मत रख तन का अभिमाना ॥
॥ देखो सन्त कुमार था चक्री, गुल वदन देख रया अकडी
, खुद इन्द्र ने जाको वखाना, मत रख तन्न का अभिमाना
१ ॥ पुनः सुरने ख्याल नहीं कीनां, कर रूप विप्र का लीना
, आदेख वहुत हुलसानां मत रख तन्न का० ॥ २ ॥ सुनी
मान बिच छाया, अधिका श्रगार सज्जाया जी, वैठ सभामे
धराना ॥ मत रख तन्न का० ॥ ३ ॥ गले मणि मोतियन के
, सिर वींजे चवर जो न्यारा जी, अव निरखो कहे महा-
॥ मत रख० ॥ ४ ॥ अहो मन मोहन भूपाला, खूव
त हुश्न रसाला जी, सो देखत ही पलटाना ॥ मत रख तन्न
॥ नृपति भेद सव पाई, तुरत अशुच्चि भावना भाईजी,
राण्यां का दिल घवराना ॥ मत रख तन्न० ॥ रम झम से
झट दोरी, कहे मधुर वैन कर जोरी जी, मान मत छोडो
ताना ॥ मत रख० ॥ ७ ॥ सखी वन्न दोलत राजधानी,
आती सग दिवानी जी, अल्प सुखों मे नाहक वेखाना ॥
रख तन का ॥ ८ ॥ मुनि चौथमल यू केवे, तप संयम
ग लेवेजी, यू केवल मोक्ष सिधाना ॥ मत रख तन्न का
॥ इति

॥ न० ३९ तर्ज पूर्ववत् ॥

क्यों गफलत में रहत दिवाना इस तन का क्या है ठिकाना ॥ टेर ॥ जिया दम आवे दमा नहीं आवे, उठ चला एक दम आवे जी, नो रहत किसी का रत्वानो ॥ इस तन का क्या है ॥ १ ॥ गुरु वदन देख घुमरावे, तू इत्तर फुलेल लगावे जी, टेढी पगडी बांध अकडाना ॥ इस तन का ॥ २ ॥ मुनि हित कर ज्ञान सुनावे, तू जरा लोक नहीं लावजी, रहे कुटुम्ब बीच लिपटानो ॥ इस तन ॥ ३ ॥ देखो हीरा कञ्चन मोती सन्मुख कई अवसम खोतीजी, सब धरा रहत खजाना ॥ इस तन का ॥ ४ ॥ जिया जैसे मिट्टी का मटका, जहां लग नहीं लगता ठपका जी, तरे मरना होय सो मरानो ॥ इस तन का ॥ ॥ ५ ॥ मुनि चोथमल का कहना, जीया नाम प्रभु का कहना जिया नाम प्रभु का लेमणजी मत पुद्गल में ललचानो ॥ इस तन का ॥ ६ ॥ इति

॥ नं० ४० तर्ज पूर्ववत् ॥

श्री वीर कहे निरधारा सुन गौतम वचन हमारा ॥ टेर ॥ यह धर्म अधर्म आकासा, काल जीव और पुद्गल खासाजी, यहही लोक मुख विकारा ॥ सुन गौतम वचन ॥ १ ॥ जीव पुद्गल विभाग परिणामी, बाकी चारों ही अपरिणामीजी, एक जीव और जड सब्धारा ॥ सुन गौतम वचन ॥ २ ॥ एक रूपी पुद्गल जानो, पांचों अरूपी पहचानाजी, काल वरजी

देशी सारा । सुन गौतम ॥ ३ ॥ धर्म अधर्म नभ एक एक
ल जीव और पुद्गल अनेकाजी, नभ क्षेत्र और अधेय
वारा ॥ सुन० ॥४॥ जीव पुद्गल कीरीया वाना, छोड
त्या नित्य वखानांजी, पट में जीव कारण है प्यारा ॥ सुन०
॥ जीव पुद्गल करता कहावे सर्वव्यापी नभ रहावेजी, पांचो
क मात्र सुमारा ॥ सुन० ॥६॥ अमर में सर्व समाया,
र नीर के न्याय वताया जी, चौथमल श्रेयकारा ॥सुन० ॥७॥

इतिः

नं० ४१ तर्ज पूर्ववत्

श्री महावीर फरमावे, सत संग का फल वतलावे ।टेर।
म श्रवण फल लो जानी, दुजा वनता है वोह ज्ञानीजी,
ा विज्ञानी हो जावे ॥ सत संग का ॥१॥ चौथे होवे वो
गी, पञ्चम संयम में अनुरागी जी। छटे आश्रव दूर हटावे ॥
संग का ॥२॥ सप्तमें तपस्या का अभ्यासी, अष्टमें वोध
स्वयम् प्रकाशीजी नवमें अयोगी कहावे ॥ सत० ॥३॥
में सिद्ध पद पावे, फिर आवागमन नही आवेजी चौथमल
गावे, सत संग का ॥४॥ इतिः

नं० ४२ तर्ज पन्नजी मुडे वोल

ऋषभजी मुडे वोल, वोल वोल आदेसर वाला कइ थारी
जीरे, मासू मुडे वोल, वोल वोल मारा ऋषभ कनैया, कांई
ो मरजीरे मासू मुडे वोल ॥ टेर ॥ सुणी आज मारो

खल पधारया, वनिता वाग के माईरे, तुरत गज असवारि करने, आई उमाईरे ॥ १ ॥ रयो मजामें है सुख शाता खूब किया मन भायारे । एक कहन या थांसू खस, मोहा क्यो आयारे ॥ २ ॥ खैर गुई अब हुइ न होवे, एक वार मली नहीं कीदीरे । गया पाछे कागद नहीं भेज्यो मारी खबर न लीदीरे ॥ ३ ॥ वार तैवारे भोजन मांगे, ताता केही भावोय थारी याद में ठंडा होता, पूरा नहीं भावारे ॥४॥ बोलो बोल मासू बोला, बोलो बोलो बोलो रे बोलो बोलो जस्दी सुनन मे खाली लाडोरे ॥ ५ ॥ थे निर्मोही माइ नहीं आण्यो, मैं मोह कर कर हारीरे। मोरा बेवी गज हावे गई, मोक्ष मझारीरे ॥ ६ ॥ समत वगणीसे साल चौसठे, भोपाल मेल्य कारीर । गुरु प्रसादे चौथमल कहै, धर्म्म मइारीरे ॥ ७ ॥

न० ८३ तर्ज पूर्ववत

ॽ रसना सीधी बोल थारे कायजेिये जीव न दुखवा उपज ए ॥ टेर ॥ पांचों माही तूं हीज मुखिया अजब गजब नख राही ए । ऊंच नीच नहीं साचे बोले, मिट्टी भाड़ी ए ॥ १ ॥ माधव से सीधी नहीं बोली लंक जरा नहीं सारी ए । कौरव पाण्डव युद्ध कराया, माहभारत साखी ए ॥ १ ॥ बसुराजा झूठ बोलने नरक बीच में जावे ए । दुष्ट प्रताप बालकी मच्छी प्राण गमावे ए ॥ ३ ॥ एक २ अवगुण मर्वे इन्द्रि में, चौडे दि वखाण ए । साप बिगाडे बोल बिगाड, तुम में दोय

रहोवे ए ॥ ४ ॥ ख्याल राग तो विना सिखाया, तुझ नै केई आवे ए । धर्म तणां अक्षरकी कहता, तू नट जावे ए ॥ ५ ॥ लपर २ बोले क्षण पग मे, दे तू राड कराई ए, पंचों मे तू काज विगाड़े, गावो में फुट नकाई ए ॥ ६ ॥ लाल वाई और फुल वाई, ई दोनो नाम है थारा ए। मान वडाई की वात कीने, थे जन्म विगाडा ए ॥ ७ ॥ परका मरम प्रकाशे तू तो, अंशी निश करे लपराई ए । साधु सातिया से तू नही चुके, करे वुराई ए ॥ ८ ॥ मत बोले बोले तो मोके, मन में खूब विचारी ए । प्रिय वोले मर्म रहित तू, मान निवारी ए ॥ ९ ॥ सूत्र के अनुसारे बोल्या, सर्व जीव सुख पावे ए । महावीर भगवान कहे वो मोक्ष सिधावे ए ॥ १० ॥ असत्य और मिश्र भाषा, वीर प्रभू ने वरजी ए । चौथमल कहै सत्य व्यवहार, भाषे मुनि वरजी ए ॥ ११ ॥

नं० ४४ तर्ज पूर्ववत्

काया काचीरे कर धर्म ध्यान मे कहूं छूं साचीरे ॥ टेर ॥ देखी सुन्दर काया काची, जामे जीव रयो राचीरे, भीतर भगारहै वाहर कलीया, लिजे जाचीरे ॥ १ ॥ इस काया का लाड लडावे, मल २ स्नान करावे रे । निरख काच में पेच झुकावे, पोशाक सजावेरे ॥ २ ॥ गुलाब मोगरा को इतर डारी, मूछा वट लगावेरे । केशर चदन को तिलक लगावे, सैला में जावेरे ॥ ३ ॥ कठी डोरा गोप गलामें, काना मोती सोवेरे ।

म्हल पधारय्या, बनिता बाग के माहीरे, तुरत गज असवारी करने, आई छमाहीरे ॥ १ ॥ रयो मजामें हे सुख शाता, खूब किया मन भावीरे । एक कहन या मांस् भाख, मोटो क्यो आयोरे ॥ २ ॥ मेरा हुई अण हुइ न होवे, एक बात भली नही कीदीरे । गया पाछे कागद नही भेज्यो, मारी खबर न लीदीरे ॥ ३ ॥ बार वीवारे भोजन मांगे, ताता केही भावोरा मारी याद में ठंडा होता, पूरा नही मावार ॥४॥ बोळो बोळो मास् बोळे, बोळो बोळो बोळो रे खोळो खोळो जल्दी सुनन ने खाळो खोलोरे ॥ ५ ॥ वे निर्मोही माह नही आव्यो, में मोह कर कर हारीरे। मोरा दुखी गजे हाले गई, मोस मइारीरे ॥ ६ ॥ समत उगणीसे मास चोसठ, मोपाळ सेस कारीर । गुरु प्रसादे चौथमल कहे धर्म्म महतारीरे ॥ ७ ॥

न० ४२ तर्ज पूर्ववत्

रसना सीधी बोल थारे कारणेसे जीव न दुखाय जपर ए ॥ टेर ॥ पोर्चो माही सु हीज मुखिया, अजब गजब नख यारी ए । ऊच नीच नही साचे बोले, मिट्टी खारी ए ॥ १ ॥ माधव से सीधी नही बोली धक जय नही खारी ए । कौरव पाण्डव युद्ध करयया, माहभारत साक्षी ए ॥ १ ॥ वसुराजपी झूठ बोलने, नरक बीच में जावे ए । सुभ्म प्रताप सबकी मच्छी प्राण गमावे ए ॥ ३ ॥ एक २ अवगुण सबे इन्द्रि में, थोडे है बर्णाने ए । काय बिगाडे बोल बिगाडे, दुख में होय

अडव खडव को माल हुआ पण, श्रद्धा रत्न नही पायारे, आंख बिना जिम सुन वृथा, बिन नाक ज्यूं कायारे ॥ ५ ॥ श्रद्धा भ्रष्ट परसमकित् लूंट, द्रव्य लिंग ने राखीरे । जाको संग महावीर जिनेश्वर आचारंग स खीरे ॥ ६ ॥ चरित्र भ्रष्ट जावे कब मुक्ति, दर्शन भ्रष्ट नही सीजेरे, वीर वतायो सूत्र भगवती, जोई लीजेरे ॥ ७ ॥ श्रेष्ट दया धर्म ने दुगंच्छे, हिंसा धर्म प्रसंशेरे, आदर कुवार क्यों सुयगडांग में, ते मिथ्यात्व निशंसेरे ॥ ८ ॥ पर दर्शन को परच्यो कीदो, सम्यक्त्व रत्न गमावेरे, नंदन मणियार हुवो ददुर, ज्ञाता सुनावेरे ॥ ९ ॥ कामदेवजी अरणक जीने, देव परीसो दीन्होरे । द्रढ रहा धर्म के माही प्रभु गुण कीनोरे ॥ १० ॥ उगणीसे बहोतर साल मे पच भद्रा के माहीरे । चौथमल कहे गुरु प्रसादे, श्रद्धा राखो सवाईरे ॥ ११ ॥ इति

॥ न० ४६ तर्ज ॥

❀ जसोदा मैया अबना चराउं तेरी गैया ❀

मौरादे मैया प्यारा लगे तेरा जैया । मुरादे मैया वालां लगे ॥ टेर ॥ मस्तक मुकट काना जुग कुण्डल, तिलक लिलाट लगैया, रतन आंगणियें रमझम खेले, त्रिलोकी के रिझैया ॥१॥ कोई इन्द्राणी प्रभु को खिलावे, कोइयक ताल वजैया । कोई यक नृत्य करे प्रभु आगे, नाचे ता ता थैया ॥ २ ॥ छुम छुम छुम छुम बाजे घुघरा ठुम ठुम पाव धरैया । द्रव्य खेल खेलीने

सम काया निरख तो चाले, पर गोरी से मावेरे ॥ ४ ॥ स्त्रिया छम में विडामा का सीरा, मिपम भोग ठंडाई रे । चौमासा में माल मिठाई लावे, बाग्या में जाई रे ॥ ५ ॥ इस कर रत्न करण्डिया जिमे, रखे शत्र छग आवे रे । चाहे जितना करो जावता, था नहीं रहावे रे ॥ ६ ॥ सन्त कुमार चक्रवर्ती की, प्यारी देह पस्तावे रे । काया के बस मन का हामी भी, दु'ख पावे रे ॥ ७ ॥ इस काया का क्या विश्वासा, पानी बीच बतासा रे । होळी जैसे देवे फूक, जीव भय इवासा रे ॥ ८ ॥ उत्तम मनुष्य की काया ऐसी, फिर मिले कब पाछी रे । दया दान तप करणी कर, ले यही आच्छी रे ॥ ९ ॥ उगणीसे बहोतर बसन्त पञ्चमी, बालोतरा के मांहीरे, गुरु प्रसादे चौथ मल कहे, साथ ठाणा सुखदाई रे ॥ १० ॥ इति

नं० ४५ तर्ज पूर्ववत्

भद्धा सूधी राख बिना भद्धा के जीवडो बर्ड दिश भद केरे ॥ टेर ॥ सम्यक्त्व अमूल्य रत्न जाणी ने, खूब जतन करि राखोरे । जोहरी हो पहिचान करो, मिथ्यात्व ने नाखोरे ॥१॥ देव अरिहन्त गुरु निग्रन्थ धर्म दयामय धारोरे । षट द्रव्य नव तत्व को जाणी, भद्धा विचारो रे ॥ २ ॥ सुदर्शन की सेवा कीजे वीतराग फरमावेरे, सम्यक्त्व, विभाग ने वनणा कीरा समाकित आवेरे ॥ ३ ॥ पद म पा का भणवारा, पंडित कई पुकारेरे, भद्धा बिन वैश्या जैसा, कबु न तारेरे ॥ ४ ॥

नं० ४८ हो उमराव थारी सूरत प्यारी लागे मांकाराज।

काया कर जोडी कहेरे सुन वहाला मुझ वात-वाल पणा कि प्रीतडीरे, मत छोडो मुझ सात ॥ १ ॥ हो हसराज थासु न्यारी में नहीं रेमा माकाराज ॥ टेर ॥ हसराज जी हो प्यारा जी, दूध माहीं जेमे घी वसेरे, फूल में वसे सुगंध ज्यू मारा तन मे वसोरे, तिल में तेल सवन्ध ॥ २ ॥ हो हंसराज वर-जोडी को न्याय विचारो माकाराज ॥ टेर ॥ हसराज जी हो प्यारा जी प्यारा बिन प्यारी कसीरे, ज्यू चन्द्र विना कीरणे, आप विना आदर नहीरे, कोयन राखे मेण, हो हंसराज मारी विनतडो अवधारो माकाराज ॥ ३ टेर ॥ हसराजजी हो प्यारा जी, सुन्दर सेजा वीचमेरे कीदी खूव किलोल, नेणा से आसु झरेरे मुख से सको न वोल ॥ ४ ॥ हो जीवराज थाने मरजी मासु उतारी माकाराज ॥ टेर ॥ हसराजजी हो प्याराजी, चेतन कहे सुन सुन्दरीरे, मारे थासु पूरी प्रीत, स्वपना में छोडु नहीरे मन मे वात खचीत ॥ ५ ॥ हो पण काल के आगल चाले नी जोर हमारो माकाराज ॥ टेर ॥ काल वेरी माने नहीरे खरची में नही तन्त, चिन्ता छे इण वात कीरे परभव मोटो पंथ ॥ ६ ॥ हो सुन्दर प्यारी इणमें राय कई थारी मांकाराज ॥ टेर ॥ इण तन्न सुण सायवारे तिरिया जीव अनन्त, जप तप करणी था करोरे शेवो गुरु निर्ग्रंथ ॥ ७ ॥ हो हसराज यो नर कर्तव्य मे वनलोवा माकाराज ॥ टेर ॥ पहली तो

हागये, आतम खेल खिलैया ॥ ३ ॥ सब से पहले निज जननी को शिवपुर बीच पठैया । चाथमल्ल कहे नित्य उठ ध्यावो ऐसे ऋषम कन्हैया ॥ कन्हैया भैया प्यारा जग वेरा भैया ॥ मुरारे ॥ ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ नं० ४७ तर्ज कव्वाली ॥

कभी भोगोंसे इस दिल को, सबर हर गिज नहीं आता चाहे सहनशाह बने क्योंनी, सबर हरगिज नहीं आता ॥ टेर ॥ चाहे हा महल रत्नों का, सब्बी हो सेज फूलों की ॥ मिले अप्सरा अजब सुन्दर, सबर हरगिज नहीं आता ॥ १ ॥ होके चक्रवर्ति राजा, रखा सरताज भारत का । चले भी हुकम लाखों पे सबर हरगिज नहीं आता ॥ २ ॥ सजी पोशाक भी इत्तर बैठ कुर्सी पै सुन्दरस्वरूप । गल हो हार मोत्योंका, सबर हरगिज नहीं आता ॥ ३ ॥ चाहे गुलशन की करलो बहार, अजाब घरकी हवा खाओ । सवारी रेल मोटर की, सबर हरगिज नहीं आता ॥ ४ ॥ सुन्दर दुलहन क संग में, मिला के हराव आपस में । घूमे कल्पवृक्ष की छायां, सबर हरगिज नहीं आता ॥ ५ ॥ त्रिखण्डी नाथ भी कहला, हो मण्डलिक राज्य अधिकारी । स्वर्ग क भोग भी भोगे, सबर हरगिज नहीं आता ॥ ६ ॥ चौथमल कहे इन भोगों से, गया नहीं कोय तरपत होय । निजातम ज्ञान क प्यारों, सबर हरगिज नहीं आता ॥ ...

नं० ४८ हो उमराव थारी सूरत प्यारी लागे मांकाराज।

काया कर जोडी कंहरे सुन वहाला मुझ वात-वाल पणा कि प्रीतडीरे, मत छोडो मुझ सात ॥ १ ॥ हो हसराज थांसु न्यारी में नहीं रेसा माकाराज ॥ टेर ॥ हसराज जी हो प्यारा जी, दूध मांहीं जेमे घी वसेरे, फूल में वसे सुगंध ज्यूं मारा तन्न में वसोरे, तिल में तेल संवन्ध ॥ २ ॥ हो हंसराज वर-जोडी को न्याय विचारो माकाराज ॥ टेर ॥ हसराज जी हो प्यारा जी प्यारा विन प्यारी कसीरे, ज्यू चन्द्र विना कीरणे, आप विना आदर नहीरे, कोयन रारवे मेण, हो हसराज मारी विनतडी अवधारो माकाराज ॥ ३ टेर ॥ हसराजजी हो प्यारा जी, सुन्दर सेजा वीचमेरे कीदी खूब किलोल, नेणा से आंसु झरेरे मुख से सको न वोल ॥ ४ ॥ हो जीवराज थाने मरजी मांसु उतारी माकाराज ॥ टेर ॥ हसराजजी हो प्याराजी, चेतन कहे सुन सुन्दरीरे, मारे थासु पूरी प्रीत, स्वपना में छोडु नहीरे मन मे वात खचीत ॥ ५ ॥ हो पण काल के आगल चाले नी जोर हमारो माकाराज ॥ टेर ॥ काल वेरी माने नहीरे खरची में नही तन्त, चिन्ता छे इण वात कीरे परभव मोटो पंथ ॥ ६ ॥ हो सुन्दर प्यारी इणमें राय कई थारी मांकाराज ॥ टेर ॥ इण तन्न सुण सायवारे तिरिया जीव अनन्त, जप तप करणी था करोरे शेवो गुरु निग्रथ ॥ ७ ॥ हो हसराज यो नर कर्तव्य में वनलोवा माकाराज ॥ टेर ॥ पहली तो

होगये, आतम सख सिखैया ॥ ३ ॥ सब से पहले निज जननी को शिवपुर शीघ्र पठैया । चोथमल कहे नित्य उठ ध्यावो ऐसे ऋषभ कन्हैया ॥ कन्हैया भैया प्यारा जग तेरा भैया ॥ मुरादे ॥ ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ नं० ४७ तर्ज कव्वाली ॥

कभी भोगोंसे इस दिल को, सबर हर गिज नहीं आता चाहे शहनशाह बने क्योंनी, सबर हरगिज नहीं आता ॥ टेर ॥ चाहे हो महल रत्नों का, सजी हो सेज फूलों की। मिले अप्सरा अजब सुन्दर सबर हरगिज नहीं आता ॥ १ ॥ होके चक्रवर्ति राजा, रखा सरताज भारत का । चले भी हुक्म लाखों पे सबर हरगिज नहीं आता ॥ २ ॥ सजी पोशाक क्या ह्वर बैठ कुर्सी पै सुन्दरसग । गले हो हार मोत्योंका सबर हरगिज नहीं आता ॥ ३ ॥ चाहे गुलशन की करलो बहार, अजाब परकी हवा खालो । सवारी रेल मोटर की, सबर हरगिज नहीं आता ॥ ४ ॥ पुत्रहा पुत्रवत क संग में, मिला के दराव आपस में । घूमे कल्पवृक्ष की छाया, सबर हरगीज नहीं आता ॥ ५ ॥ त्रिखण्डी नाम भी कहन्ना, हो मण्डलिक राज्य अधिकारी । स्वर्ग के भोग भी भोगे, सबर हरगीज नहीं आता ॥ ६ ॥ चौथमल कहे इन भोगों से, गया नहीं कोय तरपत होय । निजातम ज्ञान के प्यारों, सबर हरगीज नहीं आता ॥ ७ ॥ इति ॥

नं० ४८ हो उमराव थारी सूरत प्यारी लागे मांकाराज।

काया कर जोडी कहेरे सुन वहाला मुझ वात-बाल पणा कि प्रीतडीरे, मत छोडो मुझ सात ॥ १ ॥ हो हसराज थांसु न्यारी में नहीं रेसां माकाराज ॥ टेर ॥ हंसराज जी हो प्यारा जी, दूध मांहीं जैमे घी वसेरे, फूल में वसे सुगंध ज्यूं मारा तन में वसोरे, तिल में तेल संवन्ध ॥ २ ॥ हो हंसराज वर-जोडी को न्याय विचारो माकाराज़ ॥ टेर ॥ हसराज जी हो प्यारा जी प्यारा विन प्यारी कसीरे, ज्यू चन्द्र विना कीरणे, आप बिना आदर नहींरे, कोयन राखे सेण, हो हंसराज मारी विनतडी अवधारो माकाराज ॥ ३ टेर ॥ हसराजजी हो प्यारा जी, सुन्दर सेजा बीचमेरे कीदी खूब किलोल, नेणां से आंसु झरेरे मुख से सको न वोल ॥ ४ ॥ हो जीवराज थाने मरजी मासु उतारी माकाराज ॥ टेर ॥ हसराजजी हो प्याराजी, चेतन कहे सुन सुन्दरीरे, मारे थासु पूरी प्रीत, स्वपना में छोडु नहीरे मन मे वात खचीत ॥ ५ ॥ हो पण काल के आगल चाले नी जोर हमारो माकारा न ॥ टेर ॥ काल वेरी माने नहीरे खरची में नही तन्त, चिन्ता छे इण वात कीरे परभव मोटो पंथ ॥ ६ ॥ हो सुन्दर प्यारी इणमें राय कई थारी माकाराज ॥ टेर ॥ इण तन्न सुण सायवारे तिरिया जीव अनन्त, जप तप करणी था करोरे शेवो गुरु निर्ग्रंथ ॥ ७ ॥ हो हसराज यो नर कर्तव्य में चलोवा मांकाराज ॥ टेर ॥ पहली तो

भेस्यो नहीरे, थारा मही में आग सोगां में गिरधी हुवोरे, देख्या ख्याल सुणाया राग ॥ ८ ॥ हो सुण सुन्दर प्यारी मन की मोजां कीदी मोकाराज ॥ टेर ॥ धर्म करन्या नहीं मटीरे, फिर भी कहूं हजूर, पाछला खेती नीपजेरे, थोड़ी दारीवर दूर ॥ ९ ॥ हो हंसराज प्यारा वृथा खाक मत फाको मोकाराज ॥ टेर ॥ आप हो यहां तक मै रहूंरे फिर होवी वह जब खाक मूंठी जो पुण में ढुबे तो खाक मरे सारी साख ॥ १० ॥ हो हंसराज यो सती को धर्म बतायो मोकाराज ॥ टेर ॥ जीवत सकल्प सबीरे काया बोछे नाप चौवमल था चोथ लगाई मी सभा में गाय, हो हंसराज बोत बिम बिम कर समझाता मोकाराज ॥ टेर ॥ हंसराज हो प्याराजी

नं० ४९ तर्ज बड़ी मुश्किल कठिन फकीरी

जो ब्रह्मचर्य धरता है, वो उसका बेड़ा पार है, जो ॥टेर॥ महावीर स्वामी फरमावे, शील तणी रक्षा बतलावे, स्त्री पशु पंडुग जहां रहावे, वहां बसे नहीं ब्रह्मचारी है, मिली से चूहा डरता है ॥ १ ॥ कल्पा करे नहीं नारकी प्यारी, जिन्दू हमको न्याय विचारी, बैठी स्त्री सो मूं दे टारी, पूत अग्नि के अनुसार है नहीं फर्क जरा पड़ता है ॥ २ ॥ तिरिया तन का नाम निहारे, कच्चे नेन ज्यूं सूर्य से टारे, पेचान्तर सावे नर नारे, मानु ऐसे भेष गुआर है, सुण मोर मस्य करता है ॥३॥ पुर्व काम नहीं चिंते अगारी बदाव धाप न्याय धरधारी बलीष्ट

भक्त नित्य देत निवारी ज्यूं रोगी का करत बिगाड है नही नफ्स कभी मरता है ॥ ४ ॥ सीत भोजन अति नही खावे, ज्यूं छोटी हंडी फट जावे; तन्न स्नान सोभा नही चावे, नहीं सज्जता तन्न शृगार है, रंक रत्न न्याय वरता है ॥ ५ ॥ प्रश्न व्याकरण संवर जाहरी, वतीस ओपमा हैगी भारी, वृत मे दुशकर दुशकर कारी, वह स्वयंभू रमण मे पार है, वही गंगा तुरत तिरता है ॥ ६ ॥ उगणीसे बहोतर का साल है, पालणपुर चोमासो रसाल है, गुरु मेरे श्री हीरालाल है, कहे चाथमल श्रेयकार है, तो सर्व कार्य सरता है ॥ ७ ॥ इति

नं० ५० तर्ज पूर्ववत्

मन चंचल की गत भारी, जा छिन मे कोस हजार है ॥ टेर ॥ मन काम और मन भोग में, कभी खुशी और कभी शोक में । मन ससार और योग में, नही इसकी लहर का पार है ॥ वायु से अधिक करारी ॥ १ ॥ मन सेठ और चोर है, मन निर्बल मन सीत जोर है । पलक २ में मन और है, इस मन के हारे हार है मन जीते जीत हो सारी ॥ २ ॥ मन विलायत फ्रास में जावे, जापान रूस सार्वेया फिर फिर आवे । दिल्ली का शहनशाह बनजावे, इस मन के मते अपार है ॥ कोई वीर रखे मन वारी, ॥ ३ ॥ मन सुधार बिगाड करावे, तंदूल मच्छ को नरक पठावे । भरतेसर केवल पद पावे यह रावन हरी परनार है ॥ ब्रह्मदत्त को किया खुवारी ॥ ४ ॥

इस तन मे म्हे कन्या प्यारी, सूहा पुत्र गृह मञ्जारी। हरिया बइल देखे महतारी, शत्रु मित्र निहार है । मन है विष पड़दा भारी ॥ ५ ॥ भजन और मनन अमल में लावे, ज्ञान ध्यान सहज थई आवे। मन घोरन काबू में आवे, फिर तो माल तैयार है। अब बोले सब वाडिहारी ॥ ६ ॥ गुरु हीरालाल सदा सुख दाई, चौथमल जोड़कर गाई। थोमासो पालनपुर मांई, बत्तीसे बड़ोवर हितकार है, सुनना सब नर और नारी, ॥ ७ ॥ इति ॥

नं० ५१ लावनी अष्टपदी

दयाको पाले है सुभवान दयामें क्या समझे हैवान ॥टेर॥ प्रथम तो जैन मत मांई, चौबीस जिनराज हुवे मांई मुक्ख आने दयाही बतलाई, दया बिन धर्म कछो नाई

॥ दोहा ॥

धर्म रुचि करुणा करी, नेम नाथ महाराज।
मेघरथ राजा परेवो सरणे, रखकर सारया काज ॥
॥ मि ॥ हुए श्री शान्तिनाथ भगवान ॥ १ ॥ दूसरो विष्णु मत माहीं, हुवे श्रीकृष्णादिक साईं, गीता और भागवत कीनी, और वेदोंमें दया भीनी ॥ दोहा ॥ दया सरीखो पुण्य नहीं, अहिंसा परमो धर्म। सर्व मत और सर्व ग्रंथ में यही धर्म का मर्म ॥ मि ॥ देखलो निज शास्त्र धर ध्यान ॥ २ ॥ तीसरा मत है मुसलमान, खालक देखो उनकी कुरान, रहेम नहीं होवे जिसके दिल ध्यान, उसीको बयरहिम जो जान ॥दोहा॥

कहेत महम्मद मुस्तफा, सुन लेना इन्सान । दुख देवेगा किसी जानको, वोही दोजख की खान ॥ मि. ॥ मार जामुदगलकी पहचान ॥ ३ ॥ लानत है उसी मत तांइ, जिसी में जीवदया नाहीं, जीव रक्षा में पाप केवे, दुख दुर्गति को वह सेवे ।दोहा। माहण २ वचन है, देखो आख्या खोल। सूत्र रहस जाणे नहीं मूर्ख, खाली करे झकझोल, कहो चातुर कहें के अज्ञान ॥४ ॥ ऐसे तीन मजहव के कह दिये हाल, इसीपे कर लेना तुम ख्याल, दो अब कुगुरु का सग टाल, वणो तुम पटकाया प्रति पाल ॥ दोहा ॥ गुरु हीरालालजी के हुक्म से, नाथ दुवारा माय, कियो चोमासो चौथमल, उन्नीसे साठ में आय ॥ मि. ॥ सुण के जीव रक्षा करो गुणवान ॥ ५ ॥

नं० ५२ तर्ज पूर्ववत्

सुगुरु सग धार धारेर धार, कुगुरु संग टार टारे टार ॥ टेर ॥ मनुष्य को जनम अमोलक पाय, अरे चातुर मत अहल गमाय, हाथ से वाजी तेरी जाय जिनन्द गुण गाना हो तो अब गाय ॥ दोहा- वख्त अमोलक पायके, मत हो मित्र अचेत । गफलत में मत रेवो रात दिन, काल झपटा देत ॥ मिलत ॥ मोह की नीन्द निवार निवार ॥ १ ॥ मति तेरी कुगुरुन दिवी विगाड, करे तू हिंसा सखी का लाड, दीनी तेने सुन्दर को ताढ खोल्या तेने दुर्गति के किवाड ॥ दोहा- अनन्त काल तो खोया इस विध, फेर गमावे राम । अमृत छोड खाय

बाहर हलाहल, करो कैसे चपत्र खेम। मिथ्व ।। सबर नहीं पकर्ट शुभ सगार ॥ २ ॥ मस्त मगर हा क तू फिरता, जुल्म करने से नहीं डरता, गरीबों से ठट्टा ही करता, सत्य उपदेश नहीं भरता ॥ दोहा—तु जान मैं बड़ा चातुर हूं, मेरे सिवा नहीं और, धन धर्म का मर्म नहीं पायो, रह्यो ढोर को ढोर ॥ मिथ्व ॥ तजा नहीं क्रोध मान अहंकार ॥ ३ ॥ धर्म को नहीं पहिचाने है, मूर्ख नर अपनी ताने है, जैन की रहस न जाने है, मिथ्या मत में मर माने है ॥ दोहा ॥ तत्व ज्ञान खोजा से पावे बिन खोजा नहीं पाय, मकबम सो काई सिरका होगए, काय जगत भर जाय, मिथ्व, भमतघू चौरासी मूझार ॥ ४ ॥ मेरे आनन्द का दिन आया, दर्शन जिन घर का में पायो, हुवा सेव कार्य मन भाया, मिलि मुक्त समकित माया ॥ दोहा ॥ बत्तीस से पैसठ साल में, कातक चौमासो ठाय, गुरु हीरालाल प्रसादे चौथमल जोड़ सभा में गाय, मिथ्व । सोभना करो भरे नर नार ॥ ५ ॥

नं॰ ५३ तर्ज पूर्ववत्

पाये भरखों का कहु बयान, सुनो सब जगा के अपना ध्यान ॥ टेर ॥ सत्रु मित्र हे एक समान इन्द्रि पांचों को दमेहित जान, तपस्या करे सौख्य तिज ध्याय, सन्तोष को रखे यह गुण मान ॥ दोहा ॥ क्षम्या नम्र और सरल हो, करे ज्ञान अभ्यास, दया धर्म नित्य आतम मान करे सत्य

प्रकाश, मिलत, यह गुण ब्राह्मण के पहिचान ॥१॥ दूसरे क्षत्री है जो धीर, शौर्यता रक्खे दिल मे वीर, तेज प्रतापी हरे पर पीर, हंस जू न्याय करे पय नीर ॥ दोहा ॥ व्यभिचार को त्याग के, आतम जीत त्रिकाल, क्षम्यावन्न ब्रह्म सेवा सारे, दाता प्रजा पाल ॥ मिलत, करे रक्षा जा शरण रहे आन ॥ २ ॥ वैश्य वरण में जव मपती, देव गुरु की करे भक्ति, दान को देवे निज शक्ति, वरण त्रिय रोवे यथा युक्ति ॥ दोहा ॥ नित्य उद्यमी निपूण हो तजे नास्तिक भर्म, तीन वरन की करे चाकरी सो शुदर का कर्म, मिलत, लिखा यह शास्त्र के परमान,॥३॥ सन्यस्थ जो तजे जक्त कि आश, काटे वोह लखे चौरासी की फांस, ग्रहस्त का धर्म कहुं में खास, धरे वो वाराव्रत हुल्लास ॥ दोहा ॥ उन्नीसे तीयोतर साल में येन्द्रपुर के माय, गुरु हीरालाल प्रसादे चोथमल जेड सभा में गाय, मिलत, धर्म पर चलो सभी इन्सान ॥ ४ ॥ इति

नं० ५४ तर्ज लावनी खड़ी

यह मौका जाता है अमोलख, दि चाहे तो जतन कर कर। प्रभु भजन का अमृत प्याला, पीना हो तो पी भर भर ॥ टेर ॥ अच्छी तरह से गुरु ज्ञानदे, जिसपे ध्यान नहीं लाता है मात तात औरत भगनी, सज्जन के बीच लिपटाता है ॥ जर जेवर माणक मोती, इस धन पे, जिग्र लगाता है। इस मोह जाल के अन्दर आके, नाहक पांव फंसावा है। नहीं साथ

आवेगा कोई क्यूं नदी पूर आता सर मर ॥ १ ॥ कर दिखावत सूब बदन की, इतर फुलेल लगाव है । मुख में पान सिर टेढ़ी पगड़ी, मारवों की लड़ियां लटकावे हैं ॥ जैसे वृक्ष का फूल खिले और खिल के फेर कुमलावे हैं । इसी तरह से जोबन तेरा देखा ढलका जाता है । बीती उमरजाती है तेरी क्यूं नदी पूर जाता सरसर ॥ २ । होकर अन्धा काम भाग में, परनारी से लोभावे हे, करे सेहल बजार के अन्दर, निरव नई पोसाक बनावे है, नेक पुरुष की करैं बुराई, जुल्मों का पक्षा भरावे है, कूर कपट भ्रम छोड़ कही, क्यों नाहक कर्म कमावे है, मान २ मत सता किसी को, तो पर भव से डरकर ॥ ३ ॥ कई तो आगे हो चुके आ कंचन की सेहज बिछावे थे, पता नहीं उन पुरषों का, जो पैरों से जमीन धूजावे थे, सत्तों उर्मो का मुजरा लेते, सिर छत्र चमर दुरात थ, काम कर्म से हार गये यह औरों पे अकड़ाते थे, चौथमल कहे वीर प्रभु भज भव सागर से तरकर ॥ ४ ॥ इति

नं० ५५ लावनी तर्ज पूर्ववत्

यह माया माते की औरत, यह किसीकी सुन्दरबनी नहीं चाहे जितना करो आपता, इसके सर कोई धनी नहीं ॥ टेर ॥ यह माया जाती नर घरके, कर देती है मालामाल, हर सूरत से हुवे इकट्ठी नहीं २ संगा के साथ, दिश २ में सुके दुकाने बनादेती है हुन्डीवाल, मोसम भर समझे नहीं दिखमें

गाडे उसें लगाते ताल, सेठानी मन मे यू जाने मेरी रात कोई जनी नही ॥ १ ॥ हीरे पन्ने कंठी डोर गले बीच लटकाते है, बग्गी के बीच में बैठ साम को, हवा खोरी को जाते है, दया दान को जो कोई केवे, तो कब माल मुफ्त नही आते है, इस्मे तो वोही नर जाने, जो कोई इस्मे कमाते है, चाहे हम्मे मुजी कह देवो, धर्म अर्थ तो अनी ॥ २ ॥ कोई कहे आज इन्द्र सभा है बैठक के दो रुपे है मोल, तो आगे कुरसी हमारी रखना, दोके सवा दो देगे खोल, कोई कहे आज कसाई से गउ प्रान बचावे अनमोल, यही दुकान देखी क्या तुमने अबे कभी मत हमसे बोल, ज्यादा कहे मजहब को छोडे, और बात कर घनी नही ॥ ३ ॥ ऐसे मूजी कब धर्म दी पावे, कब जाति की रक्षा करे, क्या मजाल हैगा गद्धे की, जो गज के सिर की झूल धरे, सखी मजा गये लूट जक्त में, मुजी धन २ करत मरे, छोड नींद गफलत की प्राणी आगेका नही फिकर करे, चौथमल कहे तप धन्य सच्चा ऐसा जुग में धनी नही चाहे जितना करो जापता इसके सर कोई धनी नही ॥ ४ ॥

नं० ५६ लावनी तर्ज लंगडी

कहे संत सुणों इसी जगत में सात व्यसन है वहोत बूरे, चातुर त्यागे जो कोई गुरु वचन पै अमल करे ॥ टेर ॥ पहले व्यसन में जूवा खेलना इसमें दिल लगावेगा, जर जेवर को हाथ से खोके फेर पछतावेगा, राजा लेवे डण्ड उसी से

आवगा काई ज्यूं नदी पूर जाता सर सर ॥ १ ॥ करे हिफाजत खूब बदन की, इतर फुलेल लगावे है । मुख में पान सिर टेढ़ी पगड़ी, मोत्यों की लड़यां लटकावे है ॥ जैसे पुष्प का फूल खिले और खिल के फेर कुमळाये है । इसी तरह से जोबन तेरा देखा ढलका जावे है । बीती जमजाती है तेरी ज्यूं नदी पूर जाता सरसर ॥ २ । होकर अन्धा काम भोग में, परनारी से लोभावे है, करे सेहल बजार के अन्दर, निस नई पोशाक बनावे है, नेक पुरुष की करते बुराई, कुकर्मों का पक्ष मचावे है, दूर कपट छल छीद्र करी, क्यों नाहक कर्म कमावे है, मान २ मत सता किसी को, तो पर भव से तरतर ॥ ३ ॥ कई तो आगे हो चुके जो कंचन की सेहज बिछाते थे, पता नहीं उन पुरुषों का, जो पैरों से जमीन धुजाते थे, लाखों जनों का मुजरा लेते, सिर छत्र चमर दुराते थ काल बली से हार गये वह औरों पे अकड़ाते थे, चौथमल कहे वीर प्रभु भज भव सागर से तरतर ॥ ४ ॥ इति

नं० ९५ लावनी तर्ज पूर्ववत्

यह माया नाते की औरत, यह किसीकी सुन्दर बनी नहीं चाहे जितना करो जापता, इसके घर कोई धनी नहीं ॥ टेर ॥ यह माया आती नर करके, कर देती है मालोमाल, हर सूरत से हुवे इकट्ठी नई २ लगा के चाल, देश २ में खुले दुकाने बनादेती है हुन्डीबाल, भोला नर समझे नहीं जिस्में

माल हर लाते है कई गरीब जीव के देखो दाह दाह लगवाते है खबर हुवे राजा को चोर को सख्त सजा दिलवाते है चौरी करना महा अघोरी, हम्ल बीच कट कटके ॥ चातुर त्यागे ॥ ६ ॥ पर नारी का इश्क बुरा है, कुल में दाग लगे अहो बुधवान, रावण राजा की हुई बदनामी देखोतो शास्त्र पुरान, मात तात शरमावे बहुत से पश्चो मे होत अपमान, चौथमल कहे सुख चावतो, जिया करदे पचखाण, उन्नीसे साठ को किया चौमासो नाथ दुवारों शहर मरे, चातुर त्यागे जो कोई गुरु वचन पे अमल करे ॥ ७ ॥

नं० ५७ तर्ज मजा देते है क्या यार

श्री गुरु चौथमलजी महाराज सत्य उपदेश सुनाने वाले। सत्य उपदेश सुनाने वाले मोक्ष का मार्ग दिखाने वाले ॥टेर॥ नीमच शहर आपका विख्यात, है गंगारामजी तात, मात केशर के अग जात, सयम ले आतम तारने वाले ॥ श्री० ॥ १ ॥ बावन साल में संयम लीना, गुरु हीरालालजी कीना, फिर हृदय ज्ञान बहु कीना, जैन का झंडा दिखाने वाले ॥ २ ॥ देते भ्राता को उपदेश, समझ में आता बहु विशेष, जिसमे निंदा नही लवलेश, कई लोगों को समझाने वाले ॥ ३ ॥ संमत उन्नीसे उन्यासी साल, आया रतलाम सेखे काल, चरणों का चाकर है रामलाल, बेडा पार लगाने वाले ॥ ४ ॥

इस इज्जत को गमावेगा, मात नात और बहर दुनियों क बीच पड़ जावेगा, काइ गवा नही भर इसी की, फेर कुटुम्ब से दूर टरे ॥ चातुर त्याग ॥ १ ॥ दूज व्यसन में मांस का खाना इसको गिना है अभक्ष समान, प्राणीके प्राण को नास कर अपना तन करते बलवान, ऐसा करम से जाय नरक में, दुख पाय वाही पे असमान गरम जमीपे फिर इसी को करेगा बहोत हेरान ॥ बहुत जार से चिल्लायगा अपना किया फिर आप मरे ॥ चातुर ॥ २ ॥ तीजे व्यसन में शराब पीते हो जाते मस्त है, सुध नही रहती जिसे बकते है बह बेहाल मात तात औरत भगनि पे रैसो हाथ उठा डाले, यह बड़ा हराम है शराब का पड़ जाय इसके ख्याल, इसन जीत है इसी बख्त मे जिनके घर सो छांट परे चातुर ॥ ३ ॥ चोथे व्यसन में वेशा पुकारी सजनी तन मोसा शृ गार काम अन्ध नर लिपट कर करत है उनसे बहु प्यार बिन मतलब से कभी न पुछे, कोन गली में रहता यार, होय असोमा उसकी रत्नमानव भव को दे खोय गवार, रोजख के अन्दर दुःख सहे अग्नि के स्थम्भ से बदन जरे, चातुर त्यागे॥ ४ ॥ जुल्म सिर पापों की पोट उठावे है, बरगोश शेर मुर्गो को मार क पिड के बीच अकड़ावे है निर्दय दुष्ट के जहन में जरा दया नही आवे है, बदला दिया बिन कभी न छूटे चोरासी के बीच फीरे, चातुर त्याग ॥ ५ ॥ छट्टे मन में चोरी करके, चोर

माल हर लाते है कई गरीब जीव के देखो दाह दाह लगवाते है खबर हुवे राजा को चोर को सख्त सजा दिलवाते हैं चौरी करना महा अघोरी, हम्ल बीच कट कटके ॥ चातुर त्यागे ॥ ६ ॥ पर नारी का इश्क बुरा है, कुल मे दाग लगे अहो बुधवान, रावण राजा की हुई बदनामी देखोतो शास्त्र पुरान, मात तात शरमावे बहुत से पञ्चो में होत अपमान, चोथमल कहे सुख चावेतो, जिया करदे पचखाण, उन्नीसे साठ को किया चौमासो नाथ दुवारो शहर मरे, चातुर त्यागे जो कोई गुरु वचन पे अमल करे ॥ ७ ॥

नं० ५७ तर्ज मजा देते है क्या यार

श्री गुरु चौथमलजी महाराज सत्य उपदेश सुनाने वाले। सत्य उपदेश सुनाने वाले मोक्ष का मार्ग दिखाने वाले ॥टेर॥ नीमच शहर आपका विख्यात, है गगारामजी तात, मात। केशर के अग जात, सयम ले आतम तारने वाले ॥ श्री० ॥ १ ॥ बावन साल में संयम लीना, गुरु हीरालालजी कीना, फिर हृदय ज्ञान बहु कीना, जैन का झंडा दिखाने वाले ॥ २ ॥ देते भ्राता को उपदेश, समझ में आता बहु विशेष, जिसमे निंदा नही लवलेश, कई लोगों को समझाने वाले ॥ ३ ॥ संमत उन्नीसे उन्यासी साल, आया रतलाम सेखे काल, चरणों का चाकर है रामलाल, बेडा पार लगाने वाले ॥ ४ ॥

इस इज्जत को गमावेगा, मात नात और कदर दुनियाँ के बीच बह जावेगा, काह गया नही मेरे कमी की, फेर कुटुम्ब से दूर टरे ॥ चातुर त्याग ॥ १ ॥ दूज व्यसन में माँस का खाना इसको गिना ह अधम समान, प्राणीके प्राण को नष्ट कर अपना तन करते बलवान, ऐसा करम से जाव नरक में, दु ख पाव वाही पै असमान गरम जमीपे फिर उसी को करेगा बहोत हैरान ॥ बहुत जोर से चिल्लायगा अपना किया फिर आप भरे ॥ चातुर ॥ २ ॥ तीज व्यसन में शराब पीते हो जावे मतवाले, सुध नही रहती जिसे कहते है वह बेहाल मात तात औरत भगनि पे देखो हाथ उठा डाले, यह बड़ा हराम है शराब का पढ जात इसके चाल, उत्तम जीव है इसी वक्त मे जिनके घर तो छोड परे चातुर ॥ ३ ॥ चौथे व्यसन में वेश्या घूवारी सजनी तन सोला शृंगार काम अन्ध नर लिपट कर करते है उनसे बहु प्यार बिन मतलब से कभी न पुछे, कोन गली में रहता यार, हाय अफ़सोस बसकी रसमानत भव को दे खोय गवार, दोजख के अन्दर पुतल सोह अग्नि के स्तम्भ से बदन जरे, चातुर त्यागे॥ ४ ॥ जुल्म सिर पापों की पोट उठावे है, खरगोश शेर मुर्गों को मार के दिल के बीच अकडावे है निर्दई दुष्ट के अंदर में जरा दया नही लावे है, बदला दिया बिन कभी न छूटे चौरासी के बीच फिरे, चातुर त्याग ॥ ५ ॥ छठे मन में चोरी करके, चोर

भान, मिथ्यातम दूर हटाया है ॥३॥ ढील देख धर्मकी लाग, मुरझरहा था यहांका बाग, सिंचनकर हरा बनाया है ॥४॥ गुरु गुणका नहीं पाते पार, कवि कहां तक करते विस्तार, किंचित् मे यहां दिखलाया है ॥५॥ एक पुनः अर्जी सुनलिजे, फेर कृपाकर दर्शन दिजे, श्री संघ मिलके यूं गाया है ॥ ६ ॥

ॐ शांति शांति शांति

न० ९८ तर्ज कव्वाली— नहीं कर्मों की माया का किसीने मर्म पाया है

गुरु चोथमलजी के गुण का नहीं कोई पार पाया है कर कहां तक हम तारीफ, नहीं कुछ पार पाया है ॥ टेर ॥ विचर कर देश देशांतर किया उद्धार भारत का दे के ज्ञान भागों को सत रसते लगाया है ॥ गुरु० ॥ १ ॥ पुण्य मुखारबिंद महाराजा की पद्वी जगत वल्लभकी । पुनवानी आप परभव से तो पूर्व बांधलाया है ॥ २ ॥ उपदेश आपका बहुत, असर जो करता लोगों पर । कई का कुरकृतो का आपने त्यागन कराया है ॥ ३ ॥ ससी प्रिय सूरत तो शान्त, दीसती है आ शहर पर । नहीं क्रोध मान और माया कभी उनपे दिखलायाहै ॥४॥ तारीफ क्या करें मुखसे, मशहूर है विश्वके अन्दर । नहीं दर गिज आपके गुणका, किसीने छे बता या है ॥ ५ ॥ इकत्तीसी माह चौमासा किया है सादड़ी आकर । पून्य यागसे नत्थू सेवा गुरु देवकी पाया है, ॥ ६ ॥

प्रार्थना

आगत गुरुका सुख पाया है, श्री संघ यहांका हर्षाया है ॥ टेर ॥ विचरत जन पद करत विहार, आये सादड़ी शहर मझार, अति आनन्द रंग बर्षाया है ॥ १ ॥ कर पूर्ण हम पै उपकार महर करी अर्जी अवधार, मुनिवर चौमासा ठाया है ॥ २ ॥ देकर सबको सच्चा ज्ञान, प्रकट किया सम्यक्त्व का

भान, मिथ्यातम दूर हटाया है ॥३॥ ढील देख धर्मकी लाग, मुरझरहा था यहाका बाग, सिंचनकर हरा बनाया है ॥४॥ गुरु गुणका नही पाते पार, कवि कहा तक करते विस्तार, किंचित् में यहा दिखलाया है ॥५॥ एक पुनः अर्जी सुनलिजे, फेर कृपाकर दर्शन दिजे, श्री संघ मिलके यू गाया है ॥ ६ ॥

ॐ शांति शान्ति शांति

उद्देश व नियम.

श्री जैनोदय पुस्तक प्रकाशक समिति नीमचोक रतलाम.

सर्व सज्जनों को विदित हो कि शास्त्र विशारद पूज्य श्री १००८ श्री मन्नालालजी महाराज के सम्प्रदायानुयायी जगत वल्लभ प्रसिद्ध वक्ता पंडित मुनिश्री १००८ श्री चौथमलजी महाराज के सदुपदेशसे यह समिति कायम की गई है. इसके जरिये जैन शास्त्र व जैन धर्मका महत्व बढाने वाली तत्वोक्त पुस्तकें प्रकाशित की जावेगी.

१ पुस्तकों का अविनय [अनादर] न हो इस हेतु पुस्तको की कुछ न कुछ कीमत जरूर रक्खी जावेगी.

२ पुस्तकों की बिक्रीका रुपया पुस्तकें प्रकाशित कराने ही में लगाया जावेगा.

३ जो महाशय इस समिति को ५०१ रु. सहायतार्थ प्रदान करेंगे वे स्तंभ व २५१ रु. प्रदान करेंगे वे संरक्षक व २०१ रु. प्रदान करेंगे वे सहायक और १०१ रु. प्रदान करनेवाले प्रथम श्रेणी. ५१ रु. देनेवाले द्वितीय श्रेणी, तथा २५ रु देनेवाले तृतीय श्रेणी मे समझे जावेगे.

४ पुस्तकें नगदसे या वी. पी. से भेजी जावेगी. एक रुपे से कमकी वी. पी. नहीं भेजी जावेगी.

५ किताबें मंगाने वाले महाशय को अपना पूरा पता हिन्दी या अंग्रेजी मे लिखना चाहिये.

सेठ चन्दनमलजी मिश्रीमलजी गालच्छा
ब्यावर (राजपूताना)

मुद्रक—
गुलाबचन्द जैन,
श्री जैनोदय प्रिंटिंग प्रेस,

* वन्देवीरम् *

शास्त्रज्ञ धैर्यवान् श्रीमज्जैनाचार्य पूज्यवर श्री खूबचन्दजी
महाराज एवं जगद्वल्लभ जैन दिवाकर प्रसिद्धवक्ता
पण्डित मुनिश्री चौथमलजी महाराज आदि ठाणा
१२ के ब्यावर चातुर्मास की खुशाली और
तपस्वी श्री नेमीचन्दजी महाराज के ४५
दिन की तपस्या के पूर के उपलक्ष में
भेंट

चुनिंदा-भजन
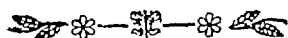
प्रकाशकः—

श्रीमान् चन्दनमलजी मिश्रीमलजी गोलेच्छा
ब्यावर (राजपूताना)

षष्ठमावृत्ति
१०००

अमूल्य भेंट

वी० २४६८
वि० १९९८

मिलने का पता—

मास्टर मिश्रीमल

सेठजी का बाजार, रतलाम

चुनिन्दा-भजन

नम्बर १

[तर्ज़ः—छोटा सा बलमा मोरे आंगना में गिल्ली खेले]

ऋषभ कन्हैया लाला आंगना में रुम झुम खेले।
अखियन का तारा प्यारा, आंगना में रुम झुम खेले॥ टेक॥
इन्द्र इन्द्राणी आई, प्रेम धर गोदी में लेवे।
हंसे रमावे करे प्यार, दिल की रलिया रेले॥ १॥
रत्न पालणिये माता, लाल ने झुलावे झुले।
करे लल्ला से अति प्यार, नहीं वो दूरी मेले॥ २॥
स्नान कराई माता, लाल ने पहिनावे झेले।
गले मोतियन का हार, मुकट सिर पर मेले॥ ३॥
गुरु प्रसादे मुनि. चौथमल यों सब से बोले।
नमन करो हर बार वो तीर्थंकर पहिले॥ ४॥

नम्बर २

[तर्ज़ः—दर्दे दिल]

तुम कहो परमात्मा मिलते नहीं।
सच्चे दिल से आप भी रटते नहीं॥ टेक॥
दुनियां की मोहब्बत में फंसे हो वे तरह।
जुल्म करने से कभी, टलते नहीं॥ १॥
नशा ज़िना ताना कशी में पास हो।
नेक रास्ते पर कभी चलते नहीं॥ २॥
इबादत तस्वी फिराते प्रेम विन।
दगाबाजी से कभी बचते नहीं॥ ३॥
चौथमल कहे किस तरह होगा भला।
ज़इफी में भी अमल करते नहीं॥ ४॥

नम्बर ३

[तर्ज़—कैसे पैग़ाम में आशिक हैं मचलते हुए]

बन्धुओं वक्त जाता किधर ध्यान है ?

चन्द दिन का यहाँ पे तू मेहमान है ॥ टेक ॥

वीर विक्रम रावण व कैसे बली।

न हुकूमत कज़ा पे किसी की चली।

धनी निर्धन भी हाथ परेशान हैं ॥ १ ॥

समय मात्र का प्रमाद कीजे नहीं।

उमर टूटे पे हरगिज़ जुड़ती नहीं।

वीर भगवान् का ये सच्चा फरमान है ॥ २ ॥

नींद गफलत की तज के धरम कीजिये।

बुरे कामों से हर दम शरम कीजिये।

आप कुरान मानिन्द इन्सान है ॥ ३ ॥

हाथरस चौथमल का यह आना हुआ।

और संदेश सब को सुनाना हुआ।

होय सत् धर्म से सब का कल्याण है ॥ ४ ॥

नम्बर ४

[तर्ज़—तेरे पूजन को भगवान् बना मन मन्दिर आलीशान]

करने भारत का कल्याण पधारे वीर प्रभु भगवान् ॥ टेक ॥

जन्मे सिद्धार्थ के घर में त्रिशला देवी के उदर में।

सुरंगना गाया मंगल गान पधारे० ॥ १ ॥

छाया पापों का अन्धकार आती आह की भरी पुकार।

प्रकटे दिव्य शान्त कोइ भान पधारे० ॥ २ ॥

हिंसा झूठ अदत्त निवारो अहिंसा परम धर्म को धारो।

कीना दुनिया को ऐलान पधारे० ॥ ३ ॥

सुर्भित गुलस्थान जैन खिलाया सिंचन कर कर सफल बनाया।

महके धर्म पुष्प अति महान पधारे० ॥ ४ ॥

चौथमल कहे सुनो सब प्यारे, लगाओ वीर शब्द के नारे।
होना आतम का उत्थान, पधारो० ॥ ५ ॥

नम्बर ५

[तर्ज—कैसे फैशन में आशिक हैं जलते हुए]

सारी दुनियां में इन्सान सरदार है।
मिलना हरवक्त तुम को यह दुष्वार है॥ टेक ॥
देवाप्रिय बताया प्रभु वीर ने।
मिलना दुर्लभ जिताया प्रभु वीर ने।
जौहरी हीरे के होते कदर दार हैं॥ १ ॥
बेशकीमत समय यह मिले न कभी।
यह उजड़ा चमन फिर खिले न कभी।
गर धर्म शास्त्र पर जो एतबार है॥ २ ॥
फर्ज़ अपना बजाकर तरक्की करो।
सच्चे दिल से धर्म की उन्नति करो।
स्वर्ग अपवर्ग की गर जो दरकार है॥ ३ ॥
सख्त दिल कर किसी को सताओगे तुम।
बाज बदकाम से गर न आओगे तुम।
समझो दोजख में गुर्जों की भरमार है॥ ४ ॥
चौथमल की नसीहत सुनो जन सभी।
तुम तो दरिया में प्यासे न रहना कभी।
मुक्ति जाने का समझो यही द्वार है॥ ५ ॥

नम्बर ६

[तर्ज—कव्वाली]

अगर जिनदेव के चरणों में, तेरा ध्यान हो जाता।
तो इस संसार सागर से, तेरा उद्धार हो जाता॥ टेक ॥
न होती जगत में ख्वारी, न बढ़ती कर्म बीमारी।
जमाना पूजता सारा, गले का हार हो जाता॥ १ ॥

नम्बर ३

[तर्जः—कसे फैशन में आशिक हैं बनत हुए]

बन्धुओं वक्त आता किधर ध्यान है ?

चन्द दिन का यहाँ पे तू मेहमान है ॥ टेक ॥

वीर विक्रम रावण व कैसे बली ।

न हुकूमत कजा पे किसी की चली ।

धनी निर्धन भी हाते परेशान हैं ॥ १ ॥

समय मात्र का प्रमाद कीजे नहीं ।

समर दुढे पै हरगिज मिलेगी नहीं ।

वीर भगवान् का ये सच्चा फरमान है ॥ २ ॥

नींद गफलत की तज के धरम कीजिये ।

बुरे कामों से हर दम शरम कीजिये ।

भाव हुबाब मानिन्द इन्सान है ॥ ३ ॥

हाथरस चौथमल का यह आना हुआ ।

वीर सदश सब को सुनाना हुआ ।

होय सत् धर्म से सब का कल्याण है ॥ ४ ॥

नम्बर ४

[तर्जः—तेरे पूजन को भगवान् बना मन मन्दिर आलीशान]

करने भारत का कल्याण पधारे वीर प्रभु भगवान् ॥ टेक ॥

जन्मे सिद्धार्थ के घर में त्रिशला देवी के उदर में ।

सुरंगना गाया मंगल गान पधारे० ॥ १ ॥

छाया पापों का अन्धकार भारी आह की मची पुकार ।

प्रकटे दिव्य शक्ति कोह भान पधारे० ॥ २ ॥

हिंसा झूठ अदत्त निवारे अहिंसा परम धर्म को धारे ।

कीना दुनिया को हैरान पधारे० ॥ ३ ॥

मुर्झित गुलशन जैन खिलाया सिंचन कर सर सब्ज बनाया ।

मदकसे धम पुण्य अति महान पधारे० ॥ ४ ॥

नम्बर ८

[तर्जः--मैं पिया मिलन के काज आज जोगन बन जाऊंगी]
नर कर उस दिन की याद कि, जिस दिन चल २ होगी ॥टेक॥
तू जोड़ जोड कर धरे, वस्तु तेरी कोई नहीं होगी।
जब आवें यम के दूत, नगर में खल बल खल होगी ॥ १ ॥
सब भरे रहें भंडार, नार तेरी संगी नहीं होगी।
काठी के लिये दो बास, ओढ़ने को मलमल होगी ॥ २ ॥
ले जाते हैं श्मशान, चिता सोने के लिये होगी।
झट देंगे अग्नि लगाय, राख तेरी जल-जल जल होगी ॥ ३ ॥
तू भली बुरी जो करे, पूंछ सब पर भवमें होगी।
यों कहता है भूदेव, कर्म गति पल पल पल होगी ॥

नम्बर ९

[तर्जः--पहलू मे यार है मुझे इसकी खबर नहीं]
मर्दों को धर्म काम में डरना नहीं अच्छा।
नामर्द से उम्मीद का, करना नहीं अच्छा ॥ टेक ॥
क्या राम प्रचार धर्म में, गर जान भी जाये।
बद रस्म और बद काम में, मरना नहीं अच्छा ॥ १ ॥
बढ़ना उसी का खूब है, जिस से हो फैज आम।
जालिम व मक्खी चूस का, बढ़ना नहीं अच्छा ॥ २ ॥
वादा न निभाना है यह, शैतान की हरकत।
ईसां को जबा देके, मुकरना नहीं अच्छा ॥ ३ ॥
करने से पहले सोच लो, हर काम का अन्जाम।
आगे को कदम धर के, हटाना नहीं अच्छा ॥ ४ ॥
महाराज रामचन्द्र ने, कर के दिखा दिया।
भाई को भाइयों से, झगड़ना नहीं अच्छा ॥ ५ ॥

नम्बर १०

[तर्ज.—नाटक]
मेहर की नजर कर महावीर प्यारे।

रोशनी ज्ञान की बिखरती, दीपाली दिल में हो जाती।
हृदय मंदिर में भगवान् का तुझे दीदार हो जाता ॥ २ ॥
परेशानी न हैरानी वश हो जाती मस्तानी।
प्रेम का प्याला पी लेता, तो बेड़ा पार हो जाता ॥ ३ ॥
जमीं का बिस्तरा होता व चादर आसमां बनता।
मोक्ष गद्दी पर फिर प्यारे तेरा घरबार हो जाता ॥ ४ ॥
चढ़ाते वक्त तेरे चरण की धूल मस्तक पर।
अगर जिनदेव की भक्ति में, मन इकतार हो जाता ॥ ५ ॥
राम जपता अगर माला का मनका एक भक्ति से।
तो तेरा घर ही मुक्ती के लिये दरबार हो जाता ॥ ६ ॥

नम्बर ७

(तर्ज़—गज़ल)

खिदमते धर्म पर जो कि मर जायेंगे।
नाम दुनियां में रोशन वो कर जायेंगे ॥ टेक ॥
जैसे कर्म करेंगे वहीं जायेंगे।
यह न पूछो कि मर कर किधर जायेंगे ॥ १ ॥
आप दिखला रहे हो किसे हुशियारी।
यह नशे यह नहीं जो उतर जायेंगे ॥ २ ॥
टूट जावे न माला कहीं प्रेम की।
वरना अनमोल मोती बिखर जायेंगे ॥ ३ ॥
जो चाकूओं की खाती लगा हिन्दुओं।
वरना यह लाल गैरों के घर जायेंगे ॥ ४ ॥
गर लगाते रहो मरहम प्रेम की।
एक दिन यह जख्म सबके भर जायेंगे ॥ ५ ॥
चाहे मानो न मानो खुशी आप की।
हम मुसाफिर यूं कह कर चले जायेंगे ॥ ६ ॥

नम्बर ८

[तर्जः--मैं पिया मिलन के काज आज जोगन बन जाऊंगी]

नर कर उस दिन की याद कि, जिस दिन चल २ होगी ॥टेक॥
तू जोड़ जोड़ कर धरे, वस्तु तेरी कोई नहीं होगी।
जब आवें यम के दूत, नगर में खल बल खल होगी ॥ १ ॥
सब भरे रहें भंडार, नार तेरी संगी नहीं होगी।
काठी के लिये दो बास, ओढ़ने को मलमल होगी ॥ २ ॥
ले जाते हैं श्मशान, चिता सोने के लिये होगी।
झट देंगे अग्नि लगाय, राख तेरी जल-जल जल होगी ॥ ३ ॥
तू भली बुरी जो करे, पूंछ सब पर भवमें होगी।
यों कहता है भूदेव, कर्म गति पल पल पल होगी ॥

नम्बर ९

[तर्जः--पहलु में यार है मुझे इसकी खबर नहीं]

मर्दों को धर्म काम में डरना नहीं अच्छा।
नामर्द से उम्मीद का, करना नहीं अच्छा ॥ टेक ॥
क्या गम प्रचार धर्म में, गर जान भी जाये।
बद रस्म और बद काम में, मरना नहीं अच्छा ॥ १ ॥
बढ़ना उसी का खूब है, जिस से हो फैज आम।
जालिम व मक्खी चूस का, बढ़ना नहीं अच्छा ॥ २ ॥
वादा न निभाना है यह, शैतान की हरकत।
ईसा को जबा देके, मुकरना नहीं अच्छा ॥ ३ ॥
करने से पहले सोच लो, हर काम का अञ्जाम।
आगे को कदम धर के, हटाना नहीं अच्छा ॥ ४ ॥
महाराज रामचन्द्र ने, कर के दिखा दिया।
भाई को भाइयों से, झगड़ना नहीं अच्छा ॥ ५ ॥

नम्बर १०

[तर्ज.—नाटक]

महर की नजर कर महावीर प्यारे।

दर्श अपना हम को दिखा वीर प्यारे ॥ टेक ॥
सुनाया था जो ज्ञान गौतम मुनि को ।
वही ज्ञान हम को सुना वीर प्यारे ॥ १ ॥
तिराया था अर्जुन सा पापी तुम्हीं ने ।
हमें भी तिराओ महावीर प्यारे ॥ २ ॥
जो लड़ती परस्पर यह सन्तान तेरी ।
इन्हें प्रेम करना सिखा वीर प्यारे ॥ ३ ॥
गफ़लत में सोये सभी हिन्दवासी ।
इन्हें शीघ्र आकर जगा वीर प्यारे ॥ ४ ॥
जैन कौम पीछे हटी जा रही है ।
इसे उन्नति पर लगा वीर प्यारे ॥ ५ ॥
करें अर्ज स्वामी स केवल तुम्हीं यों ।
हमें पास अपने बुला वीर प्यारे ॥ ६ ॥

नम्बर ११

[तर्ज़—पायल की झनकार कोयलिया काहे करत पुकार]
सतगुरुजी समझाय उमरिया बीती तेरी जाय ॥ टेक ॥
सन्ध्या राग स्वप्न की सुधि क्षण भर में बिनसाय ॥ १ ॥
वायुवत् आयु है चपल स्थिर रहन की नाय ॥ २ ॥
अञ्जली नीर नीर सरिता को देखत ही बह जाय ॥ ३ ॥
जग असार सार नहीं कुछ भी सार धर्म सुखदाय ॥ ४ ॥
कर शुभ काम नाम हो जग में न्यायमुनि बतलाय ॥ ५ ॥

नम्बर १२

[तर्ज़—सुनावे सुनावे सुनावे कृष्णा]
फिर आना फिर आना फिर आना मोहनरे
इन जियों के प्राण बचाना मोहनरे ॥ टेक ॥
हजारों कट रही हैं प्रति दिन घट रही हैं ।
बचाना रे मोहनरे इन दुखियों को धैर्य बन्धाना मोहनरे ॥ १ ॥

बिन अपराध मारते हैं, छुरियां से काटते हैं।
छुड़ाना छुड़ाना छुड़ाना मोहनरे ॥ २ ॥
हिंसा जो बढ़ रही है, दया जो घट रही है।
पिलाना ३ मोहनरे, फिर जाम दया का पिलाना मोहनरे ॥ ३ ॥
दुनिया जा सो रही है, पाप बीज बो रही है।
जगाना ३ मोहनरे, भारत को फिर से जगाना मोहनरे ॥ ४ ॥
कहे मोहन, मोहन ! आजा सुरतिया बताजा।
बताजा ३ मोहनरे, प्यारी सुरतिया बताजा मोहनरे ॥ ५ ॥

नम्बर १३

[तर्ज—पहलू में यार है मुझे उस की]

सत्य बात के कहे बिना, रहा नहीं जाता।
नगुले को हंस हम से बताया नहीं जाता ॥ टेक ॥
मिलता है राज्य तख्त छत्र, एक धर्म से।
अधर्म से मिले सुख, सुनाया नहीं जाता ॥ १ ॥
अमृत के पीने से मरे, जीवे जो जहर से।
यह आग के बीच बाग, लगाया नहीं जाता ॥ २ ॥
दुनियां भी अगर लोट जा, अफसोस कुछ नहीं।
परंडो को कल्प वृक्ष, बनाया नहीं जाता ॥ ३ ॥
कहे चोथमल दिल बीच जरा, गौर तो करो।
तारे की ओट चन्द्र छिपाया नहीं जाता ॥ ४ ॥

नम्बर १४

[तर्ज.—कव्वाली]

न इज्जत दे न अजमत दे, न सूरत दे न सीरत दे।
वतन के वास्ते भगवन् मुझे मरने की हिम्मत दे ॥ टेक ॥
जो रगवत दे वतन की दे, जो उल्फत दे वतन की दे।
मेरे दिल में वतन के जर्रे-जर्रे की मोहब्बत दे ॥ १ ॥
न दौलत दे न दे पुरजोश, दिल शौके शहादत दे।

जो रो उठे वतन के वास्ते ऐसी तबियत दे ॥ २ ॥
मुझे मतलब नहीं दैरो हरम से दोनों इमा दे।
वतन का प्यार दे शाने सदाक़त व सखावत दे ॥ ३ ॥
न दे सामान ऐशो इशरतें दुनियां में तू मुझ को।
ज़रूरत है मुझ इन्सानियत होने की नियत दे ॥ ४ ॥
वतन का ख़ाक पर कुर्बान होने की तमन्ना दे।
जा देता और कुछ देता खुदा बन्दा शराफत दे ॥ ५ ॥
पिलादे जाम व्याकुल को मय इश्के वतन साकी।
कि पीकर मस्त हो जाऊं इसे पीने की आदत दे ॥ ६ ॥

नम्बर १५

(तर्ज़ः—कोई ऐसा चतुर सखी माय मिली)

क्यों गफ़लत के बीच में सोता पड़ा।
तेरा जायेगा हंस निकल एक पल में।
यह तो दुनियां है देख मिसाले सराँ।
कभी उसकी बगल कभी उसकी बगलमें ॥ टेक ॥
तू तो फिरता है आप दुलहा बन ठन।
तेरे साथ बराती है कौम सज्जन।
यहां किस से करे अपना लगन।
क्यों सोता है मुझ खाली कल कल में ॥ १ ॥
जो हिन्द के ताज को शीश धरे।
जो लाखों करोड़ों का न्याय करे।
वे राज्य को त्याग के फिरते फिरें।
जो नूर से पूर थे तेज अकल में ॥ २ ॥
कहां पांडव कहां पृथ्वीराज चौहान।
कहां बादशाह अकबर औरंगज़ेब।
यह राज्य हरप्त रहा न सज्जन।
कभी उसके अमल कभी उसके अमल में ॥ ३ ॥

इस माल औलाद जमीं के लिये ।
कई बादशाह मार के मर भी गये ।
यह मुल्क मेरा यूं कहते गये ।
तो तू कौन-सी बाग की मूली असर में ॥ ४ ॥
जो प्यारी के महल में रहते अमन में ।
वो खाते हवा सदा बाग चमन में ।
मुनि चौथमल कहे चेतो सज्जन ।
जो ऐसे गये न समझते अजल में ॥ ५ ॥

नम्बर १६

[तर्ज—इधर भी नजर हो जरा बंशी वाले]

महावीर के हम सिपाही बनेंगे ।
जो रक्खा कदम फिर न पीछे हटेंगे ॥ टेक ॥
सिखा देंगे दुनिया को शान्ति से रहना ।
अहिंसा की बिजली नसों में भरेंगे ॥ १ ॥
लगायेंगे मरहम जो होवेंगे जख्मी ।
सुखी करके जग को स्वयं दुःख सहेंगे ॥ २ ॥
कहीं जुल्म दुनिया में रहने न देंगे ।
अगर सर कटेगा खुशी से मरेंगे ॥ ३ ॥
न घुड़ दौड़ में जग के पीछे रहेंगे ।
कसेंगे कमर और आगे बढ़ेंगे ॥ ४ ॥
अहिंसा के सेवक हैं हम वीर सच्चे ।
धर्म युद्ध में हम खुशी से लड़ेंगे ॥ ५ ॥
हमें राम सुख दुख की परवाह नहीं है ।
अहिंसा का झण्डा लहरा कर रहेंगे ॥ ६ ॥

नम्बर १७

[तर्ज—विजयी विश्व तिरंगा प्यारा]

झण्डा ऊंचा रहे हमारा, जैन धर्म का बजे नगारा ॥ टेक ॥

ऋषभदेव ने इसको रोपा । भरत चक्रवर्ती का सींचा ।
उनने इसका किया प्रसारा ॥ १ ॥
महावीर ने उसे उठाया । भारत को सन्देश सुनाया ।
धर्म अहिंसा जग हितकारा ॥ २ ॥
गौतम गणधर ने अपनाया । अनेकान्त जग को समझाया ।
स्याद्वाद करके विस्तारा ॥ ३ ॥
हुआ कुमारपाल भोपाला । जैन तत्व को जिसने पाला ।
इस झण्डे का लिया सहारा ॥ ४ ॥
आज इस मुनियों ने सम्हाला । भारत में कर दिया उजाला ।
यही करेगा देश सुधारा ॥ ५ ॥
स्याद्वाद और दया धर्म की । दुनियां प्यासी इसी मर्म की ।
इसमें तत्व भरा है सारा ॥ ६ ॥
हम सब मिल करके सेवेंगे । नहीं जरा नमने देवेंगे ।
चाहे हो बलिदान हमारा ॥ ७ ॥

नम्बर १८

[तर्ज—इधर भी नज़र हो जरा बसी वाले]

ए महावीर स्वामी मैं क्या चाहता हूं ।
फ़क़त आपका आसरा चाहता हूं ॥ टेक ॥
मिली तुमको पदवी जो निर्वाण पद की ।
कि तुम जैसा मैं भी हुआ चाहता हूं ॥ १ ॥
फंसा हूं मैं चक्कर में आवागमन के ।
अब इस से होना रिहा चाहता हूं ॥ २ ॥
तमन्ना यही है यही आरजू है ।
अये भगवन् तुम्हें देखना चाहता हूं ॥ ३ ॥
दया कर दयालु दया चाहता हूं ।
क्षमा कर क्षमा कर क्षमा चाहता हूं ॥ ४ ॥
बताऊं तुम्हें और क्या चाहता हूं ।

मैं सारे जहाँ का भला चाहता हूँ ॥ ५ ॥

नम्बर १६

[तर्ज —जाओ जाओ ए मेरे ! साधु रहो गुरु के संग]
आये आये हैं जगदोद्धारक त्रिशलाजी के नन्द ॥ टेक ॥
स्वर्ग बना नरलोक, हो रहा घर घर हर्षानन्द ।
मंगल मधुर गावें परियां, उत्सव कीना इन्द्र ॥ १ ॥
कंचन वरण केहरी लक्षण, सो है चरणार्विन्द ।
नैना निरखी मुदित हुए सब, प्रभु का मुखारविंद ॥ २ ॥
संयम ले प्रभु केवल पाया, सेवें सुरनर वृन्द ।
वाणी अमृत पीवे सब ही, पावें मन आनन्द ॥ ३ ॥
अभयदान निर्वद्य वाक्य में, ज्योतिष में ज्यूं चन्द ।
तप में उत्तम ब्रह्मचर्य है, ऐसे वीर जिनन्द ॥ ४ ॥
कुँवर सुबाहु को निस्तारा, जो था नृप फरजन्द ।
शालभद्र से सौभागी को, किया देव अहमन्द ॥ ५ ॥
प्रभु को सुमरे प्रभुता पावे, मिट जावे दुख द्वन्द ।
साल छियाणु चौथमल के, वरते परमानन्द ॥ ६ ॥

नम्बर २०

[तर्जः—तेरे पूजन को भगवान् बना मन मन्दिर आलीशान]
लीना राम यहां अवतार, हुआ घर-घर में मंगलाचार ॥ ध्रुव ॥
धन्य है मात-पिता नगरी को, जन्में चेत सुदी नवमी को ।
बोलो राम की जय नरनार ॥ हुआ० ॥ १ ॥
दशरथ कुल के हैं उजियारे, माता कौशल्या के प्यारे ।
कीना देवों ने जयकार ॥ हुआ० ॥ २ ॥
छाया पाप-तिमिर घर-घर में, प्रगटे भानु सम भारत में ।
करने सत्य धर्म परचार ॥ हुआ० ॥ ३ ॥
लगा है ठाठ चितोड़गढ़ भारी, मानों खिल रही केसर क्यारी ।
कहता चौथमल हर बार ॥ हुआ० ॥ ४ ॥

नम्बर २१

[तर्ज—महावीर के हम सिपाही बनेंगे]

महावीर स्वामी तू है अज्ञ माता।
नहीं तेरी शामी का कोई दिखाता ॥ टेक ॥
तू निर्दोष सर्वज्ञ हितोपदेशी।
नहीं तेरे गुण का कोई पार पाता ॥ १ ॥
है सिद्धान्त तेरा अनेकान्त सुन्दर।
नहीं वादी कोई भी सर को उठाता ॥ २ ॥
पुरुष चाहे नारी जो शुद्ध धर्म धारे।
इसी भव में मुक्ति नहीं तू बताता ॥ ३ ॥
दिया हक धरम का है चारों वरण को।
कहा नर मुनि होता मुक्ति सिधाता ॥ ४ ॥
कहे चौथमल जो शरण तेरी आता।
अनायास भव सिन्धु से पार पाता ॥ ५ ॥

नम्बर २२

[तर्ज—महावीर के हम सिपाही बनेंगे]

बिन किये धर्म के नर मर जायेंगे।
नाम दुनियां से वो कुल सिहर जायेंगे ॥ टेक ॥
आप दुनियां से एक दिन अवश्य जायेंगे।
है खबर ये कहां कब कि मर जायेंगे ॥ १ ॥
जीव जैसा करेंगे वहीं जायेंगे।
यह न मालूम कि मरकर किधर जायेंगे ॥ २ ॥
अच्छे कर्म करेंगे सुगत पायेंगे।
वरना परभव में जाकर के पछतायेंगे ॥ ३ ॥
बिना दिये कर्ज के नर जो मर जायेंगे।
सब चाले करज के चले जायेंगे ॥ ४ ॥
पुत्र पुत्री या औरत यह धन जायेंगे।

वक्त पर धोखा देकर चले जायेंगे ॥ ५ ॥
स्वप्न-सा है जगत् हम न लुभायेंगे ।
चौथमल कहे अमर नाम कर जायेंगे ॥ ६ ॥

नम्बर २३

[तर्ज.—चिलुखे की]

सत गुरुजी समझावे, तुझे चेतावे हो चेतनजी ।
ज्ञानवान चेतनजी, पाया तुम उत्तम नरतनजी ॥ टेक ॥
इस ही मानुष जन्म से, तिरिया जीव अनेक ।
तुम भी उत्तम काज कर, हृदय करी ने विवेक ॥
मत ना मुफ्त गुमाओ ध्यान में लाओ हो ॥ १ ॥
तू अविनाशी आप है, सत चित्त आनन्द रूप ।
भौतिक धर्म में राच के, क्यों पड़ता अन्ध कूप ॥
अनन्तीवार दुख पाया, जो ललचाया हो ॥ २ ॥
स्वयं लक्ष मोह को तजो, सजो धर्म का साज ।
चपला ज्यों जीवन चपल, करो सफल निज काज ॥
क्यों गफलत में सोया, वक्त को खोया हो ॥ ३ ॥
टोंक शहर के बीच में, चौथमल रहा टोक ।
जाते उलट पथ्थ में नर भव गाड़ी रोक ॥
शिव पद में आप चलाओ सदा सुख पाओ हो ॥ ४ ॥

नम्बर २४

[तर्ज.—नर कर उस दिन की याद कि]

मन भज ले तू भगवान् जिन्दगी तभी सफल होगी ॥ टेक ॥
तू सोता है मोह नींद शुद्ध जो तुझे नहीं होगी ।
पत्थर के बदले रत्न फैंक आखिर बेकल होगी ॥ १ ॥
बालापन बीता खेल युवानी तिरिया मोह लेगी ।
वृद्धापन धन्धे में बीता तो बात विफल होगी ॥ २ ॥
गंगा में प्यासा रहे बात ये अचरज की होगी ।

नर तन से कीना धर्म नहीं तो अकल विकल होगी ॥ ३ ॥
चले पुण्य पाप तेरे संग यहीं नेकी यहां रहवेगी।
कहे चौथमल तप त्याग से तेरी मोक्ष कुशल होगी ॥ ४ ॥

नम्बर २५

[तर्जः—एक तीर फेंकता जा तिरछी कमान वाले]

एक घर में दो बिरादर, किस्मत जुदा जुदा है।
तख्ते नशीन है एक एक खाक पर पड़ा है ॥ टेक ॥
एक नीर के घड़े दो भर कूप से निकाले।
एक नालियों में डाला एक शिव के सिर चढ़ा है ॥ १ ॥
हस्तीय गुल भी देखो आते हैं इक शजर में।
पाओं तले दबा इक एक ताज में लगा है ॥ २ ॥
एक खान से दो पत्थर निकले जमीं से बाहर।
एक जा रहा है ठोकर अवतार इक बना है ॥ ३ ॥
सन्दल के दो हैं टुकड़े किस्मत का फेर देखो।
एक बन गई है माला एक आग में जला है ॥ ४ ॥
तकदीर के यह रंग हैं क्या ही अजब फकीरा।
एक हुक्म दे रहा है एक द्वार पे खड़ा है ॥ ५ ॥

नम्बर ५६

[तर्जः—इधर भी नजर हो जरा बंसी वाले]

सदा एक जैसा जमाना नहीं है।
गरीबों को अच्छा सताना नहीं है ॥ टेक ॥
न समझो कि तुम जैसी दुनियां है सारी।
है यह भी जा पास का दाना नहीं है ॥ १ ॥
गरीबों के नालों में है दर्द पैदा।
यह दुश्मन को दिल क्या सताना नहीं है ॥ २ ॥
अर मदद वालो न उनको सताओ।
जिन्हें रहम को आशियाना नहीं है ॥ ३ ॥

न फूलो गरीबों का तुम दिल दुखाकर ।
यह कुछ सागिरे खसरो वाना नहीं है ॥ ४ ॥
तुम्हारी जमीं पर हमारे लिये क्या ।
कहीं एक गज भर ठिकाना नहीं है ॥ ५ ॥
फना होना जिसको वका कौनसी है ।
किसे आके दुनियां से जाना नहीं है ॥ ६ ॥

नम्बर २७

[तर्ज—गायन]

त्रशला दे महतारी, तुम को लाखों प्रणाम ।
शुद्ध समकित की धारी, तुमको लाखों प्रणाम ॥ टेक ॥
महावीर सा नन्दन जाया, देवी देव मिल हर्ष मनाया ।
रत्न कूख की धारी, तुमको लाखों प्रणाम ॥ १ ॥
पशु बलि होता अटकाया, जीवों का अज्ञान हटाया ।
ऐसा प्रभु जननारी, तुमको लाखों प्रणाम ॥ २ ॥
इन्द्रभूतिजी को समझाया, गणधर अपना खास बनाया ।
उनकी जन्म दातारी, तुम को लाखों प्रणाम ॥ ३ ॥
ममता तज सथारो धारी, द्वादश में सुरलोक सिधारी ।
विदेह मोक्ष जानारी तुमको लाखों प्रणाम ॥ ४ ॥
मदनगंज छिआनवे मांइ, हरि जयंति खूब मनाई ।
कहे चौथमल बलिहारी, तुमको लाखों प्रणाम ॥ ५ ॥

नम्बर २८

[तर्ज.—महावीर के हम सिपाही बनेंगे]

उठो जैन बन्धु जगाना पड़ेगा ।
अहिंसा का झण्डा उठाना पड़ेगा ॥ टेक ॥
सभी फिरकों म जैन सर्वोपरि है ।
तुम्हें इसका जलवा दिखाना पड़ेगा ॥ १ ॥
श्वेताम्बर दिगम्बर में जो फिरका बंदी ।

सभी भेद भाव अब मिटाना पड़ेगा ॥ २ ॥
कुमानुष की तज के सारी बिमारी।
सदा प्रेम तुमको बढ़ाना पड़ेगा ॥ ३ ॥
अनेकान्त का यह तना शामियाना।
सभी इसकी छाया में आना पड़ेगा ॥ ४ ॥
कहे चौथमल अब तजो फूट सारी।
रहो प्रेम से अब सुखाना पड़ेगा ॥ ५ ॥

नम्बर ६

[तर्ज़ः—आओ आओ ए प्यारे साधु]

सुन लो सुन लो री प्यारी बहिनों धर्म कौम विधि करना ॥धु॥
सुबह शाम सामायिक करना धर्म कथा को सुनना।
जिन हाथों से दान दिए बिन अन्न जल मुह नहीं लेना ॥ १ ॥
धर्म दया दान में मानों य जिन मारग सार।
तन मन से तुम करो अराधन निश्चय लेगा पार ॥ २ ॥
बिन बूझे मत करो कार्य तुम गृहस्थ धर्म का कहनार।
जैन धर्म का सार समझना तो पावेगा तिरना ॥ ३ ॥
पर पुरुषों की शर्म करो और मात पिता सम जानों।
माधव मोहन सत्य समझायें भूठ को मत ताणो ॥ ४ ॥

नम्बर ३०

[तर्ज़ः—बन्द रोज]

जब तेरी डोली निकाली जायगी ।
बिन मुहूर्त के उठाली जायगी ॥ टेर ॥
उन हकीमों से यूं कहदो बोल कर।
करते थे दावा किताबें खोल कर।
यह दवा हरगिज न खाली जायगी ॥ १ ॥
जर सिकन्दर का यहीं पर रह गया।
मरते दम लुकमान भी यूं कह गया।

यह घड़ी हरगिज न खाली जायगी ॥ २ ॥
होयगा परलोक में तेरा हिसाब ।
कैसे मुकरोगे वहां पर तुम जनाब ।
जब वहीं तेरी दिवाली जायगी ॥ ३ ॥
ऐ मुसाफिर क्यों पसरता है यहा ।
ये किराये पर मिला तुझ को मकां ।
कोटड़ा खाली कराली जायगी ॥ ४ ॥
क्यों गुलों पर हो रहा बुल-बुल निसार ।
है खड़ा पीछे वह माली खबरदार ।
मार कर गोली गिराली जायगी ॥ ५ ॥
चेत मैयालाल अब जिनवर भजो ।
मोह रूपी नींद को जल्दी तजो ।
तो आतमा परमत्मा बन जायगी ॥ ६ ॥

नम्बर ३१

[तर्ज --जाओ जाओ ए मेरे साधु रहो गुरु के संग]

करलो करलो हे प्यारे मित्रों ! सुखदाई है सेवा ॥ ध्रु ॥
सेवा धर्म है परम जगत में, कहां तक महिमा केवा ।
सेवा से प्रसन्न हो जावें, मात पिता गुरु देवा ॥ १ ॥
सनत इन्द्र ने श्री संघ की, की पूरब भव में सेवा ।
व्यावृत्त की सर्व मुनियों की मेघ मुनि शिव लेवा ॥ २ ॥
जाति समाज देश की सेवा, करी नम्र हो रेवा ।
आतम सेवा यही विश्व में पाप दूर कर देवा ॥ ३ ॥
नन्दी षेण करी मुनि सेवा, हो गये वासु देवा ।
भरत बाहुबल ने भी पाया, य सेवा का मेवा ॥ ४ ॥
सब जीवों की रक्षा करना, यही प्रभु की सेवा ।
चौथमल सेवा भक्ति से, हो जावे जिन देवा ॥ ५ ॥

सभी भेद भाव अब मिटाना पड़ेगा ॥ २ ॥
छूआछूत की तज के सारी बिमारी।
सदा मम तुमको बढ़ाना पड़ेगा ॥ ३ ॥
अनेकान्त का यह तना शामियाना।
सभी इसकी छाया में आना पड़ेगा ॥ ४ ॥
कहे मौथमल अब तजो फूट सारी।
रहो प्रेम से अब सुनाना पड़ेगा ॥ ५ ॥

नम्बर १९

[तर्ज़ः—आओ आओ ए प्यारे साधु]

सुन लो सुन लो री प्यारी बहिनों धर्म कौन विधि करना ॥धु॥
सुपह शाम सामायिक करना धर्म कथा को सुनना।
निज हाथों से दान दिए बिन अन्न जल मुंह नहीं लेना ॥ १ ॥
धर्म दया दान में मानों व जिन मारग सार।
तन मन से तुम करो आराधन निश्चय होगा पार ॥ २ ॥
बिन पूछे मत करो कार्य तुम गृहस्थ धर्म का कहना।
जैन धर्म का सार समझना तो हायेगा तिरना ॥ ३ ॥
पर पुरुषों की शर्म करो और मात पिता सम जानों।
माइन मोहन सत्य समझायें झूठ का मत तानो ॥ ४ ॥

नम्बर २०

[तर्ज़ः—चन्द रोज़]

जब तेरी डोली निकाली जायगी ।
बिन मुहूर्त के उठाली जायगी ॥ टेर ॥
उन हकीमों से यूं कहदो बोल कर।
करते थे दावा किताबें खोल कर।
यह दवा हरगिज न खाली जायगी ॥ १ ॥
जर सिकन्दर का यहीं पर रह गया।
मरते दम लुकमान भी यूं कह गया।

॥ श्रीवीतरागायनमः ॥

श्री श्री १००८ श्रीपूज्याधिराज गच्छाधिपति तिरण तारण तारणी नाव समान जैन शासन का शृङ्गार न्याय पक्ष पण्डित आचार्य श्रीजवाहिरलालजी महाराज

श्रीगुरुगुणपुष्पावली।

नई

प्रकाशकः-
साधमार्गी श्रीसंघ
निम्बाहेड़ा रियासत टोंक।

मुद्रकः—मैनेजर लक्ष्मीचन्द के प्रबन्ध से
जैन प्रभाकर प्रिंटिंग प्रेस, रतलाम में छपी.

प्रथमवार १०००

वीरसं० २४५३
श्रीलाल सं० ६
विक्रम सं० १९८३

अमूल्य भेंट

॥ ध्वनि ॥

श्रमण भगवन्त श्री महावीर त्रिशला नन्दन हरियो पीर ॥ १ ॥
अधम उद्धारन श्री अरिहंत, पतित पावन मम भगवंत ॥ २ ॥
शान्ति जिनेश्वर शान्ति करो रोग शोक दुख दूर करो ॥ ३ ॥
समन्द विजय नया के नन्द सेवक के करदो आनन्द ॥ ४ ॥

॥ श्रीवीतरागायनमः ॥

श्री श्री १००८ श्रीपूज्याधिराज गच्छाधिपति तिरण तारण तारणी नाव समान जैन शासन का शृङ्गार न्याय पक्ष पण्डित आचार्य श्रीजवाहिरलालजी महाराज

श्रीगुरुगुणपुष्पावली।

नई

प्रकाशकः-
साधमार्गी श्रीसंघ
निम्बाहेड़ा रियासत टोंक।

मुद्रकः-मैनेजर लक्ष्मीचंद के प्रबन्ध से
जैन प्रभाकर प्रिंटिंग प्रेस, रतलाम में छपी.

प्रथमवार १०००

वीरसं० २४५३
श्रीलाल सं० ६
विक्रम सं० १९८३

अमूल्य भेट

भूमिका—

प्रिय सज्जनो ! इस पंचमकाल के अन्दर महानुभाव शास्त्र विशारद महान् तपस्वी मासक्षमणादिक अैमाचार्य परम पूज्य १००८ श्री हुकमीचंदजी महाराज तत्पाट पूज्य १००८ श्री शिवलालजी महाराज तत्पाट पूज्य १००८ श्रीउदयसागरजी महाराज तत्पाट पूज्य १००८ श्रीचौथमलजी महाराज तत्पाट पूज्य १००८ श्री श्रीलालजी महाराज तत्पाट पूज्य १००८ श्रीजवाहिरलालजी महाराज जो कि वर्तमानकाल में विराजमान हैं आप की व्याख्यान शैली की प्रसिद्धता का सूचित करती है और प्रत्येक मनुष्य के हृदय पर सत्य ज्ञान व वैराग्य का कोई चित्र जाता है जो मनुष्य आप के व्याख्यान (वाणी) से परिचित है वह मुक्त कण्ठ से स्तुति किये बिना नहीं रहता क्यों कि समय सफलता व मधुरवाणी का ही प्रभाव है अतएव आपकी वाणी और गुणों की ही अद्भुत छटा (महिमा) का देखकर चित्त में यह प्रबल अभिलाषा पैदा हुई कि कोई सुगम कविता अपनी तुच्छ बुद्धि अनुसार बनाकर आप सकल जैन समाज की सेवा में समर्पण करूं जो कि इस पुस्तक को पढ़कर हृदय प्रेम करेंगे यह पूर्ण आशा है—

नोट—इस पुस्तक में कोई अशुद्ध अक्षर व पद लिखने में आया हो तो सज्जन पुरुष कृपया उसे सुधार कर पावें।

आपका शुभचिंतक—

सांगी ओंकारलाल जैन निम्बाहेड़ा (टोंक)

ॐ

॥ श्रीगुरुगुणपुष्पावलि ॥

श्लोकः ।

अर्हन्तोभगवंत इन्द्रमहिता, सिद्धाश्चसिद्धीस्थितः
आचार्याजिनशासनोन्नतिकरा, पूज्याउपाध्यायकाः
श्रीसिद्धान्तसुपाठकामुनिवरा, रत्नत्रयाराधकाः
पंचैते परमेष्ठिनप्रतिदिनं, कुर्वन्तुनो मंगलम्॥ १ ॥

स्तवन पहिला (गज़ल कव्वाली)

चौबीसी जिन ध्याइये, मेरे प्यारे गावो सदा ॥ टेक ॥ ऋषभ अजित संभव महाराज अभिनंदन सुमति जिनराज। पद्म सुपार्श्व चाइये ॥ मेरे० गावो ॥ १ ॥ चंद्र सुबुद्धि शीतलनाथ श्रीयशवासुपुज्योविख्यात 'विमल अनंत जिन ध्याइये ॥ मेरे ॥ २ ॥ धर्मनाथ शांति गुण गावे, कुंथु अरह को शीश नमावे। मल्ली चरन को पाइये ॥ मेरे ॥ ३ ॥ मुनी सुव्रतजी नमिये नाथ, रिष्ठनेमपार्श्व जगनाथ। प्रभूजी से प्रीत लगाइये ॥ मेरे ॥ ४ ॥ वर्धमानजी चरम जिनन्द, सिद्धारथ त्रिसला के नंद। हरदम शीश नमाइये ॥ मेरे ॥ ॥५॥ ऊँकारलाल तो चरणकुं चाय, हाथ जोड़ कर शीशनमाय। दाम सदा शुद्ध देइये ॥ मेरे ॥ ६ ॥ तन मन धन से जीव बचाना, क्रोधमान अहंकार मिटाना। जलदि से शीवपुर पाइये ॥ मेरे ॥७॥

स्तवन दूसरा-

(म्हारो श्याम करेलो बेड़ापार, घनश्यामकी महिमा अपार ए देशी)
सुमरो श्रीपार्श्वमहाराज, सफल हुव मन काज ॥ टेक ॥ अश्वसेन
राजा के नंद तेवीस में हुव आप जिनंद, भवजीवों के सुखकं
॥ सफल ॥ १ ॥ प्राणत देवलोक से आय बनारसी नगरी के मांय
वामा देवी सुत आय ॥ सफल ॥ २ ॥ लगा पोषमास अब आन
कृष्णपक्ष दसमी दिनमान जन्म लियो है पुण्यवान ॥ सफल ॥ ३
छप्पन दिशा कुमारी आय अशुचि कर्मको दिया मिटाय मिलकर
मंगलगाय ॥ सफल ॥ ४ ॥ स्वर्ग से सुरेन्द्र आय प्रभूजी के
मेरु शिखर लेजाय महोत्सव करे हुलसाय ॥ सफल ॥५॥ माताजी
को सोप्या आय हाथ जोड़ कर शीसनमाय धन्य तुम्हे रत्नजा
॥ सफल ॥६॥ ऊँकारलाल कहे सुनो सुजान विराज्या जोधपुर
गुणवान पचकी लल लिनी श्रीमान ॥ सफल ॥ ७ ॥ बरसा दे
जिन वाणी रंग किसनलाल सुनी हुँगे संग गिनावे दयालची मय
सफल ॥ ८ ॥

थियेटर तीसरा-

जोधा बाद के लाल दिनबन्धु दयाल करुणा किनी अपार, ज
पूज्य श्रीलाल जीवोंकी करुणा दिल-मांही भारी त्यागीजी त्याग
नी मानवती मार पूज्यत्यागी ॥ २ ॥ जोधा २ ललाट, जिना ध
मार गये स्वर्गमंझार तुम धन धन धन ॥ ३ ॥

दोहा-

पूज्य गुरु वर्णन करूं सुणो सभी चितलाय ।
हृद पार की बातकी आवी चित्त सुभाय ॥

स्तवन चौथा (पट्टावली)

रो श्याम करेलो अवधार, घनश्यामकी महिमा अपार ए देशी)
णो सभी धरध्यान, जिनका करूं मैं बयान ॥ टेक ॥ हुक्मीचंदजी
अणगार, जाण्या है संसार असार, किनी है तपश्या अपार
ान ॥ १ ॥ पूज्य शिवलालजी हुवा गुणवंत, कीना है कर्मोका
। हुवा है तपधारी संत ॥ जिन ॥ २ ॥ श्रीउदयसागरजी महा·
ल, समझाये केई भूपाल, जीवों के थे सदा प्रतिपाल ॥ जिन
॥ पूज्य श्रीचौथमलजी महाराज, हुवे पण्डित में शीरताज,
जीवों को दीनासाज ॥ जिन ॥ ४ ॥ पुज्य श्रीलालजी किना
कार, विराज्या पंचमपाट मझार, मिथ्या रूपी अन्धकार
ार ॥ जिन ॥ ५ ॥ पूज्य श्रीजवाहिरलालजी गुणधार, ज्यांरी
दाय है गुलजार, करते हैं परउपगार ॥ जिन ॥ ६ ॥ ऐसे सुगुरु
रो जरूर, होजावे कर्मोका चूर, पावेगे ऋद्धि भरपूर ॥ जिन
॥ ऊँकारलाल नो चरणों का चाय, हाथ जोडकर शीस नमाय,
रसभा थाच गाय, ॥ जिन ॥ ८ ॥

स्तवन पांचवां-(लावनी)

ीलाल पूज्यजी शरणे आयाकी लज्जा राखजो ॥ टेक ॥ टोंक
र के मायने सरे, ओसवाल की जात बच्चुश्रीलालजी है तात,
ा थाई मात ॥ नाम आपको श्रीलालजी सर्व कुटुम्ब सुख·
जी ॥ श्री ॥ १ ॥ चोथमलजी महाराज कहीजे तारण तरणकी
ाज, उनके पास से सजम लेकर करते आतम काज ॥ धर्म
देश सुनाते सबको जैसे अमरगाजजी ॥ श्री ॥ २ ॥ उन्नीसे
ाधन वर्षे रत्नपुरी मझार । पूज्यपाट विराजिया सरे सब
जा राणा और मुनीश्वर निरख्या दीदारजी

पूज्य पधारयां बीसे ठाणा पर भारीरे, रयां जायद शेत्ने कारो ॥ पूज्य ॥ ५ ॥ ग्राम २ के श्रावक आये दरशनकर सहु हुलशायेरे, मैतो देख छुतां गुण गायेरे ॥ पूज्य ॥ ६ ॥ महामुनी नंदलाल गुरु देवारे, उपकारी सरुतरु जेवारे, पुन्य जोग मिली पूज्य मेवारे ॥ पूज्य ॥ ७ ॥

स्तवन सातवाँ–

(राग आसावरी)

पूज्यजी के चरणों में धोग हमारी, जाउं क्रोड २ बलीहारी ॥टेक॥ टोंक नगर में रेणा मुनिको, मात पिता परिवारी, गुरु मुख सेती उपदेश सुणीने, लीदो संयम भारी ॥ पूज्य ॥ १ ॥ आतम यश कर क्रिया जीती, विषय विकार विडारी, वैरागमांही झुलरया धन २ ब्रह्मचारी ॥ पूज्य ॥ २ ॥ हुकम मुनिकी संप्रदाय में प्रगट भये नकारी, आचारज गुण करीने दीपो, फैलीमहिमा चऊं दिशारी ज्य ॥ ॥३ ॥ नाम आपको श्रीलालजी, गुण आपके भारी, चतुर मिल पदवी दीनी, रत्नपुरी मंझारी ॥ पूज्य ॥ ४ ॥ बीजचंद्र खुलत है, पूर्ण छो उपगारी, निरखत मुख नीर पत हांय तमेहनगारी ॥ पूज्य ॥ ५ ॥ क्या तारीफ में करूजी आपकी, वांणी अमृतधारी, मुझउपर कृपा जट कीज पूर्ण हेत विचारी ॥ पूज्य ॥ उगणीसे इगसट साल में रत्नपुरी मझारी, चौथमलकी विनती चरणों में अर्जगुजारी ॥ पूज्य ॥ ७ ॥

स्तवन आठवाँ–

(देशी बधावाकी)

ज्यजी शीतल चंद्रसमान, देखली गुण रत्नों की खान ॥ टेक ॥ मार्ग में दीपता सरे, तिजे पद महा राज, कलिकाल में प्रगट

न्य पधारयां थीम ठाणा पर धारीरे, रयां जायद शेखे कारो ॥ पूज्य ॥ ५ ॥ ग्राम २ के श्रावक आये दरशनकर सहु हुलशायेरे, तो देख छतां गुण गायेरे ॥ पूज्य ॥ ६ ॥ महामुनी नंदलाल रु देवारे, उपकारी सरुतरु जेवारे, पुन्य जोग मिली पूज्य सेवारे पूज्य ॥ ७ ॥

स्तवन सातवाँ-

(राग आसावरी)

पूज्यजी के चरणों में धोग हमारी, जाउं क्रोड २ बलीहारी ॥टेक॥ क नगर में रेणा मुनिको, मात पिता परिवारी, गुरु मुख सेती देश सुणीने, लीदो संयम भारी ॥ पूज्य ॥ १ ॥ आतम वश कर द्रिया जीती, विषय विकार विडारी, वैरागमाही झुलरया धन २ ब्रह्मचारी ॥ पूज्य ॥ २ ॥ हुक्म मानकी संप्रदाय में प्रगट भये नकारी, आचारज गुण करीने दीपो, फैलीमहिमा चऊं दिशारी पूज्य ॥ ॥३ ॥ नाम आपको श्रीलालजी, गुण आपके भारी, चतुर य मिल पदवी दीनी, रत्नपुरी मंझारी ॥ पूज्य ॥ ४ ॥ बीजचंद्रजु ला खुलत है, पूर्ण छो उपगारी, निरखत मुख नीर पत होवे तमे हनगारी ॥ पूज्य ॥ ५ ॥ क्या तारीफ मैं करूजी आपकी, वांणी अमृतधारी, मुझउपर कृपा जट कीज पूर्ण हेत विचारी॥ पूज्य ६ ॥ उगणीसे इगसट साल में रत्नपुरी मझारी, चौथमलकी ती विनती चरणों में अर्जगुजारी ॥ पूज्य ॥ ७ ॥

स्तवन आठवाँ-

(देशी ख्यालकी)

पूज्यजी शीतल चंद्रसमान, देखलो गुण रत्नों की खान ॥ टेक ॥ नमार्ग में दीपता सरे, तिजे पद महा राज, कलिकाल में प्रगट

हुया आप एक धर्मकी जहाज ॥ पूज्य ॥ १ ॥ पूर्वजन्म में आप पूज्य श्री पूरा पुण्य कमाया धन्य है माता आपकी सरे ऐसा नंदन जाया ॥ पूज्य ॥ २ ॥ भवजीवन तारता सरे कृपा करी दयाल रामपुरे महाराज बिराजे, त्यों कल्पतरु काज ॥ पूज्य ॥ ३ ॥ मीठीवाणी सुणी आपकी सुखी हुवे नरनार, फागण सुद पूनम के ऊपर थयो किमो उपगार ॥ पूज्य ॥ ४ ॥ हाथ जोड़ कर करूं विनती अर्जी परचित दीजो बनी रहे सुनजर आपकी वेगा दरशन दीजो ॥ पूज्य ॥ ५ ॥ सम्वत् उगणी से नेसठ साल में ठाणा एक दश आठ, रामपुरे महाराज बिराजे दयाधर्म को ठाट ॥ पूज्य ॥ ६ ॥ महामुनि मदलाल तणा शिष्य कहे सुणो गुरु देवा, यो दीन मत्ती उगसी, मिले आपकी सेवा ॥ पूज्य ॥ ७ ॥

स्तवन नवों—

(पट्टावली)

3

दुख भरत खड में तिरण तारणवाली जहाजे हुया हुकमीचंदजी महाराज सुधारया काजे ॥ टेर ॥ इकविश वर्ष लग बेले २ ला ठाया एक वस्त्र ओढ़न अग ओर लगाया करत आचार विचार की शुद्ध सिद्ध जिम गाजे ॥ हुया ॥ १ ॥ पांछे पूज्य शीवलालजी महा जश किनी तेतीस वर्ष लग एकान्तर तप किनी, क किधी समता साधु साध्वी आजे ॥ हुया ॥ २ ॥ श्रीउदयसागर महाराज आचारज भारी केइ राजा को समझाय आत्मा तारी हुया जगत विख्यात सिंह जिम गाजे ॥ हुया ॥ ३ ॥ अब चौथे पा चौथमलजी गुणवंता हुवा पण्डित में प्रमाण आचारज दीपंत । केइ जणाको दियो ज्ञान ध्यान और साजे ॥ हुया ॥ ४ ॥ अब पंच पाट, हुवा आप एक मागी श्रीलालजी महागुणवंत आपके त्यागी , किया धर्म उद्योत मिथ्यात्वी भाजे ॥ हुया ॥ ५ ॥ ये मुनिमत

रसाल ध्यान नित धरना मुनि हीरालाल कहे उन्नति करना, जिवागंज कियो चोमाशा मोक्षके काजे ॥ हुवा ॥ ६ ॥

स्तवन दशवाँ

म्हारा पूज्य परमउपगारी मुझने तारजोजी, श्रीश्रीलालजी मुनि पर वारी पार उतारजोजी ॥ टेक ॥ जनम्या टोंक नगर मझारी, माता चन्द्रकँवर मेहतारी, पिता चुन्नीलाल अवतारी, दीक्षा चमालीश में धारी ॥ मुझ ॥१॥ प्रथम हुक्ममुनि अवतारी, शीवलालजी उदयचंदजी भारी, चौथा चौथमलजी गुणधारी अब तो कीर्त्ति पसरी थारी ॥ मुझ ॥ २ ॥ आपतो पंचम पाट विराजो, बैठ सभामें सिंह जिम गाजो, आचारज पदवी कर छाजो, कृपासिन्धु करुणा सागर ॥ मुझ ॥ ३ ॥ मैं तो दरशन कर सुख पायो, मैंतो वाणी सुण हुलशायो, मैं तो हुलस २ हुलसायो, आपरे चरणा शीस नमायो ॥ मुझ ॥ ४ ॥ अबतो मालव देश पधारो, और मेवाड़ देशने तारो, मेरी विनतड़ी अवधारो, मैं सदा दास चरणा रो ॥ मुझ ॥ ५ ॥ मैं तो शहर जोधाणे आयो, सम्वत् सित्तर में सुख पायो, कार्तिक सुद पूनम गुण गायो, कहे जोधकरण चरणा को चाकर ॥ मुझ ॥ ६ ॥

स्तवन ग्यारहवां

(मारो श्याम करलो अवधार पदेशी)

पूज्यश्री हैं गुणधार, ज्यारी महिमा अपार ॥ टेक ॥ देखो मालव देश मझार, शहर थांदला है गुलजार, ओसवंश कुहाड ॥ज्यारी ॥ १ ॥ जीवराजजी है गैतात, नाथ कुवरके हो अगजात, छोड़ दिया सब सान ॥ ज्यारी ॥ २ ॥ पचमहाव्रतको धार, दोश बियालीश देवे टार, लेते हैं शुद्ध आहार ॥ ज्यारी ॥ ३ ॥ सूरत आपकी

मोहनगार वाणी जैसे अमृतधार, करते हैं परउपगार ॥ म्हारी ॥४॥ पापरूपी कर्मोंकी काट, लगाते तपस्या का ठाट आप विराज चुके पार ॥ म्हारी ॥ ५ ॥ गुरु श्री हेंगे महाकृपाल पूज्य श्री लालजी हुवे दयाल उगणीस सत्तावन साल ॥ म्हारी ॥ ६ ॥ उणीसे इक्यासी मझार शहर भिन्नायका है सुखकार करिये मुझे भवोदधि पार ॥ म्हारी ॥ ७ ॥ ॐकारलाल चरणों का दास रहता है शिवपुर की आस जवाहिर मुनि पूज्य खास ॥ म्हारी ॥ ८ ॥

स्तवन चारवां–

(कांटो लागोरे देवरीया मासे संग चाल्यो न जाय पर्डवी–)

महिमा पूज्य श्रीकी कहां लग कहीयन जाय कहां लग कहीयन जाय मविजन कहां लग वरनी जाय ॥ टेक ॥ मालव देशमें थांदला कहिये बसा डुंगरके मांय, जीवराजजी के पुत्र कहिये, नाम कुंवरजी थाय ॥ महिमा ॥ १ ॥ कुटुम्ब कबीला छोड़के निकसया, ऋद्धि सिद्धि छिटकाय छोगम न को स्याय मुनिराज प्रभूजी सु प्रीत लगाय ॥ महिमा ॥ २ ॥ पूर्वजन्म में करणी कीनी योग्य मिल्यो है थाय मगन मुनि गुरुको भेटया ग्राम लींबडी मांय ॥ महिमा ॥ ३ ॥ ग्राम नगर पुर पावन करता रतनपुरी में आय पूज्य श्रीलालजी पदवी दीनी चतुर्थ संघके मांय ॥ महिमा ॥ ४ ॥ चतुरसंग मिल महोत्सव कीनो हर्ष न चित्त में समाय जय जयविजय हुई जैन धर्मकी नर नारी गुण गाय ॥ महिमा ॥ ५ ॥ पीत मुद्रा थांकी चित्त सोहवे निरखत नैन ठराय रतनपुरी वाणी करमांथ समत परमन थाय ॥ महिमा ॥ ६ ॥ साल इक्यासी शहर भिन्नायका भादवा महीना मांय शुक्ल पंचमी बुधवार ने ॐकारलाल गुणगाय ॥ महिमा ॥ ७ ॥

स्तवन तेरहवाँ—

(ऐसा जादुपतिरे २ पगरणा पधारया सतीराज ए देशी)

गावो मंगल आज गावो मंगल आज. पंचमकाल में तिरणकी जहाज ॥ टेक ॥ मालव देश में थांदलो ग्राम जिणकु तो जाणे छे मुल्क तमाम ॥ गावो ॥ १ ॥ जीवराजजी कूहाड वडे ओसवाल. नाथ कुंवर के छो तुम लाल ॥ गावो ॥ २ ॥ वाणी सुणी मन आणयो वैराग, मात पिता धन दोलत त्याग ॥ गावो ॥ ३ ॥ मगन मुनि गुरू भेट्या अणगार, लिंबडी शहर में दीक्षा को धार ॥ गावो ॥४॥ ग्रामानुग्राम में करत विहार, साथे संत शीरोमण लार ॥ गावो ॥ ५ ॥ सुरत मोहनवाणी अमृतधार, सुणता खुशी हुवे नर और नार ॥ गावो ॥ ६ ॥ पूज्य श्रीलालजी हुवा अणगार. बिराज्या पचम पाट मझार ॥ गावो । ७॥ सम्वत् उगणी से इक्यासी मझार शहर निम्बाहेडा है गुलजार ॥ गावो । ८ ॥ ऊंकारलालतो जोडी दोनु हाथ, एक चोमासो कीजो इठे दीनानाथ ॥ गावो ॥ ९ ॥

स्तवन चउदहवाँ—

(धुसाँ बाजेरे ए देशी)

वल्लभ लागेरे २ पूज्य जवाहिरलालजी है पूज्य लागेरे ॥ ग्राम थांदला खास कहिये, मालवदेशके माहीरे, जन्म लियो है आप पूज्यजी, बत्तीसा माहीरे ॥ वल्लभ ॥१॥ मिष्ट जबान वाचनी प्यारी, न्यायवन्त आचारीरे, सत्यही सत फैलावे जग में परउपगारीरे ॥ वल्लभ ॥ २ ॥ स्मरण करता आप पूज्यका मन वाञ्छित फल पावेरे, वचन आपका हिरदे धरता, भवसिन्धु तिरजावेरे ॥ वल्लभ ॥ ३ ॥ हुकम मुनिकी सम्प्रदायमें, छट्टे पाट विराजोरे, चतुरसंग के बीच पूज्यजी सिंह जिम गाजोरे ॥ वल्लभ ॥ ४ ॥ शांत मुद्रा शशी जिम

स्तवन तेरहवाँ–

(ऐसा जादुपतिरे २ पग्णवा पधारया सतीराज ए देशी)

गावो मंगल आज गावो मंगल आज, पचमकाल में तिरणकी जहाज ॥ टेक ॥ मालव देश में थादलो ग्राम जिणकु तो जाणे छे मुल्क तमाम ॥ गावो ॥ १ ॥ जीवराजजी कूहाड वडे ओसवाल, नाथ कुंवर के छो तुम लाल ॥ गावो ॥ २ ॥ वाणी सुणी मन आएयो वैराग, मात पिता धन दोलत त्याग ॥ गावो ॥ ३ ॥ मगन मुनि गुरू भेट्या अणगार, लिंबडी शहर में दीक्षा को धार ॥ गावो ॥४॥ ग्रामानुग्राम में करत विहार, साथे संत शीरोमण लार ॥ गावो ॥ ५ ॥ सुरत मोहनवाणी अमृतधार, सुणता खुशी हुवे नर और नार ॥ गावो ॥ ६ ॥ पूज्य श्रीलालजी हुवा अणगार, विराज्या पंचम पाट मझार ॥ गावो । ७॥ सम्वत् उगणी से इक्यासी मझार शहर निम्बाहेडा है गुलजार ॥ गावो । ८ ॥ ऊंकारलालतो जोडी दोनु हाथ, एक चोमासो कीजो इठे दीनानाथ ॥ गावो ॥ ९ ॥

स्तवन चउदहवाँ–

(घुसां बाजेरे ए देशी)

वल्लभ लागेरे २ पूज्य जवाहिरलालजी है पूज्य लागेरे ॥ ग्राम थादला खास कहिये, मालवदेशके माहीरे, जन्म लियो है आप पूज्यजी, बत्तीसा माहीरे ॥ वल्लभ ॥१॥ मिष्ट जबान वाचनी प्यारी, न्यायवन्त आचारीरे, सत्यही सत फैलावे जग में परउपगारीरे ॥ वल्लभ ॥ २ ॥ स्मरण करता आप पूज्यका मन वाञ्छित फल पावेरे, वचन आपका हिरदे धरता, भवसिन्धु तिरजावेरे ॥ वल्लभ ॥ ३ ॥ हुक्म मुनिकी सम्प्रदायमें, छट्टे पाट विराजेरे, चतुरसंग के बीच पूज्यजी सिंह जिम गाजेरे ॥ वल्लभ ॥ ४ ॥ शांत मुद्रा शशी जिमे

प्यारी मोहन गारी जैसे चन्द्रमा साजे रे हुक्म मुनि के पाट में हो पूज्य साजे रे ॥ म्हाज ॥ ६ ॥ नाम आपको महिमा जग में जारी है कहां लग गाऊं गुण आपका मुनि हमारी रे ॥ म्हाज ॥ ७ ॥ जहां जहां पूज्य आप पधारो, नर हर्षित है चरनकमल पडनाही घर में आनद पावेरे ॥ म्हाज ॥ देस देशमा देश २ में भव जीवाने तारो रे, ऊंकारलालतो चरनकां पार उतारो रे ॥ म्हाज ॥ ८ ॥

स्तवन अठारहवां–

(पंछी मुंडे बोल)

मोक्षका दातारे पूज्य अनोपिरलालजी है बैरागी रे ॥ टेक ॥ थांदला शहर रतो मुनिकी मातपिता सब भाई रे सबै जीवों –बरसम–आगो–पो सुख थाई रे ॥ मोक्ष ॥ १ ॥ कुटुम्ब–कबीला बड़ी बहुतसी, एक नहीं चीत भाई रे शहर लिंबड़ी आय पूज्यजी, दीक्षा पाई रे ॥ मोक्ष ॥ २ ॥ स्त्रीधमाल का त्याग आपने भविजनता बरतावरे धीज नग्र ध मत्ता धुवता है महिमा छाइरे ॥ मोक्ष ॥ ३ ॥ महिमा कही नहीं आवे आपकी, पूज्य गुण फरमावेरे मीठी बाणी लागे आपकी बहुत सुहावेरे ॥ मोक्ष ॥ ४ ॥ साल इक्यासी शहर लिम्बाड़ा आसाज मास के मांई सरे ऊंकारलाल यु करे बिनती, देवे पुज्य सुखदाई रे ॥ मोक्ष ॥ ५ ॥

स्तवन उन्निसवां–

(पहावलि) हुक्म मुनि दीपे जग माही रे ए देशी)

हुक्म मुनि मगटे भवतारीरे २ कलिकाल इग भरत क्षेत्र में हुवा, तिरन तारि ॥ टेक ॥ वो वय उदर एक वर्ष तांईरे, पाट मायका